सहजयोग संस्थापिका

प.पू.माताजी श्री निर्मला देवी

एक दिव्य अवतरण

सहजयोग-संस्थापिका

प.पू.माताजी श्री निर्मला देवी

एक दिव्य अवतरण

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के
प्रवचनों से संकलित

संकलन
श्रीमती लीला अग्रवाल
डा.(श्रीमती) सरोजिनी अग्रवाल

प.पू.माताजी श्री निर्मला देवी

सहजयोग संस्थापिका

प्राक्कथन

एक अभूतपूर्व आध्यात्मिक सद्गुरु के रूप में आज माता जी श्री निर्मला देवी का नाम देश-विदेश में सर्वविदित है। उन्होंने "सहजयोग" की स्थापना की और पहली बार सारे विश्व को मानव शरीर के अंदर स्थापित सूक्ष्म-यंत्र एवं कुण्डलिनी-शक्ति के विषय में बताया। घोर कलियुग की इन विषम परिस्थितियों में उन्होंने भ्रमित हुए सभी सत्य साधकों का उचित मार्गदर्शन किया एवं कुण्डलिनी-जागरण की सरल विधि द्वारा सामूहिक आत्मसाक्षात्कार देकर साधकों को शीतल चैतन्य लहरियों के रूप में परमात्मा के प्रेम का साक्षात अनुभव प्रदान किया।

श्री माताजी ने हमें सामान्य मानव से ''सहजयोगी'' बनाया, हमारे सारे भ्रमों एवं अज्ञानता को दूर कर हमें जीवन का सत्य बताया, आत्म-ज्ञान देकर हमें हमारे जीवन की वास्तविकता एवं महत्त्व समझाया और हमारे अंदर स्थित अनंत शक्तियों को जागृत कर हमें मानव जीवन की सर्वोच्च आध्यात्मिक उत्क्रांति की अवस्था तक पहुँचा दिया।

श्रीमाताजी का व्यक्तित्व बहुआयामी है। एक ओर तो वे अथाह ज्ञान का भंडार हैं, वे सृष्टि के सारे गूढ़ रहस्यों की ज्ञाता हैं और दूसरी ओर वे बहुत ही सौम्य, सरल, शालीन, मृदुभाषी और ममतामयी हैं, वे प्रेम एवं करूणा की साकार मूर्ति हैं जिनका विनम्र स्वभाव, मधुर मुस्कान और चुम्बकीय गरिमामय व्यक्तित्व सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

सर्वोपरि वे हमारी शुभचिन्तिका एक वात्सल्यमयी माँ हैं जिन्होंने समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए आजीवन अथक परिश्रम किया। यह श्रीमाता जी के निरंतर प्रयास का ही परिणाम है कि आज विश्व में हज़ारों सहजयोगी हैं जिनके जीवन में आंतरिक परिवर्तन हुआ है और जो शांतिपूर्वक आनंदमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। एक प्रकार से सहजयोगियो के रूप में श्री माता जी ने मानव की एक नई प्रजाति की

सृष्टि की जो भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की पक्षधर एवं विश्व शांति के लिए कृतसंकल्प है।

हम सहजयोगी परम पूज्या माताजी के दिव्य अस्तित्व को पहचानते हैं पर यदि सारे विश्व में सुख-शांति एवं आनंद का साम्राज्य स्थापित करना है तो आवश्यक है कि जन साधारण भी उनकी महान शख़्सियत के विषय में जाने और उनके दिव्य स्वरूप को पहचान कर सहजयोग के सरल मार्ग को अपनाये।

स्वयं श्री माताजी ने अपनी इच्छा व्यक्त की थी -

"आप लोगों को चाहिए कि मेरे विषय में पुस्तक लिखें ..... आप लोगों को बता सकते हैं कि फलाँ-फलाँ शख़्सियत है और कोई बंधन नही है। ..... बेशक आप लोगों को बता सकते हैं कि मैं क्या हूँ? कब तक आप इसे छिपाते रहेंगे? बेहतर होगा कि आप उन्हें बतायें ये आदि शक्ति हैं।"

[२५-१०-१९८७, कोमो]

श्री माताजी की इन पंक्तियों से ही प्रस्तुत पुस्तक लिखने की प्रेरणा मिली।

परम पूज्या माताजी श्री निर्मला देवी एक सामान्य इंसान नहीं हैं, वे साक्षात आदि शक्ति का अवतार हैं। साक्षात आदिशक्ति माताजी का अद्वितीय व्यक्तित्व मानवीय गुणों और दिव्य शक्तियों का अभूतपूर्व संगम है। ये दोनों पक्ष उनके जीवन में समानान्तर रूप में व्यक्त हुए हैं। दोनों पक्षों को एक साथ लेकर उनकी संक्षिप्त जीवन-गाथा को अधिकांशत: उन्हीं की वाणी में लिखने का प्रयास किया गया है।

परम पूज्या श्री माताजी ने स्वयं अपने जीवन की विविध घटनाओं, रोचक अनुभवों व स्मरणीय प्रसंगों के साथ अपने लक्ष्य एवं अपनी दिव्य शक्तियों के विषय में अपने प्रवचनों और गोष्ठियों में बार-बार बताया है।

देश-विदेश में टी.वी.संवाद-दाताओं एवं पत्रकारों को दिए गए साक्षात्कारों (interviews) में उन्होंने अपने और सहजयोग के विषय में विस्तार से चर्चा की है। श्री माताजी द्वारा लिखित दो पुस्तकों - "सृजन-शाश्वत लीला" और "पराआधुनिक युग" में सृष्टि के सृजन का रहस्य एवं आधुनिक समय की विषम परिस्थितियों से पैदा हुई परेशानियों के समाधान के एकमात्र उपाय सहजयोग का विस्तृत वर्णन है। इन्हीं सारे तथ्यों का क्रमबद्ध संकलन इस पुस्तक में किया गया है। एक प्रकार से यह पुस्तक श्री माताजी की आत्म-कथा ही है। इसमें केवल उनके जन्म से लेकर विवाह तक के कुछ तथ्य श्री बाबा मामा के "मेरे संस्मरण" से लिए गए हैं।

यह हम सब सहजयोगियों का परम सौभाग्य है कि श्री माताजी के रूप में हमें साक्षात आदि माँ का सान्निध्य मिला। आदि माँ आदिशक्ति इस सृष्टि की सूत्रधार हैं, इसीलिए इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में श्री आदिशक्ति के शाश्वत अस्तित्व का विस्तृत ज्ञान दिया गया है ताकि हम सभी इस वास्तविकता को अच्छी तरह आत्मसात कर सकें कि श्री माताजी का व्यक्तित्व अलौकिक है और यह पुस्तक केवल श्री माताजी के लौकिक जीवन का आख्यान मात्र नही है वरन यह तो साक्षात जगज्जननी आदि माँ के अथाह प्रेम, असीम करुणा और अपने बच्चों के लिए किए गए अनवरत संघर्ष की महा महा गाथा है।

"जय श्री माताजी"

विषय-क्रम

अध्याय	विषय	पृष्ठ
1	श्री आदिशक्ति	9
I	**श्री माताजी का प्रारंभिक जीवन**	**23**
2	श्री माताजी का जन्म एवं शैशव	24
3	असाधारण बचपन एवं शिक्षा	32
4	राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सान्निध्य में	39
5	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय सहयोग	44
6	आनंदमय वैवाहिक जीवन	50
II	**श्री माताजी का अनवरत संघर्ष**	**57**
7	श्री माताजी के अवतरण का उद्देश्य और उनकी क्रांतिकारी खोज	58
8	सामूहिक आत्मसाक्षात्कार का प्रारंभ	67
9	श्री माताजी का विश्वव्यापी अभियान	75
10	सहज साधकों को सतर्क एवं आश्वस्त करती श्री माताजी	83
11	अपने वास्तविक स्वरूप की घोषणा करती श्री माताजी	90
12	साधक बच्चों के कष्टों को आत्मसात करती श्री माताजी	97
13	श्री माताजी की दिव्यता को प्रमाणित करता परम चैतन्य	105
14	आदर्श भारतीय नारी का प्रतिरूप - श्री माताजी	113
15	सत्य-असत्य का विवेक देती हमारी हितैषी गुरु माँ	123
III	**श्री माताजी का महानतम कार्य-गहन सहजयोगियों का सृजन**	**134**
	ओ मेरे पुष्प सम बच्चों! (कविता)	135
16	सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना - मानव	137
17	कुंडलिनी जागरण की विधि में निहित सूक्ष्म ज्ञान	145
18	मानव के विकास का अंतिम लक्ष्य है 'आत्मा' बनना	153
19	गहन सहजयोगी के आध्यात्मिक विकास की पूर्णावस्था	159
20	सहजयोगियों का परमात्मा से योग	166

IV	**श्री माताजी - एक दिव्य अस्तित्व**	**170**
21	एक महान योगी के अवतरण की पूर्व घोषणा	171
22	मैं ब्रह्म चैतन्य का विराट अवतरण हूँ	178
23	मैं आदिशक्ति का महामाया रूप हूँ	184
24	मेरे नाम 'निर्मला' में अनेक शक्तियाँ हैं	190
25	मैं प्रेम का अविरल प्रवाह हूँ, प्रेम ही मेरी शक्ति है	197
26	मैं ऋतम्भरा प्रज्ञा हूँ - भूत-वर्तमान-भविष्य की ज्ञाता	201
V	**विश्व शांति की मसीहा - श्री माताजी**	**208**
27	श्री माताजी ने सहजयोग के गूढ़ ज्ञान को सरल, व्यावहारिक एवं अनुभवगम्य किया	209
28	एक नए दिव्य समाज हेतु श्री माताजी के ठोस सुझाव	213
29	विश्व में पूर्ण शान्ति की स्थापना ही श्री माताजी का एकमात्र स्वप्न	219
30	मानवीय माताजी के सार्वभौमिक व्यक्तित्व की अमिट छाप	224
31	श्री माताजी को मिले अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार एवं मान्यतायें	227
32	श्री माताजी की जन्म कुण्डली	230
33	श्री माँ परम में लीन हो गईं	232
34	श्रद्धांजलि	236
	उपसंहार	**238**
	श्री आदिशक्ति का अनमोल उपहार - सहजयोग	238
	विश्ववन्दिता	240

अध्याय 1

श्री आदिशक्ति

आदिशक्ति परमपिता परमात्मा की मूल शक्ति हैं, ये सृजन की मातृ शक्ति हैं वास्तव में परमब्रह्म निराकार शक्ति हैं। इनकी दो कास्मिक अवस्थाएँ होती हैं, पहली निष्क्रिय अवस्था (asleep state) और दूसरी जागृत अवस्था (awaken state)। पहली अवस्था पूर्ण शून्य (absolute zero) की स्थिति होती है। जिसमें सब कुछ शून्य में समाया रहता है, कहीं कोई गतिविधि नहीं होती। दूसरी अवस्था में परमब्रह्म जाग जाते हैं, वे अपने आप जागते हैं, जिस प्रकार से हम सो जाते हैं और फिर जागते हैं, इसी प्रकार से परमब्रह्म जागृत होते हैं और ये ही परमात्मा कहलाते हैं।

परमात्मा के अन्दर सृजन की इच्छा पैदा होती है, वे चाहते हैं कि एक सृष्टि की रचना हो जिसके द्वारा उनके स्वयं का पूर्ण अस्तित्व अभिव्यक्त हो। परमात्मा के अन्दर उत्पन्न सृजन की यह इच्छा ही उनकी शक्ति के रूप में उनसे अलग हो जाती है – इन्हें ही "आदिशक्ति" कहते हैं।

"परमात्मा और आदिशक्ति दोनों एक ही हैं जैसे सूर्य और प्रकाश होता है, परंतु सृजन के समय वे अलग-अलग दो व्यक्तित्व हो जाते हैं, ये परम पुरुष (Supreme Being) और सृजन की मातृ शक्ति (प्रकृति या आदिशक्ति) के रूप में विद्यमान रहते हैं। ये हमारे माता-पिता आदि पिता (Primordial Father) और आदि माँ (Primordial Mother) है।" परमपिता परमेश्वर परमेश्वरी आदि माँ (आदि शक्ति) को अपनी सारी शक्तियाँ प्रदान कर उन्हें सृष्टि सृजन का पूरा उत्तरदायित्व सौंप देते हैं और स्वयं सारी सृजन लीला के 'साक्षी' रहते हैं।

परम पूज्या श्री माताजी ने अपनी पुस्तक **"सृजन-शाश्वत लीला"** में परमात्मा, आदिशक्ति एवं सृजन में उनकी सारी शक्तियों की अभिव्यक्ति के विषय में बहुत सारे तथ्य बताए हैं –

"सृजन की अभिव्यक्ति परमात्मा नहीं करते, उनकी शक्ति (आदि शक्ति) करती हैं। परमात्मा की शक्ति के रूप में वे सर्वव्यापक अस्तित्व, सर्वसृजन शक्ति और सर्वशक्तिशाली पोषक (धारक) के रूप में परमात्मा की अभिव्यक्ति करती हैं।" **[पृष्ठ-१४]**

परमेश्वर रूप में सर्वशक्तिमान परमात्मा के तीन पक्ष

आदिशक्ति महाआदिपुरुष में सर्व शक्तिमान परमात्मा के तीन पक्षों की अभिव्यक्ति करती हैं - **[पृष्ठ-२२]**

१. सदाशिव - परमात्मा का कभी परिवर्तित न होने वाला स्वरूप सदाशिव कहलाता है और उनकी शक्ति महाकाली रूप में अवतरित होती हैं। महाकाली शक्ति के माध्यम से परमात्मा की शक्ति उनकी सृष्टि सृजन की इच्छा की अभिव्यक्ति करती हैं। यह शक्ति अस्तित्व (जीवन) के लिए जिम्मेदार है। ..... सदाशिव जीवन के देवता कहलाते हैं क्योंकि अस्तित्व का विलोम शब्द विनाश है, अतः सदाशिव का एक अन्य नाम प्रलयंकर (महाकाल) भी है।

२. हिरण्यगर्भ (प्रजापति) - हिरण्यगर्भ सर्व शक्तिमान परमात्मा का सृजनात्मक पक्ष है। वे आदिपुरुष के उदर में गतिशील हैं। ..... हिरण्यगर्भ की शक्ति महासरस्वती के रूप में अवतरित होती है और पूरी भौतिक सृष्टि उनकी शक्ति तथा गतिविधि के परिणामस्वरूप है। .....ये आदि पुरुष के विचार शक्ति का कार्य भी करती हैं। **[पृष्ठ-२४]**

३. विराट - आदि पुरुष के शरीर के रूप में परिपक्व होने पर आदि पिंड "विराट" कहलाता है..... परमात्मा के विराट पक्ष की शक्ति विराटांगना कहलाती है। आदि पुरुष के आदि मस्तिष्क (आदि सहस्रार) और आदि हृदय (आदि अनहत) के माध्यम से इसकी अभिव्यक्ति होती है। महालक्ष्मी रूप में अवतरित होकर विराटांगना आदि सुषुम्ना नाड़ी के मध्य मार्ग पर कार्य करती हैं। **[पृष्ठ-२५]**

"आदि पुरुष के शरीर में विकसित होकर आदिशक्ति शरीर धारण करती

हैं जब कि सर्वशक्तिमान परमात्मा परमेश्वर रूप में आदि पुरुष के सिर पर निवास करते हैं। ईश्वर रूप में विराट के हृदय में (आदि अनहत) ये प्रतिबिम्बित होकर साक्षी रूप से वे अपने शरीर क्षेत्र को देखते है। **[पृष्ठ-२७]**

आदिशक्ति की शक्तियाँ

सर्वप्रथम आदिशक्ति की दो शक्तियाँ हैं - **परमेश्वरी शक्ति तथा प्रणव शक्ति।**

परमेश्वर के साथ निराकार रूप में रहने वाली परमेश्वरी शक्ति सर्वशक्तिमान परमात्मा की साक्षित्व शक्ति है। यह उनकी (आदि शक्ति) अस्तित्व शक्ति है और इसी के द्वारा वे मानव रूप में अवतरित होती है। इस शक्ति को उनकी 'आत्म धारण शक्ति' या 'आत्मसाक्षात्कार शक्ति' का नाम दिया जा सकता है।

प्रणव शक्ति आदि शक्ति की 'सर्वव्यापी शक्ति' या 'प्रकाश शक्ति' है जो उनकी परमेश्वरी शक्ति के माध्यम से प्रसारित होती है। ..... प्रणव जब सुप्त अवस्था में होता है तो वह कुण्डलिनी के नाम से जाना जाता है, परन्तु आत्मा से मिलन के बाद वह ज्योतिर्मय हो उठता है। प्रणव आदिशक्ति के पूर्ण नियंत्रण में कार्य करता है। आदिशक्ति के तीन गुण हैं जो इसे तीन स्वरूपों में परिवर्तित करते हैं। (इस प्रकार कुल पाँच शक्तियाँ हैं) **[पृष्ठ-२९]**

१. महाकाली (शिवानी) शक्ति -

महाकाली शक्ति के रूप में अपनी प्रथम शक्ति द्वारा वे (आदि शक्ति) पदार्थ तथा जीवन्त शरीरों के कण-कण में विद्युत चुम्बकीय लहरियों के रूप में विद्यमान रहती है। ये शक्ति प्रणव का एक स्वरूप है।

..... भौतिक पदार्थों में ये शक्ति हर अणु के केन्द्रक में विद्यमान रहती है।

२. महासरस्वती शक्ति -

अपनी दूसरी सृजनात्मक भौतिक शक्ति महासरस्वती द्वारा आदिशक्ति प्रणव को भौतिक शक्ति में परिवर्तित करती हैं और इस प्रकार उन कारणात्मक

सार तत्त्वों (बंनेंस मेमदबमे) का सृजन करती है। जिनसे अंततः पंच आदि तत्त्वों का सृजन होता है।

३. महालक्ष्मी शक्ति –

उनकी तीसरी शक्ति 'महालक्ष्मी' है और यही उनकी सृष्टि को पोषण प्रदान करती है।

...... इस शक्ति द्वारा आदि शक्ति विकास प्रक्रिया की उत्पत्ति करती है और सृष्टि के भिन्न स्वरूपों को भिन्न चरित्र प्रदान करने के लिए यह शक्ति पोषण विधियों (धर्मों) में परिवर्तित करती है। इस प्रक्रिया में मार्गदर्शन के लिए, ये अपनी चौथी शक्ति परमेश्वरी के साथ इस वाहिका (आदि सुषुम्ना नाड़ी) पर स्थित भिन्न चक्रों पर अवतरित होती है।

४. परमेश्वरी (ईश्वरी) शक्ति –

आदिशक्ति जब मानव रूप में अवतरित होती है तो उनकी परमेश्वरी शक्ति "ईश्वरी" के रूप में प्रतिबिम्बित होती हैं। जब वे अकेली अवतार लेती हैं तो यह जगदम्बा या आदिशक्ति स्वरूप होता है।

सर्वशक्तिमान परमात्मा के पक्ष जब मानव रूप में अवतरित होते है तो वे भी शक्तिरूप में अवतार धारण करती हैं। पिता की भूमिका के बिना वे इस पृथ्वी पर अपने पुत्र का सृजन करती हैं, देवता पुत्र (श्री गणेश) का सृजन करती हैं। ...

५. प्रणव शक्ति –

आदिशक्ति की पांचवी शक्ति प्रणव (पूर्ण चेतना) है जो उनकी ईश्वरी शक्ति की 'आत्मा' या उनका "प्रेम श्वास" है। प्रणव परमात्मा के प्रेम की शक्ति है। यह सर्वव्यापी, सर्वसमग्र, सर्वज्ञाता और सर्वसंयोजक शक्ति है जिसकी अनुभूति आत्मसाक्षात्मकार के बाद चैतन्य लहरियों या आदिशक्ति की शीतल वायु के रूप में होती है। मानव हृदय में यह आत्मा की शक्ति है।......

मनुष्य के अपने सत्य स्वरूप को धारण करने पर जब विकास प्रक्रिया अपने शिखर पर पहुँचती है जो सहजयोग के माध्यम से कुण्डलिनी व्उश्रव्ुक्ष्ट

द्वारा ये तीनो शक्तियां समग्र हो जाती हैं और तीन मानवीय शक्तियों तथा आत्मा में योग घटित होता है। इस घटना के साथ-साथ आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति (साधक) से चैतन्य प्रवाहित होने लगता है।

शिव-ब्रह्मदेव-विष्णु के रूप में महाशक्तियों की अभिव्यक्ति -

आदि पुरुष के मस्तिष्क में आदि शक्ति की तीनो महाशक्तियाँ दो-दो स्वरूपों में अभिव्यक्त होती है। व्यावहारिक उद्देश्य के लिए इन्हें तीनों शक्तियो के बच्चे कहा जा सकता है परन्तु वास्तव में ये अस्तित्व को भिन्न अवस्थाओं के प्रतिबिम्ब हैं। ये इस प्रकार हैं -

महासरस्वती ⟶ सरस्वती एवं शिव

महालक्ष्मी ⟶ लक्ष्मी एवं ब्रह्मदेव

महाकाली ⟶ काली और विष्णु

शिव काली से विवाह करते हैं क्योंकि वे उनकी शक्ति हैं, विष्णु अपनी शक्ति लक्ष्मी से विवाह करते है और ब्रह्मदेव अपनी शक्ति सरस्वती से। इस प्रकार सर्वशक्तिमान परमात्मा के तीन पक्ष अपनी सम्बन्धित शक्तियों से दिव्य गठबंधन में बंध जाते हैं।..... **[पृष्ठ-४२]**

..... बहुत से देवताओं का सृजन किया गया। ये देवी-देवता पूजनीय हैं तथा अपने चरित्र (धर्म) से एक रूप देवी-देवता पुरुष या महिला रूप में हैं। इनके द्वारा **शासित आदि चक्रों** के स्वभाव, कार्य तथा धर्म के अनुरूप इनका सृजन किया गया तथा चक्रों द्वारा किए जाने वाले भिन्न कार्यों के अनुरूप इन देवी-देवताओं को चक्रों पर स्थापित किया गया। **[पृष्ठ-४३]**

..... श्री कृष्ण और ईसा मसीह के सृजन की धारणा भी उनके मानव रूप में अवतरित होने के लाखों वर्ष पूर्व बन चुकी थी। **[पृष्ठ-४५]**

सृजन की चार अवस्थायें -

सृजन कार्य अस्तित्त्व की चार अवस्थाओं के माध्यम से हुआ। इन भिन्न अवस्थाओं में आदिशक्ति जिस भी रूप में अवतरित होती हैं, वे सभी रूप

आदि माँ के एकमेव अद्वितीय व्यक्तित्व से निकलते हैं।

१. उत्पत्ति अवस्था –

उत्पत्ति अवस्था में सर्वशक्तिमान परमात्मा और शक्ति परमेश्वर और परमेश्वरी के रूप में विद्यमान होते हैं।

२. बैकुण्ठ अवस्था –

इस अवस्था में सर्वशक्तिमान परमात्मा और आदिशक्ति तीन रूप धारण करते हैं।

- सदाशिव और महाकाली
- विराट और विराटांगना (महालक्ष्मी)
- हिरण्यगर्भ (प्रजापति) और महासरस्वती

३. क्षीर सागर अवस्था –

अपने सभी पक्षों (तत्त्वों) समेत आदि पुरुष जब पूर्ण परिपक्वता प्राप्त करते हैं तब यह अवस्था आती है। इस अवस्था में सर्वशक्तिमान परमात्मा और आदिशक्ति बैकुण्ठ में अपने पक्षों के अनुरूप निम्नलिखित रूप धारण करते हैं –

सदाशिव ⟶ शिवरूप　　महाकाली ⟶ काली रूप

विराट ⟶ विष्णु रूप　　विराटांगना ⟶ लक्ष्मी रूप

हिरण्यगर्भ ⟶ ब्रह्मदेव रूप　　महासरस्वती ⟶ सरस्वती रूप

४. संसार अवस्था –

मानव द्वारा आधुनिक काल तक पृथ्वी पर सृजित किया गया संसार सृजन की चौथी अवस्था है। आदिशक्ति ने संसार (भवसागर) अवस्था के चारो युगो में जन्म लिया। चार युग है– सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापर युग, कलियुग।

अ. सत्ययुग – सत्ययुग में आदिशक्ति ने विष्णु की शक्ति लक्ष्मी के रूप में अवतार धारण किया। ये महालक्ष्मी का मानव संसार युग रूप है। महाकाली के मानव संसार युग रूप में भी वे केवल दुर्गा, जगज्जननी रूप में एक हजार

बार अवतरित हुई, जिनमें से एक सौ आठ उनके मुख्य अवतरण थे। दुर्गा (काली)–लक्ष्मी–सरस्वती के अवतरण परमेश्वरी (अलौकिक) अवतरण हैं।

ब. त्रेतायुग – श्री राम के युग (श्री विष्णु राम के रूप में अवतरित होते हैं) त्रेतायुग में आदि शक्ति अपने तीन पक्षों की अभिव्यक्ति करती हुई तीन भिन्न रूपों में अवतरित हुईं –

सीता (महालक्ष्मी) राजा जनक की पुत्री जानकी के रूप में। महालक्ष्मी का यह प्रथम मानव (लौकिक) अवतरण था।

सती अनसूया (महासरस्वती) महान ऋषी अत्रि की पत्नी के रूप में।

मंदोदरी (महाकाली) राक्षस रावण की पत्नी के रूप में।

स. द्वापर युग – द्वापर युग में भगवान कृष्ण के समय (श्री कृष्ण रूप में श्री विष्णु द्वापर युग में अवतरित होते हैं) अपने तीन पक्षों की अभिव्यक्ति करने के लिए आदिशक्ति भिन्न तीन मानव रूपों में अवतरित हुई –

राधा (महालक्ष्मी) श्री कृष्ण के प्रथम शाश्वत प्रेम के रूप में।

रूक्मिणी (महासरस्वती) श्री कृष्ण की रानी के रूप में।

विष्णुमाया (महाकाली) श्री कृष्ण की बहन के रूप में। वो बहुत थोड़े समय जीवित रहीं। बाद में उन्होंने पाण्डव पत्नी द्रौपदी के रूप में जन्म लिया।

[सृजन-शाश्वत लीला से उद्धृत पृ.३३ से ३५]

द. कलियुग – कलियुग में श्री महाविष्णु श्री जीसस क्राइस्ट के रूप में अवतार लेते हैं और उनकी माँ मदर मेरी के रूप में महालक्ष्मी अवतरित होती है। महालक्ष्मी फातिमा बी और नानकी के रूप में भी अवतार लेती हैं। कलियुग में श्री आदिशक्ति का पूर्णावतार श्री माता जी निर्मला देवी के रूप में हुआ।

श्री आदिशक्ति के विभिन्न अवतरणों का प्रयोजन –

आदिशक्ति का प्रमुख उद्देश्य था कि मानव रूप में वे ऐसे आदर्श पुत्रों का सृजन करें जो सही अर्थों में अपने परमपिता परमात्मा का प्रतिनिधित्व करें, इसीलिए उन्होंने मानव को स्वतंत्रता प्रदान की और साथ ही ज्ञान भी

दिया। मानव की राक्षसी शक्तियों से रक्षा उसका पोषण एवं उसका उचित मार्गदर्शन करने के लिए ही संसार अवस्था के हर युग में श्री आदिशक्ति की विभिन्न शक्तियों ने अवतार लिया।

श्री माताजी ने अपनी पुस्तक "सृजन शाश्वत लीला" में स्पष्ट किया है -

"आदम और हौवा के समय पर, जब विकास-प्रक्रिया मानव अवस्था तक पहुँची तो मानव को जीवन के विकास और जीवन-विरोधी विनाश के बीच एक का चुनाव करने की स्वतंत्रता प्रदान की गई। विकास प्रक्रिया ही एक मात्र ऐसा मार्ग था जिसके माध्यम से व्यक्ति विकसित एवं आत्मसाक्षात्कारी मानव बन सकता था। परन्तु कुछ लोगों ने जीवन विरोधी प्रक्रिया को चुना ..... उन्होंने घृणा की आसुरी शक्तियों का सृजन एवं विस्तार किया। ..... वे बार-बार जीवन-विरोधी और परमात्मा विरोधी गतिविधियों वाला जीवन अपनाने के लिए पृथ्वी पर लौटे।" **[पृष्ठ-४७]**

"जिन स्तनधारी पशुओं का विकास अति की सीमा तक हो गया था। उन्हें विकास प्रक्रिया से हटा दिया गया।" **[पृष्ठ-६८]**

"पशुओं में लोमड़ी बुद्धि और चालाकी की अति तक पहुँच गए थे, ये कोल्हासुर जैसे राक्षस बन गए।" **[पृष्ठ-६९]**

"अत्यन्त क्रूर पशु होने के कारण भैंसा को भी विकास प्रक्रिया से बाहर फेंक दिया गया, इसने महिषासुर जैसे राक्षसों का रूप धारण कर लिया।"
[पृष्ठ-७०]

आदिशक्ति के उग्र अवतार, दुर्गा ने इन बहुत सी दुष्ट आत्माओं का वध किया और कुछ को नरक में तुच्छ जीवों के रूप में बने रहने का दण्ड भी दिया। ..... बहुत बार इन आसुरी शक्तियों को शारीरिक रूप से नष्ट किया गया, परन्तु उनमें से कुछ सभी अवतरणों के पृथ्वी पर आगमन से पूर्व पुनर्जन्म ले लेती है।"
[पृष्ठ-४८]

उत्क्रांति के पथ पर मानव का मार्गदर्शन -

"आदि विष्णु स्वयं उत्क्रांति के पथ को विकसित करते हैं और

उसकी रक्षा करते हैं। उनके अवतरण आध्यात्मिक चेतना के विकास (मानव की) में मील के पत्थर है और एक-एक कर वे मानवीय ज्ञान के नए आयाम विकसित करते हैं" **[पृष्ठ-४८]**

● **"अपने पाँचवे अवतरण में श्री विष्णु पहली बार मानव रूप में अवतरित हुए।** उन्होंने बौने मनुष्य (वामन अवतार) का रूप धारण किया। परमात्मा को खोजने वाले मनुष्यों का मार्गदर्शन करने के लिए वे पृथ्वी पर अवतरित हुए। ..... इस अवतरण ने मानव मस्तिष्क में ये धारणा भर दी कि वह तीनो लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक और पाताल लोक) पर अधिकार कर सकता है।" **[पृष्ठ-५०]**

● **"उनका (विष्णु शक्ति का) छठा अवतरण उग्र पुरुष श्री परशुराम का था। उन्होंने तपोबल द्वारा प्राप्त की गई शक्तियों की अभिव्यक्ति की।** पूर्ण विकास प्राप्त करने पर मानव के अंदर 'मैं' भाव (अहंकार) विकसित हो गया और तब मनुष्य को अपने अन्तर्निहित 'अज्ञात' की खोज की आवश्यकता महसूस हुई। ..... यह खोज व्यक्तिगत थी। ..... बहुत से लोग संसार को त्याग कर जंगलों के पूर्ण एकांत में परम सत्य को खोजने के लिए चले गये। कई जन्मों में प्राय: वर्षों तक वे अपने इसी खोज में लगे रहे। परशुराम हठयोग और राजयोग के संस्थापक थे।" **[पृष्ठ-५१]**

● **"त्रेतायुग में श्री राम अवतार में, सातवाँ अवतरण** लेकर श्री विष्णु शक्ति ने मानव रूप में भवसागर पार कर के **चेतना के एक नये आयाम को स्पर्श किया।** ..... श्री राम रूप में उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक योजना ज्योतित की। ..... **परिणाम स्वरूप मानव में पहली बार सामूहिक चेतना जागृत हुयी।**

श्री राम के काल में आदिशक्ति तीन मानव रूपों में विद्यमान रहीं।"
[पृष्ठ-५३]

● **श्री विष्णु का आठवाँ अवतरण द्वापर युग में श्री कृष्ण रूप में हुआ .....** परमेश्वरी प्रेम की लीला का साक्षीभाव से आनंद उठाने के लिए

मानवीय सूझबूझ में एक नया आयाम खोलने के लिए वे अवतरित हुए थे।

..... श्री कृष्ण का जीवन जनता के बीच व्यतीत हुआ, इस प्रकार **उनके अवतरण ने सामूहिक आध्यात्मिक आंदोलन की धारणा को बढ़ावा दिया।** अर्जुन के समक्ष वें विराट रूप में प्रकट हुए और पहली बार मानव चक्षु साक्षात श्री आदिपुरुष (विराट) की झलक देख पाए। ..... श्री कृष्ण ने खेल खेल में जागृति देने का प्रयास किया ..... वे केवल सहजयोग का बीज बो पाए।

..... अर्जुन को दी हुई उनकी शिक्षाएँ श्रीमद्भगवद्गीता में संकलित हैं।

..... साक्षित्व की मूर्ति बनकर उन्होंने, श्री राम की तरह बहुत से राक्षसों एवं राक्षसियों का बध किया। ये हस्तियाँ जब-जब भी मानव की विकास प्रक्रिया में बाधा डालती हैं तो इनका बध किया जाना आवश्यक होता है। आदिशक्ति के अधिकतर अवतरण राक्षसों का वध करने के लिए ही हुए।"

..... "श्री कृष्ण के समय भी आदिशक्ति ने तीन रूप धारण किए।"

[पृष्ठ-५४, ५६]

● "त्रिमूर्ति महेश, विष्णु और ब्रह्मदेव ने एक गुरु, आदिगुरु दत्तात्रेय के रूप में अवतार लिया। **लोगों को परमेश्वरी रहस्य बताने, परमात्मा को प्रकट करने और मानव के अपने अस्तित्व में रहते हुए भ्रांति सागर (भवसागर) पार करने में मानव की सहायता करने के लिए वे पृथ्वी पर आए।** अज्ञान के अंधकार में फँसे हुए मनुष्य के हाथों में अब विकास प्रक्रिया और आगे नहीं बढ़ सकती थी, अतः आदिगुरु ने बार-बार भिन्न अवतरण लेकर मानव का मार्ग दर्शन किया। (आदि गुरु के अधिकतर अवतरण कलियुग में हुए)"

[पृष्ठ-५१]

● "आदि विष्णु के नौंवे अवतरण ईसामसीह के गर्भधारण का कार्य कुँआरी (पावन) मेरी ने किया। .....

ईसामसीह के अवतरण में परमात्मा के पुत्र रूप में **पृथ्वी पर आध्यात्मिकता के सार तत्त्व की अभिव्यक्ति हुई।** मानव हित के लिए परम पिता (विराट) के एकमात्र प्रियतम पुत्र के बलिदान का साक्षी सारा संसार था। .

..... ईसामसीह के समय तक मानव परमपिता के विषय में जान चुका था परन्तु उसे इस बात का ज्ञान नहीं था कि **मानव के आध्यात्मिक उत्थान के लिए उसके सांसारिक स्वार्थों का बलिदान किस प्रकार किया जाए। ईसा मसीह के पुनर्जन्म का यही अर्थ है .....**

..... श्री कृष्ण ने अपने जीवन काल में आत्मा की जिस अनश्वरता के सत्य का वर्णन किया था, जिसे महाकवि व्यास ने श्रीभगवद्गीता में संकलित किया है, **पहली बार मानवीय चेतना ने आत्मा के अमरत्व की इस गहन धारणा को समझा।**

● "आदिशक्ति की अवतरण मेरी ने कुँआरेपन (पावनता) की उस शक्ति को स्पष्ट दर्शाया था जो माँ के पद को इतने शक्तिशाली और उच्च स्तर पर ला कर अपनी इच्छा मात्र से गर्भ धारण कर सके। .....

..... **"मेरी के जीवन ने पावनता की शक्ति द्वारा सामाजिक (सामूहिक) चेतना की महानतम उन्नति को दर्शाया** तथा समाज विकास पथ पर अग्रसर हुआ।" **[पृष्ठ-५९, ६०]**

● **"हर परमेश्वरी अवतरण के अवतरित होने के बाद जीवन वृक्ष पर फूलों की तरह से सच्चे धर्म प्रकट होते हैं।** धर्म के पुष्प कुसुमित करने के लिए भिन्न कालों में अवतरण आए। ..... पर बहुत सारे मानव समूह (अवतरण के जाने के बाद) दावा करने लगे कि वे ही अवतरण के संदेश के सच्चे व्याख्याकार (प्रतिपादक) हैं। इस प्रकार के सभी धर्म, इसके संस्थापक के संदेश के घिसे पिटे रूप में समझाने में ही लगे रहे और अन्ततः परमात्मा के नाम पर परस्पर युद्ध करने वाले असंख्य पंथों और दलो में बँट गए।" **[पृष्ठ-८१]**

"कलियुग के इस युग में एक बार पुनः वे सभी राक्षस (जिनका वध आदि शक्ति ने किया था) अपनी गद्दियों पर आरूढ़ हो गए हैं और इस बार वे राक्षस धर्म का चोला पहन कर झूठ-झूठ के गुरुओं और योगियों के रूप में आए हैं।

महामाया रूप में अवतरित आदिशक्ति स्वयं एक-एक कर के उनके दुष्कर्मो का भण्डाफोड़ करेंगी।" **[पृष्ठ-४८]**

● **कल्कि का सृजन -**

आदि मस्तिष्क (सहस्रार) पर सृजित अंतिम अवतरण श्री कल्कि हैं। वे सामूहिक पुरुष हैं जिनका सृजन कलियुग में महामाया रूप में अवतरित श्री आदि शक्ति द्वारा सहजयोग के माध्यम से किया जाएगा। .....

..... **यही अवतरण कल्कि का सृजन करेंगी।** जो लोग (साधक) आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेंगे वे श्वेतवस्त्रधारी अश्वारोही बन कर परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर लेंगे और बाकी लोग नष्ट हो जाएंगे।

इस प्रकार जीवन्त सामूहिक चेतना के नये संसार - सत्ययुग के स्वर्णिम काल का - उदय होगा। यह वह काल है जिसमें पृथ्वी पर परमात्मा का साम्राज्य स्थापित होना है। विश्व में अपने करुणामय कार्यों से सामूहिक पुरुष (विराट) का प्रकटन प्रारम्भ हो चुका है। स्वयं को सामूहिक रूप से परमेश्वरी चेतना में विलीन कर रहे सभी आत्म साक्षात्कारी इस विराट रूप को आकार प्रदान कर रहे हैं।

कल्कि की शक्ति महामाया रूप में जानी जाती है क्योंकि ये महाभ्रान्ति हैं। पूर्णतः मानवीय होते हुए भी वे महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की तीन समग्र शक्तियों की अभिव्यक्ति करती हैं।

जनसमूह में सामूहिक आत्म साक्षात्कार देकर वे अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करती हैं। सामूहिक आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से साधक सामूहिक चेतना के साम्राज्य में प्रवेश करते हैं। आत्मसाक्षात्कार को आध्यात्मिक विकास के इतिहास की महत्त्वतम घटना कहा जाएगा क्योंकि इसमें परमेश्वरी प्रेम के पथ प्रदर्शन में (आदि शक्ति द्वारा) पूरी सृष्टि अपने स्रोत परमेश्वरी प्रेम की ओर लौटने लगती हैं।

जिस दिन आदिशक्ति के इस अवतरण ने मानव रूप धारण किया उसी दिन से कल्कि की जागृति आरम्भ हो गयी थी। वास्तविकता की खोज

में आत्माएँ बड़ी संख्या में पृथ्वी पर जन्म लेने लगीं, वैभवशाली लोग भौतिकतावाद को त्यागने लगे, अधिकतर लोगों ने ऐशो आराम के पुराने विचारों को त्योग कर सहज जीवन शैली अपना ली।

भिन्न अवस्थाओं में विकास प्रक्रिया का नेतृत्व करने के लिए भगवान विष्णु (विष्णु शक्ति) ने ये सारे अवतार धारण लिए। उनके साथ उनकी शक्ति महालक्ष्मी भी अवतरित होकर विकास प्रक्रियाओं में अपने अवतरणों के विकसित करती है। पूर्ण मानवीय अवस्था पर पहुँचने तक विकास घटित होता रहता है परन्तु सम्बन्धित जीव को इस विकास का ज्ञान नहीं होता। केवल **कल्कि की अन्तिम और परम अवस्था में ही, जब आदिशक्ति स्वयं अवतरित होती हैं, मानव सामूहिक चेतना की उच्च चेतना में प्रवेश करता है तभी अपने जीवन काल में ही उसे अपने नये जन्म (पुनर्जन्म) का पूर्ण ज्ञान भी प्राप्त होता है।** **[पृष्ठ-६२ से ६४]**

साक्षात आदिशक्ति श्री माताजी द्वारा साधकों को पुनर्जन्म -

"सहजयोग के माध्यम से साधक पुनर्जन्म प्राप्त करता है। आदिशक्ति सभी साधकों को जन्म देना चाहती हैं। साधक के सूक्ष्म शरीर का वे हृदय में गर्भधारण करती हैं। उनका चित् साधक के सूक्ष्म शरीर में कुण्डलिनी जागृत करता है, वे हृदय तक उन्नत की गई उसकी आत्मा जीवात्मा को आशीर्वादित करती हैं और अपने चित् द्वारा आत्मा को तालु-क्षेत्र पर लाती हैं। मस्तिष्क पर बने सभी चक्रों की पीठों से वे उसे तब तक गुजारती हैं (उन्नत करती हैं) इसी प्रकार सभी आत्माएं सहजयोगी के रूप में पुनर्जन्म प्राप्त करती हैं।"

[पृष्ठ-६१]

"**इस संकट काल (घोर कलियुग) में सहजयोग का आविष्कार परमात्मा के सर्वव्यापक प्रेम का आशीर्वाद है।** यह उस तकनीक का परमेश्वरी प्रतिपादन (व्याख्या) है जो पूरी मानव जाति के उद्धार को कार्यान्वित करेगा, क्योंकि परम स्रष्टा कभी भी इस बात की आज्ञा नहीं देगें कि उनके द्वारा सृजित कोई भी जीव उनकी सृष्टि को नष्ट कर दे।

सहजयोग स्वत: उद्धार की तकनीक है। यह प्रकृति से सम्बन्धित है और साक्षत परमात्मा इसके साक्षी है। .....

..... मानव ने अपना सृजन स्वयं नहीं किया है और न ही वह अपना रूपरेखाकार है। अत: भविष्य की भी वही (आदिशक्ति) कार्यान्वित कर सकती है जिसने ये सारे कार्य किए हैं।" **[पृष्ठ-८२]**

श्री आदिशक्ति की महिमा अनिर्वचनीय है। आज घोर कलियुग के संकट काल में मानव उत्थान के महान कार्य को पूर्ण करने के लिए श्री आदिशक्ति समस्त देवी-देवताओं एवं सद्गुरुओं की अपने शरीर में धारण करके अवतरित हुयी हैं। परम पूज्या माताजी श्री निर्मलादेवी ही उनका पूर्णवतार हैं।

इस बार आदिशक्ति एक ममतामयी माँ बनकर पृथ्वी पर आई हैं। "एक माँ अपने बच्चों के लिए किसी भी सीमा तक जा सकती है वह अपने बच्चों को विनाश से बनाने के लिए दिन रात परिश्रम कर सकती है, यह माँ ही जानती है कि किस प्रकार बच्चों को पालना है।" **[१०-५-९८]**

परमपूज्या श्री माताजी निर्मला देवी का यह सम्पूर्ण जीवन-चरित मानव जाति के उद्धार के लिए किए गए उनके संघर्ष की गाथा है, यह एक स्नेहमयी माँ का अपने बच्चों के प्रति सहज वात्सल्य एवं निर्मल निर्व्याज प्रेम है, बस प्रेम।

श्री माताजी
का प्रारम्भिक जीवन
(नन्ही बालिका से आदर्श गृहिणी तक)

सौम्या, सरला, सर्वप्रिया- श्री माँ

"प्रेम और करुणा ही परिवार का आधार हैं। ... ... आपके सभी सम्बन्ध पवित्र होने चाहिए जैसे बहन है, माँ है, भाई है, पिता है, आपके जीवन साथी हैं, सबके प्रति आपको अत्यन्त सम्मानमय, प्रेममय और करुण होना होगा। वास्तविक आनंद यदि आप पाना चाहते हैं तो अपने अन्दर निश्छल प्रेम बनायें रखें और जीवन का आनंद लें।"

[परम पूज्या श्री माताजी १६-९-२०००]

अध्याय 2

श्री माताजी का जन्म एवं शैशव

योगभूमि भारत के मध्य-प्रदेश में नागपुर के समीप छिन्दवाड़ा नामक एक पावन मनोरम स्थान है। यह स्थान अपने 'छिन्द' यानी खजूर के पेड़ों और सिंहों की अधिकता के कारण विशेष रूप से जाना जाता था। इसका एक नाम 'सिंहद्वार' भी था। यहीं एक अति प्रतिष्ठित सम्पन्न भारतीय ईसाई साल्वे परिवार में स्वयं आदिशक्ति ने 21 मार्च 1923 को ठीक बारह बजे बालिका 'निर्मला' के रूप में जन्म लिया।

छिन्दवाड़ा कर्क रेखा के उष्ण कटिबन्ध पर स्थित है और यह स्थान भारत का मध्य बिन्दु माना जाता है। 21 मार्च का दिन सूर्य के भूमध्य रेखा में प्रवेश करने के कारण अत्यन्त विशिष्ट है। इस समय दिन और रात दोनों की अवधि बराबर होती है तथा सम्पूर्ण प्रकृति में एक प्रकार का संतुलन आ जाता है। स्थान, जन्मतिथि एवं समय का यह संयोग ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार अत्यंत दुर्लभ एवं सबके लिए हितकारी बताया गया है।

ईश्वरीय शक्तियों के पृथ्वी पर अवतरित होने के स्थान और समय पूर्वनिर्धारित होते हैं। ये अवतरण अपना वंश, परिवार एवं माता-पिता स्वयं चुनते हैं - श्री माता जी ने स्वयं बताया है -

''मेरा संबंध भारत का ठीक मध्य, पूरी तरह से मध्य भाग से है। ये मध्य में होना आवश्यक है, इसीलिए मैंने मध्य भारत में जन्म लिया ... ... मैं जानती थी कि मैं क्या हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है? मैं जानती थी कि मुझे उपयुक्त स्थान पर जन्म लेना है।'' **[हांगकांग १९९२]**

''ब्रह्मांड की कुंडलिनी भारत में है और हिमालय पूरे ब्रह्मांड का सहस्रार है ... ... ब्रह्मांड की कुंडलिनी-भारत की रक्षा के लिए ही हिमालय का सृजन

किया गया। प्राचीन संस्कृति को बनाए रखने के लिए कुछ देशों को सुरक्षित किया जाना आवश्यक था। श्री गणेश को भारत में स्थापित करना पड़ा, इसी कारण मुझे भी इस देश में जन्म लेना पड़ा - कर्क रेखा के उष्ण कटिबन्ध पर''।

''मैं जानती थी कि सर्वप्रथम कुंडलिनी उठाने के लिए और तत्पश्चात सहस्रार पर जाने के लिए यह कार्य मुझे करना होगा भारत के मंच पर जाकर''।

[३०-३-८९ काठमांडू, २५-७-८६ इटली]

''हम लोग शालिवाहन के वंशज हैं। शालिवाहन में एक बभ्रुवाहन करके राजा थे। उन्होंने तत्कालीन राजा विक्रमादित्य को हराया और उसके बाद एक नया पंचांग शुरू किया जिसे शालिवाहन संवत कहते हैं।''

''विक्रमादित्य ने अक्षय तृतीया से ही अपने कैलेन्डर शुरू किए वैसे ही शालिवाहन ने जो संवत बनाया वो भी इसी तारीख़ से ..... उनकी जो पहली तारीख़ में जो 'हिज़री' होता है वे भी यही है, पारसी भी इसी को 'नवरोज़' कहते हैं। सबने इसी तिथि को प्रथम माना। कारण क्या है? कारण ये है **कि एक ही शक्ति से प्रेरित लोग हैं** तो उन्होंने इसी दिन को माना।''

[१८-३-९९, ५-४-२००० नोएडा]

''शालिवाहन इसलिए कि वे लोग पहले अपने को 'सातवाहन' कहते थे। उनका कुंडलिनी पर बड़ा विश्वास था। बाद में उन्होंने देवी को शाल चढ़ाना शुरू किया। वे बड़े देवी भक्त थे तो उन्होंने अपना नाम शालिवाहन कर लिया। शालिवाहन नाम से ही हम लोगों का नाम सिल्विया या साल्वे कर दिया गया।''

''मेरे जीवन में औरंगाबाद का विशेष महत्व है क्योंकि मेरे पूर्वज यहाँ से बहुत समीप स्थित 'पैठन' नामक स्थान से संबंधित थे। 'पैठन' का मूल नाम 'प्रतिष्ठान' था। महान काव्य 'रामायण' के स्रष्टा महर्षि वाल्मीकि यहीं इस क्षेत्र

में रहा करते थे। प्रतिष्ठान या पैठन जाने वाले गोदावरी के दूसरे किनारे तक शलिवाहन साम्राज्य था ..... शालिवाहन राजाओं ने वाल्मीकि मंदिर बनाने में बहुत सहायता की तथा गुरु रूप में वाल्मीकि का बहुत सम्मान किया। वास्तव में वे शालिवाहनों के गुरु थे।''

[१८-३-९९ नोएडा]

वास्तव में महाराष्ट्र के इतिहास में शालिवाहन वंश का शासन काल चार शताब्दियों तक (वर्ष 230 ई. पूर्व से सन् 230 ई. तक) अद्वितीय रहा। इस वंश के सभी राजाओं ने कलाओं विशेषतया मूर्तिकला एवं वास्तुकला को तथा साहित्य को पूर्ण प्रोत्साहन एवं संरक्षण दिया। उन्होंने अपना व्यापार रोम जैसे सुदूर स्थानों तक फैलाया और अन्य कई देशों के व्यापारियों को अपनी ओर आकर्षित किया। अपार भौतिक समृद्धि के साथ ही वे अत्यंत आत्मसम्मानी थे और उन्होंने सदैव एक शालीन धार्मिक जीवन व्यतीत किया।

श्री माताजी के छोटे भाई बाबा मामा ने अपनी पुस्तक 'मेरे संस्मरण' में अपने वंश, परिवार व माता-पिता के संबंध में काफी विस्तार से लिखा है -

''हमारा परिवार शाही वंश से संबंधित था। वे चित्तौड़गढ़ के योद्धा थे जहाँ रानी पद्मिनी ने बत्तीस हज़ार महिलाओं के साथ अपने पावित्र्य की मुसलमान राजा आदिलशाह ख़िलजी से रक्षा करने के लिए जौहर किया था। अत: हमारे परिवार के लोग अत्यंत राष्ट्रवादी एवं देशभक्त थे और ये संस्कृति की जड़ें उनमें बहुत गहन थी।''

''हमारे परिवार में कितने ही गुण एवं मानवीय विशेषतायें हैं। हमारे माता-पिता की पहली प्राथमिकता बच्चों का उचित पालन-पोषण था। वे अत्यंत नि:स्वार्थ थे, आत्मसम्मान एवं गौरव का उनमें गहन विवेक था तथा आध्यात्मिकता और सांसारिक ज्ञान का उनमें भंडार था। वे अत्यंत पावन एवं

चरित्रवान इंसान थे। मेरे माता और पिता दोनों सहज जीवन और उच्च विचारों के प्रतीक थे।''

''श्री माताजी ने इन्हीं पावन एवं पूर्ण माता-पिता के परिवार में जन्म लेने का निर्णय लिया।''

''मुझे याद है कि एक बार मैंने श्री माताजी से पूछा ''अपने साल्वे परिवार में जन्म लेना पसन्द क्यों किया और उन्होंने मुझे बताया कि मुख्यत: ये चरित्रवान माता-पिता के कारण था जिन पर उन्हें गर्व है।''

श्री माताजी ने स्वयं बताया है - ''मैं अत्यंत प्रबुद्ध लोगों के परिवार से संबंधित हूँ। मेरे पिता श्रीप्रसाद राव साल्वे भाषाविद् थे और वे चौदह भाषाओं में कुशल थे। उन्हें छब्बीस भाषाओं का ज्ञान था। उन्होंने कुरानशरीफ का हिन्दी भाषा में रूपान्तरण किया। मेरी माता जी श्रीमती कार्नोलिया बाई को गणित को मानोपाधि (आनर्स) प्राप्त थी। तो मेरे माता-पिता दोनों ही अच्छे पढ़े लिखे एवं प्रबुद्ध व्यक्ति थे।''

''मेरे पिता जी स्वयं संस्कृत के बड़े विद्वान थे। माँ भी बहुत संस्कृत जानती थीं।

''मेरे माता पिता अत्यंत देशभक्त थे। उन्होंने अपने देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।''

''मैंने स्वयं अपने माता-पिता को चुना था। वे दोनो महान व्यक्ति थे, आत्मसाक्षात्कारी आत्मायें थे विशेषतया मेरे पिता जी ऐसे व्यक्ति थे जो जानते थे कि मैं यहाँ पृथ्वी पर क्यों हूँ। मेरी माता जी भी यह जानती थीं इसलिए उन दोनों और मेरे बीच एक विशेष तालमेल था, वे समझ सके थे कि क्यों मैं ध्यान में इतना व्यस्त रहती हूँ या क्यों मैं दूसरों को आत्मसाक्षात्कार देने का मार्ग खोज रही हूँ।

[१-१०-१९८३ रेडियो इंटरव्यू, अमेरिका]

''मेरे पिता जी और मेरी माँ दोनों ही आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति थे।''

श्रीमाताजी के जन्म एवं शैशव से जुड़ी कुछ रोमांचक अदभुत घटनायें जो उनकी दिव्यता को प्रत्यक्ष प्रमाणित करती हैं। श्रीमाताजी ने स्वयं दो घटनाओं का उल्लेख किया है -

१. ''मेरे जन्म के समय मेरी माँ का कोई स्वप्न आया जिसकी वे व्याख्या नहीं कर पाईं परंतु उसके पश्चात उनके मन में शेर देखने की तीव्र इच्छा हुई मेरे पिता जी बहुत अच्छे शिकारी थे क्योंकि उन दिनों हमारे क्षेत्र में शेरों का प्रकोप था। ये छिन्दवाड़ा नामक पहाड़ी क्षेत्र था। वहाँ के एक राजा का मेरे पिता के साथ बहुत सामीप्य था। मेरे पिता जी को एक पत्र आया कि वहाँ एक बहुत बड़ा शेर है और सभी लोगों को यह भय है कि कही वह मानवभक्षी न हो। मेरे पिता जी मेरी माँ के साथ वहाँ पहुँच गये। वे मचान पर बैठे हुए थे। ये मचान पेड़ की चोटी पर बना हुआ था। ताकि वे शेर पर अच्छी तरह निशाना लगा सके। मेरी माताजी ने मुझे बताया कि जब वे मचान पर बैठे थे तो विशाल आकार का शेर अत्यन्त गरिमापूर्वक खेत में दिखाई दिया और उनके मन में शेर के प्रति गहन प्रेम की धारा उमड़ पड़ी।

पूर्णिमा की रात थी और जब मेरे पिता जी ने शेर पर निशाना लगाने के लिए बन्दूक उठाई तो मेरी माँ को शेर पर बहुत दया आई उन्होंने मेरे पिता जी को गोली चलाने से रोका। उसके बाद वो शेर वहाँ से चला गया और कभी लौट कर उस जंगल में नहीं आया। परन्तु इस घटना ने मेरे पिता जी जो कि स्वयं आत्मसाक्षात्कारी थे, को सोचने पर विवश कर दिया कि उनकी पत्नी के गर्भ से दुर्गा जैसी कोई देवी जिसे शेर अच्छा लगता है जन्म लेगी क्योंकि किसी महिला की शेर देखने की इतनी तीव्र इच्छा होना बड़ी ही अज़ीब बात थी। तो उन्होंने मेरी माँ से कहा 'अब तुम खुश हो?' बन्दूक का बोझ उठाये हुए उन्होंने कहा 'क्या तुम्हारे गर्भ में दुर्गा बैठी हुई हैं जिसके कारण तुम शेर की रक्षा करने का प्रयत्न कर रही हो? उन्होंने उत्तर दिया 'हाँ, हाँ, बन्दूक हटा लो, मैं तुम्हें शेर

नहीं मारने दूंगी।''

२. ''जब मेरा जन्म हुआ तो मेरी माँ को बिल्कुल भी प्रसव पीड़ा नहीं हुई और मेरा जन्म हो गया। उनकी समझ में नहीं आया कि ये कैसे हुआ? मेरे शरीर पर रक्त, मल आदि भी कुछ न लगा हुआ था। मैं एकदम स्वच्छ थी और इसलिए इन लोगों ने मुझे 'निर्मला' नाम दिया, परंतु मेरी दादी माँ ने कहा कि इस लड़की को 'निष्कलंक' कहा जाना चाहिए अर्थात ऐसी लड़की जिस पर कोई दाग़ न था परंतु ये पुरुष का नाम है इसलिए सबने निर्णय लिया कि ठीक है इसे 'निर्मला' नाम से ही पुकारेंगे अर्थात 'निष्कलंका'।

ये सारी घटनायें घटित हुई और इसके साथ-साथ मेरे पिता जी आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति थे, उन्हें मुझसे तीव्र चैतन्य-लहरियाँ प्राप्त हुईं। उन्हें लगा कि ये जीवन (निर्मला) महान है और अपने जीवन में कुछ न कुछ महान कार्य करेगी।''

[९-७-१९८५ विएना]

श्री माताजी के छोटे भाई बाबा मामा ने भी कुछ घटनाओं का उल्लेख किया है -

''श्री माताजी के जन्म के पंद्रहवें दिन ख्रिस्तीकरण के लिए चर्च ले जाया गया ..... बोद्री नदी (जो छिंदवाड़ा के समीप से बहती थी) का पुल पार करते हुए टाँगे का पहिया टूट गया। दोनों घोड़े दो पैरों पर खड़े होने लगे और अज़ीबो ग़रीब ढंग से हिनहिनाने लगे, इस प्रकार टाँगा बीच में से टूट गया और उसके दो हिस्सों के बीच श्री माताजी गिर गईं ..... टाँगे के चौखटे को जब हटाया गया तो देखा श्री माताजी को बिल्कुल चोट नही लगी थी और वे मधुर मुस्कान बिखेर रहीं थी।''

''एक माह पश्चात घर के दाँये भाग में आग लग गई ..... पर इसके पूर्व कि जान माल की कोई गंभीर हानि होती सौभाग्यवश इस आग पर क़ाबू पा

लिया गया।''

''मेरी माताजी छः माह की श्री माताजी को अपनी गोद में लेकर ख़रीदारी के लिए गए ..... जब वे वापिस आने लगीं तो उन्होंने श्रीमाताजी को टाँगे की पिछली सीट पर लिटाया और टाँगा चालक को कहा कि वह टाँगे की पिछली सीट पर चढ़ने में उनकी सहायता करे। चालक ज्यों ही उनकी सहायता करने के लिए उनके पीछे आया न जाने क्यों घोड़ा टाँगे को लेकर चल पड़ा और मेरी माताजी टाँगे में न चढ़ पाईं। टाँगे पर श्री माताजी बिल्कुल अकेली थीं। मेरे माताजी और टाँगा चालक चिल्लाते हुए घोड़े को रुकने के लिए कहते हुए टाँगे के पीछे दौड़ रहे थे ..... अनियंत्रित टाँगा एक दृश्य बन चुका था और हर आदमी अवश्यम्भावी दुर्घटना की आशंका कर रहा था। जिस सड़क पर टाँगा चल रहा था टी बिन्दु पर समाप्त हो रही थी और घोड़ा यदि सीधा चलता रहता तो वह खड्डे में गिरता और यदि वह दाँये को मुड़ता तो बँगले की विपरीत दिशा में चला जाता। सभी लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही जब टी बिन्दु पर घोड़े ने अपनी गति धीमी की, बाँयी आरे को मुड़ा और फिर सरपट दौड़ने लगा। टी. बिन्दु से बंगला लगभग आधा मील दूर था। मेरे माता जी और टाँगा चालक दूसरे टाँगे पर बैठ कर इसका पीछा करते रहे।

(श्री माताजी वाला) टाँगा जब बँगले पर पहुँचा तो घोड़े ने अपनी गति धीमी की और फिर बँगले के द्वार के सम्मुख स्वयं ही रुक गया और फिर पीछे की ओर मुड़ कर देखने लगा। मानो वह देख रहा हो कि टाँगे पर उसका सवार सुरक्षित है या नहीं।

मेरे माताजी जब टाँगे तक पहुँचे तो जैसा उन्होंने मुझे बताया था कि **श्री माताजी टाँगे की पिछली सीट पर आराम से लेटी थीं, न तो वे रो रही थी और न ही उनके मुख पर भय का कोई चिन्ह थे। उन्होंने अपनी मधुर मुस्कान के साथ मेरी माँ का स्वागत किया।**

उन्होंने बच्ची को गले से लगाया और उसकी रक्षा करने के लिए सर्वशक्तिमान परमात्मा का धन्यवाद किया। इस घटना को सभी लोगों ने चमत्कार माना। सब लोग हैरान थे कि नन्हें से शिशु को जो अभी तक बोल भी नही सकता था, लेकर बिना चालक के टाँगे का घोड़ा किस प्रकार बँगले के ठीक सामने रुक सकता है? .....

इस घटना से शिशु के रूप में श्री माताजी की दिव्य शक्तियों पर प्रकाश पड़ता है।''

अध्याय 3

असाधारण बचपन एवं शिक्षा

नन्हीं सी 'निर्मला' जन्म से ही असाधारण थीं। उनके चेहरे पर एक अद्‌भुत तेज और एक दिव्य कांति की स्पष्ट झलक थी। **श्री बाबा मामा ने श्री माताजी के आकर्षक सौन्दर्य एवं स्नेही स्वभाव की व्यापक चर्चा की है। उनके शब्दों में** -

● "वे अत्यन्त सुंदर एवं आकर्षक थीं, उनका रंग दूधिया था, बाल अत्यंत काले और नैन-नक़्श बहुत ही अच्छे थे। मेरी माँ को सदैव यही डर बना रहता था कि कहीं कोई इन पर किसी प्रकार का जादू-टोना न कर दे।"

● "शैशव काल से ही श्री माताजी अत्यंत ज़िंदादिल थीं, जो भी उन्हें बुलाता उसके पास वे चली जातीं। उनकी मुस्कान अत्यंत मधुर एवं आकर्षक थी। इस मुस्कान के माध्यम से वे सभी के प्रति अपने आनंद की अभिव्यक्ति करती थीं।"

● "पशु-पक्षियों से भी उन्हें बहुत प्रेम है। छिंदवाड़ा के घर में मेरे पिता जी ने एक बंदर, कुत्ता और एक तोता पाले हुए थे। मेरी माँ ने मुझे बताया कि जब वे नागपुर आ गए तो श्री माताजी इन सभी पालतू पशु-पक्षियों को याद करतीं और उनके नाम लेकर उन्हें पुकारतीं। बचपन से ही वे चिड़ियों और कबूतरों के लिए बगीचे में चावल फैला देतीं।"

● "श्री माताजी की स्मरण-शक्ति महान है। हमारा छिंदवाड़ा का घर उन्हें स्पष्ट रूप से याद था और एक दिन उन्होंने उस घर का बहुत ही अच्छा नक़्शा बनाया था। उन्होंने यह भी बताया कि उनका जन्म घर के किस स्थान पर हुआ था? उन्हें अपना जन्म भी याद था और जन्म के समय उपस्थित सभी व्यक्तियों की भी याद थी।"

● "बचपन से ही श्री माताजी अत्यंत सक्षम हैं क्योंकि मेरी माँ को घर के

काम-धंधे करने की फ़ुरसत न थी और श्री माताजी से बड़े भाई बहन अपनी पढ़ाई तथा अन्य गतिविधियों में व्यस्त थे। श्री माताजी ने सात-आठ वर्ष की कोमल आयु में ही पूरे घर को चलाने की ज़िम्मेदारी अपने कंधो पर ले ली थी। अपने दिल और दिमाग़ के गुणों के कारण वे सबकी प्रिय बन गईं।"

● "आरम्भ से ही श्री माताजी का स्वभाव साहसी था। वे अत्यंत बहादुर और ख़तरों से निडर थीं। एक बार उन्होंने भारी वर्षा से लबालब भरे पहाड़ी नाले को अकेले की पार कर लिया था।"

● "श्री माताजी गरीबों के प्रति अत्यंत सहृदय एवं करुणामय थीं। उनमें गहन धैर्य भी था। एक बार जब उनके एक गरीब मित्र ने उनसे कहा कि उसके घर में खाने के लिए अन्न नहीं है तो श्री माताजी ने अपने घर से अन्न की भरी बोरी उस सहेली को दे दी।"

गरीबों के कष्टों को देख कर वे बहुत विचलित हो जाती थीं और उनकी आँखों से आँसू बहने लगते थे। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जब लोगों ने अपने दु:खो और कष्टों का दिखावा करके श्री माताजी के इस करुणामय स्वभाव का दुरुपयोग किया परंतु वे कभी भी अपनी इस उदारता से पीछे नहीं हटी यद्यपि वे जानती थीं कि उनकी अच्छाई का दुरुपयोग किया जा रहा है।"

● "श्री माताजी बहुत अच्छी उपचारिका भी थीं। जब उनके छोटे भाई बाला साहब टाइफाइड से पीड़ित थे तो हर समय वे उनकी सेवा में जुटी रहतीं ... ... बीमारी के कारण वे लगभग एक महीना बातचीत के क़ाबिल भी न थे तब श्री माताजी ने इशारों की भाषा विकसित की ... ... और इस प्रकार बाला साहब को अपनी सेवा-शुश्रूषा से बोलने लायक़ बनाया।"

● "श्री माताजी हर सुबह माँ लोड्रस के मंदिर तक पैदल जाया करती थीं, मैं सदैव उनका साथी होता। वे मंदिर के कोने में बैठ कर ध्यान किया करतीं ... ... बाद में उन्होंने मुझे बताया कि "वहाँ बैठ कर वे इस बात पर विचार किया करती थीं कि सामूहिक कुंडलिनी-जागृति द्वारा किस प्रकार वे संसार के लोगों को उनकी समस्याओं से मुक्ति दिलवा सकती हैं।" ... ... "मदर लोड्रस की

इस प्रतिमा की श्री माताजी से इतनी समानता थी कि मैं सोचता था प्रतिमा बनाते हुए प्रतिमाकार की कल्पना में श्री माताजी ही रही होंगी।"

श्री माताजी के सामूहिक स्वभाव एवं दिव्य व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति बचपन से ही उनके व्यवहार में प्रकट होती रही है--

उन्होनें बताया है - "अपने शैशव काल से ही मैं सबकी माँ सम थी। मेरे माता-पिता स्वतंत्रता-आन्दोलन में जब जेल गए तो मैं लगभग साढ़े पाँच वर्ष की थी। सारे परिवार की ज़िम्मेदारियाँ मुझ पर आ पड़ीं और नन्हा सा फ्राक पहनकर माँ की तरह मैं सारी ज़िम्मेदारियाँ निभाया करती थी। ... ... स्वभावानुसार मेरा पूरा जीवन अत्यन्त सामूहिक है। मैं अत्यंत सामूहिक हूँ, कहीं भी रह सकती हूँ। अपने इस स्वभाव की अभिव्यक्ति मैं बचपन से कर रही हूँ।"

"जहाँ हम रहते थे उस क्षेत्र के लोगों से मेरा बहुत प्रेम था। मेरी माताजी को 'निर्मला की माँ' के रूप में पहचाना जाता था। और पिताजी को 'निर्मला का पिता' के रूप में। मेरे पिता प्राय: कहते थे "इस लड़की के कारण हमने अपनी पहचान खो दी है।" तो मैं अत्यन्त मित्र स्वभाव की थी, कभी मुझे अकेलापन महसूस नहीं हुआ। मैं जब केवल अपने साथ होती हूँ तब तो बिलकुल अकेली नहीं होती। मैं अपना अत्यंत आनंद उठाती हूँ ... ... आप यदि लोगों के साथ अपने प्रेम को बाँटना जानते हैं तो आप कभी अकेले नहीं है।"

"मैंने साक्षात्कारी बालक के रूप में जन्म लिया"

"जब मेरा जन्म हुआ तो मुझे कुंडलिनी का पूरा ज्ञान था। अपने बचपन से ही मुझे कुंडलिनी का पूरा ज्ञान था। अपने बचपन से ही मैं कुंडलिनी के विषय में सब कुछ जानती थी अत: मैं अत्यन्त **जागरूक व्यक्ति थी - अत्यंत जागरूक।** मैं केवल उसके बारे में बताना नहीं जानती थी क्योंकि आप जानते हैं कि लोगों में इतनी जागरूकता नहीं थी सभी से इसके विषय में बातचीत नहीं की जा सकती थी।"

[९-७-१९८५ विएना]

श्री माताजी ने फिर भी बिना बोले चुपचाप अपने ढंग से चारों ओर

चैतन्य प्रवाहित करने का प्रयास किया। उन्होंने स्वयं स्पष्ट किया है -

"बचपन में जब हम पाठशाला पैदल जाते थे तो मैं नंगे पाँव चला करती थी। इतनी चैतन्य-लहरियाँ होती थी कि मुझे लगता चप्पलों के कारण उनमें कमी आ रही है अत: अपनी चप्पलों को मैं हाथ में उठाकर चलती थी। यद्यपि मेरे पिताजी के पास कार थी। एक पहाड़ी पार करके हमें जाना होता था। लगभग पाँच मील दूर थी पाठशाला। हर सुबह हमें पैदल जाना होता था, शाम को लाने के लिए कार आती थी। एक बार हमारा एक नया ड्राइवर आया। उसने कहा - "मैं आपकी बेटी को कैसे पहचानूँगा? मेरे पिता जी ने कहा 'जो लड़की हाथों में चप्पल उठाए हो उसे आपने लाना है।"

[२-३-१९९७]

श्री माताजी की बहुमुखी प्रतिभा एवं शिक्षा के विषय में श्री बाबा मामा ने बताया है -

● सन 1928 में मेरे पिताजी सपरिवार छिन्दवाड़ा से नागपुर आ गए थे। घर नागपुर स्थान्तरित करने का मेरे पिताजी के लिए एक महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि बच्चों को अच्छी शिक्षा दी जा सके जो छिन्दवाड़ा में उपलब्ध न थी।''

● "श्री माताजी बहुत मेधावी छात्रा थीं, उन्हें अभिनय व नृत्य में भी काफी रुचि थी। अपने प्राथमिक स्कूल में श्रीमाताजी को जो एक नृत्य में श्रीकृष्ण की भूमिका के लिए चुना गया और उन्होंने यह भूमिका इतनी अच्छी तरह से की कि लोग उन्हें 'कृष्णा' पुकारने लगे। मेरे पिताजी के मित्र भी उन्हें 'कृष्णा' कहकर ही पुकारते।"

● "1938-1939 के शैक्षिक वर्ष में श्री माताजी भिड़े कन्या उच्च विद्यालय में दसवीं कक्षा में पढ़ रही थीं। विद्यालय विशेष रूप में ब्राह्मण लड़कियों के लिए था। श्री माताजी वहाँ प्रसिद्ध थीं। ईसाई परिवार होने के कारण ब्राह्मण लड़कियाँ उनके साथ खाना खाने से घबराती थीं परन्तु उनका खाना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। अत: स्कूल के पीछे छिप कर वे सब श्री माताजी के साथ खाना खातीं।"

● "श्री माताजी स्वयं अपने राज्य की घोषित बैडमिन्टन विजेता थीं, वे बहुत से भारतीय खेल भी खेलती थीं और राज्य स्तर की खेल-स्पर्धाओं में उन्होंने अपने स्कूल नागपुर का प्रतिनिधित्व किया।"

● "वर्ष 1940 में श्री माताजी ने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्हें मराठी, अंग्रेजी भाषा तथा गणित में विशिष्टता प्राप्त हुए थे इसलिए विज्ञान में प्रवेश प्राप्त करना अब कोई समस्या न थी। ..... विज्ञान में उनकी बहुत रुचि थी।"

● "मेरे माता-पिताजी क्योंकि अपने बच्चों को सर्वोत्तम शिक्षा देना चाहते थे इसलिए उन्होंने श्री माताजी को लखनऊ भेजने का निर्णय लिया। परिणामस्वरूप श्री माताजी ने लखनऊ के अति प्रसिद्ध आई. टी. [Isabela Thoborn College] कालेज में प्रवेश लिया। ..... दिसम्बर की छुट्टियों में नागपुर में बैडमिन्टन खेलते हुए श्री माताजी के दाहिने हाथ की हड्डी टूट गई थी इसलिए ..... लखनऊ में वे प्रथम वर्ष की परीक्षा नहीं दे सकीं ..... मेरे माता-पिताजी ने तब उन्हें स्थानीय विज्ञान महाविद्यालय में प्रवेश दिलाने का निर्णय लिया। इस प्रकार वे नागपुर के साइन्स कालेज में जाने लगीं।"

● "वर्ष 1942-43 राजनीतिक गतिविधियों के कारण बहुत उथल-पुथल तथा परिवार के लिए भयानक कठिनाइयों का वर्ष था। श्री माताजी ने भी तत्कालीन आन्दोलन में भाग लिया, धरना देने के कारण उन्हें कालेज से निष्कासित कर दिया गया। उनका एक वर्ष ख़राब हो गया।"

● "वर्ष 1943-44 में श्री माताजी को लुधियाना के एक चिकित्सा स्कूल में प्रवेश मिला वहीं से उन्होंने सन् 1945 में मध्यवर्ती विज्ञान परीक्षा [Intermediate Science] उत्तीर्ण की। उन्होंने बहुत अच्छे अंक प्राप्त किए। ..... उन्हें बालक राम मेडिकल कालेज लाहौर में प्रवेश मिल गया।"

[मेरे संस्मरण]

आरंभ से ही श्री माताजी मानव उत्थान के लिए प्रयासरत थीं। उनके लिए अध्ययन एवं शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य मानव के स्वभाव को

समझना था –

"मुझे अत्यन्त आनंदमय व्यक्ति माना जाता था परंतु बहुत गंभीर और अत्यंत गहन व्यक्ति भी। मेरी शिक्षा आरंभ हुई, पढ़ाई में मेरी कोई अधिक दिलचस्वी न थी। यद्यपि पढ़ाई भी मैंने बहुत अच्छी तरह से की है। मैं महान व्यक्तियों की जीवनियों और इस प्रकार की पुस्तकें पढ़ा करती थी। बहुत छोटी आयु में मैंने बर्नार्ड शा [Bernard Shaw] को पढ़ा। लोग जब अपने पाठयक्रम की पुस्तके पढ़ते तो मैं बर्नार्ड शा की पुस्तकें पढ़ रही होती थी। पाठ्य की पुस्तकें पढ़ने में मेरी कोई रुचि न थी। मुझे लगता था कि ये सब बचकानी पुस्तकें हैं जिनमें पढ़ने के लिए कुछ भी नहीं है।"

मैंने अपने पिताजी से कहा कि मुझे चिकित्सा-विज्ञान पढ़ना है। उन्होंने पूछा 'क्यों'? मैंने कहा – "क्योंकि मुझे चिकित्सकों से बातचीत करनी है।" उन्होंने पूछा – "तो तुम्हें चिकित्सकों से बात करनी है?" "हाँ जी" मैंने उत्तर दिया।

"परन्तु ऐसा हुआ कि बचपन में जब मैं सात वर्ष को थी तो मेरे पिताजी कांग्रेसी थे। कांग्रेस की सदस्यता उन्होंने तब ली थी जब मैं चार वर्ष की थी। इसके पूर्व मेरे पिताजी पश्चिमी फैशन के अनुसार रहते थे, कांग्रेसी बनते ही उन्होंने पश्चिमी फैशन की सभी चीज़ें फेंक दी और फौज़ियों की तरह अत्यंत अनुशासित जीवन बिताने लगे। तब उन्होंने हमें भारतीय भाषायें पढ़वाईं, एक भारतीय पाठशाला में, मिशनरी स्कूल में नहीं। उन्होंने हमें संस्कृत भी पढ़वाई। मिशनरी लोग बहुत क्रूर थे। मेरे पिताजी जब कांग्रेसी बने तो मिशनरी स्कूल वालों ने हमें स्कूल से निकाल दिया था।"

"बाद में अपने घर से बहुत दूर मुझे अध्ययन के लिए जाना पड़ा। तब दो वर्ष मैंने विज्ञान पढ़ा और फिर चिकित्सा-विज्ञान का अध्ययन किया। यह पढ़ाई मैं पूरी न कर सकी क्योंकि तभी वर्ष 1947 में देश में दंगे भड़क उठे। कालेज बंद हो गया और चिकित्सा-विज्ञान की पढ़ाई में अब मेरी कोई दिलचस्पी न रही क्योंकि मैं वास्तव में जो जानना चाहती थी वह कुछ और था। विज्ञान की

मुझे अब आवश्यकता न थी।"

[९-७-१९८५, विएना]

"मैंने चिकित्सा-विज्ञान इसलिए पढ़ा क्योंकि मुझे चिकित्सकों से बात करके उन्हें समझाना होगा कि यह सब (मनुष्य शरीर की सूक्ष्म संरचना) क्या हैं। परंतु मैं नहीं जानती थी कि इसे किस नाम से बुलाया जाये क्योंकि नाम तो मनुष्य के दिए हुए हैं अतः मुझे इनका अध्ययन करना पड़ा। मनोविज्ञान के एक शब्द कोश का भी मैंने अध्ययन किया क्योंकि मैं ये भी जानती थी कि मुझे (आगे चलकर) मनोवैज्ञानिकों, चिकित्सकों और वैज्ञानिकों सबसे बातचीत करनी होगी क्योंकि उन लोगों का इस विषय में समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

[१९९२, हांगकांग]

अध्याय 4

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सान्निध्य में

श्री माताजी बहुत छोटी आयु से ही राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आ गई थीं और इन्हीं के सान्निध्य में वे बड़ी हुईं। श्री गाँधी जी महान आत्मा थे। श्री माताजी उनके सद्‌गुणों के कारण उनका सम्मान करती थीं, दोनों के सम्बन्धों में बहुत ही आत्मीयता थी। श्री गाँधी जी भी बालिका निर्मला के प्रबुद्ध विचारों एवं विलक्षण प्रतिभा से बहुत प्रभावित थे, उन्होनें उनके सूक्ष्म विवेक को पहचान लिया था।

श्री माताजी ने 'विएना' और 'हांगकांग' में पत्रकारों के साथ हुई भेंट-वार्ता में इसके विषय में विस्तार से बताया है --

"मेरे पिताजी कांग्रेसी थे। सात वर्ष की आयु में अपने पिताजी के साथ मैं महात्मा गाँधी से मिलने गईं। वे हमारे स्थान से सत्तर मील दूर रहते थे। पहली मुलाक़ात में ही महात्मा गाँधी ने मुझे बहुत पसन्द किया। कहने लगे, "इस बच्ची को यही छोड़ दो।"

वहाँ रूकने के लिए मैं अपने साथ कपड़े आदि कुछ भी न ले गई थी। मेरे पिता ने मेरे लिए सारा सामान वहीं भेज दिया। ..... मैं स्कूल जाने के लिए वापिस जाती और लौट कर वापिस महात्मा गाँधी के पास आ जाती। हर वर्ष ऐसा ही होता। वे मेरी चौड़ी मुखाकृति के कारण "नेपाली" कहकर बुलाते उन्होंने मेरा नाम ही नेपाली रख दिया। उन दिनों सभी लोग मुझे 'नेपाली' कहकर बुलाया करते थे। उनके सान्निध्य में मैं बड़ी हुई।

महात्मा गाँधी जी मुझे बहुत प्रेम करते थे। यद्यपि मैं छोटी सी लड़की थी फिर भी **वे समझ गए थे कि मुझमें कुछ विशेष है। वे मेरी बात को बहुत ध्यान पूर्वक सुनते थे आश्चर्य की बात तो ये थी कि कभी-कभी तो गम्भीर मामलों पर भी वे मेरी राय लिया करते थे,** जैसे एक दिन उन्होंने

मुझे प्रार्थना पुस्तिका में सुधार करने के लिए कहा। कहने लगे, "किस प्रकार मै इस शृंखला को लगाऊँ?" तो मैंने उन्हें इसे ठीक से लगाने के विषय में बताया और उन्होने इस पुस्तिका में प्रार्थनाओं को मेरे बताए अनुरूप सिलसिलेवार लगा दिया।

वे अत्यन्त प्रेममय और अच्छे व्यक्ति थे, बच्चों के प्रति वे अत्यन्त करुणामय थे। अन्यथा वे अत्यन्त सख़्त व्यक्ति थे, अपने तथा अन्य लोगों के प्रति अत्यन्त सख़्त थे, **अत्यन्त अनुशासित व्यक्ति।** वे सभी को प्रातः चार बजे उठाते और स्नान आदि करके ठीक पाँच बजे सबको प्रार्थना के लिए आना होता था। वे बहुत तेज़ चलते थे। उनके साथ मैंने भी बहुत तेज़ चलना सीख लिया क्योंकि उनके साथ तो तेज़ ही चलना पड़ता था।

श्री गाँधी जी बहुत कमाल के व्यक्ति थे। मैं उनसे बहुत कुछ सीखती थी। उनका एक विशेष गुण यह था कि वे पाखंडी बिल्कुल नहीं थे और न ही वे अन्य राजनेताओं की तरह से थे जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। वे स्पष्ट वक्ता थे और हमेशा स्वयं को परीक्षा में डाले रखते थे, यदि कभी वे कोई ग़लती करते तो तुरन्त अपनी ग़लती को स्वीकार कर लेते थे।

मैं जब बालिका थी, उस समय की एक महान घटना मुझे याद है। एक मीटिंग चल रही थी और हम लड़कियाँ लोगों को पानी आदि देने के लिए वहाँ बैठी हुई थी। जवाहर लाल नेहरू और मौलाना आज़ाद जैसे लोग वहीं पर थे। वे सभी लोग वहाँ बैठे हुए थे, किसी बात के बारे में सोच रहे थे कि अचानक श्री गाँधी जी बोल उठे, "मुझे आने में देर हुई है, आज हम दोपहर का भोजन यही करेंगे।" सभी कहने लगे, "हाँ हम भोजन यहीं करेंगे।"

उन्हें अतिथि गृह में जाना था जो बहुत दूर था। तब श्री गाँधी जी ने 'बा' के विषय में पूछा, वे जा चुकी थीं। वो उठे, भण्डार घर की चाभी हमेशा उनके पास रहती थी, उन्होंने भण्डार घर खोला और रसोई के ज़िम्मेदार व्यक्तियों को उपस्थित लोगों की संख्यानुसार ठीक से सामान नापने के लिए कहा। उन्होंने सारी चीज़ें नाप तोल लीं। सभी कुछ हो गया। चाभी उन्होंने वापिस ले ली और

जाकर आराम से बैठ गए। इन लोगों ने कहा, "बापू हम नहीं जानते थे कि आपको इतना कष्ट उठाना पड़ेगा इतनी दूर जाकर उन्हें खोजने का, सारा सामान तौलवाने का" तो गाँधी जी ने कहा- **"आप क्या सोचते हैं? ये मेरे भारत का रक्त है, मैं इस अन्न को बरबाद करने की आज्ञा नहीं दे सकता।"**

[साक्षात्कार - ९ जुलाई १९८५ विएना]

"श्री गाँधी जी मुझे बहुत पसन्द करते थे। मैं कभी उनके लिए संतरे का जूस बना देती और वो मेरे साथ छोटी-छोटी चीज़ों के बारे में बात करते। एक दिन मैंने उनसे पूछा कि आप सब लोगों को प्रातः इतनी जल्दी जागने के लिए विवश क्यों करते हैं? आप यदि उठना चाहते हैं तो अन्य लोगों को आप क्यों इतनी जल्दी उठाते हैं? ये मेरे लिए तो ठीक है परन्तु सभी को आप क्यों विवश करते हैं? गाँधी जी कहने लगे कि सभी को जल्दी उठना चाहिए। **हम अत्यन्त कष्टकर समय से गुजर रहे हैं। हमें बर्तानियों से लड़कर स्वतंत्रता प्राप्त करनी है। लोग यदि आलसी होंगे तो हम किस प्रकार ये कार्य कर पाएंगे? अतः मैंने उन्हें बताया कि हमारे अन्दर आन्तरिक अनुशासन होना चाहिए, मेरी इस बात से वे जान गए कि मैं विवेकशील व्यक्ति हूँ।**

श्री गाँधी जी पिता की तरह मुझे प्रेम करते थे और मेरा सम्मान भी करते थे। वे मुझसे सभी समस्याओं के बारे में बात कर लेते थे। अपने बहुत से गुणों से उन्होंने मुझे प्रभावित किया। उनके अन्दर सम्मान भाव था। वे अपने प्रति अत्यन्त सत्यनिष्ठ थे, ये मुझे बहुत अच्छा लगता था। स्वयं को वे कभी धोखा नहीं देते थे यह उनका महानतम गुण था। धन आदि मामलों में वे अत्यन्त सच्चे थे जो वे कहते थे वही करते थे। वे अपनी आलोचना किया करते थे।"

साक्षात्कारकर्ता ने श्री माताजी से प्रश्न किया था कि "महात्मा गाँधी के साथ मिलकर भी क्या आपने अपने संदेश (आत्मसाक्षात्कार विषयक) को बढ़ाने के विचार को जारी रखा?" श्री माताजी ने बहुत स्पष्ट रूप से उत्तर देते हुए कहा था -

"उस समय बात बिल्कुल भिन्न थी वह आपात काल था। उन्होंने आत्म साक्षात्कार की बात नहीं की ..... वो एक ऐसे व्यक्ति थे जो आपातकाल के

लिए उत्पन्न हुए थे, ऐसे समय पर जब भारत राजनैतिक रूप से स्वतंत्र होना चाहता था। राजनैतिक नेता के लिए आवश्यक नहीं है कि वह आत्मा और धर्म की चिन्ता करे, परन्तु वे हमारे भारत देश को योग भूमि मानते थे। हम धार्मिक लोग हैं, और यह बात उनके मन में थी कि लोगों में संतोष का वातावरण किस प्रकार बनाया जाए।"

"मैं सोचती हूँ कि लोगों में संतुलन स्थापित करना उनका मुख्य योगदान था। लोगों का संतुलन मुख्य चीज़ थी तथा उनमें भारतीयता का भाव पैदा करना और दास प्रवृत्ति, जो हम लोगों में उत्पन्न हो गई थी, उसे हमारे अन्दर से निकालना ताकि हम आत्म-तिरस्कार भाव को महसूस कर सकें।"

"कभी गाँधी जी ने मुझसे 'आत्मा' की बात नहीं की। कभी उन्होंने ध्यान-धारणा नहीं की क्योंकि वे आत्म साक्षात्कारी नहीं थे। उस समय वे आत्म साक्षात्कारी नहीं थे। **उनका कहना था कि पुनर्जन्म लेकर वे आत्म साक्षात्कार लेंगे और जन्मजात आत्मसाक्षात्कारी बनेंगे क्योंकि वे अत्यन्त अत्यन्त महान थे। नि:सन्देह वे महान आत्मा थे।** मानव के रूप में वे बहुत महान थे परन्तु आत्मसाक्षात्कार बिल्कुल भिन्न चीज़ है।" .....

संभवत: स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शायद वे आत्म-साक्षात्कार के कार्य का बीड़ा उठाते, उस समय स्वतंत्रता ही मुख्य समस्या थी। परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के विभाजन की समस्या खड़ी हो गई और सभी ग़लत चीज़ों की ओर गाँधी जी को पूरा चित्त केन्द्रित करना पड़ा। हम सबको बहुत सारी समस्याओं का समाधान खोजना था अत: उस समय किसी को भी आत्म साक्षात्कार की सुध न थी। ऐसा होना भी चाहिए था। .....

"फिर भी मैं कहूँगी कि उनकी भिन्न प्रार्थनाएँ जो चक्रों के अनुसार मैंने उन्हें बताई थीं और कहा था आप ये प्रार्थना करो, मेरी इच्छानुसार उन्होंने ऐसा किया। उन्होंने कहा था - "ठीक है, यह अच्छा विचार है। **और उन्होंने अपनी शैली बदली। ये सारा कार्य इतनी शान्ति एवं मौन पूर्वक हुआ कि किसी को पता भी न चल पाया कि हमारे अन्दर इन चीज़ों के विषय में इतना**

सामंजस्य है।"

[साक्षात्कार - हॉगकाग-१९९२]

महात्मा गाँधी जी को श्री माताजी के लक्ष्य के विषय में मालूम था परन्तु वे कहते थे कि "पहले देश को स्वतंत्र हो जाने दो, दास लोग मुक्ति की बात नहीं कर सकते। ..... उन्होंने मुझसे कहा था स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात तुम अपना सहजयोग प्रारम्भ करना।"

[21-3-95 दिल्ली]

श्री महात्मा गाँधी की मृत्यु के एक दिन पूर्व श्री माताजी उनसे मिली थीं। गाँधी जी ने उनकी नन्ही बेटी कल्पना को गोद में उठा कर कहा था - "नेपाली, तुम माँ बन गई हो, आज भी तुम वैसी की वैसी दिखायी पड़ती हो। कब तुम अपना आध्यात्मिक कार्य प्रारम्भ कर रही हो? **अब हम स्वतंत्र हैं और जो भी तुम करना चाहती थीं वो अब आरम्भ कर देना चाहिए।"**

[मेरे संस्मरण]

अध्याय 5

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में सक्रिय सहयोग

"आप जानते हैं मैंने स्वयं भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लिया, यह महत्त्वपूर्ण बात है।"

[६-६-१९९३, कबेला]

एक राष्ट्रवादी परिवार में कर्मठ देशभक्त माता-पिता के यहाँ श्री माताजी का जन्म लेना मात्र एक संयोग नहीं था, यह तो आदिशक्ति की पूर्व निर्धारित योजना थी। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम के समय ही उनका जन्म लेना, सात वर्ष की छोटी सी आयु में ही महात्मा गाँधी से जुड़ना और आदि से अंत तक इस स्वतंत्रता-आन्दोलन में उनकी उपस्थिति एवं सक्रिय सहयोग का अपना एक विशेष महत्व है। परोक्ष रूप से स्वयं जगज्जननी आदि शक्ति की असीम अनुकंपा व अनन्त आशीर्वाद से ही भारत देश को बर्त्तानवी शासन की दासता से मुक्ति मिलना संभव हो सका।

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में श्री माताजी ने जो सक्रिय सहयोग दिया है उसके अनेक प्रसंगों का उल्लेख "मेरे संस्मरण" में श्री बाबा मामा ने किया है -

● "बालिका निर्मला सामान्य दिनों में अपनी पढ़ाई-लिखाई को चालू रखतीं परंतु अपने माता-पिता के साथ वे राजनीतिक गतिविधियों में भी भाग लेतीं। एक बार जब वे केवल पाँच वर्ष की थीं तो उन्हें एक बहुत बड़ी सभा को संबोधित करने को कहा गया। बिना हिचकिचाहट या मंच-भय के उन्होंने देश-भक्ति के जोश से भाषण दिया और सबका दिल जीत लिया।"

● "चौदह वर्ष की नन्हीं आयु में श्री माताजी ने मातृ-भूमि के सम्मान में एक बहुत अच्छी कविता लिखी थी जिसको हम अन्य गानों के साथ गाया करते थे--

''माँ, तेरी जय हो, तेरी ही विजय हो,

तेरे गीत से आज ये जग जीवित हो,
माँ, तेरी जय हो।

तेरे गाँव के खेत भी गा रहे हैं
तेरे आज नगरों में जय-जय की धुन है,
तुम्हें देख के जगी दीन दुनिया, और वे गा रही हैं कि
माँ, तेरी जय हो।

जब आँखों में आँसू, जुबाँ पे थे छाले
ये दिल गा रहा था कि
माँ, तेरी जय हो,

चितायें हमारी गगन से भिड़ी थीं,
वहाँ लिख रहीं थीं कि
माँ, तुम्हारी जय हो।

माँ, तेरी जय हो, तेरी ही विजय हो,
तेरे गीत से आज ये जग जीवित हो,
माँ, तेरी जय हो।''

["परमात्मा के स्वरूप" पुस्तक से]

● "वर्ष 1942 के शुरू में गाँधी जी ने 'अग्रेज़ों भारत छोड़ो' आन्दोलन आरंभ करने का निर्णय किया। उन्होंने सभी कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं से कहा कि अंग्रेज़ी कानून से असहयोग एवं उसकी अवज्ञा को तेज़ कर दें। उस समय मेरे पिताजी ने अपने सरकारी वकील पद से त्याग-पत्र दे दिया..... उन्होंने उच्च न्यायालय के शिखर पर लगे यूनियन झंडे को हटाकर वहाँ भारत का तिरंगा फहरा कर ज़ोर से "वंदेमातरम्" का नारा लगाया और अपने झंडे को सलाम किया..... इस कार्य से अंग्रेज शासक ने मेरे पिता जी को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया।"

● 15 अगस्त 1942 में मेरे पिता जी जेल में थे और परिवार के सम्मुख आर्थिक समस्यायें थीं। इस स्थिति में भी श्री माताजी ने जो कि साइन्स कॉलेज में पढ़ रहीं थीं, कालेज छोड़ने का निर्णय लिया और कॉलेज के द्वार पर ही

धरना दिया..... उन्होंने कॉलेज में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों को रोकने का निर्णय किया।..... श्री माताजी के इस कार्य के लिये उन्हें कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया।..... उस समय कॉलेज के उपप्रधानाचार्य श्री कृष्णमूर्ति थे। उन्होंने ही अनिच्छा से श्री माताजी को निष्कासन पत्र पकड़ाया था। बाद में सन् 1991 में जब वृद्ध कृष्णमूर्ति श्री माताजी से मिले तो उनके चरणों को छू कर कहा कि अपने उस कार्य के लिए वे आज तक लज्जित हैं। ..... वे कहने लगे कि जब उन्होंने श्री माताजी को **निर्भीकतापूर्वक अंग्रेजी सिपाहियों और उनकी बंदूकों का सामना करते हुए देखा तो उनके मन में एक ही विचार आया था कि वे दुर्गा का अवतार हैं।''**

● श्री माताजी ने पुनः उर्सुला हाई स्कूल के सम्मुख धरना देने का निर्णय लिया ..... भारत का झंडा हाथ में पकड़ कर श्री माताजी स्कूल के मुख्यद्वार के सामने खड़ी हुई थीं और विशेष रूप से विद्यार्थियों से अनुरोध कर रहीं थी कि वे घर वापिस चले जायें। दूर दूर के इलाक़ों से बच्चों को लेकर आने वाली एक बस की वे प्रतीक्षा कर रहीं थी, ज्यों ही उन्होंने बस को आते हुए देखा तो वे स्कूल के गेट के ठीक सामने ज़मीन पर लेट गईं ताकि बस स्कूल के अहाते में प्रवेश न कर सके ..... स्कूल के अधिकारियों ने बस को गेट से सौ गज की दूरी पर ही रुकवा दिया ..... सिपाही आ गए ..... **श्री माताजी झंडा उठाकर नारे लगा रहीं थीं "अंग्रेज़ो भारत छोड़ो"।**

● तत्पश्चात वैन में बिठा कर श्री माताजी को थाने ले जाया गया और वहाँ बर्फ की सिल्लियों पर लिटा कर उन्हें यातनायें दी गईं। उन्होंने श्रीमाता जी को बिजली के झटके भी दिए। चेतावनी दे कर पुलिस ने श्री माताजी को छोड़ दिया कि यदि उन्होंने अंग्रेज़ी विरोधी नारे लगाये या किसी संस्था के सामने उन्होंने धरना दिया तो उन्हें जेल में डाल दिया जायेगा। "श्री माताजी की तुरंत प्रतिक्रिया यह थी कि बिना स्वतंत्रता के भारतीय पहले से ही जेल में हैं इसलिए वे भी जेल के अन्दर हों या बाहर, उन्हें क्या फर्क़ पड़ता है।"

● "श्री माताजी को कॉलेज से निकाला जा चुका था और राज्य के किसी अन्य कॉलेज में प्रवेश लेने की आज्ञा उन्हें न थीं। घर पर खाली बैठे रहना

उनके वश की बात न थी विशेष रूप से जब 'भारत छोड़ो आन्दोलन' शिखर पर था। **अन्ततः एक दिन उन्होंने एक ऐसे दल में सम्मिलित होने का निर्णय लिया जो गुप्त रूप से कार्य कर रहा था।** यह समूह पुस्तिकायें और पर्चे बाँट रहे थे तथा इश्तिहार लगा रहे थे.....

मुझे याद है कि श्री माताजी हमारे घर में ऐसे इश्तिहार जिनमें लोगों को अंग्रेज़ों के विरूद्ध जागृत करने की बातें थीं सँभाल कर रखती थीं और रात को किसी भी अटपटे समय पर वे चुपके से घर में घुसतीं, इश्तिहार उठातीं और चुपचाप बाहर निकल जातीं।

मुख़बिरों से अंग्रेज़ों को सूचना मिली कि हमारे घर में किसी प्रकार की सरकार विरोधी गतिविधि चल रही है अतः उन्होंने घर पर छापा मारा परंतु उन्हें कुछ भी प्राप्त न हुआ ..... ये इश्तिहार अनाज से भूसे के नीचे छिपा कर रखे जाते थे।

मेरे पिताजी ही कमाने वाले अकेले व्यक्ति थे इसलिए परिवार की आय कम हो गई थी। बच्चों को ठीक से भोजन देने के लिए और रोज़मर्रा के ख़र्चे को चलाने के लिए घर की चीज़ें एक एक करके बेची जाने लगी ..... मेरी माँ को अपने कुछ गहने भी बेचने पड़े ..... मेरी माताजी महात्मा गाँधी द्वारा चालित ग्रामोद्योग संस्था की एजेंट रूप में कार्य करती थीं।"

स्वतन्त्रता-संग्राम में श्री माताजी के गुप्त रूप से कार्य करने के दिनों की बहुत बातें हैं--

"एक बार उन्हें विस्फोटकों का एक ट्रंक अपने साथ ले जाना पड़ा, कई बार अपने मित्रों के साथ बुर्क़ा पहन कर घने जंगलों में छिपना पड़ा और दिल्ली में अपने देशभक्त परिचितों के घर छिप कर रहना पड़ा। ..... श्री माताजी ने क्रांतिकारियों को प्रायः सुरक्षित ठहराने की भी व्यवस्था की, उन्हें गुप्त रूप से भोजन पहुँचाया और एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का जोख़िम भरा कार्य भी किया ..... हर तरह के कष्ट उन्होंने सहे पर उन्होंने अपने बढ़े कदम वापिस नहीं लिए क्योंकि **उन्होंने तो अपनी मातृभूमि को अग्रेंज़ों के शिकंजे से मुक्त करवाने का बीड़ा उठाया था ..... एक बार वे नौ महीने तक**

फरार भी रहीं।

मेरे पिताजी स्वयं को सर्वाधिक गौरवशाली पिता मानते थे ..... श्रीमाताजी के लिए वे कहते थे कि "निर्मला झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई है जो अंग्रेज़ों से लड़ी थी।"

सच तो यह है कि श्री माताजी ने साक्षात देवी दुर्गा की तरह ही अंग्रेज़ी शासन के विरूद्ध लड़ाई लड़ी। महात्मा गाँधी के सान्निध्य में रह कर वे इतना तो समझ ही गई थीं कि सबसे पहले हमें अपनी स्वाधीनता प्राप्त करनी होगी, बिना विदेशी दासता से मुक्ति पाये हम अपनी किसी भी सामाजिक या आध्यात्मिक योजना को कार्यान्वित नहीं कर पायेंगे। श्री माताजी यह भी समझती थीं कि इस स्वतंत्रता-संग्राम में उन्हें भी एक सक्रिय भूमिका निभानी ही होगी। उन्होंने स्वयं यह बात स्पष्ट की है -

"मैं जानती थी कि जब तक मैं अत्यंत सकारात्मक भूमिका नहीं निभाऊँगी तब तक अन्य लोगों में ये कार्यान्वित न होगा। इसीलिए अत्यंत गंभीरतापूर्वक मैंने आन्दोलन में भाग लिया और वहाँ पर अग्रणी बन गई। उस समय मैं उन्नीस वर्ष की युवा लड़की थी। किस प्रकार उन्होंने मुझे तकलीफें दीं ये बताना शिष्टता न होगी। उन्होंने मेरे साथ क्या किया? वास्तव में उन्होंने मुझे बहुत सताया।"

[साक्षात्कार, विएना ९-७-१९८५]

अन्ततः सभी देशवासियों के निरंतर संघर्ष एवं आदिशक्ति के आशीर्वाद से 14 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को भारत स्वतंत्र हो गया तथा तीन सौ वर्षों की दासता का अंत हुआ।

"डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्र भारत की संविधान सभा के अध्यक्ष थे और जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री। वे दोनों मंत्रालय के सदस्यों के साथ पावन अग्नि, जो कि वैदिक रीति के अनुसार प्रज्ज्वलित की गई थी, के इर्द-गिर्द घूमे। पुजारी मंत्रों द्वारा त्रिदेवों की स्तुति कर रहे थे। मैं सोचता हूँ प्रतीकात्मक रूप से वे लोग आदि शक्ति की ही स्तुति कर रहे थे। सारा राष्ट्र उल्लासित था।"

[बाबा मामा - मेरे संस्मरण]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब श्रीमाता जी का सहजयोग विश्व के सौ से

अधिक देशों में फैल गया था तब उन्होंने अपने तिरसठवें जन्मदिन पर उन कठिन संघर्ष के बीते हुए दिनों की यादें दुहराते हुए बहुत ही भावुक होकर अवरूद्ध कंठ से अपने सहजी परिवार से कहा था –

"आप मेरा जन्मदिन मना रहे हैं। आज मेरा पूजन है, तो आज मेरा पूजन कृपया हृदय से कीजिए। यह मैं इस उम्र में माँग रही हूँ, इतना तो मुझे दीजिए। हृदय में एक ही बात कहनी है कि आपकी श्री माताजी वीरों की माता हैं, भगोडों की नहीं।"

गाँधी जी ने केवल स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी तो हमारे पिता जी जैसे लोग जंगल जंगल घूमे, हम राजमहलों में पले लोग, कितना सहन किया, आपको तो आश्चर्य होगा। हमारी पढ़ाई के लिए पैसे नही थे, कुछ भी नहीं, घर के ज़ेवरात बेचकर हमारी माँ ने हमें पढ़ाया, ऐसी स्थिति में हम रहे और ये 'सहजयोग' उससे कहीं बड़ा है, सारे विश्व की स्वतंत्रता की ये बात है और उस हिसाब से हम कर क्या रहे हैं?... ... हमें कुछ करके दिखाना है, हमारे होते हुए कुछ करके दिखाना है।"

[२-४-१९८५ बबंई]

"जब हमने स्वतंत्रता प्राप्त की तब हमने बर्तानवी झंडा हटाये जाने के पश्चात् इस तिरंगे झंडे को ऊपर जाते हुए देखा। मैं बता नहीं सकती उस वक़्त कौन सी भावना थी कि आख़िरकार सत्य ने असत्य पर विजय प्राप्त कर ली है, न्याय ने अन्याय पर जीत प्राप्त कर ली है। आज भी यही भावना इतनी अधिक है मैं झंडे को देख भी नहीं सकती। इसे देखते ही मुझे पूरा इतिहास याद आ जाता है पूरा दृश्य मेरे सामने आ जाता है कि कितने लोगों ने बलिदान किया, कितने लोग शहीद हुए। लोगों ने इसके लिए कितना संघर्ष किया? झंडा उन्हीं के सम्मान में है और आप भी उन्हीं सब चीजों के आधार हैं। आप सब भी उन्हीं आदर्शों उन सब बलिदानों तथा मानव के हित में प्राप्त की जाने वाली उपलब्धियों के लिए हैं। अन्य लोगों के लिए आपको बहुत कुछ प्राप्त करना होगा।''

[२१-३-२००१ नई दिल्ली]

अध्याय 6

आनन्दमय वैवाहिक जीवन

''मेरा विवाहित जीवन आनंदमय है।''

[चै. ल. १९९९]

स्वतंत्रता-प्राप्ति के लगभग चार माह पूर्व 7 अप्रैल 1947 को युवा निर्मला का विवाह कायस्थ परिवार में श्री चन्द्रिका प्रसाद श्रीवास्तव के साथ हुआ।

श्री बाबा मामा ने उनके वैवाहिक जीवन के संबंध में बताया है -

"माननीय सी.पी. श्रीवास्तव जी हिन्दुओं की कायस्थ जाति से संबंधित थे जो लखनऊ के समीप उन्नाव नामक छोटे से कस्बे का प्रसिद्ध ज़मींदार परिवार था। श्री सी.पी. जी का शैक्षिक जीवन अत्यंत शानदार था तथा स्कूल और विश्वविद्यालय में वे सदैव प्रथम रहे, उन्हें कानून की अंतिम परीक्षा में स्वर्णपदक प्राप्त हुआ।

श्री सी. पी. जी श्री माताजी के बड़े भाई नरेन्द्र के मित्र थे, यद्यपि उनका पालन-पोषण कट्टर परंपराओं के अनुरूप हुआ परंतु वे स्वयं बहुत उच्च विचारों के थे इसलिए ईसाई परिवार की श्री माताजी से विवाह करने में श्री सी. पी. को कोई कठिनाई न हुई। यद्यपि उनके रूढ़िवादी संबंधियों को उनका विवाह स्वीकार्य न था, इसी कारण उनके बहुत कम संबंधी विवाह-समारोह में सम्मिलित हुए।"

"यह विवाह अदालत में होना था इसलिए हिन्दू शैली में या ईसाई शैली में कोई भी रस्में न होनी थीं, बस केवल हल्दी की रस्म हुई थी। मुझे याद है कि विवाह के समय श्री सी.पी. जी रेशम का सूट पहने हुए थे और श्री माताजी ने ज़री के काम वाली लाल साड़ी पहनी हुई थी।

विवाहोपरान्त वहाँ उपस्थित तत्कालीन वित्तमंत्री जो मेरे पिताजी के दोस्त थे, ने वर-वधू की सलामती का जाम पीने का प्रस्ताव रखा था तब श्री

सी. पी. जी ने जो उत्तर दिया वह भी मुझे याद है – "पश्चिम में लोग पहले प्रेम करते हैं और विवाह के पश्चात प्रेम को भूल जाते हैं पर पूर्व में लोग पहले विवाह करते हैं और विवाह के पश्चात प्रेम करते हैं, उन्होंने तो अपनी प्रेमिका से विवाह किया है तथा विवाह के पश्चात भी वे प्रेम करते रहेंगे।" उनके इस उत्तर पर सभी ने तालियाँ बजाई परंतु श्री माताजी लज्जा से लाल हो गईं।"

● विवाह के पश्चात कुछ दिन श्री माताजी हमारे साथ रुकीं और उसके पश्चात अपने नए निवास स्थान दिल्ली चली गईं ..... 22 दिसम्बर 1947 को ग्वालियर के विक्टोरिया मेमोरियल अस्पताल में श्री माता जी ने अपनी प्रथम कन्या शिशु कल्पना को जन्म दिया। 17 फरवरी 1950 को श्रीमाता जी की दूसरी बेटी साधना का जन्म हुआ।"

● "श्री सी. पी. जी को भारतीय विदेश सेवाओं और भारतीय प्रशासनिक सेवाओं दोनों के लिए चुन लिया गया था और उन्हें इन दोनों में से एक का चयन करने की छूट दी गई थी। उन्होंने जब यह बात श्री माताजी को बताई तो श्री माताजी ने कहा – **"देश में रह कर राष्ट्र की सेवा करना विदेश में पद लेने से कहीं बेहतर है।"**

इसका अर्थ बहुत सी आर्थिक हानि था पर राष्ट्रवादी होने के कारण श्री माताजी ने श्री सी. पी. को भारतीय प्रशासनिक सेवा की नौकरी करने के लिए सहमत कर लिया ..... उन्हें उत्तर प्रदेश के आई. ए. एस. सेवा स्तर के लिए चुन लिया गया और लखनऊ में मजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त किया गया। लखनऊ में दो वर्ष रहने के पश्चात श्री सी.पी. श्रीवास्तव अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट के पद पर मेरठ चले गये ..... इसके बाद वे जहाजरानी निगम के मुख्य निर्देशक बन गए थे इसलिए श्रीमाताजी बम्बई आ गई थीं।"

● वर्ष 1958 में श्री सी. पी. जी दिल्ली आ गए थे और श्री लाल बहादुर शास्त्री जी, जो उन दिनों वाणिज्य मंत्री थे, के साथ कार्यरत थे। ..... श्री जवाहर लाल नेहरू की मृत्यु के पश्चात जब श्री लाल बहादुर शास्त्री जी देश के प्रधानमंत्री बने तब वे उनके निजी सचिव के रूप में उनके साथ थे।"

● "सन 1972 में अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय संस्था [I.M.C.D. International Marines Coordinating Organization] के अध्यक्ष चुने गए जिसका मुख्यालय लंदन में था। सन् 1974 में श्रीमाता जी अध्यक्ष की पत्नी के रूप में इंग्लैड गई।"

[मेरे संस्मरण]

अपने प्रवचनों में श्री माताजी ने अपने मधुर वैवाहिक जीवन की अनेक खट्टी-मीठी स्मृतियों की बड़ी सहजता से चर्चा की है --

"मेरा विवाह एक ऐसे परिवार में हुआ था जिसमें सौ सदस्य थे। सभी मुझसे बहुत प्रेम करते हैं। मैं कभी यदि लखनऊ मिलने चली जाऊँ तो वे सब मुझसे मिलने आते हैं परंतु मेरे पति यदि वहाँ जायें तो कोई नहीं आता। मेरे पति को इस बात की बहुत शिकायत है कि वे उनके संबंधी हैं परन्तु मुझे मिलने आते हैं उन्हें नहीं। मैंने यदि उन्हें प्रेम न दिया होता, उनकी ज़रूरतें न पूरी की होतीं तो वे मेरे पास क्यों आते?"

[१४-८-८८]

"अपने पति श्री श्रीवास्तव जी के विषय में बात करना एक प्रकार से अत्यंत उलझन पूर्ण कार्य है। उनका सहयोग यदि मुझे न प्राप्त होता तो मैं कुछ भी न कर पाती ..... मुझे उनसे अधिक मूल्यों का सम्मान करने वाला व्यक्ति जीवन में अभी तक नहीं मिला।

वे अत्यंत ईमानदार व्यक्ति हैं ..... वे अत्यंत अनुशासित व्यक्ति हैं समय के विषय में वे अत्यंत मर्यादित हैं। अन्य लोगों का सम्मान करने के बारे में, अपना कार्य करने के विषय में, हर बात बोलने के विषय में वे अत्यंत सावधान रहते है। सहजता उनके अंदर अन्तर्जात है।

वे आदर्शवादी हैं। अपने आदर्शों के कारण उनका बहुत सम्मान हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय विश्व में उन्होंने अपनी एक तस्वीर बनाई है, मुझे उन पर गर्व है।"

[१४-१-१९८०]

"मेरे पति को 135 पुरस्कार दिए गए हैं। उनकी दो पुस्तके अत्यंत प्रसिद्ध

हुईं – भ्रष्टाचार भारत का आन्तरिक शत्रु [Corruption India's enemy within] और लाल बहादुर शास्त्री– राजनीति में सत्यनिष्ठ जीवन।"

[२१-३-९०]

● "एक बार हम दोनों शिमला गए। वैसे तो श्रीवास्तव जी बहुत बहुत ईमानदार व्यक्ति हैं लेकिन वहाँ शिमला में, चाहे हम शतरंज खेल रहे हों, या कोई और खेल या कुछ और वे हर समय मुझे चीट करने की कोशिश करते। मैंने कहा– "यह क्या हो रहा है? यहाँ एक इतना ईमानदार व्यक्ति मुझे चीट कर रहा है" उन्होंने मुस्करा कर कहा 'यह जायज़ है, यदि तुम अपनी पत्नी को चीट करते हो तो यह एलाउड है।' तब एक बार हम कुछ चेरी खरीदने घूमने गए। हम दोनों ही चेरी के बहुत शौक़ीन हैं। हम लोगों ने तय किया कि हम आधी आधी चेरी ले लेंगे पर श्रीवास्तव जी ने मेरे हिस्से में अधिक और अपने लिए कम रखीं। मैंने कहा– "यह क्या चीटिंग है? आप इतनी कम क्यों ले रहे हैं?" "क्योंकि तुम्हें चेरी पसन्द है इसलिए"। मैंने कहा "आपको भी तो पसन्द है लाइए हम एक दूसरे से बदल लेते हैं" इस प्रकार हम दोनों में खूब बहस हुई।"

[३-१२-९४ न्यू देहली]

● "लखनऊ में मेरे पति मजिस्ट्रेट थे। एक बार मैं वहाँ पुस्तकालय गई हुई थी, लौटने के लिए जब मैं बाहर आई तो वर्षा हो रही थी कोई रिक्शा भी न था। सरकारी नौकर होने के कारण व्यक्ति ग़रीब होता है और बहुत सी चीज़ों का सामर्थ्य उनमें नहीं होता। अचानक मैंने अपने पति को पुलिस जीप में आते देखा और रोका। वे कहने लगे– "मैं किसी आवश्यक कार्य से जा रहा हूँ, रुक नहीं सकता और न ही तुम्हें इस सरकारी जीप पर ले जा सकता हूँ।" मैंने कहा ठीक है, आप जाइए। मेरे पति के लिए ईमानदारी इतनी महत्त्वपूर्ण है।"

[३१-३-१९९५]

"मेरे पति एक ईमानदार सरकारी नौकर थे। एक बार हमारे घर में चोरी हो गई, सात वर्षों तक मैं केवल एक रेशमी साड़ी पहनती थी। मेरे पास सूती वस्त्र थे पर जहाँ कहीं भी जाना होता मैं केवल वही एक मात्र साड़ी पहनती, पर इस

बात का किसी को भी पता नहीं चला, केवल मेरे पति यह जानते हैं।"।

[४-१२-१९९४]

● एक बार मैं सी. पी. जी के दफ्तर में गई। वहाँ लोगों ने अपने कोट के बटन बंद करने शुरू कर दिए। मैंने पूछा कि 'वे लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं?' उन्होंने उत्तर दिया – "अचानक जब उन्होंने आपको देखा तो सम्मान दर्शाने के लिए वे अपने कोट के बटन बंद करने लगे, वे ये न जानते थे कि मैं श्री सी. पी. की पत्नी हूँ परन्तु उनके मन में सम्मान भाव था। उन्होंने तुम्हें देखा, तुम्हारा चेहरा सम्माननीय है, तुम्हारी जैसी महिला को देखकर उन्हें बहुत राहत मिली।"

[६-९-१९८४]

अपनी पत्नी के प्रति श्री सी.पी. श्रीवास्तव के भाव-भीने उद्‌गार –

"निर्मला जी एक आदर्श पत्नी हैं जो न केवल मुझ पर तथा अपने बच्चों पर अपना अथाह प्रेम एवं स्नेह की वर्षा करती हैं बल्कि उन सब बच्चों से भी समान रूप से प्रेम करती हैं जो हमारे यहाँ आश्रय एवं सुख के लिए आते हैं।"

सरकारी अधिकारी के रूप में नौकरी के आरंभिक दिनों में मेरा वेतन सीमित था परंतु वे उपलब्ध साधनों में ही अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक गृहस्थी चलाती थीं। उन्हीं के निरन्तर उत्साह और आश्रय कारण ही मैं अपने परिवार का सत्य और निष्ठापूर्वक उच्च स्तर बनाए रख सका। समय व्यतीत होने के साथ साथ मेरी पदोन्नति हुई और हालात सुधरे **परन्तु इन सब स्थितियों में उन्होंने ऐसे गुणों का प्रदर्शन किया जो भारतीय शास्त्रों में केवल महालक्ष्मी और सरस्वती में वर्णन किए गये हैं।**

मेरा परिवार दकियानूसी विचारों से परिपूर्ण था परन्तु **निर्मला के धैर्यशील, सावधानी पूर्ण एवं प्रेममय व्यवहार तथा सभी लोगों के प्रति हार्दिक आदर सत्कार ने बिना किसी देरी के उनके हृदय जीत लिए** और पारिवारिक संगणना बन गईं। वो अपना सब कुछ दे देतीं पर बदले में कुछ भी आशा न करतीं।

हमारे सहज जीवन के प्रारंभिक दिनों से ही निर्मला बहुत सी सामाजिक

और मानवीय गतिविधियों को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाया करती थीं। मेरठ जिले में उन्होंने एक कुष्ठ-गृह स्थापित किया और चलाया, बम्बई में उन्होंने अपाहिज़ों विशेषकर नेत्रहीनों के लिए हितकर गतिविधियों का आयोजन किया। बच्चों की फिल्म सोसायटी और हिन्दी नाटक की तो वे पथप्रदर्शिका थीं।

निर्मला ने सदैव सभी सांस्कृतिक गतिविधियों विशेष रूप से शास्त्रीय संगीत, नृत्य, नाटक और चित्रकला में गहन रुचि ली। जब मैं जहाज़रानी निगम नामक राष्ट्रीय उद्यम का अध्यक्ष था तो निगम के विदेशी अतिथियों के लिए किए जाने वाले कार्यक्रमों की वे जीवन और आत्मा हुआ करती थीं।

उनके जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष सन् 1970 में आरंभ हुआ जब उन्होंने सहजयोग की स्थापना की तथा केवल अपने ही प्रयासों से इसे जन आन्दोलन बना दिया।

निर्मला देवी के गरिमामय व्यक्तित्व के बहुत से अन्य पहलू भी हैं। उन्हें विश्व के सभी मुख्य धर्मों के पावन ग्रंथों का ज्ञान है इसीलिए अत्यंत सुगमतापूर्वक उन्होंने सभी धर्मों का मूल तथा सार तत्त्वों का मानव के लिए प्रेरणात्मक दर्शन के रूप में समन्वय किया।

वे सशक्त वक्ता हैं तथा अपने विचारों को अत्यंत सहजता पूर्वक अन्य लोगों में संचारित कर सकती हैं। हज़ारों लोगों की विशाल भीड़ श्वास रोक कर उन्हें सुनती है। कथायें, घटनायें तथा दृष्टांतो को वे सुगमता, स्पष्टता एवं गति से वर्णन कर सकती हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो वे ज्ञान के स्रोत से निरंतर संपर्क में हों जिसका वर्णन आइंस्टाइन ने संभवतः ऐंठन क्षेत्र [Torso Area] के रूप में किया है।

['मेरे संस्मरण' की प्रस्तावना से]

''कहा जाता है जोड़े स्वर्ग में बनाए जाते हैं, मेरे मामले में यह कथन बिल्कुल सत्य हैं। **मैं ब्रह्मांड का सबसे भाग्यशाली व्यक्ति हूँ। आपकी माता जी अद्वितीय पत्नी हैं।** अत्यंत स्वादिष्ट खाना खिलाकर और हर समय

देखभाल करके इन छप्पन सालों में इन्होंने मुझे बिगाड़ दिया है। इन्हीं की उदारता के कारण मैं अपने दफ्तर में कठोर परिश्रम कर पाया परंतु घर आने पर मुझे सब कुछ आनंदमय प्राप्त हुआ।

मेरे सभी संबधियों के प्रति वे अत्यंत करुणामय हैं ... ... उन्होनें एक पूर्ण पत्नी की भूमिका निभाई और मैं यह कहना चाहूँगा कि इसके साथ उन्होंने एक पूर्ण माँ और अब नानी माँ की भूमिका निभाई। अब वे मानव के लिए जो कुछ कर रही हैं उस पर मुझे गर्व है और संतोष है। मैं ये कहना चाहूँगा कि वर्षों पूर्व जब हमारी दोनों बेटियाँ छोटी थीं तो हम दोनों ने निर्णय किया कि हम उनका ठीक प्रकार से पालन-पोषण करेंगे, उन्हें पढ़ाये लिखायेंगे और ये देखेंगे कि विवाह के पश्चात उन्हें सुख शांति से परिपूर्ण जीवन प्राप्त हो केवल तभी वे अपने विशाल मानव परिवार के प्रति स्वयं को समर्पित करने के लिए स्वतंत्र होंगी। उन्होंने (श्री माताजी ने) अपना वचन निभाया और मैंने अपना।''

[७-७-२००३ विवाह की छप्पनवीं बर्ष गांठ पर]

वस्तुतः श्री माताजी ने एक देश प्रेमी भारतीय नारी की भूमिका बहुत ही गरिमापूर्वक निभाई। उन्होंने एक कर्त्तव्यनिष्ठ बेटी, स्नेही बहन, शुभचिन्तक मित्र, प्रिय पत्नी, ममतामयी माँ और वात्सल्यमयी नानी सभी सांसारिक संबंधो के निर्वाह में हमारे समक्ष एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। इसके साथ ही साथ वे अपने मूल उद्देश्य के लिए निरंतर कार्यरत रहीं।

श्री माताजी का मूल उद्देश्य था विश्व में सभी मनुष्यों का पूर्ण आंतरिक परिवर्तन, इसके लिए वे बचपन से ही चिन्तन एवं अथक परिश्रम करती रहीं, उन्होंने सामूहिक रूप से लोगों की कुण्डलिनी जागरण की विधि खोजी, सहजयोग की स्थापना की और फिर अपने ही प्रयासों से इसे विश्वव्यापी आन्दोलन बना दिया। श्री माता जी को इसके लिए बहुत ही कठिन संघर्ष करना पड़ा पर वे अपने निश्चय पर अडिग रहीं और अन्ततः उन्होंने मनुष्य को उसकी उत्क्रांति के चरम शिखर तक पहुँचा दिया।

श्री माताजी
का अनवरत संघर्ष
(देश-विदेश में सहजयोग की स्थापना)

सर्वज्ञानी, सहजयोगदायिनी, गुरुमूर्ति श्री माँ

"मेरे जीवन से आप यह बात महसूस कर सकते हैं कि मैं बहुत परिश्रम करती हूँ, बहुत यात्रा करती हूँ क्योंकि मुझमें इच्छा है कि मुझे इस विश्व को आनंद, प्रसन्नता तथा दिव्यता की उस अवस्था तक लाना है जहाँ लोग अपनी गरिमा और अपने परमपिता के गौरव को महसूस कर सकें। अत: मैं कठोर परिश्रम करती हूँ, कभी नहीं सोचती कि मुझे कुछ हो जायेगा"

[परम पूज्या श्री माताजी १०-५-१९९२]

अध्याय 7

श्री माताजी के अवतरण का उद्देश्य और उनकी क्रांतिकारी खोज

श्री माताजी का मूल उद्देश्य था मनुष्यों का पूर्ण आन्तरिक परिवर्तन। वे तो अपने बचपन से ही जानती थीं कि उन्हें ही यह महान कार्य करना है। अपने **इस अवतरण की आवश्यकता एवं महत्त्व के विषय में उन्होंने स्वयं बताया है** -

''मैं आदिशक्ति हूँ। आदि शक्ति ही यह कार्य कर सकती हैं क्योंकि वे सब चक्रों (मानव शरीर में स्थित) का कार्य जानती हैं। उन्हें मानव जाति में आकर मानव रूप में अवतरण लेना पड़ा जिससे कि वे समझ सकें कि मानव के अन्दर क्या क्या दोष हैं, और फिर वो दोष निकालने के लिए क्या क्या करना चाहिए। इन दोषों के रहते हुए भी कुंडलिनी-जागरण कैसे हो जाए? कैसे ब्रह्मनाड़ी में से कुंडलिनी को जागृत कर दिया जाए जिससे कि मनुष्य आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त कर ले ..... जिस परमात्मा ने यह सृष्टि बनाई है, जिसने ये सारा संसार रचा है, वे कभी नहीं चाहेंगे कि यह संसार मनुष्य के हाथों बर्बाद हो इसलिए यह कार्य अत्यंत विशाल है ..... काफी मेहनत का कार्य है पर यह सिर्फ माँ ही कर सकती है, माँ की ही शक्ति है जो इस कार्य को कर सकती है और उसमें प्यार, सहनशीलता और सूझ-बूझ न हो तो वह कर ही नहीं सकती, इसलिए मेरे इस अवतरण की बड़ी महत्ता है।

..... ये कार्य ऐसा था जिसमें सभी देवी-देवताओं का सभी अवतारों का और सभी महापुरुषों का, सबका आना ज़रूरी था, अपने शरीर में उन्हें धारण करके इस संसार में अवतरित होना था और इसीलिए मेरा यह अवतरण हुआ **सारे संसार का उत्थान जो होना है।**''

श्री माताजी तो जगज्जननी आदि शक्ति हैं। उन्होंने ही मनुष्य का सृजन किया है। वे उसके विषय में सब कुछ जानती हैं, मनुष्य का भविष्य तो उन्होंने ही निर्धारित किया है और **वे ही उसकी वर्तमान की सभी समस्याओं का**

समाधान करेंगी। वे बता रही हैं --

''मनुष्य ही पूरी सृष्टि में सबसे अधिक विकसित जीव है तथा उसमें गरिमामय व्यक्तित्व तथा सुंदर एवं शान्त देवदूत बनने की योग्यता है।''

''मेरे लिए अधिकतर मनुष्य उन देवी-देवताओं की तरह से हैं जो पाषण मूर्तियों के रूप में हैं और जिन्हें कुंडलिनी जागृति द्वारा फरिश्ते बनाया जा सकता है।''

''मनुष्य की सभी समस्याओं का सच्चा समाधान तो मानव की बाह्य भौतिक परिस्थितियों में न हो कर उसके अंदर विद्यमान है, सभी दोषों का सच्चा तथा स्थायी समाधान केवल मानव के आन्तरिक एवं सामूहिक परिवर्तन में खोजा जा सकता है।''

[परा आधुनिक युग]

श्री माताजी ने कुंडलिनी-जागरण की विधि खोजने एवं मनुष्यों को सामूहिक आत्मसाक्षात्कार देने के लिए किए गए अपने अनवरत प्रयासों एवं अनुभवों की चर्चा विस्तार से की है -

''मैं जब छोटी थी तो मैंने अपनी माँ से कहा - ''मैं तो ऐसा चाहती हूँ माँ, कि दुनिया के हर आदमी का परमात्मा से एकाकार हो जाए, कम से कम कुछ तो हो जाए।'' तो मेरी माँ मुझसे कहतीं - ''बेटी, तू अगर एक से दूसरा भी बना ले तो मैं तुमको धन्य समझूँगी।''

और मेरे पति भी शुरू में मुझसे यही कहते थे - 'तुम तो अवलिया हो लेकिन तुम दूसरों को अपना जैसा बनाने का प्रयत्न मत करो, ये बड़े पत्थर लोग हैं।''

[२-४-१९९५]

"मैं जब छोटी थी तो अपने पिता से कहती थी कि मैं चाहती हूँ जैसे आकाश में तारे हैं ऐसे दुनिया में अनेक लोग तारे जैसे चमकें और परमात्मा का प्रकाश फैलायें।" मेरे पिताजी कहने लगे "हो सकता है। तुम सामूहिक चेतना जागृत करने की व्यवस्था करो और कुछ भाषण मत दो, कुछ लिखो नहीं, नहीं तो दूसरा बाइबिल तैयार हो जायेगा, दूसरा, क़ुरान तैयार हो जायेगा और एक

झगड़े की चीज़ शुरू हो जायेगी सो इससे पहले तुम सामूहिक चेतना करो।"

[२१-३-१९९७]

''जब मैं जन्मी तो मैंने देखा कि पूरे विश्व में लोगों ने एक नई दिशा में जाना आरंभ कर दिया है, परमात्मा या आध्यात्मिकता पर विश्वास करने के स्थान पर वे धन और सत्ता में विश्वास करने लगे हैं। इस संकट की घड़ी में मैं कहना चाहूँगी कि मेरे पिता जी जो कि महान उन्नत आत्मा थे, मेरी सहायता को आए और उन्होंने पूछा – ''तुम अपने जीवन का लक्ष्य जानती हो''? मैंने कहा – ''मैं यह लक्ष्य जानती हूँ।'' तब उन्होंने कहा – **''तुम इमारत की सातवीं मंज़िल पर खड़ी हो और वहाँ से पृथ्वी पर खड़े लोगों को देख रही हो। उन्हें किस प्रकार विश्वास होगा कि तुम सातवीं मंज़िल पर हो?यदि किसी तरह से तुम उन्हें पहली या दूसरी मंज़िल तक भी उठा दो तो वे सोचने लगेंगे कि कोई उच्च अवस्था है जिसे उन्होंने प्राप्त करना है।''**

''मेरे पिताजी ने आगे समझाया – ''कोई भी खोज जो व्यक्तिगत है उसे सामूहिकता तक लाना होगा अन्यथा वह अर्थहीन है, उससे कोई लाभ न होगा।'' मैंने उन्हें बताया – **''मैं जानती हूँ कि मेरा कार्य एक ऐसी विधि खोजना है जिसके द्वारा वास्तव में सामूहिक आत्मसाक्षात्कार दिया जा सके।''** यह सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए।

इस प्रकार मैंने बहुत से मनुष्यों पर कार्य आरंभ किया। पिता जी के साथ मेरा जीवन बहुत से सामाजिक संबंधो से पूर्ण था क्योंकि वे महान स्वतंत्रता सेनानी थे और बाद में वे संविधान सभा, केन्द्रीय सभा के सदस्य बन गए। उनके बहुत से मित्रों, उनकी पत्नियों और बच्चों से मैं मिली और **अपने सूक्ष्म ढंग से देख पाई कि उनकी गतिहीन स्थिति के लिए कौन सी समस्यायें ज़िम्मेदार हैं।** मानव की समस्याओं को खोजना एवं इन पर शोध करना मैंने आरंभ कर दिया।

वर्ष 1946 के अंत में मैं इस परिणाम पर पहुँची कि मुझे यह कार्य अत्यंत चुपके से करना होगा और अपनी अंतर्गत विधियों के माध्यम से खोज निकालना होगा कि मनुष्य के चक्रों तथा नाड़ियों में समस्या का मुख्य कारण

क्या है।''

[परा आधुनिक युग]

''मैंने बहुत मेहनत की। हर एक आदमी की ओर ध्यान दिया देखा और समझा कि इस आदमी में कैसे दोष हैं। फिर उसका वर्गीकरण किया, अलग-अलग उनको बिठाया फिर उसका विश्लेषण किया। हज़ारों लोग जो जीवन में आए, जिनके बारे में मैं पढ़ती थी, मैं जब छोटी थी तो हमेशा लोगों की जीवनी पढ़ती थी ..... हमेशा हम जीवनियाँ पढ़ते थे। पिछले जीवन में इनको कौन से प्रश्न आए? इसका हल उन्होंने कैसे निकाला? यह आदमी कैसा होगा? इसकी प्रकृति कैसी होगी? इस प्रकार अनेक जीवनी मैं पढ़ती रहती थी।. ..... और जब मैं ये पढ़ने लगी और देखने लगी तब मैंने सोचा कि मैं जिस कार्य के लिए संसार में आई हूँ वह मुश्किल न होगा। सामूहिक चेतना संसार में आनी चाहिए और लोगों की कुंडलिनी जागृत होनी चाहिए। ये कार्य मैं संसार में करके जाऊँगी।

[२-४-१९८५]

''अत: यह (कुंडलिनी-जागरण के) तरीक़े मैं खोज रही थी। मेरी अपनी ध्यान-धारणा की शैली से **मैं इसे अपने अन्दर कार्यान्वित कर रही थी ताकि सभी क्रम परिवर्तन और संयोजन [Permutation & Combination] को कार्यान्वित कर लूँ तथा जब किसी व्यक्ति से मिलूँ तो जान सकूँ कि उसमें क्या समस्यायें हैं और इन समस्याओं को दूर कैसे किया जा सकता है।''**

"मैंने मानव मस्तिष्क की सूक्ष्मताओं का अध्ययन करना आरंभ किया ताकि मैं देख सकूँ कि किस प्रकार मैं उनकी कुंडलिनी उठाऊँ और किस प्रकार उन्हें आत्मसाक्षात्कार दूँ। ..... मैंने पाया कि मनुष्यों में क्रम-परिवर्तन और संयोजन की बाधायें हैं और यदि मुझे लोगों को सामूहिक आत्मसाक्षात्कार देना है तो मुझे एकदम से इन बाधाओं पर क़ाबू पाना होगा अर्थात एक ही प्रवचन में हज़ारों लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्रदान करने का कार्य सम्पन्न करने की योग्यता मुझमे होनी चाहिए ..... मानव मस्तिष्क के इस अध्ययन में मुझे समय लगा।''

[९-७-१९८५, ५-९-१९८४]

''मैं बहुत से लोगों से मिली ..... लोगों की चाल-ढाल देखकर मुझे सदमा पहुँचा ..... उस समय मेरी मुलाक़ात बहुत से साधकों से नहीं हुई, नि:सन्देह मैं एक दो साक्षात्कारी लोगों से मिली परन्तु अधिकतर लोग अपने बीमा धन-दौलत आदि के लिए चिन्तित थे ..... मेरे ये नही समझ में आता था कि किस प्रकार उनसे परमेश्वरी प्रेम की बात की जाए। यहाँ तो सभी लोग सभी से घृणा करते हैं, हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध है, लोग एक दूसरे को धोखा दे रहे हैं, एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं, सभी उच्च पदवियाँ चाहते हैं दूसरों पर शासन करना चाहते हैं और सबकी टाँग खींचना चाहते हैं ..... चहुँ ओर इस निन्दापूर्ण दृष्टिकोण को जब मैंने देखा तो सोचा कि - ''मैं उन्हें कैसे बताऊँ कि वे क्या हैं और उन्हें क्या खोजना हैं।'' वास्तव में यह मेरी इच्छा थी कि ये लोग यदि मुझे ज़रा सा भी मौका दें तो परमेश्वरी प्रेम, जो कि अत्यंत सूक्ष्म है, यह प्रेम उनके हृदय में प्रवेश कर जायेगा, परन्तु ये लोग थोड़ा सा अवसर भी मुझे नहीं दे रहे थे। वो तो पत्थरों जैसे थे, उनसे बात न की जा सकती थी, उन्हें बताया न जा सकता था ..... सबसे आवश्यक समस्या तो ये थी कि किस प्रकार मानव हृदय में प्रवेश किया जाये। एक मात्र समाधान उनकी कुंडलिनी को उठाना था।

इस प्रकार सभी तरह के विचार मेरे अंदर उठ रहे थे। मैं उचित वातावरण और उचित समय की प्रतीक्षा कर रही थी। मुझे लग रहा था कि संभवत: अपना कार्य करने का समय अभी न आया हो पंरतु तभी मैंने भयानक कुगुरुओं को अपने सम्मोहन द्वारा लोगों को वश में करते हुए देखा। इसने मुझे यह सोचने पर विवश किया कि वातावरण की चिन्ता छोड़ कर अब हमें कार्य शुरू कर देना चाहिए और इस प्रकार भारत में प्रथम ब्रह्मरंध्र छेदन घटित हुआ यह 5 मई 1970 का दिन था 5 मई को प्रात: के समय''।

[६-६-१९९३, कबेला]

श्री माताजी कैसे किन परिस्थितियों में नारगोल पहुँची इस घटना का वर्णन उन्होंने विस्तार से किया है --

"वर्ष 1970 में एक तथाकथित गुरु (रजनीश) की गोष्ठी में मुझे जाना

पड़ा क्योंकि उसने मेरे पति से इसके लिए अनुरोध किया था। मेरे पति के एक मित्र वहाँ रहते थे उन्होंने ही मेरी इस यात्रा का प्रबंध किया। इस व्यक्ति (रजनीश) को देखकर मैं हैरान थी क्योंकि वह मुझसे आयु में दस वर्ष छोटा होते हुए भी मुझसे बीस वर्ष बड़ी आयु का प्रतीत होता था। मैंने देखा कि वह सभी लोगों को सम्मोहित कर लेता और लोग चीख़ने चिल्लाने लगते और कुछ तो कुत्तों की तरह भौंकते। सम्मोहन के द्वारा वह लोगों को उनके पूर्वकाल में ले जाता था।

इस घटना से मुझे बहुत अधिक सदमा पहुँचा। एक पेड़ के नीचे बैठकर मैं देख रही थी कि वह क्या कर रहा है?

रात्रि के समय मैं अकेली समुद्र तट पर चली गई और वहाँ बैठ कर ध्यान करने लगी कि किस प्रकार अपनी कुंडलिनी का उपयोग मैं लोगों को सामूहिक आत्मसाक्षात्कार देने के लिए कर सकती हूँ। यही वह समय था जब यह कार्यान्वित हुआ और खड़ाक से हो गया। मैं हैरान थी कि तनिक सी गहनता में पैठने मात्र से मैं इसे कार्यान्वित कर सकी।

अनुभव इस प्रकार था- ''मैंने देखा कि मेरी कुण्डलिनी बड़ी तीव्रता से उठ रही है और दुरबीन की तरह से खुल रही है। इसका रंग अत्यन्त सुंदर था जैसे आप तपे हुए लोहे में लालिमा में गुलाब का रंग देखते हैं, परन्तु यह अत्यन्त शीतल और सुखद था।

कुण्डलिनी मेरे ब्रह्मरन्ध्र को पार करके निकल गई मेरा ब्रह्मरन्ध्र बचपन से ही खुला हुआ था। यह दिव्य लहरियाँ प्रवाहित कर रहा था। **इस नव अनुभव ने मुझे अपनी दिव्य शक्ति को पहचानने का एक नया आयाम प्रदान किया एक अत्यन्त आशाजनक वास्तविकता के रूप में इसका उद्‌भव हुआ कि मेरे सामूहिक कार्य आरम्भ करने का समय आ गया है।** मैंने पाया कि मेरा पूर्ण अस्तित्व महान शान्ति एवं आनन्द से सराबोर हो गया था।

[परा आधुनिक युग]

पाँच मई १९७० को भारत में नारगोल के समुद्र तट पर घटित होने वाली

इस घटना का वर्णन बाद में श्री माताजी ने इस प्रकार किया है --

"ज्यों ही सहस्रार खुला, पूरा वातावरण अद्‌भुत चैतन्य से भर गया और आकाश में तेज़ रोशनी हुई तथा सभी कुछ मूसलाधार वर्षा या झरने की तरह पूरी शक्ति से पृथ्वी की ओर आया, मानो मैं इसके प्रति चेतन ही नहीं थी, संवेदन शून्य हो गई। ये घटना इतनी अद्‌भुत थी और इतनी अनपेक्षित थी कि मैं स्तब्ध रह गई और इसकी भव्यता ने मुझे एकदम से मौन कर दिया।

आदि कुण्डलिनी को मैंने एक बहुत बड़ी भट्टी की तरह से ऊपर उठते देखा, ये भट्टी एकदम शांत थी परन्तु ये अग्नि की तरह लाल थी, मानों किसी धातु को तपाकर लाल कर लिया है और इससे नाना प्रकार के रंग विकीर्णित हो रहे हैं।

देवी-देवता आए और अपने-अपने सिंहासनों पर बैठते चले गए स्वर्णिम सिंहासनों पर और फिर उन्होंने पूरे सिर को इस तरह उठाया मानो गुम्बद हो और इसे खोल दिया, तत्पश्चात इस मूसलाधार वर्षा ने मुझे सराबोर कर दिया।

मैं यह सब देखने लगी और आनन्द मग्न हो गई। ये सब ऐसा था मानो कोई कलाकार अपनी ही कृति को निहार रहा हो और मैंने महान संतुष्टि के आनन्द का एहसास किया।

इस सुन्दर अनुभव को प्राप्त करने के बाद मैंने अपने चहुँ ओर देखा और पाया कि मानव कितने अंधकार में है, और मैं एकदम चुप हो गई। मेरे मन में इच्छा हुई कि मुझे कुछ ऐसे प्याले (पात्र) मिलने चाहिए जिनमें मैं यह अमृत भर सकूँ केवल पत्थरों पर इसे न डालूँ।''

[५-५-१९८२ फ्रांस]

"मुझे लगा कि अब मैं सहस्रार को खोल सकती हूँ। मैं अभिभूत हो उठी क्योंकि मैं यह बात जानती थी कि मनुष्यों के सहस्रार खुले न होने के कारण वे अँधेरे में विचरण कर रहे हैं और इसी कारण से सारी समस्यायें थीं। उनके सहस्रार यदि खुल जायें उनका संबंध यदि परमेश्वरी शक्ति से हो जाये तो इन सभी समस्याओं का समाधान हो जायेगा, हर प्रकार की समस्या का हल हो

जायेगा और सभी के जीवन खुशियों से भर जायेंगे - ये बात मैंने महसूस की।

इससे मैं बहुत प्रसन्न हुई और आनंद से झूम उठी, परंतु किसी ने मुझे नहीं समझा। मैं नहीं जानती क्यों? शायद लोगों ने सोचा कि मैं कोई मूर्खता पूर्ण बात कर रही हूँ। किसी ने भी नहीं समझा कि ये क्या है क्योंकि शास्त्रों में कुंडलिनी के विषय में कुछ स्पष्ट नहीं लिखा गया है।"

"सहस्रार का वर्णन किसी भी धर्मग्रन्थ में नहीं किया गया, यद्यपि इसके विषय में बातचीत तो की परंतु किसी ने इसका वर्णन नहीं किया केवल इतना सा भी वर्णन कर दिया होता तो मेरे लिए लोगों को समझाना सुगम हो गया होता कि उस ग्रंथ में ऐसा लिखा है। लोग इस बात को पसन्द करते हैं कि हर बात किसी ग्रन्थ में लिखी होनी चाहिए तभी वे उसे स्वीकार करते हैं। स्थिति काफी कठिन थी क्योंकि किसी ने आज तक सामूहिक आत्मसाक्षात्कार न दिया था।"

[६-५-२००१, ७-५-२००० कबेला]

''मैंने सभी की जीवनियाँ पढ़ी हैं, सभी संतो के विषय में पढ़ा है परंतु ऐसा लगता है कि उनमें से कोई भी न जानता था कि कुंडलिनी को कैसे जागृत किया जाये। ये मूल समस्या थी। वे नहीं जानते थे कि किस प्रकार कुंडलिनी को उठाया जाए। हो सकता है उनमें यह शक्ति ही न हो या इसका ज्ञान ही न हो। ठीक है उन्होंने कुंडलिनी की बात की परंतु कुंडलिनी को उठाना वे न जानते हों .....

मैं तो मात्र एक गृहिणी हूँ जिसे किसी का भी आश्रय न था परंतु मैं विश्वस्त थी कि यह खोज निकालना मेरा कार्य है कि सहस्रार का भेदन किस प्रकार किया जाये। बाहर जो भी हालात जो भी स्थिति थी मेरा कार्य लोगों का सहस्रार-भेदन की विधि खोजनी थी और वह मैंने किया।''

[६-५-२००१, कबेला]

अंततः श्री माताजी ने मनुष्यों की कुंडलिनी जागृत करने की सरल

विधि खोज ही ली और अपनी इस क्रांतिकारी खोज को 'सहजयोग' नाम दिया।

जब साधक की कुंडलिनी जागृत हो जाती है तब वह ऊपर उठकर उसके अंतिम चक्र सहस्रार का भेदन करती है और साधक का योग चारो ओर व्याप्त परम चैतन्य की शक्ति से हो जाता है। इस योग के बाद उसको अपने सिर के तालु भाग एवं हाथ पैर की उँगलियों के पोरों से बहती हुई शीतल हवा का अनुभव होता है यही आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त होना है।

अध्याय 8

सामूहिक आत्मसाक्षात्कार का प्रारंभ

कुण्डलिनी-जागरण की विधि खोजने के बाद श्री माँ के समकक्ष बड़ी समस्या थी कि वे जनसाधारण को इसके बारे में किस प्रकार विश्वास दिलाएँ। वे जानती थीं के जब तक वे इसका प्रयोग लोगों पर नहीं करेंगी और जब तक लोग चैतन्य लहरी का स्वयं अनुभव नहीं करेंगे तब तक उनकी बातों पर विश्वास कर ही नहीं सकते। इस कार्य के लिए उन्हें स्वयं लोगों के पास जाना होगा। श्री माता जी ने **एक व्यक्ति को कुण्डलिनी जागृति द्वारा आत्मसाक्षात्कार देकर अपना कार्य प्रारम्भ किया।**

''जिस दिन से मैंने आत्मसाक्षात्कार देना आरम्भ किया उसी दिन से संघर्ष चालू हो गया -

''सहस्रार खोलने के बाद मैंने केवल एक महिला पर आत्मसाक्षात्कार का प्रयोग करना चाहा, वह एक वृद्ध धार्मिक महिला थी, उसे शीतल चैतन्य लहरियाँ भी महसूस हुईं। इस महिला को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया। तत्पश्चात उसके साथ एक अन्य महिला भी, जो कि आयु में बहुत छोटी थी, आने लगी। इस महिला ने मुझे बताया कि उसे दौरे पड़ते हैं और वह भूत बाधित हो जाती है।

''हे परमात्मा!'' मैंने सोचा, ''किस प्रकार मैं इसकी जागृति करूँगी?'' परन्तु वह भी ठीक हो गयी, शीघ्र ही उसे भी आत्मसाक्षात्कार मिल गया।

आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के लिए लोगों को समझाना मुझे कठिन लगा क्योंकि आत्मसाक्षात्कार को वे कल्पना मात्र मानते थे। वे समझते थे कि यह (कुण्डलिनी जागरण) बहुत दूर की बात है। ..... तो केवल उन दो महिलाओं ने ही आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया।

इसके पश्चात मैंने सोचा कि समुद्र तट पर चलें। तीस लोग मेरे साथ आए

और वो भी अटपटे ढंग से बातचीत कर रहे थे कि किस प्रकार उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो सकता है। वे तो इसके अधिकारी भी नहीं हैं। ..... उस समूह में से भी मुझे बारह लोग ऐसे मिल गए जिन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ, उन्हें शीतल हवा का अनुभव मिला। दो महिलाएँ भी इन्हीं में से थी।

इससे पता चलता है कि **स्वयं को पहचानने की गति बहुत कम होती है, क्योंकि लोग यही नहीं समझते कि क्यों वे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें? मुझे अत्यन्त निराशा हुई क्योंकि मेरी बात कोई समझता ही न था। फिर भी मैं लोगों को समझाती रही।** ..... मैं यदि इस विचार के साथ बैठी रहती कि लोग मेरे पास आकर आत्मसाक्षात्कार माँगेंगे तो मैं उनकी कुण्डलिनी जागृत करूँगी तब उन्हें जागृति (आत्म साक्षात्कार) प्राप्त होगी तो यह ग़लत धारणा होती। यह बात मैंने महसूस कर ली थी, इस प्रकार से सामूहिक आत्मसाक्षात्कार का प्रारम्भ हुआ।''

एक अद्‌भुत घटना ने लोगों के मन में श्री माताजी के प्रति विश्वास पैदा किया -

''एक दिन ऐसा हुआ कि मेरे कार्यक्रम में एक महिला आई, वह भूतबाधित थी। उसने एकाएक संस्कृत बोलनी शुरू कर दी। वह मात्र एक नौकरानी थी। सभी लोग हैरान हो गए, परन्तु वह कहने लगी, ''तुम नहीं जानते कि ये कौन है?'' और तब उसने 'सौन्दर्य लहरी' (श्री शंकराचार्य द्वारा लिखित पुस्तक जिसमें उन्होंने साक्षात भगवती माँ का वर्णन किया है) के अनुरूप मेरा वर्णन करना आरम्भ कर दिया।

मैं भी हैरान थी कि इस महिला को क्या हुआ, पुरुष की आवाज़ में वह बोल रही थी। पर वह लोग इस बात पर विश्वास करें, न करें पर वह भयानक भूत बाधित थी। (उसके अंदर किसी देवी भक्त पुरुष की (आत्मा) प्रवेश कर गयी थी)। तब लोग मेरे पास आए और पूछने लगे कि यह महिला जो कह रही है क्या वो सत्य है?'' मैंने कहा "आप स्वयं इसका पता लगाओ।"

..... जिन लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ वे मुझसे कहने लगे -

''श्री माताजी हमें दुर्गा पूजा करने की आज्ञा दें।'' दुर्गा पूजा को बहुत कठिन पूजा माना जाता था और ब्राह्मण लोग प्रायः इस पूजा को करने के लिए तैयार न होते थे क्योंकि आत्मसाक्षात्कारी न होने के कारण दुर्गा पूजा करने वाले पंडितों को मूर्छा आदि की समस्या हों जाया करती थी। अंततः मैं पूजा के लिए सहमत हो गई। तो वे लोग सात ब्राह्मण ले आए और उनसे कहा कि तुम्हें किसी भी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, तुन्हें कुछ भी नहीं होगा क्योंकि **आप साकार दुर्गा (श्री माताजी) के सम्मुख बैठे हुए हो, ये कोई मूर्ति नहीं है, यह साकार की पूजा है।**

सातों ब्राह्मण काफी घबराए हुये थे और स्थान से उठ जाना चाह रहे थे। अचानक उनके अन्दर कुछ हुआ और तब **उन्होंने बड़े ही आत्मविश्वास के साथ मंत्र आदि का उच्चारण प्रारम्भ कर दिया। चारों ओर चैतन्य लहरियाँ फैल गईं।** हम लोग समुद्र के बहुत नज़दीक थे और समुद्र भी दहाड़ रहा था परन्तु इन सात पण्डितों के अलावा किसी को कुछ समझ नहीं आया, वे आश्चर्यचकित थे, वे पंडित कहने लगे हमें कुछ नहीं हुआ, हमने सभी कुछ भली भाँति किया है। **मेरे विचार से ये घटना प्रथम चमत्कार थी।''**

[कबेला, ७-५-२०००]

"पूजा करते हुए उन सबको आत्मसाक्षात्कार मिल गया और सब कह उठे अब यह सत्य है (कि श्री माताजी देवी हैं)। शीतल चैतन्य लहरियाँ उन्हें अपने हाथों पर महसूस हुईं। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति के सारे लक्षण उनमें आरम्भ हो गए। उस समय मैं सभी कुछ बताना नहीं चाहती थी क्योंकि ऐसा कहने वाले बहुत से लोग थे कि मैं ये हूँ, मैं वो हूँ। **उस समय मैं इन सभी चीज़ों को एकदम से अनावृत नहीं करना चाहती थी।** परन्तु शनैः शनैः मैने पाया कि लोग आकर्षित हुए हैं और मेरे कार्यक्रमों में आने लगे हैं।"

"दो वर्षों में केवल चौदह लोगों ने आत्मसाक्षात्कार लिया था, परन्तु इसके बाद धीरे-धीरे बहुत से लोग आत्मसाक्षात्कार लेने लगे। इसके साथ ही साथ मैंने लोगों की बीमारियाँ भी ठीक करनी शुरू कर दी थीं, इससे बहुत लाभ

हुआ।"

[६-५-२००१, ९-७-१९८५]

श्री माताजी सतत प्रयास करती रहीं -

5 मई 1970 को नारगोल के समुद्र तट पर सहस्रार खोलने के पश्चात श्री माताजी धीरे धीरे एक एक करके अपने पास आने वाले साधकों की कुंडलिनी शक्ति जागृत करने लगीं। वर्ष 1971 में उन्होंने मुंबई में चौपाटी स्थित भारतीय विद्याभवन की तीसरी मंज़िल पर गीता-भवन में पहला ध्यान केंद्र स्थापित किया। वहाँ पर हर सप्ताह मंगलवार शाम 6.30 पर सभायें होती थीं और जब भी श्री माताजी मुंबई में होतीं स्वयं इन सभाओं में उपस्थित होतीं। नवम्बर सन् 1970 को मुंबई के क्वास जी जहाँगीर हाल में सहजयोग का पहला जन कार्यक्रम आयोजित हुआ इसके बाद नारगोल से कुछ किलोमीटर दक्षिण में बोर्डी नामक स्थान पर सन् 1972 में चार दिन की संगोष्ठी हुई।

पहली पूजा महाराष्ट्र के एक गाँव में की गई और दूसरी पूजा 1972-73 में श्री माताजी के घर जीवन-ज्योति बम्बई में हुई। दूसरी पूजा के पश्चात खींचे गए चित्रों का उपयोग सहजयोग के विज्ञापनों के लिए किया गया। समुद्र तट पर भी श्री माताजी ने कई पूजायें करवाई। वे सहजयोगियों की एक शृंखला बनवा देतीं। किसी एक योगी के हाथ में वे अपना हाथ पकड़ा देतीं और बाकी के लोग एक दूसरे का हाथ पकड़ लेते, इस प्रकार सबका शुद्धीकरण होता था। श्री माताजी के साथ सभी योगी समुद्र के पानी में पैर डाल कर खड़े हो जाते और मंत्र कहते थे।

आरंभ के कई वर्षों तक श्री माताजी ने अपने प्रवचनों को रिकार्ड करने की अनुमति नहीं दी। वे स्वयं हमे आत्मसाक्षात्कार देतीं और आत्मसाक्षात्कार लेने के लिए काफी लम्बा समय लगता था। धीरे-धीरे माताजी ने अपने गहन शोध से कई क्रिया-विधियाँ विकसित कीं और उनका प्रशिक्षण साधकों को दिया जैसे कुंडलिनी उठाना, बंधन लेना, दाँये बाँये दोनों पक्षों को संतुलित करना आदि। पहले साधक इन क्रियाओं का महत्त्व समझे बिना ही इन्हे करते थे।

इसीलिए बाद में माताजी ने सार्वजनिक स्थानों पर बंधन लेने के लिए मना कर दिया था। पानी पैर क्रिया और जूता क्रिया आदि विधियाँ भी बहुत बाद में आईं। श्री माताजी हमेशा यही कहा करतीं कि न तो किसी विधि को यंत्रवत करना चाहिए और न ही किसी विधि की अति में जाना चाहिए। सबसे अधिक आवश्यक ध्यान-धारणा है अधिक से अधिक अपना चित्त वहीं रखना चाहिए।

[उत्तर प्रदेश सहजयोग सेमिनार अप्रैल २०११ की स्मारिका के आधार पर]

"सहजयोगी अपने घरों में छोटी-छोटी सभाओं का आयोजन करते जहाँ श्री माताजी आत्मसाक्षात्कार प्रदान करतीं। अपने विषय में वे बहुत कम बतातीं परन्तु जिज्ञासुओं के चक्रों को स्थापित करने के लिए अथक घंटो तक कार्य करतीं।

शनैः शनैः उन्होंने सार्वजनिक कार्यक्रमों में सामूहिक साक्षात्कार देना शुरू किया। सहजयोगियो की संख्या कुछ सौ तक पहुँच गई और दिल्ली तथा बम्बई में सहजयोग केन्द्र स्थापित हो गए। श्री माताजी संख्या की अपेक्षा साधकों की योग्यता पर अधिक ध्यान देतीं। आत्मसाक्षात्कार प्रदान करने के लिए किसी से कोई पैसा लिए बिना अपने धन को खर्च करते हुए उन्होंने सहजयोग आरंभ किया। .....

प्रारंभ के पन्द्रह वर्षों तक उनका कार्यक्षेत्र प्रायः गाँवों तक ही सीमित रहा। कभी-कभी वह बैलगाड़ी से गाँवों की यात्रा करतीं और फिर अगले गाँव के लिए पैदल चल देतीं। वह फर्श पर या सर्वसाधारण चारपाई पर सोतीं, सादा खाना खातीं, नदी में स्नान करतीं, शारीरिक सुखों का उनके लिए कोई महत्व ही न था। आत्मा के सुख ही उन्हें आनंद प्रदान करते।''

['परमात्मा का स्वरूप' पुस्तक से]

संयोग से श्री माताजी का विदेश जाना हुआ -

''उन्हीं दिनो (वर्ष 1974 में) मेरे पति इस पद (अंतर्राष्ट्रीय समुद्रवर्ती संस्था के महासचिव) के लिए चुने गये और हम लोग लन्दन आ गए। जब हम लन्दन आए तो मेरे पास एक ही कार्यक्रम था। विदेशों में आए भारतीयों की

परमात्मा में अधिक दिलचस्पी नहीं होती, उनकी दिलचस्पी पैसो में अधिक होती है, अत: कोई भी भारतीय मेरे पास न रुकता वे सब दौड़ जाते। शुरू में केवल विदेशी लोगों पर मुझे कार्य करना पड़ा। इनमें सात हिप्पी थे, **इन सात हिप्पियों को आत्मसाक्षात्कार देने के लिए मुझे उन पर चार साल कार्य करना पड़ा।** वे अत्यन्त दुष्कर थे, उनके ज़िगर ख़राब थे, उनके मस्तिष्क भटके हुए थे। **यह समय मेरे लिए बहुत ही कठिन था।**

बीच-बीच में मैं भारत भी जाया करती थी। भारत में भी कार्य हो रहा था। हमेशा तीन महीने मैं भारत रहा करती। हमने गाँवो में कार्य करना शुरू किया, विशेष रूप से, आश्चर्य की बात है, उन क्षेत्रों में जहाँ कभी मेरे पूर्वज राज्य किया करते थे। वहाँ पर अत्यन्त ज़ोर शोर से हमने कार्य आरम्भ किया।

बाद में हम भारतीयों को विदेश ले जाने लगे। **हमने विदेश में भी सर्वत्र जाना आरम्भ किया ..... आस्ट्रेलिया के कुछ लोगों को भी भारत लाए** और इस प्रकार से इस दिशा में आत्मसाक्षात्कार का कार्य प्रगति करने लगा। **धीरे-धीरे स्थितियों से सुधार हुआ और लोग जान पाए कि इस विधि से हम स्वयं को परिवर्तित कर सकते हैं।** नशे पीने वाले, शराब पीने वाले और पागल लोगों को भी इससे लाभ हुआ, वे व्यसन और रोगों से मुक्त हो गए। ये बात साबित हो गई कि सहजयोग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मार्ग है।

जब मैंने विश्व में अन्य देशों में जाना आरम्भ किया तो मेरे पति मेरी यात्रा का सारा ख़र्चा वहन किया करते थे, जहाँ भी मैं जाती मेरा ख़र्चा वही उठाते। धीरे-धीरे ये लोग (सहजयोगी) मेरी यात्राओं का ख़र्चा उठाने लगे, परन्तु इसके अतिरिक्त उन्हें मुझे कुछ भी नहीं देना होता था। इस प्रकार से हमने अपना कार्य आरम्भ किया।

हमें भयंकर विरोध का भी सामना करना पड़ा क्योंकि मीडिया के लोग तो कभी सहजयोग को समझेंगे ही नहीं, सहजयोग में तो उत्तेजना का पूर्ण अभाव है जिससे लोग उत्तेजित हो जाएँ। ..... फिर भी कुछ महान लोग भी सहजयोग में आए जिनमें एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे जो अब

राष्ट्रपति हैं। इनके अतिरिक्त बहुत से वकील और विधिवक्ता भी सहजयोग में आए। यहाँ पर अल्ज़ीरिया के एक विधिवक्ता भी हैं, कुछ डाक्टर भी हैं। इन लोगों ने कार्यभार सँभाला और सहजयोग प्रचार-प्रसार में मेरी मदद की।

[एक साक्षात्कार ९-७-१९८५ विएना]

"जब मैं गाँवों में कार्य करती थी तक मैं बैलगाड़ी से जाया करती थी। आप समझ सकते हैं कि बैलगाड़ी पर मीलों जाना क्या होता है। पर मुझे मालूम था कि मुझे यह सब करना है। सहजयोगियों को हासिल करने के लिए मुझें उस तरह से काम करना ही था, इसके लिए मेरी पूरी तैयारी थी। मुझे अंदर से कभी भी किसी भी प्रकार की थकान महसूस नहीं हुई, कभी नहीं। इसके उपरांत आप सबसे मिलने पर मुझे बहुत आनंद आता है।''

[सिडनी]

"मैं तो एक भी क्षण आपको आश्चर्य होगा कि सहजयोग के सिवाय बिताती ही नहीं थी। हमारे पति के दफ्तर में हज़ारों आदमी आते हैं, कभी रिसेप्शन होता है **तो हज़ारों आदमियों से हाथ मिलाना पड़ता है तब जागृति देती हूँ, हाथ मिलाते ही जागृति। जिस देश में जाती हूँ उस देश में जागृति देती हूँ, जिससे बात करती हूँ उसको जागृति देती हूँ, वो बोलता रहता है और उसे मैं जागृति देती रहती हूँ, जहाँ मौक़ा मिलता है वहाँ जागृति देती हूँ। एक घटना बताऊँ** -

"विक्टोरिया स्टेशन पर टिकट कलेक्टर एक साहब मुसलमान, तो उस समय टिकट लेने के लिए मैं खड़ी थी तो लाइन बहुत लम्बी थी तो मैं देख रही थी। पाकिस्तान का होगा पता नहीं जहाँ का भी हो, हाँ पाकिस्तान का था तो उसको जागृति दे रही थी खड़ी खड़ी, सामने वालों को भी जागृति दे रही थी। जैसे उसने टिकट दिया, उसने मेरी ओर देखा और पार हो गया। तो वो सबका टिकट देकर के जो अन्दर में आ गया और आकर मेरे कम्पार्टमेंट में बैठ गया। कम्पार्टमेंट में मैं अकेली बैठी थी। कहता है - ''आप कौन है? आपमें इतनी कशिश कैसी है?'' मैंने कहा - ''आप कौन हैं?'' कहने लगा - ''मेरा नाम

हुसैन है।'' फिर मैंने कहा – ''बैठो हुसैन मियाँ, ऐसे हाथ करो।'' कहने लगा – ''ये क्या आ रहा है ठंडा?आप कौन हैं।'' "देख लो कौन है पहचान लो" मैंने कहा।

[२५-११-१९७५ मुंबई]

और इस प्रकार बहुत ही सहजता से श्री माताजी लोगों में जागृति देने का कार्य करती रहीं कभी व्यक्तिगत रूप से और कभी सामूहिक रूप से। शनैः-शनैः उन्होंने अपने इस अभियान को अपने ही प्रयास से विश्वव्यापी बना दिया।

अध्याय 9

श्री माताजी का विश्वव्यापी अभियान

पश्चिमी देशों में सहजयोग का प्रचार-प्रसार करना बहुत कठिन कार्य था। **श्री माताजी के समक्ष बहुत सारी समस्याएं आई, और उन्हें भयंकर विरोध का सामना करना पड़ा। वे बता रही हैं --**

"भिन्न देशों में भिन्न प्रकार के लोगों से मेरा पाला पड़ा जो केवल मेरा भाषण सुनने के लिए आते हैं, बस समाप्त, वो आत्मसाक्षात्कार भी न लेंगे। उनमें से कुछ ने आत्मसाक्षात्कार लिया भी परन्तु पाकर भी इसे खो दिया। मेरे लिए अत्यन्त अज़ीब कहानी थी कि मैं उन्हें आत्मसाक्षात्कार दे रही हूँ, बेकार में ही मैं ऐसे लोगों को साथ ले चल रही हूँ। अपने ख़र्च से मैं यात्रा किया करती इसके बावजूद भी क्यों नही ये लोग आत्मसाक्षात्कार का मूल्य समझते?"

तब एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति ने मुझे बताया - "आज का समाज उपभोक्ता समाज है, जब तक आप इनसे पैसे नहीं लेंगे इन्हें इसका मूल्य समझ में नहीं आएगा। उन्हें महसूस करवायें कि उन्होंने आत्मसाक्षात्कार के लिये धन ख़र्च किया है। दरवाजे पर ही किसी व्यक्ति को पैसा लेने के लिए बिठा दें, अन्यथा ये लोग आत्मसाक्षात्कार नहीं लेंगे।"

मैंने कहा - ''परन्तु इसे बेचा नहीं जा सकता, ऐसा करना तो अनुचित होगा। लोगों को आत्मसाक्षात्कार बेचा नहीं जा सकता।'' वह कहने लगा - ''तब आप सफल नहीं हो सकतीं और न ही अन्य गुरुओं से मुक़ाबला कर सकती हैं। अन्य गुरुओं की यह विशेषता है कि वे धन स्वीकार करते हैं और लोगों से कहते है कि इतना पैसा लेकर आओ, ऐसा करो, ये फीस है।''

मैं समझ गई कि इस प्रकार से लोगों का अहं शान्त होता है और वे लोग असत्य को स्वीकार कर लेते हैं। मैं चिन्तित थी क्योंकि मैं जानती थी कि इस असत्य का एहसास उन्हें बाद में हो जायेगा क्योंकि इसके कारण उन्हें बहुत सी शारीरिक और मानसिक समस्याएँ हो जायेंगी परंतु तब तक वे पतन के कग़ार पर होंगे।

..... मैं सोचती थी कि साधना में यहाँ वहाँ भटके लोगों का क्या होगा और किस प्रकार मैं उन्हें आत्म साक्षात्कार दे पाऊँगी। **मेरे अनुभव बहुत ही कष्टकारक थे परंतु कोई बात नहीं - मैं आगे बढ़ती गई, बढ़ती गई, बढ़ती गई और उसे कार्यान्वित किया।**

[७-५-२००० कबैला]

अमरीकी साधकों को कुगुरुओं के कुचक्रों से बचाने के लिए वे बहुत उत्सुक थीं, क्योंकि इससे उनका विनाश हो रहा था। सन् 1972 में उन्होंने अपनी सोने की चूड़ियाँ बेच डालीं और अमरीका के लिए चल पड़ी।

''**मैं पहली बार १९७२ में अमेरिका गई** और बहुत से लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया परन्तु बाद में मुझे लगा कि ये लोग गहन चीज़ों की चिन्ता नहीं करते। एक तो इन कुगुरुओं द्वारा दुष्प्रभावित लोग हैं दूसरे ऐसे लोग हैं जो यह समझते हैं हम भी उन गुरुओ में से एक बन सकते हैं और **तीसरी प्रकार** के वे लोग हैं जो अत्याधिक सीधे और अल्हड़ हैं, वे बिल्कुल बच्चों जैसे हैं **पर वे जिज्ञासु होते हुए भी सहजयोग के लिए तैयार नहीं थे।** वे नहीं जानते थे कि क्या देखना है और क्या प्राप्त करना है? यही मेरे लिए बहुत दु:ख की बात थी।

मैं पूरे नौ वर्ष अमेरिका नहीं गई क्योंकि मैने सोचा कि अपना समय तब तक दूसरी चीजों पर लगाऊँ जब तक ये लोग अपनी गल्तियों को समझने के क़ाबिल और परिपक्व नहीं हो जाते। ... ... उस समय सबसे विनाशकारी व्यक्ति आस्ट्रिया का फ्रायड था, उसने इन सबके जीवन को नष्ट कर दिया।''

[अगस्त - १९९५]

''पहली बार जब मैं अमेरिका गई तो लोगों ने कहा - ''श्री माताजी आप अपने प्रवचनों को पेटेंट अवश्य करवा लें।'' मैं मुस्करा दी और कहा - ''क्या बात है? वे कहने लगे कि - 'लोग आपके शब्दों आदि को अपना उल्लू सीधा करने के लिए प्रयोग करेंगे, हो सकता है कि आपको हानि पहुँचायें।' मैने कहा - ''नहीं, सब ठीक है, इन्हें इनके बारे में बोलने दे क्योंकि **ये तो घटित होना ही है, लोगों को इसके विषय में जानना ही होगा।** इसमें कानूनी अधिकार

(पेटेंट) लेने की क्या ज़रूरत है? सूर्य की रोशनी और सितारों के लिए तो हम एकाधिकार नहीं लेते। यह तो सभी के लिए है।''

[२२-३-८ आस्ट्रेलिया]

''मैं फ्रांस गई, वहाँ पर कुछ लोगों ने मुझे सताने का प्रयत्न किया तथा सारे समाचार पत्र मेरे पीछे पड़ गए। दूरदर्शन में तथा सर्वत्र वे मेरे विरुद्ध उल्टी सीधी बातें कर रहे थे। ..... मैं जानती थी कि कोई दैवी प्रकोप आने वाले है। अचानक समुद्र में एक भयानक तूफान उठा, कोई नहीं जानता कि ये कहाँ से आया और इसमें दो समुद्री जहाज पूरी तरह डूब गए। जो लोग इसे बचाने के लिए गए उन्हें कैंसर रोग हो गया। यह तूफान पूरी शक्ति से आगे बढ़ने लगा और वहाँ के सभी गिरजाघरों के शिखर नष्ट कर डाले। बहुत से पादरियों के घर उजड़ गए। तूफान आगे बढ़ता हुआ उस स्थान तक पहुँचा जहाँ मैंने एक किला ख़रीदा था, इस किले के किनारे पर पहुँचते ही तूफान रूक गया।''

[२५-२-२००१]

''पश्चिमी देशों के मस्तिष्क में इतने बंधन भरे हुए हैं कि उन्हें दूर नहीं किया जा सकता। ये बंधन कैथोलिक चर्च और फ्रायड की देन हैं। पश्चिम की सामाजिक कठोरता मानसिक है। पश्चिमी देशों की पूरी शैली ही कर्मकाण्डी है, वहाँ कोई स्वतंत्रता नहीं है, इसी कारण हिप्पियों ने विद्रोह किया था।''

[१९-७-९२ कबैला]

श्री माताजी ने पश्चिमी देशों के मनुष्यों की मनस्थिति के विषय में विस्तार से लिखा है -

''परन्तु यह भी सत्य है कि आधुनिक समय में पश्चिम में बहुत से सत्य साधकों का जन्म हुआ। ..... लेकिन जिज्ञासुओं को उस समय उठती हुई अत्यन्त श्रद्धा विहीन तथा भ्रांति में फँसे समाज का सामना करना पड़ा। ..... साथ ही अपनी अज्ञानता के कारण झूठी शिक्षाओं के प्रति समर्पित होकर वे सब नष्ट हो गए।''

''साठ और सत्तर के दशकों में पश्चिमी देशों में मिथ्या वैभव की स्थापना के कारण भारत के कुछ चालाक लोगों को जब पता चला कि वहाँ पर साधकों

का बाज़ार है तो उन्होंने पश्चिमी लोगों का धन लूटने का निर्णय लिया और बहुत से ..... गुरु पश्चिमी देशों विशेष कर अमरीका में गए, उन्होंने अत्यन्त गतिशील गुरुओं के रूप में स्वयं को स्थापित किया और इन अशान्त पर गम्भीर सत्य साधकों का शोषण करने के लिए मिथ्या आध्यात्मिकता उन्हें बेचने की पेशकश की तथा अत्यन्त चतुराई से इस सौदे में उनका धन लूटकर उन्हें नष्ट किया।"

"अपने गुरु के लिए रोल्स-राईस कार खरीदने के लिए कुछ लोग जो भूखों मरे थे, उनसे मैंने पूछा कि "ऐसा करने के लिए वे लोग क्यों तैयार हो गए?" उन्होंने उत्तर दिया कि उनके गुरु ने उन्हें धातु के बदले आत्मा लौटाने का वचन दिया था, इसलिए धन की उन्हों**ने परवाह नहीं की। बेचारे बदनसीब भोले साधक। क्योंकि अधिकतर लोगों से उनके गुरु ने उनका धन ले लिया और उन्हें एक मृत आत्मा दे दी जो उन्हें बाधित करे, सम्मोहित करे तथा दिवालिया बैरागी बना दे।"**

"कुगुरु निश्चित रूप से जानते थे कि इन पश्चिमी वैभवशाली जिज्ञासुओं के अहं तथा दुर्बलताओं को किस प्रकार हवा दी जा सकती है--

..... मैं एक बार जब शिकागो में थी वहाँ हरे कृष्ण पंथ के मुखिया मुझसे मिलने आए। उस दिन बहुत ठंड थी। मेरी हैरानी की सीमा न रही, वह व्यक्ति पतली सी धोती पहने हुए था। ..... उसने सिर मुंडवाया हुआ था और सिर पर केवल चोटी दिखाई दे रही थी ..... मेरे पूछने पर कहने लगा - 'मेरे गुरु ने मुझे बताया है कि यदि तुम धोती पहनोगे तो स्वर्ग प्राप्ति आसान हो जाएगी ताकि देवदूत तुमको पहचान सकें और निर्वाण के लिए तुम्हें स्वर्ग ले जाएँ।'' ..... मेरे समझाने पर वह नाराज़ हो गया कि मैं उसके गुरु की आलोचना कर रही हूँ। .... .. अत्यन्त आसानी से देखा जा सकता है कि **आन्तरिक शांति के अभाव के कारण पश्चिम के लोग भ्रमित हैं, कोई भी उन्हें मूर्ख बना सकता है।''**

..... इस काल में मैं जिन भी साधकों से मिली उनमें से अधिकतर ने मुझे बताया कि यद्यपि वो जानते है कि वो कुछ खोज रहे हैं फिर भी अपने लक्ष्य का उन्हें बिल्कुल भी ज्ञान न था और इन दम्भी कुगुरुओं ने उन्हें सम्मोहित कर दिया था।''

''वास्तविक सत्यसाधकों को विनम्रता पूर्वक स्वीकार करना होगा कि अभी तक वे सत्य को प्राप्त नहीं कर पाए हैं और नि:संदेह अपने आप वे इसे खोज भी नहीं सकते। ..... **परन्तु इस सत्य को स्वीकार करना पश्चिमी मस्तिष्क के लिए अत्यन्त कठिन कार्य है, क्योंकि इसका अर्थ है अहं का त्याग करना।** एक पश्चिमी साधक जो सहजयोग सीखने के लिए पहली बार मेरे पास आया उसे लगा बिना कोई धन ख़र्च किए, बिना कोई प्रयत्न किए आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेना बहुत सुगम कार्य है। हर्षोन्माद में वह इतना भर गया था कि चिल्लाता हुआ वह बाहर बगीचे की ओर दौड़ा-- "मैंने पा लिया है।" वह आनन्द में नाच रहा था।

अत्यन्त उत्तेजित होकर उसने अपने सभी मित्रों को पत्र लिखे जो बहुत वर्षों से दिन रात साधना की बातें करते थे। ..... उसके आश्चर्य एवं निराशा की सीमा न रही क्योंकि उन लोगों के उत्तर उत्साहित करने वाले बिल्कुल न थे। कुछ ने लिखा - **'हमें प्रसन्नता है कि तुमने पा लिया है, परन्तु हमें अपने ढंग से ही खोजना है। हमें आशा है कि हम भी किसी अन्य तरीक़े से पा लेंगे।'**

कुछ तो इस बात पर विश्वास ही न कर सके कि यह काम सुगम है। कुछ ने कहा - **'सर्व सामान्य जीवन बिताते हुए तुम सत्य को प्राप्त नहीं कर सकते, अपने दुष्कर्मों के लिए व्यक्ति को कष्ट भुगतने पड़ते हैं।'**

कुछ ने कहा - **"हाँ हो सकता है कि यह कुण्डलिनी जागृति तुम्हारे ऊपर कारग़र हो, परन्तु यह एकमात्र मार्ग तो नहीं है, अन्य मार्ग भी अवश्य होंगे।"**

"लोग इस बात को स्वीकार करना ही नहीं चाहते कि सत्य इतनी सहजता से प्राप्त हो सकता है। ''कलियुग में यद्यपि जिज्ञासा ने बहुत गति प्राप्त की है पर लोग गलत साधना के कार्य को छोड़ना ही नहीं चाहते चाहे उनका लक्ष्य उनके सामने ही क्यों न खड़ा हो।''

..... **सत्यविद लोगों को सदैव नासमझी का सामना करना पड़ता है।** कबीर साहब ने कहा था - ''कैसे समझाऊँ सब जग अन्धा।'' नि:संदेह कबीर

साहब के बाद बहुत सुधार आया है और आज मैं यह नहीं कह सकती कि सारा विश्व अन्धा है क्योंकि हज़ारों लोग खुले मस्तिष्क से कुण्डलिनी जाग्रति द्वारा सत्य का ज्ञान पाने के लिए आए हैं।''

[परा आधुनिक युग]

हाँगकाँग में वर्ष 1992 में एक साक्षात्कार लेने वाले व्यक्ति ने श्री माताजी से प्रश्न किया था कि किस प्रकार आप इन कठोर मानव द्वेषी ख्बलदपबे, लोगों को समझा पाएँगी कि सहजयोग ही सभी समस्याओं का समाधान है।

उस समय श्री माताजी ने पूरे विश्वास के साथ उत्तर दिया था -

"प्रकृति भिन्न मार्गों से भिन्न तरीक़ों से इसे कार्यान्वित करेगी। नि:संदेह मानव-द्वेषी लोग हैं पर उनके बलदपबे होने के पीछे कुछ कारण हैं। वो ऐसे न होते, परन्तु वो बंधनों में फँसे हुए हैं। आप इस बात का पता लगा सकते हैं क्योंकि उन्हें समस्याएँ होंगी, मानसिक और पारिवारिक समस्याएँ होंगी। बलदपब लोगों को हमेशा पारिवारिक समस्याएँ होंगी। मै यह नहीं कहती कि वे सदैव समस्याओं में हीं फँसे रहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि केवल सुखी लोग ही सहजयोग में आ सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है। साधकों की एक श्रेणी होती है। पहले मुझे उनकी चिन्ता करनी होती हैं जो वास्तव में सच्चे साधक हैं ..... **इन साधकों को कोई भी चीज़ संतुष्ट नहीं कर सकती। ये हर चीज आज़माएँगें, वे धन और सत्ता प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे, सभी कुछ आज़माएँगे, फिर भी संतुष्ट न होंगे, ये अलग ही तरह के लोग हैं। तत्पश्चात वे परमात्मा को खोजेंगे, पुन: वे परमात्मा को ही खोजेंगे।**

वे ग़लत गुरुओं के पास जाकर यहाँ वहाँ अपना धन खर्चेंगें, परन्तु जो वो खोज रहे हैं उसे प्राप्त न कर सकेंगे और अंतत: वे सहजयोग में आएँगे। इसीलिए सर्वप्रथम मेरा चित्त साधकों पर है। जैसा मैंने आपको बताया ये एक श्रेणी है। ऐसे लोगों को विलियम ब्लेक ने 'परमात्मा के बन्दे' ख्डमद वि ळवक, कहा है। विलियम ब्लेक कहते हैं **कि ये परमात्मा के बन्दे पैगम्बर बन जाएँगे।** इनमें एक विशेष शक्ति होगी जिससे ये लोग लोगों को आत्मसाक्षात्कार देंगे और उन्हें पैगम्बर बनाएंगे।"

कितना सही कहा था श्री माताजी ने। विदेशों में सहजयोग बड़ी

गति से फैलने लगा। श्री माताजी का प्रयास सफल हुआ, उन्हें बहुत गर्व है। श्री माताजी ने एक टी.वी. साक्षात्कार में स्पष्ट किया है कि वे बार-बार विदेश क्यों जाती रही हैं --

"विदेश मैं इसीलिए जाती हूँ कि वहाँ लोगों की खोज है और इस खोज में वहाँ के साधक डूबे हुए हैं। इतने लोग खोज रहे हैं और वहाँ इस पर बहुत लिखा भी गया है। हमारी जो पुस्तकें हैं (धार्मिक) उसको भी उन लोगों ने भाषांतरित कर लिया है, ट्रांसलेट करके पढ़ भी लिया। आश्चर्य की बात है कि वे संस्कृत भी पढ़ते हैं, इतना कुछ मालूम है उन लोगों को।

फिर यहाँ से कुछ ग़लत किस्म के गुरु पहुँच गए। वहाँ उन्होंने उनको (साधकों को) पढ़ाना शुरू कर दिया तो वो चीज़ उन्हें मिली नहीं, पैसे-वैसे बहुत ले लिए गुरुओं ने। **उसके बाद हम वहाँ पहुँचे तो वे हैरान हो गए कि ये तो अनुभूति देती हैं और पैसे वग़ैरह में कोई रुचि नहीं। इसी कारण ये लोग बड़े ही हमसे नज़दीक आ गए।** छल कपट करके वे गुरु लोग जो बातें करते हैं और इस तरह से लोगों को बेवकूफ बनाते हैं अध्यात्म में, वो कितने दिन चल सकते हैं। लेकिन हमारे साथ तो एक बार जुड़ गए सो जुड़ गए। इतने वर्षों से हम ये कार्य कर रहे हैं और ये लोग बहुत ही गहरे चले गए, इस खोज में बहुत ही गहरे चले गए।

दूसरी बात ये कि इनको घर से, समाज से प्यार का आभास ही नहीं, तो मुझे देखकर के उन्हें वो प्यार मिलने लगा, उस प्यार से वो प्लावित हो गए और एकदम बदल गए। इतने बदल गए कि आप सोचिए कि जर्मनी के लोग हैं वो इतने प्यारे हो गए हैं, इतने स्वीट हो गए हैं और इतने दिल खोल कर के बात अपनी कहते हैं और उनको बड़ी लज्जा आती है कि हमारे देश में (हिटलर) सब ऐसी ग़लत बातें हुईं।

हम लोग बहुत सारे देशों में कार्य कर रहें हैं। हम तो इतने देशों में गए नहीं पर होता क्या है कि एक आदमी पार हो गया (आत्मसाक्षात्कार ले लिया), वो सीख गया, एक साल में वह म्गचमतज हो गया, फिर वो औरों को बताता है, इस तरह से ये चीज़ बहुत बढ़ रही है।

जैसे एक देश है – उसका नाम है Ivory Coast जहाँ के लोग बेचारे मुसलमान हो गए थे। इसलिए मैंने पूछा कि तुम लोग मुसलमान क्यों हो गए थे? तो कहने लगे, ''हमने फ्रेंच लोगों को देखा उनमें नैतिकता नहीं, इसलिए हम मुसलमान हो गए।'' अब वो सब सहजयोगी हो गए। इस तरह से हर जगह सहजयोगी बहुत ज़्यादा बढ़ रहे हैं।

जो लोग Fundamentalists लोगों से तंग हैं वो भी आना चाहते हैं सहजयोग में। इस तरह से जैसे कि सब चीज़ों से त्रस्त जो लोग हैं, और दूसरे जो खोज रहे हैं – ऐसे बड़े-बड़े समूह आ गए हैं सहजयोग में। ..... उसमें मुझे कुछ भी दिक़्कत नहीं हुई क्योंकि सब कुछ पहले से ही इन लोगों के मन मे था और उसका **जो आदर्श था वो शायद इन लोगों ने मुझमें पाया और वो सब मेरी ओर आ गए और इसको प्राप्त किया।**

सहजयोग की विशेषता यह है कि हम धर्म को बंधन नहीं मानते, देश को बंधन नहीं मानते, किसी क्रीड को किसी रेस को हम बंधन नहीं मानते, किसी भी चीज़ का बंधन नहीं है।

हम बस मनुष्य को मनुष्य मानते हैं और सारे धर्मों का आदर करते हैं पर धर्मों का और धर्म तत्त्वों का, न कि उसका जो परिहास कर लिया है लोगों ने धर्मों का। **यही कारण है कि जिस भी धर्म में लोग होंगे वे सब हमारे इस सहजयोग में कूदते हैं और वो सोचते हैं कि हमें एक असली धर्म मिल गया।**

आज तक सब बड़े बड़े अवतरण हो गये उन्होंने अध्यात्म की बात की पर अनुभूति नहीं दे पाये थे और बग़ैर अनुभूति के जब मनुष्य किसी चीज़ को प्राप्त करता है तो उसमें उसका विश्वास स्थिर नहीं रह पाता।

..... हमने तो सिर्फ यह किया, हमने इस चीज़ को खोजा कि अनुभूति करवाने का यह कार्य यदि सामूहिक तरह से कर सकें तो इसका असर ज्यादा अच्छा होगा। सामूहिक आत्मसाक्षात्कार देना अब बहुत आसान है।

[चै. लहरी २००३]

अध्याय 10

सहज साधकों को सतर्क एवं आश्वस्त करती श्री माताजी

श्री माताजी ने स्वयं अपने ही परिश्रम से सहजयोग को एक आध्यात्मिक आंदोलन के रूप में विश्व के कोने-कोने में पहुँचा दिया। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे कुछ भी ज्ञान देने से पहले जिज्ञासु साधकों की सामूहिक रूप से कुण्डलिनी जाग्रत कर देतीं जिसके कारण उनकी चेतना प्रकाशित हो जाती और साधक भक्त श्री माँ की बतायी बातों को अच्छी तरह से समझ लेते। इस प्रकार धीरे-धीरे उन्हें कई चीज़ों की वास्तविकता समझ में आने लगी, वे साधक स्वयं ही सत्य को आत्मसात करने लगे और तब स्वत: ही साधकों के बहुत सारे भ्रम दूर हो गए।

श्री माताजी ने साधकों को कलियुग, कुगुरुओं एवं कुण्डलिनी-जागरण के विषय में बहुत सारी बाते बतायीं --

I. आप युग युगान्तरों के साधक हैं, युगों से आपकी रक्षा की गई है। अब इस घोर कलियुग में आपको अपनी साधना का फल मिलेगा। अब समय आ गया है।

"यह घोर कलियुग का समय है। कलियुग के लिए कहा गया है कि यह भ्रम का युग है और यदि इस भ्रम में आप फँस गए तो आप समाप्त हो जाएँगे, परन्तु भ्रम को यदि आप पहचान लेंगे तो सत्य को खोजने लगेंगे, यही कारण है कि आज जिज्ञासा बहुत बढ़ गई है क्योंकि लोग भ्रम को महसूस कर सकते हैं, वे जानते हैं कि यह सत्य नहीं है ..... और तब **वे जानना चाहते हैं कि सत्य क्या है? और कहाँ है? और इसे खोजने का वे प्रयत्न करते हैं, इस प्रकार कलियुग में सत्य साधना प्रारम्भ हुई।**

'दमयंती पुराण' में कलियुग की कहानी बताई गई है। कलि द्वारा फैलाए गए भ्रम के कारण राजा नल की पत्नी दमयन्ती अपने पति से बिछुड़ गई, एक

दिन ये भयानक कलि महाराज नल के हाथ आ गया, नल ने उससे कहा- "अब तुम्हारा गला दबाकर मैं तुमको समाप्त कर दूँगा।" कलि ने कहा "आप ऐसा कर सकते हैं पर पहले महत्त्व सुन लें कि मेरा महत्त्व क्या है और मैं यहाँ पर क्यों हूँ?"

कलि ने बताया कि "जब मैं आऊँगा और विश्व में शासन करूँगा अर्थात जब कलियुग होगा तब लोग भ्रांति में फँस जाएँगे, वे नहीं जान पाएँगे कि ये सत्य है या असत्य और तब वे सत्य को खोजने का प्रयत्न करेंगे। केवल वही लोग नहीं जो सब कुछ त्यागकर जंगलों में चले जाएँगे, परन्तु अन्य प्रकार के लोग भी। वो लोग जो अब तपस्यारत हैं, कलियुग में जन्म लेंगे और सर्व साधारण गृहस्थों की तरह इस भ्रम में फँस जाएँगे। भ्रम में फँसने के पश्चात वे साधना शुरू करेंगे क्योंकि **वे महसूस कर लेंगे कि असत्य है और तत्पश्चात सत्य को खोजने लगेंगे। केवल तब उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होगा।"**

हज़ारों वर्ष पूर्व कलि ने यह सब अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में बताया। तो कलियुग ही वह समय है जब लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकेंगे, वे अपनी आत्मा को जान जाएँगे, सत्य को जान जाएँगे। बहुत समय पूर्व ये बात कही गयी थीं और अब आप इसे स्वयं देख सकते हैं।"

[७-११-९९ डेल्फी यूनान (ग्रीस)]

"सभी अवतरण इस समय की भविष्यवाणी कह रहे थे। वह समय आ गया है। इसीलिए इस काल को मैं बसन्त ऋतु कहती हूँ और आप लोग इसके फल हैं। भिन्न ऋतुओं के ब्रह्माण्डीय चक्र की तरह यह सुंदर समय आया है और काल चक्र की तरह घूम कर इसे आगे जाना है। सहजयोग तो पहले बहुत छोटे स्तर पर शुरू हुआ परन्तु अब पूरे विश्व में फैल कर बहुत बड़ा होग गया है।

[९ मई १९९९ कबेला इटली]

"ये विधि लिखित है कि इस कलियुग में ये कार्य होने वाला है और इसकी सम्पन्नता भी होनी है। ... ... आपके यहाँ 'नाड़ी ग्रंथ' है भृगुमुनि का,

जिसमें उन्होंने साफ-साफ लिखा है कि कलियुग में इस साल आपके यहाँ सहजयोग शुरू होने वाला है और उस सहजयोग के शुरू होने से लोगों की जो भ्रमिष्ट बातें हैं या जो ग़लत रास्ते पर चले गए हैं या जो कलियुग के चक्कर में आ गए हैं वो सब बच जाएँगे और उनकी कुण्डलिनी जाग्रत हो जाएगी।"

[१४-४-२००३ टी. वी. साक्षात्कार]

II. नकारात्मक शक्तियाँ सभी साधकों की बुद्धि को भ्रमित कर रही हैं, आपको उनसे सतर्क रहना होगा।

"मुझे लगता है कि परमात्मा के नज़रिए से जब भी कोई कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है तो सारी नकारात्मक शक्तियाँ इस दिव्य कार्य में विलम्ब करवाने के लिए, इसमें विघ्न डालने के लिये तथा इसका पथ परिवर्तन करने के लिए अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने लगती हैं।"

"सोलह राक्षसों ने संसार में जन्म लिया है और वे अपने को महागुरु बन के घूम रहे हैं।"

"सभी राक्षसों को मार दिया गया था परन्तु एक बार फिर वे अपने स्थान पर वापिस आ गए हैं और सबसे बुरी बात ये है कि वे अब गुरु रूप में आए हैं। वे चर्च, कैथोलिक चर्च, प्रोटेस्टेंट चर्च एवं सभी प्रकार के मंदिरों और कट्टरपंथियों के रूप में आए हैं, वे राक्षसों जैसे प्रतीत होते हैं, यदि आप उन्हें मानते हैं तो वे आपको प्रभावित करके आपकी खोपड़ी में घुस जाते हैं।"

[सहज ब्रह्मविद्या]

"पाँच मई 1970 को सहस्रार खोलने के तुरंत बाद ही हमारा एक बहुत बड़ा प्रवचन हुआ था, हज़ारों लोग आए थे, मैंने उन्हें स्पष्ट बताया कि सभी ठग हैं और पाखण्डी है। इनमें से कुछ लोग तो दुष्ट हैं और असुर हैं। इन सबके नाम भी मैंने उन्हें बताए। मैंने उन्हें बताया कि कोई भी इन लोगों के समीप न जाएँ।

मैंने स्पष्ट रूप से सारी बातें बताईं, वे लोग घबरा गए। कहने लगे, **"आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए, वो आकर आपको क़त्ल कर देंगे।"**

परन्तु किसी ने कुछ नहीं किया और न ही कोई अदालत गया। पर वे मुझे बदनाम करने का प्रयत्न करते रहते। **जब मैंने ये कहा "परमात्मा के नाम पर पैसा नहीं दिया जा सकता" तो इन्होंने समाचार पत्रों में मेरे विरुद्ध लिखवाया।** उन्हें लगा कि ऐसा कहकर कि "परमात्मा के नाम पर पैसा मत लो" मैं उन्हें नुक़सान पहुँचा रही हूँ। ये यदि कोई धन्धा है तो आप इसे अवश्य करो, परन्तु परमात्मा का कार्य तो धंधा नहीं है।"

[९-७-१९८५ विएना]

"मैं तो माँ हूँ... ... अपने बच्चों को सच्ची बात ही बताऊँगी।"

"ब्रह्माण्ड के इतिहास में हम विश्व की भयानकतम नकारात्मकता के बीच में हैं। प्राचीन काल में एक समय पर कोई एक राक्षस होता था। जिसे (दैवी शक्तियों को) सँभालना होता था। एक राक्षस को नियंत्रित करना आसान कार्य था, परन्तु इतने अधिक राक्षसों को सँभालने के लिए बहुत अधिक कार्य की आवश्कता है, सबसे बुरी बात तो यह है कि आधुनिक समय में ये राक्षस लोगों के मस्तिष्क में प्रवेश कर गए हैं, उनकी शिक्षाओं और उनके बनाए गए भ्रमों के कारण लोगों ने उन्हें स्वीकार कर लिया है। इन्हें स्वीकार करने वाले सभी मेरे बच्चे हैं, वे जिज्ञासु हैं, सत्य साधक हैं। ये ऐसा हुआ मानों धन ऐंठने के लिए बच्चों को उठा लिया जाए। ये लोग मेरे बच्चों को मेरे सामने कर देते हैं और मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ?

मैं राक्षसों को मारने का प्रयत्न करती हूँ परन्तु मेरे बच्चे सामने आकर खड़े हो जाते हैं तो आधुनिक काल में इन्हें नष्ट करने का कौन सा सर्वोत्तम उपाय है?यह अत्यन्त कठिन और नाजुक कार्य है ... ... इसका उपाय ये है कि इन राक्षसों को एक ऐसी अवस्था तक ले आया जाए जहाँ **इनका पर्दाफाश हो जाए, ये अनावृत हो जाएँ और पूरा विश्व इन्हें पहचान जाए कि ये क्या हैं?**

[८-१०-१९८८ जु. अ. २००१]

..... "नकारात्मक विचारों के रूप में राक्षसी प्रवृत्तियाँ हमारे बच्चों के

दिमाग़ में अधिकार जमाए बैठी हैं। ..... एक बार जब वे दिमाग़ में घुस जाते हैं तो भक्त साधक गण बाधाग्रस्त होकर सभी समस्याओं का शिकार हो जाते हैं, इनसे लड़ने का एकमात्र तरीक़ा है कि मैं अपने **बच्चों का आत्म-बल बढ़ाऊँ ताकि वे स्वयं इन राक्षसों से लड़ सकें।"**

[३-३-७८]

III. कुण्डलिनी जागरण द्वारा आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद आपको अनन्त आशीर्वाद मिलेंगे। सभी साधक भक्तों को आश्वस्त करते हुए श्री माताजी बता रही हैं --

"जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तो साधक का संबध परमशक्ति से हो जाता है। आंइस्टाइन जैसे वैज्ञानिक ने इसे ही Torsion Area कहा है जहाँ पहुँचने पर अकस्मात ऐसी चीज़ें घटित हो जाती हैं। इस तरह से आप शांत चित्त हो जाते हैं और उस शांत चित्त में नई-नई उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं।

आत्म साक्षात्कार के बाद ही आप जानेगें कि आप क्या हैं और क्या आपकी शक्तियाँ हैं, और क्या कर सकते हैं आप?... ... मैं तो बहुत आश्चर्य में हूँ कि परदेश में जब मैं रहती हूँ तो ये परदेशी, इन्होंने तो कुण्डलिनी का नाम भी नहीं सुना था, पर जब से पार हो गए तो न जाने क्या-क्या चमत्कार कर रहे हैं -

मैं तलियाता में गई तो वहाँ पर माफिया के एक मुख्य डॉन थे, तो उन्होंने आत्मसाक्षात्कार ले लिया, सहजयोग में आ गए थे। मैने कहा, "भई कमाल है इन्होंने सहजयोग कैसे ले लिया?" कहने लगी 'माँ वो सहजयोगी हो गए हैं आपसे मिलना चाहते है।' वो आए तो इतने नम्र। बस उन्होंने इतना कहा कि- "माँ मैंने बहुत गुनाह किए हैं इसकी मुझे माफी मिल जाएगी या नहीं, ये बता दो।" मैंने कहा - "अरे! क्या बात करते हो, तुमने गुनाह किए वो तो हो गए, अब भूतकाल में हो गए, पीछे हो गए। आज मैं तुमसे जो बात कर रही हूँ वो वर्तमान की है, अब वर्तमान में तुम क्या हो? तुम आज कहाँ से कहाँ हो गए हो यह देखना है।" फिर उन्होंने इतनी मदद की हम लोगों की इतनी सराहना की ...

... एक माफिया में इतना बदलाव?

..... **"ये चीज़ ही ऐसी है ..... कुण्डलिनी जागरण के पश्चात जब आपका चित्त आपकी ही आत्मा के प्रकाश से आलोकित होता है तो आप एक अलग ही प्रकाशमान व्यक्ति हो जाते हैं, ऐसे व्यक्ति कि जो सारे संसार की भलाई करता है।"** ..... आज देखिए हमसे मिलने एक साहब आए थे, वो आइवोरी कोस्ट के मुखिया थे, वो इतने नम्र आदमी, इतने नम्र आदमी कि मैं तो हैरान हो गई। आकर नम्रतापूर्वक मुझसे कहते हैं कि – "माँ, ऐसा करिए कि हमारे देश में सब लोगों को सहजयोगी बना दीजिए।" मैंने कहा – "अच्छा ठीक है, तुम्हीं बना सकते हो सबको।" कहने लगे – "मैं तो इतने मज़े में आ गया हूँ।" उन्होंने तीन बीवियों से तलाक़ लिए थे। अब कहने लगे – ''मैं तो शर्मिन्दा हूँ, मेरी क्या ज़िन्दगी है? मैंने क्यों ऐसी जिन्दगी बनाई? मेरे समझ में नहीं आया पर **अब जो है मैं बिल्कुल बदल गया हूँ। अब मेरे अन्दर इतना आनन्द, इतनी शान्ति और इतना सुख है।"**

श्री माताजी ने समझाया कि --

"अपनी अज्ञानता के कारण ही व्यक्ति आज तक भटकता रहा है ..... अज्ञानता के कारण ही उसके अंदर कुबुद्धि आ गई है..... इस कुबुद्धि के कारण ही वह हर प्रकार के ग़लत कार्य करता रहा है। ..... **अब कुंडलिनी-जागरण के पश्चात इसी कुबुद्धि को प्रकाशित करती है आपकी कुण्डलिनी** ..... आप प्रकाशित हो जाते हैं और आपकी समझ में आ जाता है कि मैं ये क्या-क्या कर रहा था? ये किस बेवकूफी में मैं दौड़ रहा था? ये किस बात को लेकर मैं लड़ रहा था? ..... धीरे-धीरे आप स्वयं को पहचानने लगते हैं।

"यह सब आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद ही संभव है, क्योंकि कुण्डलिनी-जागरण के बाद आदमी जो है परिवर्तित हो जाता हे, ट्रांसफार्म [transform] हो जाता है और जब आदमी परिवर्तित हो जाता है तब वो बहुत निख़र आता है और सुंदर हो जाता है। आज दुनियाँ को इस परिवर्तन की ज़रूरत

है। ..... इसी काम के लिए मैंने जहाँ तक हुआ है, मेहनत की है, इतने देशों में घूमी हूँ।''

''अब आप लोगों को चाहिए जो सहजयोग में आए हैं या आने वाले हैं उनको चाहिए कि और लोगों को बताएँ हमें उनको इस परिवर्तन में जाना है। बहुत से लोग भटके हुए हैं, यानी परमात्मा के नाम पर भटके हुए हैं, धर्म के नाम पर भटके हुए हैं, किसी भी चीज़ में भटके हुए हैं। इनको आप जब इस अवस्था में लाएँगे तब आप देखिए इनका दीप कैसे जलता है?"

आप देखिए इतनी सारी बत्तियाँ जल रही है वहाँ इनका कनेक्शन अगर मेन के साथ न हो तो क्या ये जल सकती है? इसका संबध ग़र मेन से नहीं है तो इसका उपयोग नहीं। इसी प्रकार हमारी भी हालत है, हमारा सम्बन्ध यदि महान शक्ति (परमात्मा) के साथ नहीं तो हमारा जीवन भी व्यर्थ है।

कुण्डलिनी-जागरण के पश्चात हमारा सम्बन्ध इस महान शक्ति के साथ होता है, ये बात सत्य थी, सत्य ही है और सत्य ही रहेगी।

[२५-३-२०००]

श्री माताजी के इतने अथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप सहजयोग विश्वव्यापी बना, सहजयोगियों की संख्या भी बढ़ी। बहुत सारे साधक महानता के स्तर तक पहुँचे परन्तु फिर भी अधिकांश सहजयोगी इसे उतनी गंभीरता से नहीं समझ पा रहे थे, बहुत ही कैज़ुअल तरीक़े से वे इसे ले रहे थे, उनके मन में श्री माता जी के प्रति भी वो समर्पण नहीं था जो सहजयोग में उनकी ही प्रगति के लिए आवश्यक था, ऐसे समूह भी बनने लगे जिन्हें श्री माताजी के दैवी अवतरण के प्रति संशय होने लगा था। श्री माताजी ने इस बात को महसूस किया और अंततः सहजयोगियों को अपने वास्तविक स्वरूप के विषय में बताने का निर्णय लिया।

अध्याय 11

अपने वास्तविक स्वरूप की घोषणा करती श्री माताजी

सहजयोगियों की डाँवाडोल स्थिति को देखते हुए श्री माता जी ने अपने दैवी स्वरूप की घोषणा की और स्पष्ट रूप से चेतावनी भी दी कि साधकों को अपनी ही प्रगति के लिए उन्हें पूरी तरह पहचानना और 'सहजयोग' को मान्यता देना होगा – यह अनिवार्य है।

श्री माताजी ने सहजयोगियों को बार बार समझाया –

"अब समय आ गया है कि सहजयोग को पहचानना आवश्यक है ..... कई लोग ऐसे हैं जो कहते हैं – ''माँ हम सहजयोग में इस तरह क्यों विश्वास करें? हम बस आपको माँ पुकार सकते हैं, आप हमारी माँ हो सकती हो।'' ठीक है, कोई बात नहीं, लेकिन आप आत्म-साक्षात्कार नहीं प्राप्त कर सकते और यदि आपने यह प्राप्त भी कर लिया तो आप इसे स्थायी नहीं रख सकते। आपको पहचानना पड़ेगा, पहचानना ही सहजयोग की पूजा है।

अब भी लोगों का एक ऐसा समूह है जो आत्मसाक्षात्कारी है पर उस स्थान पर नहीं है। इन दोनों में क्या अन्तर है? अत्यंत सहज- 'पहचान'। जिन लोगों ने मुझे नहीं पहचाना है उन्हें आशीर्वाद प्राप्त नहीं होगा। वे गोल गोल घूमते रहेंगे। अत: यह पहचानना आवश्यक है।

लेकिन जो पहचानते भी हैं वे आंशिक रूप से पहचानते हैं वे अनधिकार स्वतंत्रता लेते हैं, आचरण में यथोचित आदर भाव नम्रता व संयम नहीं बरतते, वे हास्यास्पद प्रकार से व्यवहार करते हैं ..... मैंने कई बार देखा है कि मैं भाषण दे रही होती हूँ और लोग हाथ ऊपर करके कुंडलिनी चढ़ा रहे होते हैं या गप्पे मार रहे होते हैं। मुझे आश्चर्य होता है क्योंकि अगर आपने पहचानना है तो

आपको पता होना चाहिए कि आप किसके सम्मुख खड़े हैं, क्योंकि यह मेरे फायदे के लिए नहीं है, मेरी इसमें कोई हानि नहीं होती बस यह केवल दर्शाता है कि अपनी उत्क्रांति में आपने पहचाना नहीं, मान्यता देने में असमर्थ रहे। ..... आप सम्पूर्णतया पहचानने की कोशिश करें अगर आप नहीं पहचानते तो मुझे ख़ेद है कि मैं आपको आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकती जो स्थायी हो। क्षणिक रूप से आप इसे पा सकते हैं किंतु यह स्थायी नहीं होगा ..... **तो अपनी उच्चतम अवस्था को प्राप्त करने का सरलतम मार्ग है कि आप शनैः शनैः पहचानें और मान्यता प्रदान करें।**

आधे-अधूरे लोगों का समूह जो अभी तक सहजयोग में पूरी तरह स्थापित नहीं हो पाये हैं, जिन्हें अभी पूरी शक्तियाँ नहीं प्राप्त हुई हैं ये लोग मुझे पहचान नहीं सकते ..... वे सदैव असामंजस्य की स्थिति में रहते हैं ख़ .... कुछ लोग ऐसे हैं जैसे उदाहरण के रूप में शिरडी साईं नाथ के शिष्य। शिरडी सांई नाथ अब जीवित नहीं हैं, परन्तु वे उनमें विश्वास करते हैं, परन्तु अब शिरडी के सांई नाथ हैं कहाँ? वर्त्तमान अवतरण में ये लोग विश्वास नहीं करना चाहते हैं, वे केवल मृत में विश्वास करना चाहते हैं। वे श्रीराम को मानते हैं, वे ईसा मसीह को मानते हैं, वे मेरी तुलना भी ईसा मसीह से करते हैं। ईसा मसीह सम मुझे समझे बिना ये 'सहजयोग' को स्वीकार नहीं कर सकते या फिर वे मोजिज़ या किसी ऐसे अन्य अवतरण से मेरी तुलना करेंगे।

मुझे आप अपनी धारणाओं में नहीं बाँध सकते, आपकी धारणायें सीमित हैं आपको वर्तमान में रहना है। वर्तमान में आज वो मैं हूँ जिसने आपको आत्मसाक्षात्कार दिया है।

[४-२-१९८३]

''सहजयोग की कुंजी ये है कि आप मुझे पहचानें। आप यदि मुझे पहचान नहीं सकते तो सहजयोग में आप उन्नति नहीं कर सकते ..... कृपा करके मुझे पहचानें। आपकी माँ के रूप में मेरी यह प्रार्थना है कि आप लोग मुझे पहचानें, आपने मुझे कुछ देना नहीं है, मुझसे बस लेते जाइए। परंतु मुझे पहचानें अवश्य। आप यदि मुझे नकारते रहेंगे तो आपका हृदय नहीं खुलेगा, ये हमेशा बंद रहेगा .

..... और हृदय खुले बिना आपकी प्रगति नहीं हो सकती ..... **आपको मुझे पूरे हृदय से मान्यता प्रदान करनी होगी ..... अपने हृदय में मुझे बिठाना होगा।**

ईसा मसीह से पूर्व जितने भी अवतरण आए उनमें से किसी ने खुल्लम खुल्ला यह नहीं कहा था कि वे अवतरण हैं। ईसा मसीह के समय में उन्होंने यह महसूस किया कि यह बताना आवश्यक है अन्यथा लोग इसे नहीं समझेंगे . ..... मैंने अपने विषय में कभी नहीं कहा क्योंकि मैंने महसूस कर लिया था कि मानव ने अब अहं का ऐसा आयाम प्राप्त कर लिया है जो ईसा मसीह के अहं से भी भयानक है ..... मैं जानती थी कि इन अहं ग्रस्त लोगों के लिए इस सत्य को स्वीकार करना। (कि मैं देवी अवतरण हूँ) असंभव होगा।

यही कारण है कि मैंने तब तक अपने विषय में कुछ नहीं बताया जब तक कुछ भूतबाधित लोगों ने मेरे विषय में नहीं बताया और जब तक लोग इस बात पर आश्चर्य नहीं करने लगे कि माताजी की उपस्थिति में कुंडलिनी जागृति जैसा कठिन कार्य भी इतनी गति से हो जाता है ... ... तो अपने ही तर्क-वितर्क के माध्यम से लोग इस बिन्दु पर पहुँचे कि माता जी कुछ विशेष चीज़ हैं।''

[२-१२-७९ लंदन]

श्री माताजी ने सहजयोगियों के हित के लिए ही उनके समक्ष अपनी वास्तविकता एवं अपने लक्ष्य के विषय में घोषणा की -

"मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही वह अवतरण हूँ जिसे मानवता की रक्षा करनी है। मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही आदि-शक्ति हूँ जो सभी माताओं की माँ है, जो आदि माँ है, जो शक्ति है, परमात्मा की शुद्ध इच्छा है, जो स्वयं को इस सृष्टि को, मानव मात्र को स्वयं का अर्थ देने के लिए इस पृथ्वी पर अवतरित हुई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपने प्रेम एवं धैर्य के माध्यम से और अपनी शक्ति के माध्यम से मैं इस कार्य को पूर्ण करूँगी।

मैंने ही बार-बार पृथ्वी पर जन्म लिया परंतु इस बार मानव को स्वर्ग का साम्राज्य, आनंद तथा परमानंद प्रदान करने के लिए मैं अपनी पूर्ण कलाओं में पूर्ण शक्तियों के साथ अवतरित हुई हूँ। मानव का केवल उद्धार करने तथा

उनकी रक्षा करने के लिए नहीं आई, वह आनंद एवं आशीष देने के लिए आई हूँ जो आपके परमपिता (परमात्मा, अल्लाह, सदाशिव) आप पर बरसाना चाहते हैं।"

इन शब्दों को कुछ समय सहजयोगियों तक ही सीमित रखा जाना चाहिए ... ... आपमें अभी भी ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने मुझे अभी पहचाना नहीं। **मेरी इस घोषणा से उनके अंदर यह पहचान कार्यान्वित होगी।**

मुझे पहचाने बिना आप लीला नहीं देख सकते, लीला को देखे बिना आपमें आत्मविश्वास नहीं आ सकता, आत्मविश्वास के बिना आप गुरु नहीं बन सकते, गुरु बने बिना आप अन्य लोगों की सहायता नहीं कर सकते, अन्य लोगों की सहायता किए बिना आप आनंद में नहीं जा सकते ... ... अब आप आत्मविश्वस्त, आनन्दित एवं प्रसन्न हों ताकि मेरी शक्तियाँ आपकी रक्षा करें, मेरा प्रेम आपको शक्ति प्रदान करे और मेरा स्वभाव आपको शांति एवं आनंद की स्थिति प्रदान करे।"

[२-१२-१९७९ लंदन]

निःसन्देह श्री माताजी की घोषणा से सहजयोगियों में उनके प्रति श्रद्धा व विश्वास बढ़ा, वे लाभान्वित हुए और तब उन्होंने आग्रह किया कि माता जी आप अपने देवी अवतरण के विषय में जन-सामान्य को भी स्वयं ही बतायें।

"प्रायः (पब्लिक प्रोग्राम में) मैं अपने विषय में नहीं बताया करती परन्तु आज ज्यों ही मैं आई इन्होंने (सहजयोगियों ने) मुझे अपने बारे में बताने के लिए विवश किया। ऐसा करना व्यवहार कुशलता नहीं है, अपने विषय में कुछ भी कहना व्यवहार कुशलता नहीं है। बेहतर होगा कि आप स्वयं मुझे पहचानें और फिर मैं आपको बताऊँ। **ईसा मसीह को सूली पर चढ़ा दिया गया, सभी लोगों को कष्ट दिए गए, मैं नहीं चाहती थी कि मेरे काम में कोई रुकावट आये** क्योंकि आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति से पूर्व आपको कुछ बताने को कोई लाभ नहीं, आत्मसाक्षात्कार के बाद ही आपको बताना बेहतर होगा ..... फिर भी आपके प्रबल आग्रह के कारण आज मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही आदि

शक्ति हूँ। मैं ही वह पावन आत्मा हूँ जो आपको आत्मसाक्षात्कार प्रदान करने के लिए अवतरित हुई है। .....

मैं पृथ्वी पर आपको आत्मसाक्षात्कार देने के लिए ही अवतरित हुई हूँ, मेरा यही कार्य है और यह कार्य सभी कार्यों से कठिन है ..... यह इतना अकृतज्ञतापूर्ण कार्य है जिसे माँ के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता ..... सभी विचारों का समन्वय और मानव स्वभाव को समझ कर संतुलन स्थापित करने के लिए केवल माँ की ही आवश्यकता है।

आपमें विचारों का इतना भंडार है, इतना भ्रम है कि आप कुछ निर्णय नहीं कर पाते अतः आदिशक्ति को मानव रूप में पृथ्वी पर अवतरित होना पड़ा और अत्यंत चतुराई पूर्वक आपको सब कुछ बताना पड़ा।

मैं परमेश्वरी शक्ति की प्रतिमूर्त्ति हूँ इसे आप नकार नहीं सकते ..... मेरा यह स्वप्न है यह इच्छा है कि आप लोग आत्म साक्षात्कार प्राप्त कर लें।''

[३०-९-१९८१ न्यूयार्क]

श्री माताजी अपनी दैवी शक्तियों के प्रति सहजयोगियों को विश्वस्त करने के लिए समय समय पर उन्हें अपने अद्‌भुत चमत्कार दिखाती रही हैं -

''कुछ समय पूर्व गणपति पुले में कार्यक्रम होने से पहले श्री चव्हाण और सात सहजयोगी रत्नागिरी में जन कार्यक्रम करने के लिए श्री माताजी के साथ गए। वहाँ स्थित प्रसिद्ध गणेश मंदिर देखने के बाद वे समुद्र के किनारे गए। वहाँ पर श्रीमाता जी ने कहा - ''अब मैं तुम्हें एक चमत्कार दिखाऊँगी समुद्र की ओर देखें और मुझे बतायें कि आपकों क्या दिखाई दिया?' ..... हमने कहा - 'श्री माताजी, चहुँ ओर से सभी दिशाओं से लहरें हमारी ओर आती दिखाई दे रही हैं।'' तब श्री माताजी ने कहा - ''अच्छा अब देखो, मैं लहरों की दिशा बदल दूँगी।''

तब श्री माताजी दक्षिण की ओर चल पड़ीं और लहरें भी उसी दिशा में

मुड़ गई। इसके बाद श्री माताजी दूसरी दिशा की ओर मुड़ी और लहरें भी उसी ओर मुड़ गईं, तब श्री माताजी शान्त खड़ी हो गईं, सभी लहरें भी रुक गईं, ऐसा लगा जैसे वे रुककर अगले आदेश की प्रतीक्षा कर रही हों।

श्री माताजी ने कहा – ''हो सकता है कि आपको सन्देह हो कि शायद हवा के कारण ऐसा हुआ, इसलिए मैं आपको पुनः दिखाऊँगी।'' तब उन्होंने वहाँ सब कुछ पुनः किया, लहरों ने उनका आदेश माना। श्री माताजी ने तब बताया कि दूसरी बार वे यह चमत्कार कर रही हैं, पहली बार ऐसा उन्होंने अमेरिका में किया था।

उसी जगह समुद्र के किनारे ही श्री माताजी ने कहा – ''अब मैं आप सबको एक चमत्कार और दिखाऊँगी। देखो, श्री गणेश मंदिर उस दिशा में है'' और उन्होंने एक ओर उँगली उठाई – ''अब देखो वहाँ तुम्हें कुछ दिखाई दे रहा है?'' सभी ने कहा – ''नहीं श्रीमाता जी, हमें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा।'

श्री माताजी ने फिर उसी ओर इशारा किया और कहा – 'पुनः देखो'। सबने देखा कि एक विशाल प्रकाश किरण धीरे-धीरे उनके सम्मुख प्रकट हो रही थी। यह बहुत बड़ा बेलनाकार प्रकाश सा कुछ था। मानो हज़ार बोल्ट वाला प्रकाश पृथ्वी माँ से निकल कर सीधे आकाश में जा रहा हो।

श्री माताजी ने कहा – ''यहाँ आस-पास और कोई प्रकाश नहीं है अतः यह प्रकाश गणेश मंदिर से आ रहा है।' श्री माताजी ने फिर बताया – 'यह प्रकाश तब तक नहीं रुकेगा। जब तक मैं इसे रुकने के लिए नहीं कहती। ये प्रकाश श्री गणेश के स्वयंभू विग्रह में से आ रहा है और मैं उसे निकाल रही हूँ।''

श्री माताजी ने पूछा – ''क्या हम सबने यह प्रकाश देख लिया है और क्या वे इसे बंद कर दें,''

सभी उपस्थित सहजयोगियों ने कहा कि उन्होंने वह प्रकाश देख लिया है और अब श्री माताजी गणेश मंदिर से निकलने वाले प्रकाश को रोक सकती हैं।

दस मिनट तक वह प्रकाश वहाँ पर था।''

[निर्मल-सुरभि से उद्‌घृत]

श्री माताजी ने तो बहुत पहले ही साधकों को अपने लक्ष्य के विषय में संकेत दे दिया था -

"जैसे श्री कृष्ण ने कहा था 'सर्व धर्माणां परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' जैसे ईसा मसीह ने कहा था ''मैं ही प्रकाश हूँ मैं ही मार्ग हूँ'' मेरे शब्द भी वैसे ही हैं - ''मैं लक्ष्य हूँ केवल पथ नहीं।''

[२९-३-१९७५ बम्बई]

''मेरा संदेश आपका पुनर्जन्म है। पूरी मानव-जाति का पुनर्जन्म है, उनकी उत्क्रांति है। ये मेरा सन्देश है और यही मेरा कार्य है।''

[हांगकांग - १९९२]

श्री माताजी का लक्ष्य था अपने साधक बच्चों को उनके परमपिता परमात्मा के साम्राज्य तक पहुँचाना इसी लक्ष्य के लिए वे आजीवन कठिन परिश्रम और हर संभव प्रयत्न करती रहीं इसी के लिए उन्होंने सहजयोगियों के कष्टों और समस्याओं को भी अपने अन्दर सोख लिया और स्वयं असहय शारीरिक कष्ट झेले।

अध्याय 12

साधक बच्चों के कष्टों को आत्मसात करती श्री माताजी

आदिशक्ति श्री माताजी के लिए सारा ब्रह्मांड ही उनका परिवार है इसीलिए पृथ्वी पर आकर उन्होंने अपने सभी साधक भक्त बच्चों को **अपने वात्सल्य की छत्र छाया में ले लिया और हर प्रकार से उनका दुःख दूर करने का प्रयत्न करने लगीं। उन्होंने स्वयं कहा** -

''मुझे इस विश्व को आनन्द, प्रसन्नता और देवत्व की उस सीमा तक लाना है जहाँ मनुष्य जान सकें ... ... कि परमात्मा की गरिमा क्या है? मैं कभी नहीं सोचती कि इसके लिए मुझे कोई कष्ट होगा या मेरा क्या होगा?

[१०-५-१९९२]

श्री माताजी ने बार-बार समझाया है -

"मैं आप लोगों को अपने हृदय में धारण करती हूँ, आप जानते हैं कि अपनी कुंडलिनी का उपयोग करके मैं आपको अपने हृदय में स्थान देती हूँ फिर हृदय से आपको जन्म देती हूँ। ईसा मसीह की तरह यह आपको दूसरा जन्म प्राप्त हुआ है।''

''मैंने बड़ी मेहनत की है, मैंने बड़ी तपस्या की है और उस मेहनत की वज़ह से ही आप हज़ारों की तादाद में पार हो रहे हैं।''

[३०-९-८१, १७-२-८८]

''आप सब सहजयोगियो को तो मैंने अपने शरीर में स्थान दे दिया है आप सब मेरे अंदर हैं। ऐसा तो किसी ने नहीं किया। ..... बड़ी तकलीफें उठाती हूँ आपकी सफाई के लिए।''

"तुम सभी एक हो ..... तुम एक ही शरीर में हो और वो भी मेरे ही शरीर के अंदर हो, मेरा ही projection हो। मैं अपने को ही कहे दे रही हूँ, मैं दूसरा

किसको कहूँ, दूसरा है ही कौन? तुम बीमार होते हो तो अन्तर में वैसी ही पीड़ा होती है जैसे कि मैं ही स्वयं बीमार हो गई हूँ और सुखी होते हो तो अन्दर से वही आनंद आता है जैसे कि मैं ही महासुखी हो गई हूँ। तुम लोग ग़र सुखी नहीं हो तो मुझे कोई सुख अच्छा नहीं लगता है तभी रात दिन जगती रहती हूँ तुम्हारे लिए।''

[१८-९-१९८८, २५-११-१९७५]

अपने विशाल परिवार के दुःखों का हरण करने के लिए श्री माताजी ने एक ऐसा निर्णय लिया जो उनसे पूर्व किसी ने नहीं लिया उन्होंने स्वयं कहा है

"आप सब लोगों को अपने शरीर में स्थान देने का, आपको आत्मसात करने का निर्णय मैंने कर लिया था। मैं जानती थी कि **यह अत्यंत भयानक खेल है परंतु मैंने यह खेल खेला क्योंकि इस समय मुझसे यही अपेक्षित था कि मैं आप सबको स्वयं में आत्मसात करूँ। अब जब मैंने आप सबको अपने शरीर के अंदर कर लिया तो आपके साथ साथ आपकी सारी समस्यायें आपके सभी कष्ट मेरे में, मेरे इस शरीर के अंदर चले गए।** समुद्र में डुबकी लगाकर आप लोग तो स्वच्छ हो गए हैं परन्तु समुद्र की (यानी मेरी) स्थिति पर विचार कीजिए। आपकी समस्यायें और कष्ट अब मेरे अन्दर हैं और वे अत्यंत कष्टकर हैं।''

"हर जन कार्यक्रम में जहाँ मैं अपनी कुंडलिनी जागृत कर सामूहिक आत्मसाक्षात्कार देती हूँ मुझे अपनी कुंडलिनी उठानी पड़ती है यह कार्य अत्यंत कष्टकर है। पूजा के कार्यक्रमों के पश्चात भी शारीरिक कष्ट हो जाता है, एक प्रकार से कुछ देर के लिए मेरे शरीर पर सूजन आ जाती है इसका कारण यह है कि आपके अंदर जो कुछ भी नकारात्मकता है उसे मैं अपने अंदर आत्मसात करती हूँ।''

[६-६-१९९३, २०-५-१९९७]

अपने साथ घटित कुछ प्रसंगों का उल्लेख श्री माताजी ने किया है -

"एक बार हमने कार्यभारियों की एक गोष्ठी की वे आए तथा बैठक में बैठ गए। ज्यों ही वे एकत्र हुए मेरे पेट में इतना दर्द हुआ तथा इतनी भयंकर पेचिश मुझे हुई कि आप विश्वास नहीं कर सकते। किसको ये सब कष्ट थे, मैं नहीं जानती।''

''आप देखें कि मैंने यह ख़तरा (आपकी समस्याओं और कष्टों को आत्मसात करने का) अपने पर ले लिया है ..... मेरे लिए तो यह प्रतिदिन का क्रूसारोपण है...

एक बार दिल्ली में एक भद्र पुरुष जो कार्यभारी (नेता) हैं, मुझे मिलने के लिए आए और मेरे एक पैर में जलन तथा दर्द होने लगा। मेरी समझ में नहीं आया कि उन्हें बाहर जाने के लिए कैसे कहूँ? मैं उन्हें चोट नहीं पहुँचा सकती थी। परंतु मैंने कहा - ''क्या बात है? आप कहाँ गए थे और क्या किया था?'' उन्होंने महसूस किया और बाहर चले गए। उनके जाते ही मेरा पैर ठीक हो गया।... ... इस प्रकार समस्याओं से भरे पुरुष या स्त्री जब मेरे चित्त के बहुत समीप आ जाते है तो (प्रेम वश) उनका कष्ट मुझे सहना पड़ता है।"

पूजा के कार्यक्रमों के पश्चात मेरे शरीर से बहुत ज़ोरों से चैतन्य लहरियाँ प्रवाहित होती हैं परन्तु आप सब उन्हें अच्छे से ग्रहण ही नहीं कर पाते इसलिए मुझे बहुत तक़लीफ होती है ..... और मैं सुस्त हो जाती हूँ।

"आपको आश्चर्य होगा अभी हम पठानकोट गए थे वहाँ से धर्मशाला। कुछ भी नहीं पढ़े हुए एकदम अनपढ़ लोग गाँव के लोग, उन्हें कहा गया - देवी आने वाली हैं। मेरा चित्र देखा पहचान गए, बोले - ''हम तो देवी-जागरण के लिए आयेंगे।'' ढाई हज़ार लोग प्रोग्राम में आए और तुरंत पार हो गए। कितनी उन्हें देवी की श्रद्धा। सारी शक्तियाँ उनमें बहने लगीं..... क्या उनके दैवी चेहरे! सब कुछ देखने लायक़ था। मुझे लगा मैं अपने घर आ गई हूँ। उनमें उल्लास था। .....

..... यहाँ (शहरों में) तो जैसे अनिच्छा से सब कुछ करते हों ..... **वहाँ तो इतनी जोरों से चैतन्य की लहरें आ रही थीं, सबको ठंड लगने लगी। हमें लग रहा था कि हम आदि-शक्ति हैं।** यहाँ पर तो मुझे शक हो जाता है कि हूँ या नहीं? वहाँ सचमुच लगा कि आदिशक्ति हूँ।

वहाँ भयंकर बारिश हो रही थी, तीन दिन से सतत बारिश हो रही थी ..... बिजली कड़क रही थी, ऐसे में एक व्यक्ति ने मुझसे कहा - "माँ ऐसी कृपा करें जो बादल फट जायें और सारा वातावरण शुद्ध हो जाए तो बहुत जनता आएगी।'' मैंने कहा - ''हाँ, वह सब मैं कर दूँगी।'' फिर एकदम निरभ्र आकाश था उस दिन, बिल्कुल खुला हुआ।

उस दिन वहाँ मेरी पूजा हुई और मुझे कुछ नहीं हुआ..... सबको चैतन्य मिला..... यहाँ तो पूजा के बाद मुझे इतनी परेशानी होती है, पूजा के बाद लगता है कि अब क्या करूँ। लेकिन वहाँ कुछ नहीं, सब साफ हो गया, उसके बाद ही सारा सफर किया। कुछ नहीं हुआ और यहाँ पूजा के बाद मोटर तक जाने की हिम्मत नहीं रहती, कब घर जा कर आराम करूँगी ऐसी हालत होती है..... श्रद्धा की कमी है अभी आप सबमें ..... आप सोचें कि हम सब श्री माताजी के अंग प्रत्यंग हैं, हमने कोई ग़लती की तो माताजी को तक़लीफ होगी। उन्हें तक़लीफ हो इस तरह का व्यवहार नहीं करना चाहिए..... **आप सारे सहजयोगी मेरे शरीर में है..... आपने अगर एक दूसरे से ग़लत व्यवहार किया तो मुझे ही कष्ट होगा, ऐसा समझना चाहिए।''**

[२-४-१९८५, बंबई]

"कभी-कभी लोग जब मेरे प्रति अमर्यादित होने लगते हैं या मेरा लाभ उठाने लगते हैं तो मुझे बहुत दुःख होता है..... एक दिन मुझे बहुत निराशा हुई, वास्तव में एक बार लोगों का स्वभाव देखकर मुझे बहुत निराशा हुई और मैंने सोचा कि इन सबको भूल जाऊँ। अचानक मैंने अपना फोटो देखा, अपनी आँखों को देखकर मैंने कहा - **''निर्मला, तुम तो केवल करुणा हो, इसमें तुम कुछ नहीं कर सकतीं, तुम्हारे पास कोई विकल्प नहीं है।''** मुझे यह सब कार्यान्वित करना ही होगा। मैं इसका अर्थ जानती हूँ, कभी-कभी तो यह

बहुत कठिन लगता है, परन्तु मुझे यह करना है।

मैं 'निर्मला' हूँ - जिसमें पावन करने की शक्ति है..... मानव बनकर इन सभी चक्रों के साथ मुझे कार्य करना है ..... अब पिछले तीन दिनों से आप नहीं जानते मेरे अन्दर से कितना चैतन्य प्रवाह हो रहा है..... मैंने वारेन (एक सहजयोगी) से कहा कि मेरी कुछ चैतन्य लहरियाँ ले लें। उन्होंने इसका प्रयत्न किया। परंतु छू नहीं पाए, उन्होंने सिर पर हाथ रखने का प्रयत्न किया, पर ऐसा न कर पाए, उनकी समझ में यह नहीं आया किस प्रकार मुझे छुयें?

मेरे शरीर से इतना चैतन्य प्रवाहित हो रहा था। इस मानव शरीर पर इतना वज़न लेकर चलना इतना सुगम कार्य नहीं है। मानव की तरह दिखाई पड़ना, मानव की तरह कार्य करना मानव की तरह आचरण करना ताकि सामंजस्य बना रहे आसान नहीं है पर मैं तो करुणा हूँ मेरी करुणा के कारण सारे कार्य स्वत: हो जाते है।''

[३०-९-१९८१]

''मन में यदि करुणा भाव है तो नि:सन्देह यह कार्य करता है। हाल ही मैं मैक्सिको में असाध्य रोग का एक मामला था। एक स्त्री ने मुझे दो पत्र लिखे कि श्री माताजी, मेरे पुत्र को यह भयंकर रोग है और मैं पुत्रहीन होने वाली हूँ। उसका पत्र इस प्रकार लिखा हुआ था। मेरा हृदय उसके लिए करुणा से भर गया और मेरी आँखों में अश्रु (जो सान्द्रकरुणा के प्रतीक हैं) आ गए और **आप कल्पना करें उन अश्रुओं ने उस लड़के को ठीक कर दिया।** उसकी माँ ने कृतज्ञता भरा एक पत्र मुझे लिखा, मैं हैरान थी क्योंकि मेरी करुणा मात्र मानसिक नहीं है, यह तो बहती है और कार्य करती है, आप भी ऐसे ही बन सकते हैं।''

[२६-२-१९९५]

"आपको आश्चर्य होगा एक बार मेरे पैर में लग गई चोट तो हमारे साथ एक डाक्टर थे तो उन्होंने कहा कि 'माता जी, मैं आपको वाइब्रेशन देता हूँ।' मैंने कहा - 'अच्छा, आओ बेटे, दे दो वाइब्रेशन' जैसे ही उन्होंने मेरे पैर पर हाथ रखा वहाँ से धड़ धड़ वाइब्रेशन आने लगे। मतलब जब कहीं चोट लग

जाती है तो वहाँ से डबल वाइब्रेशन आने लगती हैं। जब मैं बीमार हो जाती हूँ तो वहाँ से ऐसी वाइब्रेशन आयेंगी जैसे आप सब लोग बीमार हैं। फ्लू से तो मुझे भी फ्लू हो जायेगा और उसमें से जो वाइब्रेशन निकलेंगे वो आपके फ्लू को ठीक करेंगे। जब वे निकल जायेंगे तो मैं भी ठीक हो जाऊँगी। अजीब सी चीज़ है ये, है ऐसी चीज़, यही होता है। इसे आप देखें और इसका साक्षात्कार करें।''

[३-२-१९७८]

''**मेरी बात कुछ और है, मेरा चित्त यदि आप पर हो तो मैं आपकी सभी समस्याओं को अपने में खींच लूँगी, उन्हें साफ करके स्वयं कष्ट उठाऊँगी।** ऐसा मैं चाहूँगी तभी होगा ... ... इस मामले में सहजयोगी दबावमापी यंत्र (बैरोमीटर) हैं। वे मेरी तरह से कष्ट नहीं उठाते। कभी थोड़ा बहुत कष्ट हो सकता है क्योंकि जो कुछ भी नकारात्मकता वे आत्मसात करते हैं वह विशाल सागर में चली जाती है।''

[२६-२७-२-१९७८]

''The Advent के लेखक श्री ग्रेगोर-स्विटज़रलैंड के एक वैरन के बेटे हैं जब पहली बार मेरे पास पहुँचे तो मैं स्पष्ट देख पाई कि वह साधक हैं, यद्यपि उस वक़्त उसकी स्थिति बहुत ख़राब थी। वह खंडित मानसिकता [schizophrenic] रोगी की तरह से बिगड़ा हुआ मामला था परंतु मैं देख पाई कि उसके अंदर एक बहुत बड़ा साधक विद्यमान है। उसे सामान्य बुद्धि स्तर पर लाने के लिए मुझे बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ा।''

[२८-९-१९७९]

"आप जानते हैं मेरे अंदर सभी शक्तियाँ हैं, सभी कुछ है मुझे सबसे ऊँचा होना चाहिए आदि आदि परंतु आप लोगों के सम्मुख मुझे अपना स्तर नीचा करना पड़ता है। **आपके साथ शिखर पर पहुँचने के लिए मुझे संघर्ष करना पड़ता है।** हाथ में हाथ डालकर हम लोगों को चलना होता है। किसी व्यक्ति का कोई चक्र पकड़ रहा होता है तो मैं अपना चक्र कार्य पर लगा देती हूँ। यह इसी प्रकार कार्यान्वित होता है परंतु आप जानते हैं मुझे कितना कठोर परिश्रम करना

पड़ता है। यह बहुत बड़ा काम है- आत्मसाक्षात्कार देना।

मेरी कुंडलिनी को किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं परंतु उसको आपकी भारी कुंडलनियों का बोझ उठाना होता है, इन्हें जाग्रत करना होता है यह बहुत भारी काम है, केवल प्रेममय व्यक्ति ही इसे कर सकता है, यही मापदंड है ... .. . यह तो आप लोगों और मेरे बीच मात्र प्रेम एवं स्नेह है जो मुझे अच्छा लगता है और जो सारे कार्य, सारे परिश्रम को संपन्न करता है।''

[१५-१०-१९७९ लंदन]

"सच तो यह है कि मेरा प्रेम कार्य कर रहा है ... ... मेरा प्रेम ही मुझे फल देता है। यह प्रेम मुझे आप सबसे, मेरे देश से, आपके देशों से, आपसे, आपके परिवारों से और सभी अन्य चीज़ो से एकाकारिता प्रदान करता है।

मैं सदा सहसूस करती हूँ कि सभी लोग मेरे अंग-प्रत्यंग हैं। इस प्रकार मैं आपको याद रखती हूँ। हर व्यक्ति को मैं उसकी कुंडलिनी के चित्र के माध्यम से जैसी वह थी और जैसी वह आज है, याद रखती हूँ ... ... मेरा प्रेम तो विश्व भर के लोगों को आत्मसाक्षात्कार देना चाहता है।''

[२१-३-१९९५ दिल्ली]

श्री माताजी ने अपने विषय में एक मार्मिक तथ्य बताया है --

"क्या आपको मालूम है कि मैं पूर्णत: आप पर निर्भर हूँ? क्या आपको यह मालूम है कि मेरा पूरा अस्तित्व सहजयोगियों की वजह से है अन्यथा मैं खत्म हो जाऊँगी?और इस पल शायद आप नहीं जानते - मैं इस शरीर में वास नही करूँगी अगर आप लोग मुझे त्याग देंगे, यह तथ्य है जो मुझे स्वीकार्य करना होगा और जिससे आपको भी सहमत होना पड़ेगा क्योंकि अब देखिए अगर आप मेरा चैतन्य नहीं लेंगे तो वे सब यहीं होंगे जमे हुए। मैं एक जमी हुई ममी बन जाऊँगी सिर्फ चैतन्य प्रक्षेपित करती हुई। बस इतना ही। मैं आपसे बात नहीं कर रही होऊँगी। यह होता है। अब देखिए बाँयी नाभि बिल्कुल अभी, मैं बहुत जोरों से पकड़ रही हूँ। आपको मेरा चैतन्य बाहर निकालना होगा। अगर आप मेरा चैतन्य नहीं लेंगे तो मैं एक मानव के रूप में चलती हुई नहीं रहने

वाली। आप देखिए और किसी रूप में शायद लेकिन जैसे आप देखते हैं, वैसे मानव रूप में नहीं। मैं बस जम जाऊँगी। अगर आप मेरे साथ यह करते हैं तो कल्पना कीजिए मुझे आपके प्रति कितना आभारी होना चाहिए? **मेरा मतलब है, मेरा अस्तित्व आपकी वज़ह से है,** शायद आप नहीं जानते, क्या आप जानते है कि इस पृथ्वी पर सिर्फ आपकी वज़ह से हूँ, नहीं तो मैं बहुत बढ़िया से कहीं और होती आराम से! पर तब भी आपको पता होना चाहिए कि जिस तरह मैं आप पर निर्भर हूँ आप भी मुझ पर निर्भर हैं लेकिन ज्यादा मैं आपकी सामूहिकता पर निर्भर हूँ जैसे ही आप अपनी सामूहिकता के प्रति अनभिज्ञ होने लगते हैं तभी मेरे शरीर में कर्क रोग (कैंसर) विकसित होने लगता है। मुझे इसकी वज़ह से शारीरिक परेशानियाँ होती हैं तो सामूहिकता यह नहीं है कि आप अपने बारे में क्या सोचते हैं, कुछ महान। यह नहीं कि आप सबके ऊपर हैं या आप यह हैं वह हैं। आपने प्रेम की समझ की सामूहिकता को बढ़ाने के लिए क्या किया है यह बात है।''

[५-६-१९७९ डालिसहिल, लंदन]

अध्याय 13

श्री माताजी की दिव्यता को प्रमाणित करता परम चैतन्य

श्री माताजी के जन्म के साथ ही परम चैतन्य भी गतिशील हो गया है। स्वयं परमात्मा ही अनेक चमत्कारों के माध्यम से सहज साधकों के समक्ष श्री माँ की दिव्यता को प्रमाणित कर रहे है। जिससे **वे श्री माँ के प्रति पूर्ण विश्वस्त हो जायें और उनके मन में ज़रा सी भी शंका कुशंका न रहे।**

''मेरे कुछ फोटो हैं जो अत्यंत असाधारण हैं, जिस प्रकार से फोटो आ रहे हैं उन्हें देखकर वैज्ञानिक भी हैरान हैं। एक फोटो में तो श्री गणेश मेरे पीछे खड़े हुए हैं। वास्तव में आपको विश्वस्त करने के लिए कैमरे ने उन्हें पकड़ा ..... यह तो परमचैतन्य की लीला है।''

[८-१०-२०००]

''अब कृतयुग के कारण यह परमचैतन्य गतिशील हो उठा है। मेरे चहुँ ओर विद्यमान चैतन्य लहरियों से परिपूर्ण मेरे चित्रों से आप देख सकते हैं कि परमचैतन्य किस प्रकार लीला कर रहा है। आपने मेरे सामने बैठे बहुत से सहजयोगियों के फोटो भी देखे हैं जिनके सिर पर अरबी भाषा में मेरा नाम लिखा हुआ है। भिन्न विधियों से आपने देखा है और आप यह जान सकते हैं कि परमात्मा की लीला चल रही है।''

[३-३-१९९६ सिडनी]

''रूस के वैज्ञानिकों ने सूक्ष्मता में जाकर शरीर और हाथों के इर्द गिर्द विदयमान चैतन्य प्रकाश को भी खोज निकाला है ..... एक व्यक्ति जो विशेषज्ञ हैं, अत्यन्त सुप्रसिद्ध हैं और उच्चपद पर आरूढ़ भी हैं ने मेरे बहुत से फोटो दिखाये, विशेष तौर से वे फोटो जिसमे नाव पर जाते हुए मेरे सिर से बहुत चैतन्य निकल रहा है तो उसने कहा – ''ये ब्रह्मांडीय शक्ति [cosmic energy] का स्रोत हैं। केवल आदि–शक्ति ही ऐसी हो सकती हैं, वे ही हर चीज़ का

सृजन करती हैं।''

[२१-६-१९९८ कबेला]

"परमात्मा मेरी हर प्रकार से सहायता का रहा है..... चमत्कारों के माध्यम से मुझे प्रकट कर रहा है। चमत्कारिक कार्य एक ही दिन में हो जाते हैं।"

"अमेरिका में एक बहुत छोटे अख़बार के पन्नों में अचानक मैने यह स्थान (काना जौहरी) छाँटा। चैतन्य लहरियाँ इस प्रकार फूट पड़ रहीं थीं कि मैंने कहा - ''यह क्या है? कहाँ से चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं?'' इसका विज्ञापन बहुत छोटा था परंतु इसे देख कर मैंने कहा - ''यही वह स्थान है जहाँ हमें जाना है। विज्ञापन में भी इस स्थान में बहुत चैतन्य लहरियाँ हैं।'' अत: आप कल्पना कर सकते है **कि किस प्रकार परम चैतन्य का पथ-प्रदर्शन प्राप्त होता है? चैतन्य लहरियाँ यह पथ-प्रदर्शन प्रदान करती हैं, इन्हीं के माध्यम से मैं यहाँ पहुँची और परमेश्वरी शक्ति ने यह स्थान चुना।**

यह सब एक दिन में घटित हुआ। ऐसे चमत्कारिक कार्य भी एक दिन में हो जाते हैं। स्थान खरीदने के लिए इन सहजयोगियों को बहुत समय लग रहा था परंतु अचानक मैंने बताया यह स्थान ले लें तो अच्छा है। ये सब कुछ हो गया और अब हम इस सुंदर स्थान पर बैठे हैं।''

[२०-६-१९९९, कानाजौहरी]

''यह 'कबेला' भी मैंने पाँच मिनट में ख़रीदा, केवल पाँच मिनट में जब मैं यहाँ इसे देखने आई तो मैंने पाया कि पूरी इमारत बहुत ही जीर्ण शीर्ण स्थिति में थी। पूरी इमारत की दुर्दशा थी और यह भुतही महल सी लगती थी, इससे कोई संदेह नहीं। जो भी लोग मेरे साथ गए थे सभी कहने लगे - ''श्री माताजी, आप इसे नहीं खरीद सकते।'' मैंने मेयर को बताया कि 'मैं इसे ख़रीद रही हूँ।" ''कब?' 'आज अभी।'' वह हैरान था ..... सभी सहजयोगी भी हैरान थे कि श्री माताजी क्या कर रहे हैं?

तो किसने निर्णय लिया? उस स्थान की चैतन्य लहरियों ने ..... इसके

पूर्व मुझे सात किले दिखाये गये थे लेकिन मैंने कहा – 'नहीं' बाहर से ही मैंने उन्हें ख़रीदने से इंकार कर दिया।

इस विशेष किले के विषय में जब उन लोगों से पूछा गया कि इसमें क्या था? तो बताया गया यहाँ मठ [Nunnery] था। मैंने अपने सहजयोगियों से कहा कि "आपमें भी इसी प्रकार (चैतन्य लहरियों द्वारा) सहज निर्णय लेने की शक्ति विकसित होनी चाहिए ..... **परम चैतन्य इनके माध्यम से आपकी सहायता करता है।**''

[२०-८-२००० कबेला]

''बैडफोर्ड (लंदन) में हम एक दिन भाषण दे रहे थे। आठ बजे का समय होगा। सात बजे भाषण शुरू हुआ। आठ बजे के समय एक लड़का कहीं चार पाँच मील की दूर पर ऊपर से नीचे गिर गया। अपनी मोटर साइकिल से गिरा और वो जाकर एक नदी के किनारे जाकर गिर पड़ा। सबने सोचा अब तो ख़त्म हो गया। उसी समय एम्बुलेंस वग़ैरह आई उसमें पन्द्रह बीस मिनट लग गए। जब लड़के को लाए तो देखा बिल्कुल ठीक उसकी हड्डी नहीं टूटी, कुछ नहीं। उसने हमें कभी देखा नहीं था, कुछ मतलब नहीं और बिल्कुल ठीक, लेकिन एक जगह दर्द हो रहा था।

अस्पताल में डाक्टरों ने कहा – 'भई कुछ समझ में नहीं आया, न तुम्हारी हड्डी टूटी न कुछ हुआ, तुम तो जैसे कोई फुटबाल उछाल देता है इस तरह से तुम नीचे गिरे और जैसे के तैसे। उस लड़के ने बताया – ''जब मैं गिरा तब बड़ी चोट आई थी लेकिन एक लेडी आई, सफेद साड़ी पहने थी, इंडियन लेडी, भारतीय महिला थी, सफेद साड़ी में उसने मुझे हाथ लगाया और मुझे ठीक किया, उससे मैं ठीक हो गया।"

आप तो जानते ही हैं कि न्यूज़पेपर वालों को तो ये चीज़ चाहिए तो उन्होंने छाप दिया कि एक इंडियन लेडी आई, ये हुआ। उसके बाद तीसरे दिन उस लड़के ने हमारा फोटो देखा न्यूज़पेपर में तो वो दौड़ा दौड़ा आया बताने के लिए कि – ''ये ही वो लेडी है जिन्होंने मुझे ठीक कर दिया।''

[७-२-१९८३]

इस प्रकार श्री माताजी की शक्ति की बात लोगों तक फैल गई और लोगों में उनके एवं सहजयोग के प्रति जिज्ञासा बढ़ने लगी। ..... **परमचैतन्य ही यह सब कार्य कर रहा है। परमेश्वरी शक्ति ही श्री माँ की महत्ता को उज़ागर कर रही है।**

''एक और किस्सा है जर्मनी का। एक महिला अपनी कार से जा रही थी। उसने देखा कि कार के ब्रेक नहीं लग रहे हैं, उसकी समझ में नहीं आया कि क्या किया जाय?सभी गाड़ियाँ, तेज़ रफ्तार से दौड़ रही थीं और महिला को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? उसने अपना सिर स्टीयरिंग व्हील पर रख दिया और कहा मैं सभी कुछ परम चैतन्य पर छोड़ती हूँ। कहने लगी – ''श्री माताजी, मैं आप पर छोड़ती हूँ।'' ठीक है, इतना कहने से जानते हो क्या हुआ?

उसने बताया – ''श्री माताजी, मैं नहीं जानती कि क्या हुआ? जब मैंने सिर उठाया तो देखा कि कार सड़क के एक किनारे खड़ी हुई थी, परन्तु वहाँ कोई व्यक्ति नहीं था। सभी कारें तेज़ी से गुज़र रही थीं परन्तु किसी शक्ति ने उस कार को बड़ी अच्छी तरह एक ओर कर दिया था।''

[२७-९-१९९८]

"एक बार एक साहब हमारे ट्रस्टी हैं प्रधान साहब, वो हमारे साथ बैठे हुए कुछ बातें कर रहे थे, भूल गए कि उनको हाईकोर्ट जाना है, उनका एक केस है और उनको लड़ना है। वे जब घर गए तो उनके मुवक्किल ने फोन किया कि "भई, क्या हुआ उस केस में?" उन्होंने कहा – ''अच्छा मैं कल जा कर पूछता हूँ।'' दूसरे दिन गए तो पूछा – ''भई, उस मुक़दमे का क्या हुआ?''

वे कहने लगे – ''क्या मतलब? आप तो कल आए थे, जिरह हुई थी और आपकी तरफ फैसला भी हो गया।'' प्रधान साहब को ताज़्जुब हुआ, उन्होंने फैसला पढ़ा उसमें तीन बार उनका नाम लिखा था कि इस बार प्रधान साहब ने बड़ी ब्रिलियेन्टली बात की, बड़े ही युक्तिपूर्ण मुद्दे निकाले और कुछ असामान्य चीज़ [out of the way] कह डाली।

वे तो मेरे साथ बैठे थे और आठ दस आदमी वहाँ बैठे थे, कोई सोच भी न सकता था कि इनके फेवर में केस जायेगा। इस प्रकार अनेक बार हुआ है इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं ..... अगर परमात्मा आपको सँभालने वाले बैठे हुए हैं तो उसकी थोड़ी सी जानकारी किसी प्रचीति से होगी न! तो इस प्रकार प्रचीति मिलती रहती है। **इससे आपका विश्वास बढ़ता जाता है मुझमें और परमात्मा में ..... उसकी लीला अपरम्पार है बेटा, ये विश्वास बैठाने के लिए ही सब लीला करते हैं।''**

[७-२-१९८३]

''मेरे जीवन-काल में इतने चमत्कार घटित हो रहे हैं। आज ही मुझे कोई बता रहा था कि किसी व्यक्ति को कैंसर आदि कई रोग थे, सहजयोग में आने के बाद जब वह अस्पताल गया तो लगा उसे कुछ नहीं है। इस प्रकार के बहुत से चमत्कार हो रहे हैं। 'सहज' से पूर्व ऐसा कभी नहीं हुआ है।''

[८-१०-२०००]

सहजयोगियों की अखंड श्रद्धा और विश्वास के कारण ही परमचैतन्य उनकी सहायता करते हैं --

''श्रद्धा का मामला मैंने बड़ा ज़बर्दस्त देखा। अभी युगोस्लाविया में एक स्त्री बहुत बीमार थी, पता नहीं कितनी बीमारियाँ थीं बेचारी को। तो उसको एक कुर्सी पर बिठा कर मेरे सामने लाया गया। टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में वो कहने लगी - ''माँ आप मुझे एकदम ठीक करें, मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मुझे ठीक कर सकती हैं'' मैंने पूछा - 'क्या तुम्हें वास्तव में विश्वास है कि मैं तुम्हें ठीक करूँगी?' ''हाँ, मुझे पूर्ण विश्वास है।'' मैंने कहा - ''अच्छा, तो तुम खड़ी हो जाओ।'' खड़ी हो गई वो। ''मैं तो ठीक हो गई'' सीढ़ियाँ उतर कर नीचे गई वो और लगी दौड़ने। सब लोग देखने लगे, हँसने लगे। जिस परम विश्वास के साथ उसने ये बात कही ऐसा विश्वास सहजयोगी के हृदय में बैठना चाहिए।''

"मैं बम्बई के एक व्यक्ति को जानती हूँ। वह मछुआरा था और महान सहजयोगी था। अब हमने उसे खो दिया है। एक दिन मछुआरों में सहजयोग का

प्रचार करने के लिए वह एक अन्य टापू पर जा रहा था। उसने देखा कि भयानक काले बादल मँडरा रहे थे। वह बाहर आया और बादलों से कहा – ''मैं अपनी माँ के कार्य से जा रहा हूँ, तुम वर्षा करने की हिम्मत कैसे कर सकते हो? जब तक मैं वापिस नहीं आता तुम्हें नहीं करनी है।'' और हैरानी की बात है कि वह बाहर गया, अपना सारा कार्य किया और पाँच घंटो के पश्चात वापिस आया। वापिस आने के पश्चात जब वह बिस्तर में लेट गया तब मूसलाधार वर्षा आरंभ हुई।''

[२५-३-१९९२, २०-३-२००१]

उस सहजयोगी के हृदय में पूर्ण विश्वास था और इसी विश्वास के कारण प्रकृति ने उसकी इच्छा पूरी की। श्री माता जी बता रही हैं –

"प्रकृति हमेशा आपके साथ होगी क्योंकि वह हमारी प्रतिनिधि है, ये हमारी सहायता करती है। आप यदि उस उच्च स्तर के हैं तो प्रकृति आपका साथ देगी। आपने देखा है कि प्रकृति ने बहुत बार मेरी सहायता की इसलिए नहीं कि प्रकृति पर मेरा नियंत्रण था, या मैं उसे कुछ करने के लिए कहती हूँ परन्तु इसलिए कि **प्रकृति को इस बात का आभास है कि मैं पृथ्वी पर एक विशेष कार्य करने के लिए आई हूँ, इसलिए मेरी सहायता होनी चाहिए।"**

[२०-३-२००१]

''लातूर (एक स्थान का नाम) की ये बात है कि लातूर में जहाँ हमारा सेन्टर था उसके चारों तरफ (भूकंप के कारण) खंदक बन गया चारों तरफ और बीच में सेन्टर बिल्कुल ठीक रहा और एक भी लातूर का सहजयोगी मरा नहीं। ऐसा हुआ कि चतुर्दशी के दिन गणपति को विसर्जित करते हैं। सबने विसर्जन किया और विसर्जन करने आए और उनमें जो लोग दुष्ट प्रवृत्ति के थे उन्होंने शराब लेकर पीना शुरू किया। शराब पी कर नाच रहे थे और नाचते नाचते सब ज़मीन के अंदर, पर एक भी सहजयोगी लातूर में किसी भी बात से वंचित नहीं है। उसका घर जैसे के तैसा रहा, उसकी गृहस्थी, उसके बच्चे सब ठीक हैं। ये क्या चमत्कार नहीं तो क्या है। इसी प्रकार आप भी समझ लें कि

परमात्मा का जो संरक्षण है वो आपके ऊपर है क्योंकि आप उसके साम्राज्य में गए हैं। इन सारे साम्राज्यों के बाहर इतने ऊँचे आप चले गए कि अब किसी भी चीज़ का भय नहीं। कोई भी चीज़ आपको नष्ट नहीं कर सकती। इस तरह से हमने सहजयोग में अनेक उदाहरण देखे हैं।''

''गुजरात में भावनगर नामक एक शहर है। भावनगर के लोग मेरे पास आए और चैतन्यित करवाने के लिए पादुका साथ ले कर आए ... ... उन्होंने भावनगर में तथा बड़ौदा में भी पूजा तथा हवन किया इन दोनों स्थानों को भूकम्प ने छुआ तक नहीं - छुआ तक नहीं। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? सूरत, जो कि बहुत दूर है, का तहस नहस हो गया। वहाँ पर बहुत कम सहजयोगी हैं, सभी की रक्षा हुई और उनके घरों को भी कोई हानि नहीं पहुँची। **सर्वशक्तिमान परमात्मा के प्रकोप से भी आपकी माँ सुरक्षा प्रदान करती हैं। व्यक्ति को ये बात भली भाँति समझ लेनी चाहिए कि सभी पंच तत्त्वों पर उनकी सत्ता है।"**

[२६-३-२००१, २५-२-२००१]

"मुझे अमेरिका जाना था परन्तु एक बच्चा गिर गया। मैं जाने के लिए उठने ही वाली थी कि बच्चा गिर गया और उसकी बाजू टूट गई। जब मैंने बच्चे को देखा तो कहा- ''ठीक है, मैं पहले बच्चे को ठीक करूँगी'' सब लोग कहने लगे - 'आप अमेरिका जा रही हैं।'' ''मैं निश्चित रूप से जाऊँगी।'' मैंने बच्चे को ठीक किया, इस कार्य में लगभग आधा घंटा लग गया। बाहर आकर मैंने कहा - ''अब एयरपोर्ट चलें।'' कहने लगे - ''माताजी, आपने बहुत देर कर दी है।'' मैंने कहा - 'मुझे कभी देर नहीं होती, चलो चलें।''

हम एयर पोर्ट पहुँचे और पाया कि जिस वायुयान से मुझे जाना था, वह ख़राब था, उसके स्थान पर एक अन्य यान आया था जो न्यूयार्क के स्थान पर वाशिंगटन जा रहा था। वास्तव में मैं भी वाशिंगटन जाना चाहती थी।

अब आप कल्पना कीजिए कि किस प्रकार चीज़े घटित होती हैं, इसे हम सहज कहते हैं। यह सहज कार्यान्वयन है अर्थात यह सब प्रयत्न विहीन है,

स्वत: घटित होता है परंतु सर्वप्रथम आपका व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए, आपकी भक्ति इतनी दृढ़ होनी चाहिए कि परमात्मा आपकी देखभाल करने के लिए विवश हो जाएँ, पूर्णतया विवश।''

[२३-७-२००० कबेला]

अध्याय 14

आदर्श भारतीय नारी का प्रतिरूप श्री माताजी

श्री माताजी का सारा जीवन सहज, संतुलित और सद्‌गुणों से परिपूर्ण रहा है। वे सदैव सबके लिए आदर्श रहीं।

१. अपने शान्त, सरल, सौम्य एवं मधुर स्वभाव से वे सबका दिल जीत लेतीं, उनका गरिमामय निश्छल व्यक्तित्व लोगों पर गहरी छाप छोड़ देता। श्री माताजी का एक संस्मरण है -

"यूनानी लोगों का जहाज़रानी महत्त्वपूर्ण व्यापार है, मैं भी यहाँ पर जब पहली बार अपने पति के साथ आई और हम हवाई अड्डे पर पहुँचे तो मैं हैरान थी, वहाँ पर एक मंत्री की पत्नी, दूसरे मंत्री की पत्नी और प्रधानमंत्री की पत्नी उपस्थित थीं। मुझे हैरानी हुई, आमतौर पर वे वहाँ आने वाली किसी महिला को लेने हवाई अड्डे नहीं जाते। कहने लगीं - ''हमारे पतियों ने हमें कहा कि यदि तुम्हें किसी पूर्ण निर्मल अत्यन्त मंगलमय सौम्य महिला को देखना हो तो वे श्रीमती श्रीवास्तव हैं।'' इसलिए वे मुझसे मिलने आई हैं। जिस प्रकार सम्मानपूर्वक उन्होंने मुझसे पूछा कि ये सौम्यता आपने किस प्रकार प्राप्त की, वह मैं भूल नहीं पाती। मैंने उत्तर दिया - ''ये मैंने विकसित नहीं की है, ये तो मुझमें जन्मजात है। इसके लिए कोई प्रसाधन केन्द्र भी नहीं है।'' वे कहने लगी - ''नहीं, नहीं, सारे पुरुष आपकी प्रशंसा करते हैं कि इन भयानक दिनों में भी वे अत्यन्त शान्त महिला हैं।'' उन्होंने बड़े प्रेमपूर्वक मेरी देखभाल की।

[७-११-९९ डेल्फी यूनान]

२. करुणा एवं उदारता श्री माताजी का सहज स्वभाव है। वे हर क्षण स्वेच्छा से सबको प्रसन्नता देने का प्रयत्न करतीं, दूसरों की प्रसन्नता से उन्हें आन्तरिक ख़ुशी महसूस होती। वे कहा करती थीं -

"अपनी उदारता का आनन्द लें। मुझे याद है कि एक बार विदेश से लाई एक साड़ी मैं उपहार में देना चाहती थी। भारत में लोग बाहर से लाई गई चीज़ों

को पसन्द करते हैं। ..... एक महिला ने कहा – ''मेरे पास कोई विदेशी साड़ी नहीं है, ऐसी साड़ी यदि मुझे मिल जाए तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।'' मेरे पास केवल एक ऐसी साड़ी बची थी, **क्योंकि देने में मुझे बहुत आनन्द आता है** तो मैंने एक भतीज बहू को कहा ''मैं ये साड़ी इस महिला को देना चाहती हूँ, ... वह कहने लगी – ''आपके पास केवल एक ही साड़ी बची है, आप वह भी क्यों दे देना चाहती हैं? जितनी भी साड़ियाँ आपके पास थी, आपने सभी तो दे डाली हैं।''

मैंने कहा – ''**मुझे देने की इच्छा होती है,** मैं इसे ज़रूर दूँगी, तुम मुझे क्यों रोक रही हो? इस मामले में मैं किसी की भी राय नही लूँगी।'' रसोईघर में हम ये बातचीत कर रहे थे। उसी समय दरवाज़े की घंटी बजी और एक भद्र पुरुष आया वह अफ्रीका से मेरे लिए तीन बिल्कुल वैसी ही साड़ियाँ लेकर आया जैसी एक साड़ी मेरे पास बची थी, क्योंकि अफ्रीका जाने वाली एक महिला को मैंने कुछ रेशम की साड़ियाँ दी थीं, तो उसने सोचा कि वह मुझे कुछ साड़ियाँ उपहार में भेजे और उसने ये साड़ियाँ उपहार में मुझे भेजी थीं।

[२९-७-८० लंदन]

३. करुणा की तो प्रतिमूर्ति ही हैं श्री माताजी। अनाथ दुःखी लोगों के कष्ट देखकर उनका मन द्रवित हो जाता--

"एक बार मैं कोलकाता गई और किसी तरह से मुझे उन क्षेत्रों में जाना पड़ा जहाँ लोग अत्यन्त दारिद्रय की अवस्था में रहते हैं। आप हैरान होंगे बच्चे भी इसी दुर्दशा में पल रहे थे। उन्हें देखकर कई दिनों तक मैंने खाना नही खाया। मैं रोये ही जा रही थी, मुझसे खाना भी न खाया जा रहा था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए? मुझे लगा ''ये क्या है? क्यों ये लोग ऐसे हैं। मैं असहाय थी।... ... बहुत दुःखी कि कभी तो मैं इनके लिए कुछ कर पाऊँगी।

अत्यन्त प्रशंसनीय बात यह है कि अपने बाल्यकाल से ही मैंने एक कुष्ठगृह आरंभ किया, अपंग व्यक्तियों के लिए एक गृह चलाया और एक शरणार्थी गृह आरम्भ किया। सभी प्रकार के कार्य किए और कभी यह नहीं सोचा कि सारा पैसा यदि मैं इन लोगों को दे दूँगी तो मुझे बहुत सारी चीज़े

त्यागनी पड़ेंगी। मुझे अपनी बहुत सी चीज़ें बेचनी पड़ीं क्योंकि उदार होना अत्यन्त आनन्द प्रदायक तथा प्रसन्नता प्रदायक होता है।

[काना जौहरी १८-८-२०००]

सन १९४७ के दंगो से संबंधित एक घटना है जो श्री माताजी की लोगों के प्रति उदारता एवं संवेदनशीलता को दर्शाती है --

"विभाजन के समय मैं यहाँ (दिल्ली) थी, विवाहित थी, गर्भावस्था में थी और बाहर उद्यान में बैठकर अपने बच्चे के लिए कुछ बुन रही थी तभी तीन व्यक्ति मेरे पास आए और मुझे देखकर कहा ''क्या आपके घर में एक कमरा मिल सकता है?'' मैंने कहा - 'क्यों नहीं, बाहर एक दरवाज़ा है, एक रसोई और गुसलखाना भी साथ जुड़ा हुआ है, बिना हमें कष्ट दिए आप उनका उपयोग कीजिए।'

शाम को मेरे बड़े भाई, मेरे पति जो दोनो मित्र हैं, घर आये और कहने लगे 'ऐसे लोगों को घर में रखने का तुम्हारा क्या अभिप्राय है? कौन हैं वे?' 'वे शरणार्थी हैं और अच्छे लोग प्रतीत होते है, उनकी चैतन्य लहरियाँ भी ठीक हैं'' 'नहीं, नहीं उन्हें बाहर निकाल दो तभी अच्छा है' मैंने कहा ''उन्हें बिना देखे, बिना उनसे बात किए आप कह रहे हैं कि मैं एकदम उन्हें बाहर निकाल दूँ मात्र इस कारण कि वे शरणार्थी हैं''.....

वे तीनों एक महीने तक रहे। उन दिनों एक बहुत बड़ी संस्था थी सिख और राष्ट्रीय सेवक संघ के लोग मिले हुए थे। वे मेरे घर पर आए और कहने लगे ''हमने सुना है कि आपके यहाँ एक मुसलमान ठहरा हुआ है।" हमारे यहाँ ठहरे हुए व्यक्तियों में से एक मुसलमान भी था। वे उस मुसलमान को मारना चाहते थे। मैंने कहा - ''आप कैसे सोचते हैं कि यहाँ कोई मुसलमान ठहरा हुआ है?'' ''हमारे पास इनकी सूचना है'' मैंने कहा - ''ग़लत है, हमारे यहाँ कोई मुसलमान नहीं है'' मैंने उनसे झूठ बोला। वे कहने लगे - ''हम आप पर कैसे विश्वास कर लें?मैंने कहा - ''देखो, मैंने बिंदी लगाई हुई है। मैं हिन्दू महिला हूँ। किस प्रकार एक मुसलमान को अपने घर में रख सकती हूँ? उनसे मुझे डर लगता है, ऐसा कोई व्यक्ति हमारे यहाँ नहीं है।'' यद्यपि मैंने उनसे

सफेद झूठ बोला था, फिर भी उन्होंने मुझ पर विश्वास कर लिया। वे रक्त से सनी तलवारें लिए हुए थे मैं उनसे डरी नहीं और निर्भयता पूर्वक बातचीत की।

..... बाद में वे तीनों लोग हमारे घर से चले गए, उनमें से एक प्रसिद्ध अभिनेत्री (अचला सचदेव) और एक प्रसिद्ध कवि (साहिर लुधयानवी) हैं।

[४-१२-१९९४]

४. विनम्रता श्री माँ का विशेष गुण है। अप्रिय परिस्थितियों में भी वे सदैव शांत एवं संयमित रहतीं, लोगों के कटु प्रश्नों का भी वे बड़ी नम्रता पूर्वक परन्तु दृढ़ शब्दों में निडर होकर उत्तर देतीं--

"एक बार इंग्लैण्ड के दूरदर्शन से एक असभ्य और अहंकारी भेंटकर्ता मुझसे साक्षात्कार के लिए आए ... ... उसने पूछा कि **'मैं लंदन या इंग्लैंड में क्या कर रही हूँ? कहने लगा कि मुझे अपने निर्धन भारत की सहायता करनी चाहिए।'** मैंने उसे बताया कि 'मैं यहाँ अपनी खुशी से नहीं आई हूँ। मेरे पति क्योंकि संयुक्त राष्ट्र के पद के लिए चुने गए हैं और उनका मुख्यालय लंदन में है इसलिए मुझे भी उनके साथ रहना आवश्यक है।'

फिर अत्यन्त विनम्रता से मैंने उससे पूछा कि **'भारत की निर्धनता के लिए कौन ज़िम्मेदार है? किसी देश में बिना प्रवेश पत्र या आवास पत्र यदि तीन सौ वर्ष के लिए अंग्रेज़ मेहमान बने तो भारत देश के सम्पन्न होने की आशा किस प्रकार की जा सकती है?'**

एक सर्वसामान्य भारतीय गृहिणी से इस प्रकार का उत्तर पाकर वह अत्यन्त विकल हुआ।

ऐसे ही एक अन्य व्यक्ति से जब मैं पहली बार मिली तो उसने मुझसे एक प्रश्न पूछा - ''भारत में इतनी अधिक जनसंख्या क्यों है?'' अत्यन्त शान्तिपूर्वक मैंने उत्तर दिया - ''श्रीमन् मैं यह कहना चाहूँगी कि इस अत्याधिक जनसंख्या के लिए भी संभवत: आप ज़िम्मेदार हैं।'' इस अंग्रेज भेटकर्ता का अहम् शान्तिपूर्वक देखने योग्य था। क्रोध से वह उछल पड़ा - ''अपनी पागल

जनसंख्या के लिए आप हमें किस प्रकार ज़िम्मेदार ठहरा सकती हैं?''

और अधिक शान्ति से मैंने उत्तर दिया, मैंने कहा – ''श्रीमान! मैं अख़बार में पढ़ती हूँ लंदन में हर सप्ताह माता-पिता अपने दो जायज़ बच्चों की हत्या कर देते हैं। तो श्रीमान, आप मुझे बताएँ कि कौन से विवेकशील बच्चे ऐसे देश में जन्म लेना चाहेगें जहाँ बच्चों के लिए प्रेम का वातावरण ही नहीं है? यहाँ तो पड़ोसी भी बच्चों को पसन्द नहीं करते ..... **बच्चे भी प्रेम तथा स्नेहमय माता-पिता तथा पड़ोसियों के यहाँ जन्म लेकर ही प्रसन्न होते हैं। बच्चे ये नहीं जानना चाहते कि बैंक में हमारा कितना धन है, वे तो प्रेम चाहते हैं, जो कि बहुमूल्यतम है।**''

मेरे उत्तरों ने उसे क्रोध से पागल कर दिया। उसने मुझ पर फिर आक्रमण किया। "मैंने सुना है कि आप आत्मसाक्षात्कार के कार्य के लिए पैसा नहीं लेतीं यह बात तो एंग्लो सैक्सन के मस्तिष्क की समझ से परे है।"

अत्यन्त विनम्रता पूर्वक मैंने उत्तर दिया- ''श्रीमान, परमेश्वरी प्रेम के लिए आप कितना धन दे सकते हैं? ईसा मसीह को आपने कितना धन दिया?क्या मैं आपसे एक प्रश्न कर सकती हूँ?'' उसने कहा ''हाँ हाँ पूछिए''। मैंने पूछा ''क्या आप मुझे बता सकते है कि कौन से परमात्मा ने यह विशेष एंग्लो सैक्सन मस्तिष्क बनाया है?'' इस प्रश्न ने उसे शान्त कर दिया और वह अपने फोटोग्राफर के साथ बाहर चला गया। बाद में लोगों ने मुझे बताया कि मीडिया क्षेत्र में वह शिकारी कुत्ते के नाम से जाना जाता था। मुझे लगा कि जो कुत्ता मुझ पर एक बार भी नहीं भौंका, उसका अपमान किसलिए किया जाना चाहिए?

[परा आधुनिक युग]

५. ऐसा गरिमामय दृढ़ व्यक्तित्व है श्री माताजी का। लेकिन बहुत ही कोमल हृदय है उनका प्यार-स्नेह से लबालव भरा हुआ। ममतामयी, स्नेहमयी, वात्सल्यमयी निर्मला माँ हर क्षण अपने बच्चों पर प्यार लुटाती हैं और उनका मान भी रखती हैं --

"एक बार मैं गगन महाराज के पास गई। वे एक ऊँचे पहाड़ पर रहते थे जहाँ कार आदि वाहन न जा सकते थे। अतः मुझे पैदल जाना पड़ा। सभी सहजयोगी पूछने लगे ''श्री माताजी, आप आख़िर वहाँ क्यों जा रही हैं?'' मैंने कहा – 'आप चैतन्य लहरियाँ देखें, अच्छी चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं न?'' वर्षा हो रही थी। गगनगिरी महराज का वर्षा पर नियंत्रण था, वर्षा को वे नियंत्रित कर सकते थे। जब मैं वहाँ पहुँची तो एक शिला पर बैठे गुस्से से वे अपना सिर हिला रहे थे, वर्षा इतने ज़ोर से हो रही थी कि जब मैं कुटिया पर पहुँची तब तक पूरी तरह से नहा चुकी थी। मैं उस गुफा में गई जहाँ वह रहता था। वर्षा पर क्रोध से भरा हुआ वह अन्दर आया और कहने लगा – ''माँ, आपने मुझे वर्षा रोकने क्यों नहीं दी? मैंने कहा – ''मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।'' ''नहीं, आपने ऐसा किया है क्योंकि मैं तो सदैव वर्षा को नियंत्रित करता हूँ। आज मेरे निमंत्रण पर आप यहाँ आ रही थीं, तो इस वर्षा को भी मर्यादा में रहना चाहिए था।'' मैंने कहा – ''नहीं, नहीं वर्षा ने कोई अपराध नहीं किया।'' ''तो ऐसा क्यों हुआ?'' वह बहुत ही क्रोधित था।

मैंने कहा – 'तुम शांत हो जाओ। मैं बताती हूँ क्या हुआ? देखो तुम एक संन्यासी हो और तुम मेरे लिए साड़ी खरीद कर लाए हो। संन्यासी से मैं साड़ी नहीं ले सकती तो वर्षा ने मेरा काम आसान कर दिया। अब मैं पूरी तरह भीग गई हूँ इसलिए तुम्हारी साड़ी मुझे लेनी पड़ेगी।''

मेरे प्रति उसका प्रेम उमड़ पड़ा और उसकी आँखों से अश्रुधारा बह निकली। वह मेरे चरणों पर गिर गया, कहने लगा – ''माँ, प्रेम की महानता मुझे अब पता चली है।''

[३१-३-१९९९, दिल्ली]

श्री माताजी का कहना है कि ''शान्त चित्त व्यक्ति किसी से परेशान नहीं होता। इसके विपरीत वह घटनाओं पर हँसता है।'' स्विट्जरलैंड के एक चर्च में एक महिला बाइबिल से मुझे मारने आई। मैं हँसने लगी कि मैं भी क्या चीज़ हूँ जिसे बाइबिल ग्रंथ द्वारा चोट पहुँचायी जाने वाली है। उस महिला ने जब मुझे हँसते हुए देखा तो वह घबड़ा गई .. ... मैं कह रही थी कि ''इसकी

मूर्खता तो देखो। ये मुझे बाइबिल से मारना चाहती है। चोट मारने के लिए पत्थर आदि कोई अन्य चीज़ तो समझ में आती है परंतु बाइबिल तो मुझे कभी चोट नहीं पहुँचायेगी।''

[२०-८-२०००]

६. श्री माताजी का भोलापन एवं विनोदप्रिय स्वभाव लोगों को शीघ्र ही उनकी ओर आकर्षित कर लेता है--

"एक बार मैं जेनेवा से जा रही थी ..... एक साहब का प्लेन मिस हो गया था, वो हड़बड़ाते हुए मेरे वाले प्लेन में पहुँचे और उनको इत्तफाक़ से मेरे पास जगह मिली। बड़े नर्वस, उनकी हालत ख़राब। महाराष्ट्रियन थे तो मैंने समझ लिया कि ये आ गए मेरे चक्कर में। मैंने सोचा ''करेला, नीम चढ़ा' इनको अब फँसाना चाहिए।

मैंने मराठी में कहा - ''साहब, आपको परेशानी क्या हो गई?'' तो उन्होंने मराठी में बोलना शुरू कर दिया, असली मराठी में। कहने लगे। - ''प्लेन मैंने मिस कर दिया, देखिए, ये हो गया, कितनी परेशानी बढ़ गई?'' मैंने कहा - ''कुछ नहीं मिस किया आपने, आपके लिए कुछ अच्छी चीज़ होने वाली है इस प्लेन में'' उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा - ''क्या अच्छी चीज़ होगी?'' फिर मेरी ओर देखा और बोले- ''क्या आप माता जी निर्मला देवी हैं? मैंने कहा- ''हाँ''! वो गए काम से। हो गए पार प्लेन में ही।

उनका नाम है डॉ. मुतालिक। उन्होंने कहा - ''साहब, मैं तो इतना परेशान था और मुझे क्या मालूम कि आत्मसाक्षात्कार मिलने वाला है।'' मैंने कहा - ''हाँ, इत्मीनान से चलो और उसके बाद मालूम है बात कहाँ से कहाँ पहुँच गई। यू.एन. में - बोले आए उसको ले आए, इसको ले आए। वो बहुत बड़े आदमी हैं। W.H.O. (विश्व स्वास्थ्य संगठन) के डाइरेक्टर हैं और इत्तफाक़ सहज ही हो गए पार। तो यह सब मज़े देखने के हैं।''

जब आप सहजयोग में आते हैं तो आपको पता होना चाहिए कि प्लेन खड़ा रहेगा आपके लिए ..... और अगर समझ लीजिए कि प्लेन मिस भी हो

गया, दूसरे प्लेन से जाइए, हो सकता है उसमें कोई चीज़ बनने वाली हो। कोई सहजयोग मिलने वाला हो ऐसा बहुत कुछ होता है।''

[३-१-१९८४ दिल्ली]

७. श्री माताजी ने अपने स्वभाव व अपनी अभिरुचियों के विषय में स्वयं भी यदा कदा चर्चा की है --

● मुझे बच्चे बहुत प्रिय हैं। मेरे विचार से बच्चे संसार की सबसे दिलचस्प चीज़ हैं। ..... प्रेम के विषय में बच्चे सबसे अधिक जानते हैं, अत: बच्चों से बातचीत करें, आप हैरान होंगे कि वे माधुर्य से परिपूर्ण हैं।

[२३-८-९७]

● प्रकृति से मुझे प्यार है। प्रकृति को देखें किस तरह से पेड़ बढ़ते हैं? हर पत्ते को सूर्य की धूप प्राप्त होती है, हर पेड़ की अपनी ही स्थिति है। हमें प्रकृति से बहुत कुछ सीखना है। प्रकृति में आक्रामकता का पूर्ण अभाव है, ये पूरी तरह से परमेश्वरी प्रेम के वश में हैं।

[२०-६-९९]

''फूलों को देखकर मैं प्रसन्न होती हूँ।''

● मुझे एक सामान्य गृहिणी की तरह खाना बनाने और सबको खिलाने में आनंद आता है। जब मैं मिलान में थी वहाँ जब प्रोग्राम हुआ गुरुपूजा में, मैंने खुद खाना बनाया, चार साल तक मैं वहाँ खाना बनाती रही क्योंकि लोग अच्छा खाना नहीं बनाते थे, लोग कहते कि माँ, ये तो प्लास्टिक जैसा बना है।

[१४-२-९९]

● मैं कहना चाहूँगी कि मैं बहुत सृजनात्मक हूँ। सामान्य लोगों की तरह मुझे इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं होती कि मेरे कार्यों की प्रशंसा की जाय या ये समाचार पत्रों की सुर्ख़ियों मे हों।

[२०-८-२०००]

● बचपन में मुझे याद है जब मैं सात साल की थी, मैंने एक कविता लिखी थी ''धूल''। मैंने इसमें लिखा था कि मैं धूल के उस कण की तरह

छोटी बनना चाहती हूँ जो हवा के साथ उड़ता है, सर्वत्र जाता है, जाकर सम्राट के सिर पर बैठ सकता है या किसी के चरणों में गिर सकता है या कहीं भी जाकर बैठ सकता है परंतु मैं ऐसा धूल का कण बनना चाहती हूँ जो सुरक्षित है, पोषक है और प्रकाशदायी है।

[१४-१-१९८३]

● मैं भी एक कवयित्री हूँ और कविता में सहजयोग की बातें लिख सकती हूँ परंतु मैंने कहा नहीं क्योंकि कविता को तोड़ा मरोड़ा जा सकता है और इस प्रकार लोग इसका दुरुपयोग कर सकते हैं। कविता में गूढ़ ज्ञान लिखने में यह समस्या है।

[२३-४-२०००]

श्री माताजी को भारतीय ललित कलाओं विशेषतया वास्तुकला और संगीत की गहरी समझ थी। वे आन्तरिक साज सज्जा और बागवानी में भी निपुण थीं। उनका अर्थशास्त्र एवं मानव-मनोविज्ञान का ज्ञान भी सराहनीय है। उन्होंने सदैव भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं सामाजिक आदर्शो का सम्मान किया। उनकी जीवन-दृष्टि बहुत उदार, संतुलित एवं सर्वकल्याणकारी थी।

श्री माताजी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता उनकी शालीनता और मधुरता थी। वे बड़े से बड़ा कार्य करने के बाद भी उसका श्रेय स्वयं कभी नहीं लेती थीं और अगर कोई आग्रह भी करता था वो मुस्करा कर बड़े सहज भाव से कह देतीं। **''ये मेरा कार्य है, इसी कार्य के लिए मैं यहाँ हूँ - जैसे सूर्य में प्रकाश है इसलिए वह संसार को प्रकाश देता है, इसमें कौन सी महान बात है?''**

[हांगकांग १९९२]

उन्होंने स्वयं एक संस्मरण बताया है -

आज मेरे पति प्रशंसा करते हुए मुझसे कह रहे थे "तुम्हीं ने सब कुछ (कुंडलिनी का सारा कार्य) किया'' मैंने कहा ''नहीं, मैंने कुछ नहीं किया'' ''आप कैसे कह सकती हैं कि आपने यह कार्य नहीं किया है?'' मैंने कहा ''यह तो अन्तर्जात है। देखो, यदि बीज को पृथ्वी में डाल दिया जाए तो यह

अंकुरित हो जाता है। इसी प्रकार उनमें भी कुंडलिनी अन्तर्जात है यह भी प्रस्फुटित हो जाती है तो किस प्रकार में इसका श्रेय ले लूँ? तो मेरे पति कहने लगे – ''क्या यह पृथ्वी माँ ने किया है?'' मैंने कहा – 'नहीं, उनमें अन्तर्निहित पृथ्वी माँ के गुण ने यह कार्य किया है'' मेरे पति कहने लगे – 'तो किसने यह कार्य किया है? मैंने कहा – यह आदि-शक्ति ने किया है'' ''ठीक है, परंतु आदिशक्ति ने सहजयोग नहीं बनाया है। उन्होंने सभी में उन शक्तियों का सृजन किया है जो कार्यन्वित होती है परंतु सहजयोग नहीं होता'' मैंने कहा – ''सहजयोग उन अन्तर्जात गुणों से कार्यान्वित होता है जो पृथ्वी माँ में हैं, बीज में हैं। **मैं यहाँ आदिशक्ति के रूप में नहीं हूँ। मैं यहाँ माँ रूप में हूँ। पावनी माँ के रूप में। मैंने उनका पथ-प्रदर्शन किया है। आप कह सकते हैं मैं पृथ्वी माँ की तरह हूँ जो बीज का अंकुरण करती है।**''

[१-५-१९८९]

ऐसी विनीता सर्वगुण सम्पन्ना श्री माताजी हमारी आध्यात्मिक गुरु हैं। वास्तव में गुरू रूप में वे हमारी माँ हैं, परम पावनी माँ जो बहुत स्नेह से हमारा पथ प्रदर्शन कर हमें नीर-क्षीर विवेक बुद्धि प्रदान कर रही हैं।

अध्याय 15

सत्य और असत्य का विवेक देती हमारी हितैषी गुरु माँ

"मैं आपकी माँ हूँ। ... ... इस कलियुग में आपकी सहायता करने के लिए तथा प्रेम पूर्वक आपको हर बात बताने के लिए ही मैं माँ के रूप में आई हूँ ... . .. एक माँ से बढ़कर गुरु कोई नहीं।''

[२४-१०-१९९३]

''ये माँ ही समझ सकती है कि बच्चे कितनी आफतें उठा रहे है, उनकी कितनी परेशानियाँ हैं और किस तरह उनका भार उठाना चाहिए और उनके अंदर किस तरह प्रभु का अस्तित्व जागृत करना चाहिए?

[३१-३-१९८५]

''इस जन्म में माँ को ही गुरु होना पड़ा, ये कलियुग का मामला है इसलिए नितांत परमात्मा की जो भी शक्ति है ये किसी माँ के हृदय से बहे, उसी की करुणा और उसी के प्रेम में कुण्डलिनी को संजोया जाए और उसे शिखर तक पहुँचा दिया जाए ..... इसलिए इस जन्म में मैंने यह गुरु का स्थान स्वीकृत किया है।

[१-६-७२]

''हम आपकी माँ है ..... हम आपकी किसी भी झूठ बात को support नहीं करेंगे।... ... हम आपको ग़लत मार्ग पर जाने के लिए मना करेंगे। ग़र आप बिजली में अपना हाथ देंगे तो कहूँगी बेटे इसमें हाथ मत दो और आपको समझना होगा ..... मेरी किसी बात का बुरा मत मानना, तुम्हारे कल्याण के लिए, तुम्हारे हित के लिए एक माँ ही मेहनत कर सकती है।''

[३-१-७८]

अज्ञानता के कारण सही मार्ग से भटक जाने वाले अपने साधक बच्चों को श्री माताजी सदैव दृष्टांतों के माध्यम से उन्हें सही मार्ग बतातीं। **छोटी-छोटी**

कहानी द्वारा जैसे एक माँ अपने बच्चे को बड़ी-बड़ी सीख दे देती है वही तरीक़ा श्री माताजी अपनाती हैं।

● **अपने एक प्रवचन में उन्होंने पाखंडी कुगुरुओं की असलियत बताते हुए बहुत सरलता से समझा दिया कि सत्य पैसे से नहीं ख़रीदा जाता --**

"एक बार मैं अमेरिका में थी और एक महिला मुझसे मिलने को आई, वह न जानती थी कि मैं आध्यात्मिक गुरु हूँ। उसने कहा - ''एक बहुत अच्छा गुरु अमेरिका में आया है'' मैंने कहा - 'अच्छा! वह क्या करता है?' उसने कहा 'सेल लगी हुई है, वास्तव में आप उसे आधा पैसा देकर उससे आशीर्वाद ले सकते हैं।' अगले सप्ताह वह फिर आई और कहने लगी - 'अब दो चौथाई रकम तक आ गई है सेल, यदि आप उसे एक चौथाई पैसा दें तो वह आपको पूरा ज्ञान देगा।' मैंने कहा- **"कैसे वह इस प्रकार लेन-देन कर सकता है? जब आप उस नियत राशि का आधा पैसा दे रहीं थी तो वो आधा ज्ञान दे रहा था और अब आप एक चौथाई पैसा दे रही हैं तो वह पूरा ज्ञान दे रहा है।"**

वह महिला अभी भी उसकी तारीफ कर रही थी - "कि यही तो उसकी खूबी है, बहुत उदार है वह।" तब मुझको कहना पड़ा - 'ऐसे लोग जो सोचते हैं कि वे सत्य को ख़रीद सकते हैं वे कभी भी सत्य को नहीं प्राप्त कर सकते। आप सत्य को ख़रीद नहीं सकते।''

[१७-१०-९९ कबैला]

परमात्मा के नाम को लेकर सारे धर्मों के लोगों ने बहुत सारी गलत धारणाएँ बना रखी हैं, इसी बात की चर्चा करते हुए श्री माताजी ने स्पष्ट किया --

''बोस्निया में मैं एक मुसलमान से मिली जो कह रहा था - 'ख़ुदा के नाम पर हमें बलिदान हो जाना चाहिए।'' मैंने पूछा - 'क्या आपको लगता है कि आप ख़ुदा के नाम पर मर रहे हैं?' उसने कहा - 'मुझे पूरा विश्वास है,

क़ुरान में लिखा है यदि ख़ुदा के नाम पर आप अपना जीवन देंगे और ठीक प्रकार से यदि इस्लामिक विधि से आपको क़ब्र में दफनाया जाएगा तो क़यामत के समय आपके शरीर को पुनर्जीवित किया जाएगा, अब पुनर्जन्म उत्थान का समय है।'

मैंने उससे पूछा - **'क्या आप पागल हैं? पाँच सौ वर्ष बाद उस कब्र में क्या शेष रहेगा? क्या हड्डियों का उत्थान होगा?'** वह कुछ भी जवाब न दे सका।

..... **भारतीय दर्शन शास्त्र में स्पष्ट कहा है कि आत्मा का उत्थान होगा यह बात विवेकशील प्रतीत होती है क्योंकि आत्मा शाश्वत है।**

..... मैंने उससे एक और प्रश्न पूछा - "आप तो ख़ुदा के निराकार रूप में विश्वास करते हैं फिर आप पृथ्वी के लिए क्यों लड़ रहे हैं?'' वह ख़ामोश था। ..... जिस प्रकार लोग परमात्मा के नाम पर एक दूसरे का वध कर रहे हैं उसे देखकर मुझे बहुत दु:ख होता है। **"क्या आप समझते हैं कि परमात्मा इस प्रकार के कार्यों से प्रसन्न होगें?''**

[२७-१२-९४ गणपति पुले]

● **परमात्मा तो लोगों द्वारा किए ग़लत कार्यों का सामूहिक रूप से दंड देता है -**

''एक बार मैं आंध्र प्रदेश गई थी, वहाँ मैंने लोगों से कहा था कि आप तम्बाकू उगाना बंद कर दें। सभी मेरे से बहुत नाराज़ हो गए क्योंकि उनके विचार से ये तो उनकी जीविका थी, तम्बाकू से वे नोट छाप रहे थे और उस धन से सभी प्रकार के पाप कर रहे थे। मैंने कहा कि ''संसार में आप इतने पाप कर्म लादने के लिए नहीं आए हैं, आप तो अपने पापों को धोने के लिए आए हैं, पापों को बढ़ाने के लिए नहीं आए हैं। ..... **यह पापों से मुक्ति पाने का समय है, यही कारण है कि मैं निर्मल बनकर आपको पापों से मुक्त करने के लिए आई हूँ।** यह तम्बाकू उगाने से आपको क्या लाभ होगा?..... मैंने उनसे कहा भी था - ''सावधान हो जाओ।'' **बीज के अन्दर कल्कि शक्ति**

आपको थोड़ा सा समय देगी परन्तु एक बार यदि वह गतिशील हो उठी तो आप जानते हैं आन्ध्र में क्या हुआ?

(वहाँ समुद्री तूफान आने से सारे खेत पानी में समा गये थे)

..... ''दिल्ली में मैं वृन्दावन के लोगों से मिली, उन्होंने वहाँ के पंडो के विषय में मुझे बताया। मैंने उन पंडो से कहा कि 'आप कितने भयानक लोग हैं.. .... आप अपना पेशा त्याग दें, परमात्मा के नाम पर पैसा बनाने वाले आप कौन होते है? गंगा नदी के कारण तुम लोग जो पैसे कमा रहे हो वही एक दिन तुम्हें पूरी तरह से नष्ट कर देगा।'' गंगा और यमुना में जब बाढ़ आई तो मैं लंदन में थी, दूरदर्शन पर मैंने इन पंडो का अपना सामान सिर पर लादकर दौड़ते हुए देखा।''

[२८-९-१९७९ मुंबई]

● **श्री माताजी ने मनुष्य के अंदर स्थित समस्त दैवी शक्तियों के विषय में बहुत ही विस्तृत रूप से समझाया है और साथ ही लोगों की धर्म विषयक ग़लत मान्यताओं का विरोध भी किया है। घटनाओं के माध्यम से वे हर बात स्पष्ट कर देती हैं --**

"हम इस चीज़ को समझें कि श्री गणेश क्या हैं और उनका हमारे अंदर जागृत होना कितना ज़रूरी है। एक महाशय थे वो हमारे पास आये और कहने लगे कि - ''माँ मुझे prostate की तकलीफ हो गई है, डाक्टर कहते हैं कि आपरेशन करवाओ।" वो बड़े सहजयोगी थे, दूसरे गणेश भक्त। मैंने कहा- 'आप इतने बड़े गणेश भक्त हैं, आपको कैसे प्रोस्टेट हो गया? मेरी समझ में नहीं आता, क्या श्री गणेश आपसे नाराज़ हो गए है?'' कहने लगे - ''माँ पता नहीं मैं तो बड़ी गणेश जी की भक्ति करता हूँ।'' मैंने कहा - ''अच्छा लो भई चना खाओ, आज हमारा प्रसाद चना है, तो चना खाइये।'' तो वे इधर उधर देखने लगे। मैंने कहा - ''अनाकानी क्यूँ कर रहे हैं?'' कहने लगे - ''आज संकष्टी है और संकष्टी में मैं उपवास रखता हूँ।'' मैंने कहा - ''यही तो वज़ह है। जिस दिन गणेश जी का जन्म हुआ तो उसी दिन आप उपवास कर रहे हैं? यह किसने आपको बताया है कि जिस दिन देवता का जन्म हो उस दिन आप

उपवास करें?''

मैंने उनसे कहा – ''अब छोड़िये उपवास, आज से आप यह प्रामिस करिये कि संकष्टी के दिन आप मोदक बना कर खायेंगे, क्योंकि गणेश जी को मोदक प्रिय है, आप मोदक बना कर खायें।'' तो उन्होंने कहा – ''माँ मैं आपको प्रामिस करता हूँ, वचन देता हूँ कि मैं मोदक खाऊँगा।''

आपको विश्वास नहीं होगा, उ**स दिन उन्होंने चने का प्रसाद खाया और आपको आश्चर्य होगा कि उनका प्रास्टेट ठीक हो गया था,** पूना पहुँचकर उन्होंने चिट्ठी भेजी कि ''माँ मेरा प्रोस्टेट गायब – उनकी तक़लीफ ही ग़ायब।"

अब धर्म के कितने दोष हैं देख लीजिए। बहुत से लोग कहते हैं कि – ''धर्म हम इतना करते हैं, हम इतने धार्मिक हैं माँ, तो भी हम बीमार हैं।'' अब देखें, छोटा सा दोष देख लें, कि जब राम का जन्म होता है, तब उपवास करेंगे, कृष्ण का जन्म होगा तब उपवास करेंगे।..... जन्म दिवस पर उपवास करने की क्या ज़रूरत है? मेरी तो समझ में नहीं आता। ..... अरे भई परमात्मा के नाम पर उपवास क्यों करते हो? उसने कब कहा था कि आप उपवास करो?

लोग कहते हैं कि – ''हमने धर्म धारण किया है, हम यह करते हैं वो करते हैं फिर हमें माँ परेशानी क्यों हुयी? **इसका परमात्मा पर कोई दोष मत दीजिए। दोष है जिसने आपको समझाया और बताया।**

जैसे लोग बताते हैं कि जब कुण्डलिनी जागरण होता है तो बड़ी गर्मी होती है और ऐसा होता है वैसा होता है। सब झूठ है एकदम झूठ है। ऐसा कुछ भी नहीं। इस बात पर आप बिल्कुल भी विश्वास मत रखें।

..... आपके ये फालतू के गुरु सिर्फ बातचीत ही बातचीत करते हैं, आपको कहेंगे पचास पारायण करो। एक महाशय हमारे पास आए, हमसे कहने लगे – ''माँ हमने तो चौदह वर्षों की तपस्या की मैंने कहा – "अच्छा! और?" ..... "उन्होंने सिर्फ पारायण करने को कहा और मैं शिव जी का मंदिर धोता रहा।" मैंने (उनकी कुण्डलिनी जागृत की) ... ... पूछा ''अब क्या हुआ?''

कहने लगे- ''एक मिनट में कुण्डलिनी जागरण हुआ।'' तब मैंने समझाया - ''भाई यह सोचना चाहिए, पारायण करने से क्या परमात्मा मिलते हैं?'' आप क्यों इनके चक्करों में फँसे रहते हो?''

[१५-३-८४ दिल्ली]

● अपनी परेशानियाँ और रोग दूर करवाने के लिए अगुरुओं और मांत्रिको के चंगुल में मत फँसिए, श्री माताजी सतर्क कर रही हैं कि ये सब आपका विनाश कर रहे हैं--

''ये मांत्रिक लोग जो होते हैं वे शमशान और कब्रिस्तान में जाकर मृत आत्माओं को पकड़ कर अपने वश में कर लेते हैं और फिर उनसे अपना काम करवाते हैं, इन्हें यहाँ वहाँ भेजते रहते हैं और इनसे वशीकरण का काम करवाते हैं। ... ... ये मांत्रिक मृत आत्माओं के वश में करके इन्हें एक व्यक्ति से निकालते हैं और अन्य में बिठा देते हैं, इस प्रकार पहला व्यक्ति रोग मुक्त हो जाता है और दूसरा रोगी हो जाता है।

एक महिला थी जिसका पति बहुत अधिक शराब पिया करता था, वह एक महिला मांत्रिक के पास गई, मांत्रिका ने उससे सौ रूपये लिए, उसने महिला के पति पर एक ऐसे व्यक्ति की मृत आत्मा डाल दी जिसके कारण उसके अंदर से शराबी भूत भाग गया पर वह व्यक्ति घोड़ा रेस में जाने लगा। बाद में उस जुआरी भूत की समस्या का समाधान उसके अंदर एक और आत्मा डालकर कर दिया जिसके कारण वह वेश्याओं के पास आने लगा। अब यह महिला घबराई ..... मांत्रिका ने बहुत पैसे उससे ऐंठ लिए थे ..... जब महिला ने शिकायत की तो पता चला कि उसका पति ये तीनो दुष्कर्म करने लगा, वह महिला मांत्रिका से लड़ने के लिए गई, तो उसने महिला में भी एक भूत बिठा दिया। तब से वो महिला अभी भी पागल है और मैं भी उसे ठीक नहीं कर पाई।. ..... **तो यह अवचेतन में जाने वाले लोगों का उदाहरण है।**

दूसरा उदाहरण **अतिचेतन प्रकार के लोगों का है।** डॉ॰ लेम्ब का अन्तर्राष्ट्रीय रोग निवारण केन्द्र था। ..... डॉ. लेम्ब की मृत्यु हो गई थी, वे लंदन में रहते थे, उनका एक बेटा था। वियतनाम में डॉ. लैम्ब की आत्मा ने एक

सर्वसाधारण सिपाही पर आक्रमण किया ..... उसमें प्रवेश किया और उससे कहा कि वह जाकर पुत्र को बताए कि वे एक चिकित्सालय आरम्भ करना चाहते हैं। ..... सिपाही डॉ. लेम्ब के बेटे के पास गया और उससे कहा कि तुम्हारे पिता मेरे अंदर है और वे क्लीनिक खोलना चाहते हैं, परन्तु लड़का इस पर विश्वास ही न कर पाया।

वह सिपाही बेहोशी की स्थिति में चला गया और उसे बताया कि मैंने तुम्हारे लिए कुछ धन एक गुप्त स्थान पर रखा हुआ है, इसका रहस्य भी उसने बताया, तब बेटे को विश्वास हुआ और उसने अपने पिता के लिए एक चिकित्सालय आरम्भ किया। सारा धन उसने क्लीनिक में लगा दिया। उस चिकित्सालय में डॉ. लेम्ब के पास अन्तर्राष्ट्रीय भूत थे। जब उसे आवश्कता होती कार्य करने के लिए **सभी भूत डाक्टर उसकी सहायता करते, सामूहिक अतिचेतन स्तर पर उनमें परस्पर संपर्क स्थापित हो गया।**

उच्च रक्तचाप, गुर्दे तथा मूत्राशय रोगों से पीड़ित एक महिला उनके पास गई, उन्होंने कहा कि लन्दन केन्द्र को पत्र लिखो और लन्दन केन्द्र ने उसको उत्तर दिया कि फलां विशेष दिन, फलां समय पर हम तुम्हारे अन्दर प्रवेश करेंगे और तम्हारा रोग निवारण करेंगे, परन्तु तुम अवश्य अपने बिस्तर पर लेट जाना। बताए हुए दिन और समय पर वह महिला काँपने लगी और **एक मृत डाक्टर ने उसमें प्रवेश किया और वह महिला ठीक हो गई।**

एक वर्ष तक वह ठीक थी परन्तु बाद में उसे चक्कर आने लगे। वह जब मेरे पास आई तो उसकी दुर्दशा हो चुकी थी। ... ... वह जानती थी और उसने बताया कि उसके अंदर दस ग्यारह भूत हैं और वह उन्हें झेल नहीं पा रही थी। तो **यह अतिचेतन से रोग निवारण का परिणाम था।''**

[२४-५-१९८१]

''बहुत से लोग जो यह कहते हैं कि हम इस विधि या उस विधि से कुण्डलिनी जागृत कर रहे हैं, वे साधकों का जीवन नष्ट करते हैं। ..... ये लोग जब चालाकियाँ करने लगते हैं तो दाँया-बाँया नाड़ी तंत्र बहुत ज़्यादा उत्तेजित हो जाता है और वह परानुकम्पी मध्य मार्ग से बहुत अधिक ऊर्जा

खींचने लगता है। वह इतना अधिक ऊर्जा खींचता है कि परानुकम्पी की ऊर्जा समाप्त होने लगती है और ऐसा व्यक्ति (यानी साधक) वास्तव में विक्षिप्त हो जाता है। ..... अन्तत: साधक बिना कुछ प्राप्त किए नि:सहाय छोड़ दिया जाता है। (साधक) नहीं जानते कि प्राप्त क्या करना है और पाना क्या है? इस प्रकार से पथ भ्रष्ट हो जाते हैं।.....

..... आपको इन सब जंजालों में नहीं फँसना जहाँ आत्माएं (भूत) आपको पकड़ लें।..... स्वयं मृतआत्माओं के गुलाम मत बनो। ..... अब वो समय आ गया है कि हम को वे सब चीजें त्याग देनी चाहिए जो हमारे स्वास्थ्य के लिए और हमारी आध्यात्मिक उत्क्रांति के लिए ठीक न हों। ..... माँ होने के नाते मैं कह सकती हूँ कि मुझे तुम्हारी चिन्ता है ..... आप अत्यन्त भयानक समय से गुज़र रहे हैं। ..... अब जब आप आत्मसाक्षात्कारी हैं तो आपको भली-भांति समझना होगा कि सच्चाई क्या है?

[३-२-८३]

● श्री माताजी ने अपने साधक बच्चों की कुण्डलिनी जाग्रत कर उन्हें शक्तिशाली सहजयोगी बना दिया है, वे उन्हें आश्वस्त कर रही हैं -

''एक सहजयोगी ऐसी हज़ारों आसुरी शक्तियों का वध कर सकता है जबकि ये एक भी सहजयोगी को हानि नहीं पहुँचा सकती। वास्तव में आपके सम्मुख ये शक्तिहीन हैं, आपकों कष्ट देने का इनके पास कोई मार्ग नहीं है। आप यदि शक्तिशाली हैं तो ये लुप्त हो जाएँगी, सदा सर्वदा के लिए लुप्त हो जाएँगी।''.....

"भारत में एक स्थान पर तीन सहजयोगी गाँव की एक विशेष सड़क से जाया करते थे। एक बार एक कार्यक्रम में एक महिला भूत बाधित हो गई और हो-हो-हो करने लगी। उससे पूछा गया कि वह वहाँ क्यों हैं? उसने उत्तर दिया कि "इस महिला में हम आपको ये बताने के लिए आए हैं कि आप उन तीनों सहजयोगियों को बता दें कि वे इस मार्ग से न जाएं। सारा गाँव तो हम वैसे ही छोड़ चुके हैं और अब इस क्षेत्र में रहते हैं। सारी रात अगर ये सहजयोगी आते रहेंगे तो हम इधर उधर भागते रहेंगे। अत: उन तीनों सहजयोगियों से कह दें कि

वे उस मार्ग से न जाएँ ताकि हमारे रहने के लिए कुछ स्थान तो बच जाए।"

सहजयोगी पूर्ण सुरक्षित हैं।..... आपमें ये मृत शक्तियाँ प्रवेश नहीं कर सकतीं ..... कुछ भी आपको छू नहीं सकता।''

[८-१०-८८]

● **दिव्य शक्ति सब कुछ कर सकती है। श्री माताजी सहजयोगियों को बार बार विश्वस्त करती रही हैं कि आप सबके अंदर यह शक्ति जागृत हो गई है, आप इसका उपयोग करें**--

"एक बार मैं कहीं जा रही थी और लोगों ने मुझे सावधान रहने के लिए कहा। मैंने पूछा - 'क्यों?' उन्होंने बताया - 'रात के समय नक्सलवादी लोग यहाँ होते हैं और वे कहीं आपकी हत्या न कर दें।' मैंने कहा - 'ठीक है।'

वे कहने लगे - 'बहुत देर हो गई है, सावधान रहिएगा' मेरे साथ जो व्यक्ति था वो बहुत घबड़ाया हुआ था, कहने लगा - 'माँ अपने सब आभूषण उतार दीजिए और उसने उन सबको सीट के नीचे सावधानी पूर्वक छिपा दिया। ज्योंही हम उस स्थान पर पहुँचे जहाँ बहुत से नकसलवादी अपनी लालटेनें लिए खड़े थे, तो मैंने ड्राइवर को एक मिनट कार रोकने के लिए कहा पर उसने मना कर दिया परन्तु मैंने उसे गाड़ी रोकने का आदेश दिया। **मैंने उन नक्सलवादियों की ओर देखा और मुझे नहीं मालूम क्या हुआ?** उसके बाद मैंने ड्राइवर को गति बढ़ाने का आदेश दिया। **यह दिव्य शक्ति है, जब तक आप इस प्रेम की शक्ति का उपयोग नहीं करते तब तक आप जान ही नहीं पायेंगे कि यह शक्ति आपके अंदर है।**''

[१०-९-९५ इटली]

"**अब एक चमत्कार आपको बतायें।** इन लोगों (विदेशी सहजयोगी जिन्होंने नोएडा वालों के लिए बहुत प्रेम से उपहारों की व्यवस्था की थी) का सामान सब बम्बई में आया और वहाँ हमारे प्रतिष्ठान में रखा था और उसे ट्रक में डाल कर आ रहे थे। रात को वो तैयार बैठे थे। मैंने फोन किया 'आज रात को मत चलना चाहे कुछ भी हो जाए।' वे मेरी बात सुनते ज़रूर हैं, उस रात उस

रास्ते पर सब ट्रकें लूटी गईं और बहुत लोगों को मारा गया।

दूसरे दिन वे चले तो वहाँ एक जगह जाकर इनका ट्रक रुक गया और पीछे पीछे जाने लगा। देखा कि एक पहिया भी निकल रहा है तो सब लोग कूद पड़े। ट्रक पीछे जा रहा था, ये सब परेशान कि इसमें इतना सामान है, इतने प्यार से लाए हैं, सब टूट जाएगा। यकायक ट्रक रास्ते से हट कर मुड़ गई अपने आप और फिर जाकर खड़ी हो गई, एक चबूतरे के बराबर जा कर लगी।

जब मैं वहाँ से गुज़री तो मैं खुद हैरान हो गईं कि ये ट्रक यहाँ पर आया कैसे? और गाँव वाले भी हैरान थे।, वो तो कहने लगे - 'तुम लोग कोई देव हो क्या? तुम भगवान हो क्या?''

''तो ये उनके पवित्र प्रेम की शक्ति थी। ... ... इतने प्यार से दुलार से वहाँ से उपहार लाए थे अपने सहजयोगी बहन भाइयों के लिए, वो चीज़ नष्ट हो ही नहीं सकती, एक-एक चीज़ बिल्कुल बच गई। ये है प्रेम की महिमा।''

[२६-३-९२ नोयडा]

● श्री माताजी सहजयोगियों को सदैव बताती रहती हैं कि अब आपका ज्योतिर्मय चित्त बहुत शक्तिशाली हो गया है, इसके द्वारा आप सब कुछ जान सकते हैं --

"एक दिन मैं यूँ ही बैठी हुई थी, मेरी इच्छा हुई कि मैं न्यूयार्क आश्रम को फोन करूँ, प्राय: मैं कहीं कभी टेलीफोन नहीं करती। टेलीफोन का नम्बर ढूँढ कर फोन करके मैंने पूछा - ''क्या बच्चा ठीक है?'' वहाँ का लीडर हैरान हो गया क्योंकि एक बच्चा पानी में गिर गया था और काफी देर तक पानी में रहने के कारण उसके शरीर में इतना पानी भर गया था, यहाँ तक कि उसके मस्तिष्क तक में भी पानी भर गया था। सदा की तरह एक चिकित्सक ने कहा कि बच्चा बच नहीं सकता और यदि बच भी गया तो सामान्य नहीं हो सकता।... ... किसी ने मुझे बताया भी न था।

मैंने कहा - ''चिन्ता मत करो, आप लोग चिन्ता मत करो, बच्चा पूरी तरह से ठीक हो जाएगा।'' वे सब हैरान हो गए कि मैंने किस प्रकार ऐसे कहा।

सर्वप्रथम तो इसलिए हैरान हुए कि मुझे पता कैसे चला कि बच्चा गिर गया है और इस प्रकार का कोई बच्चा भी है तथा मैंने यह किस प्रकार कहा कि वह पूरी तरह ठीक हो जाएगा, और बच्चा ठीक हो गया, पूरी तरह से ठीक हो गया।

वे हैरान थे कि माँ किस प्रकार जानती हैं कि यहाँ कोई बच्चा बीमार है। तो मैं कहूँगी कि वह शुद्ध ज्ञान है। मेरा चित्त हमेशा आप पर होता है। यह शुद्ध विवेक की देन है यह सर्वत्र है, सन्देश भेजता है और बताता है कि मामला क्या है और समस्या क्या है।''

..... ऐसा ही शक्तिशाली चित्त हर सहजयोगी का होना चाहिए।''

[२७-९-९८ कबैला]

श्री माताजी
का महानतम कार्य-
गहन सहजयोगियों का सृजन

(कुण्डलिनी-जागरण द्वारा आत्म-बोध एवं परमात्मा से योग)

योग-निरूपिणी, आत्म-विकासिनी श्री माँ

"यह अवतरण पृथ्वी पर स्वयमेव मात्र आपकी रक्षा, पोषण तथा राक्षसों का विनाश करने के लिए नहीं आया। आपके अंदर निहित सूक्ष्मताओं को तथा आपके आंतरिक एवं बाह्य सम्बंधों के बारे में आपको बताने के लिए मैं पृथ्वी पर अवतरित हुई हूँ।"

[परम पूज्या श्री माताजी २४-१०-१९९३]

"मैं कामना करती हूँ कि आप एक नया जन्म, नई सूझ-बूझ और नया व्यक्तित्व प्राप्त करें, उस व्यक्तित्व को स्वीकार और सम्मान करने का प्रयत्न करें। यही व्यक्तित्व आपकी आत्मा है।"

[परम पूज्या श्री माताजी २१-३-२००१]

ओ मेरे पुष्प सम बच्चों!

सन् 1972 में अमेरिका में लोगों की दुर्दशा देखकर श्री माताजी ने भाव विह्वल होकर एक कविता लिखी थी – इसके कुछ अंश इस प्रकार हैं –

मेरे मधुर मधुर बच्चों!
स्वयं से, अपने अस्तित्व से
और साक्षात आनन्द से युद्धरत हो
किस प्रकार शांति प्राप्त कर सकते हो तुम?

शांति की बनावटी नक़ाब और
त्याग के प्रयत्न काफी हुए
अपनी गरिमामयी 'माँ' की गोद में,
कमल की पंखुड़ियों पर,
अब करो विश्राम,

सुन्दर पुष्पों से
सजाऊँगी जीवन तुम्हारा,
आनन्द सुगन्ध से
भर दूँगी हर पल तुम्हारा,
दिव्य प्रेम से करूँगी,
तुम्हारे मस्तक का अभिषेक,

कष्ट तुम्हारे अब
मुझसे सहन होते नहीं,
आओ! डुबो दूँ तुम्हें
आनन्द–सागर में

हमारी गरिमामयी, ममतामयी माँ ने अपने स्नेह प्रेम के आँचल में समेट कर विश्व के सारे साधक बच्चों का जीवन आनन्द की सुगन्ध से भर दिया है। श्रीमाताजी ने लोगों को मानव जीवन का महत्त्व समझाया, उन्हें आत्म साक्षात्कार दिया, आत्मबोध कराया और अंततः उन्हें परमात्मा से योग का सही अर्थ बताया।

अध्याय 16

सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना - मानव

रूस के सेन्ट पीटर्सबर्ग प्राचीन विश्वविद्यालय में वैज्ञानिकों की एक बड़ी सभा में जब श्री माताजी को महानतम वैज्ञानिक और दार्शनिक की उपाधि से सम्मानित किया गया था तब बहुत ही विनम्रतापूर्वक श्री माताजी ने पूछा था, 'आप मुझे ये उपाधि कैसे दे सकते हैं, क्योंकि आइंस्टीन को भी यह दी गई थी? उन्होंने कहा था, "आइंस्टीन ने क्या कार्य किया है? **उसने पदार्थ पर कार्य किया है और आपने मानव पर।"**

[२१-७-९५]

वस्तुत: श्री माताजी मानव-मात्र के कल्याण के लिए ही पृथ्वी पर आई हैं। पृथ्वी पर मानव रूप में अवतरित होकर उनके बीच रहकर श्री माता जी ने मानव की मन: स्थिति एवं उसके पारिवारिक-सामाजिक परिवेश को बहुत निकट से देखा, जाँचा और परखा। उन्होंने मानव-स्वभाव की सहज प्रवृत्तियों एवं उनके शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सभी समस्याओं के कारणों को बड़ी ही सूक्ष्मता से समझा।

श्री माताजी ने सभी जिज्ञासु साधको को विस्तार से समझाया है कि वे क्यों ग़लत मार्गों में भटक कर अपने जीवन के मूल लक्ष्य, परमात्मा से एकाकारिता को, नहीं प्राप्त कर सके और अब इस घोर कलियुग की विषम परिस्थितियों में इस योग प्राप्ति का सही मार्ग क्या है? **श्री माताजी ने मानव के विषय में बहुत सारी बातें स्पष्ट रूप से बतायी हैं** -

I. मानव जीवन अनमोल है -

"आप प्रकृति की एक बहुत सुंदर रचना हैं। बहुत मेहनत से नज़ाकत के साथ, अत्यन्त प्रेम के साथ परमात्मा ने आपको बनाया है। आप अनन्त योनियों

से घटित होकर इस विशेष मानव रूप में स्थित है।"

[२२-३-७९]

● "मानव की आश्चर्यचकित कर देने वाली सबसे बड़ी समस्या यह है कि मानव स्वयं को नहीं पहचानता, वो यह नहीं जानता कि उसमें कौन सी शक्तियाँ हैं, कौन सी संवेदनाएँ है तथा ये भी नहीं जानता कि वह किस ऊँचाई को प्राप्त कर सकता है। अपने आप के विषय में अज्ञानता ही मुख्य समस्या है।"

[२०-३-२००१]

● "बहुत सी प्रक्रियाओं के बाद मनुष्य के इस बहुमूल्य जीवन का सृजन किया गया है। आप ही सृजन की पराकाष्ठा हैं, आप ही सृजन के निष्कर्ष हैं।"

[३१-३-८३]

● "आपको परमात्मा के समरूप बनाया गया है। आदिशक्ति का उद्देश्य है कि मनुष्य के रूप में वे ऐसे दर्पण बनाएं जिसमे परमात्मा अपना रूप, अपनी प्रतिछाया अपना चरित्र देख सकें।''

[५-४-९६]

● "मानव रूप में उसे विकास एवं प्रशिक्षण प्रक्रिया से गुज़रना होगा तभी वें इस योग्य बनेंगे कि मानव जीवन के मूल्य को समझ सकें।"

[फरवरी १९७९]

● "मानव को यह ज्ञात होना चाहिए कि उसे एक ऐसे साम्राज्य तक उन्नत होना है, जहाँ वह अपनी चेतना के **चतुर्थ आयाम को प्राप्त कर ले। हम प्रायः तीन आयामों (दायरो में) में रहते हैं - शारीरिक, मानसिक और भावात्मक। चतुर्थ आयाम आध्यात्मिकता है, यह संपूर्ण चेतना की अवस्था है। मानव को अब अपनी आध्यात्मिक अवस्था तक विकसित होना है। आपको आत्मा बनना है।"**

[परा आधुनिक युग]

● **"आपका जन्म केवल मानव बनने के लिए नहीं हुआ है, बल्कि**

महामानव बनने के लिए हुआ है। परमात्मा नें आपका सृजन इसलिए किया है कि आप पूर्ण तादात्म्य तथा आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करें। इसीलिए हमारा सृजन हुआ और यही हमारा ध्येय है मैं यह बात आपको केवल बता नहीं रही, यही वास्तविकता है।"

[१४-७-२००१]

II. मानव अपने लक्ष्य से भटक गया -

मनुष्य वास्तविकता के विपरीत बनावटी चीजों के जाल में फँस गया, वह परमात्मा से एकाकारिता पाने के स्थान पर भौतिक चीजों के आनन्द में अटक गया -

"मानव को स्वयं विकसित होने की स्वतंत्रता प्राप्त है ..... पर अपनी स्वतंत्रता में मानव ने सभी उल्टे-सीधे कार्य किए।..... सभी समस्याएँ मानव की अपनी मूर्खताओं के कारण उत्पन्न होती हैं। परमात्मा आपके लिए कोई समस्या खड़ी नहीं करते।"

[२६-१-९५]

"देखो, परमात्मा ने इस विश्व का सृजन किया और उसके बाद मानव का सृजन किया ताकि वे उसे जीवन की उच्चतम चीज़ आनन्द प्रदान कर सके। .... **.. परन्तु किस प्रकार हम स्वयं परमात्मा विरोधी और आनन्द विरोधी हो गए ऐसा क्यों होता है? आप समझें।**

हमारी मानवीय चेतना हमारे मस्तिष्क के माध्यम से नीचे की ओर बढ़ती है और अधोगति की ओर जाते हुए हमें परमात्मा से दूर ले जाती है।

परमात्मा को प्राप्त करना हमारा अंतिम लक्ष्य है, परन्तु हम सर्वप्रथम परमात्मा से तादात्म्य की चेतना से थोड़ा दूर जाते हैं, केवल यह समझने के लिए कि स्वतंत्रता का उपयोग उचित होना चाहिए। इस प्रशिक्षण के बिना मानव को स्वतंत्रता देना व्यर्थ है।

..... आखिरकार आपको आत्मा बनना है, परन्तु जब हम अपनी

तथाकथित मानवीय चेतना में उन्नत होने लगते हैं तो मात्र ''आत्मा' बनना ही हमारी चिन्ता नहीं रह जाती..... फल की अवस्था (आत्मा बनने की स्थिति) तक पहुँचने से पहले हम बनावटी पत्तों का सृजन और उनका आनन्द लेने लगते हैं यानी **हम बनावट में फँस जाते हैं।**

एक बार जब हम इस बनावटीपन को अपनाने लगते हैं तो हम वास्तविकता से दूर हट कर नकारात्मक विचारों या परमात्मा विरोधी विचारों की ओर बढ़ने लगते हैं। ..... अत: वास्तव में दो शाखाएं हैं जिनमें हम बँट जाते हैं।

1. कुछ लोग बाँयी ओर को या नकारात्मक दृष्टिकोण की ओर जाना चाहते है, वे स्वयं को नष्ट करते है।

2. दूसरा दाँया पक्ष है। इसमें जाने वाले लोग अन्य लोगों को कष्ट देते हैं, उन्हें नष्ट करते हैं।

दोनों ही मार्ग परमात्मा, उनकी दया और उनकी कृपा से दूर हैं। लक्ष्य केवल एक होना चाहिए "आत्मा" तभी उचित दिशा की ओर बढ़ सकते हैं। **परन्तु मानव इस लक्ष्य से आसानी से भटक जाता है क्योंकि ऐसा करने के लिए वह स्वतंत्र है।**

[३१-३-१९८३]

"बाँयी ओर जाने वाले लोगों का स्वभाव आलसी, भावुक डरा हुआ रहता है। ये ईश्वर भक्त तो होते हैं पर बहुत अधिक कर्मकाण्डी हो जाते हैं। वे बंधनों संस्कारों से ग्रस्त रहते हैं। इस प्रकार के लोग मनोदैहिक रोगों का शिकार हो जाते हैं।

..... दाँये पक्ष के लोग अहंकारी, आक्रामक, क्रूर और क्रोधी हो जाते हैं। ये लोग अत्यन्त रूखे होते हैं, वे दूसरों की भावनाओं की चिंता नहीं करते। इन लोगों में सभी प्रकार के शारीरिक और मानसिक रोग पैदा हो जाते हैं।"

"आक्रामकता द्वारा आपका आध्यात्मिक विकास नहीं हो सकता और न

ही भावुकता एवं धर्मान्धता (कर्मकाण्ड) द्वारा आपका उत्थान होगा।"

[१-६-१९७२]

III. मानव-विकास का सही मार्ग -

मानव का आध्यात्मिक विकास उसके शरीर में स्थित कुण्डलिनी शक्ति से ही होता है, इसी से मानव परिवर्तित होता है और उसकी सभी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं-

● कण-कण में व्याप्त हो जाने वाली सूक्ष्म शक्ति (परम चैतन्य) से मनुष्य का सम्बन्ध जोड़ने के लिए एक शुद्ध इच्छा शक्ति है जिसे उसकी पावन अस्थि (सैकरम बोन) में रखा गया है यही कुण्डलिनी कहलाती है, यह साढ़े तीन कुण्डलों में विद्यमान है।

● कुण्डलिनी की यह शक्ति जब जागृत होती है तो उसके कुछ सूत्र आरोहित होकर मानव को सर्वव्यापी शक्ति से जोड़ देते हैं। यह सहज घटना है, एक जीवन्त क्रिया है। विकास की सारी क्रिया जीवन्त रही है।

● मानव की तुलना बीज से की जा सकती है जो कि आध्यात्मिक रूप से सक्रिय नहीं है, जिसने अभी आध्यामिकता में उन्नत होने की जीवन्त क्रिया ही शुरू नहीं की, परन्तु बीज को जब धरा में गाड़ दिया जाता है तो जल की सहायता से बीज को अंकुरित करने की शक्ति पृथ्वी माँ में है। इसी प्रकार सहजयोग की शक्ति से कुण्डलिनी भी जागृत की जा सकती है।

● जब कुण्डलिनी उठती है तो मानवीय चेतना में एक जीवन्त क्रिया शुरू हो जाती है, जिसका परिणाम आध्यात्मिक उत्क्रान्ति है। आध्यात्मिक जीवन का यह विकास एक नयी अवस्था है जिसमें मनुष्य अपने अन्तर्जात देवत्व में उन्नति करने लगता है।

● स्वत: ही कुण्डलिनी की जागृति घटित होती है और यह ब्रह्मरन्ध्र का भेदन करती है। हमारे हृदय में प्रतिबिम्बित आत्मा हमारे चित्त को ज्योतित करती है और हम आत्मा के प्रकाश को अपने चित्त में फैलते हुए देखते हैं।

● कुण्डलिनी जब उठती है तो व्यक्ति अपने सिर के तालू भाग और उँगलियों के सिरे पर सहज ही शीतल लहरियों के प्रवाह का अनुभव करता है। जीवन में पहली बार मनुष्य सूक्ष्म दैवी शक्ति के अनुभव का वास्तवीकरण करता है।

● मानव में अन्तर्–रचित दस संयोजकताएं (valencies) हैं। कुण्डलिनी के जागरण से जब वे प्रकाशित होती हैं तो मनुष्य को अति संतुलित, धर्मपरायण और अन्तर्जात रूप से धार्मिक व्यक्ति बना देती है।..... अपने अन्तस् में व्यक्ति आध्यात्मिकता को छू लेता है, वह एक अन्य आयाम यानी चौथे आयाम में उन्नत होता है।

● मानव सहजयोगी बन जाता है। सहजयोगी वे प्रबुद्ध व्यक्ति होते हैं जिन्हें कुण्डलिनी जागृति द्वारा आत्म साक्षात्कार प्राप्त हो जाता है। वे उन अंकुरित बीजो के समान है जिनकी अध्यात्म में जीवन्त क्रिया आरम्भ हो चुकी है ..... यद्यपि बीज का अंकुरण स्वाभाविक है पर माली को इन कोमल पौधों की देखभाल करनी होती है, उसी प्रकार साधक को प्रारम्भ में अपने आत्मसाक्षात्कार को सँभालना होता है।

[सहज योग एवं परा आधुनिक युग से]

IV. मानव को आत्मा में परिवर्तित किया जा सकता है –

"आप मानव हैं केवल आप ही परिवर्तित हो सकते हैं, आपको एक नए तत्त्व–आत्मा में– परिवर्तित किया जा सकता है। **मानव की यही विशेषता है।**

आप प्रकृति को जैसे है वैसे देखें। आप जानते हैं कि कुल बानबे तत्त्व है, इन बानबे तत्त्वों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता। आप चाँदी को सोना और सोने को चाँदी नहीं बना सकते अणु इस ढंग से व्यवस्थित हैं कि उनकी अपनी कुछ मिश्रण शक्तियाँ हैं, इसके अतिरिक्त परमाणु भी इस ढंग से व्यवस्थित है, उनकी अपनी एक बनावट है जिसे आप परिवर्तित नहीं कर सकते। यदि इसे आप परिवर्तित करने का प्रयत्न करेंगे तो बम और एटम बमों की रचना करेंगे,

यह पूर्णत: विध्वंसक है। **केवल मानव ही बदल सकता है,** इसका आकार व स्वभाव परिवर्तित हो सकता है।

मानव को परिवर्तित किया जा सकता है, परंतु किसी का कोई कुगुरु है जो उसे परिवर्तित करने का प्रयत्न करता है तो उसमें विस्फोट हो सकता है। कुगुरुओं के पास जाने वाले लोगों को मैंने देखा है, वे मूर्छित हो जाते हैं, अब भी उन्हें समस्याएं हैं।

पर कुण्डलिनी जागरण द्वारा एक बार परिवर्तित हो जाने के पश्चात मानव जीवन्त प्रक्रिया सम हो जाते हैं। ..... प्रकृति तो केवल परमात्मा के नियंत्रण में है और उसी प्रकार कार्य कर रही है परन्तु आप सब सहजयोगी अपने नियंत्रण में हैं। आत्मसाक्षात्कार के बाद आप पाते हैं कि आपका स्वयं पर पूरा नियंत्रण है, आप अपना नियंत्रण अब स्वयं करते हैं। ..... **सारी समस्याओं का समाधान भी आप स्वयं करते हैं।"**

[१०-११-९६ पुर्तगाल]

"आत्म साक्षात्कार द्वारा मानव के सामूहिक आन्तरिक परिवर्तन की सच्चाई, वर्तमान युग की सर्वाधिक क्रांतिकारी खोज है।"

[परा-आधुनिक युग]

''मैंने कोई विशेष कार्य नहीं किया है। जन्म से ही मुझे इसका ज्ञान था और मैं स्वयं को जानती हूँ। मैंने केवल मानव और उसकी समस्याओं को समझा है। मानव ईसा, मोहम्मद, श्री राम, श्री कृष्ण सभी को मानता है परन्तु उसमें कोई आन्तरिक परिवर्तन नहीं होता। क्या कारण है? कोई बात उसके मस्तिष्क में नहीं घुसती।

इसका कारण मैंने खोज निकाला है कि अभी तक उसका योग नहीं हुआ है। वे परमचैतन्य से जुड़े नहीं हैं। मैंने मानव स्वभाव के क्रम परिवर्तन और संयोजन का अध्ययन किया। यह कठिन कार्य नहीं है क्योंकि केवल सात चक्र हैं जिन्हें आपने कार्यान्वित करना होता है और यह जानना होता है कि सहस्रार

भेदन के लिए किस प्रकार कुण्डलिनी को उठाया जाए। इस विधि ने कार्य किया और यह हजारों लोगों में कार्यान्वित हो रही है।

[२१-३-१९९५]

आपको सत्य प्रदान करना मेरा कार्य है ..... आपको आत्मसाक्षात्कार देना मेरा कार्य है। ..... आत्म साक्षात्कार कुण्डलिनी जागरण का वरदान है।

[श्री माताजी]

अध्याय 17

कुण्डलिनी जागरण की क्रिया विधि में निहित सूक्ष्म ज्ञान

सामूहिक आत्मसाक्षात्कार के प्रारम्भ से ही श्री माताजी साधकों को बहुत ही महत्त्वपूर्ण बातों का ज्ञान दे देती हैं।

● सर्वप्रथम साधक में शुद्ध इच्छा होनी चाहिए।

''हमारे अंदर यह शुद्ध इच्छा है कि हमें आत्मा से एक रूप होना है ताकि आत्मा के माध्यम से हम परमात्मा को जान सकें। यह शुद्ध इच्छा, इच्छा की शक्ति कुण्डलिनी के रूप में हमारे अंदर जन्म से ही विद्यमान है, इसे ही जागृत करना है।''

[२०-३-८१]

● साधक के मन में आदिशक्ति श्री माताजी की दिव्यता के प्रति पूर्ण विश्वास होना अनिवार्य है।

उनके चित्र के समक्ष दोनों हाथ फैलाने का अर्थ ही यह है कि साधक पूर्ण समर्पण भाव से अपने मन की जिज्ञासा प्रगट कर रहा है।

● मानव को स्वयं विकसित होने की स्वतंत्रता दी गयी है, इसलिए आपको अपनी स्वतंत्रता में श्री माताजी से शुद्ध ज्ञान माँगना होगा।

● कुण्डलिनी आपकी आध्यात्मिक माँ हैं, वे ही आपको पूरा ज्ञान कराएंगी।

आप अपना बाँया हाथ श्री माताजी के चित्र की ओर फैलाते है और दाँया हाथ बाँये स्वाधिष्ठान चक्र पर रख कर कहते है ''श्री माताजी हमें निर्मल शुद्ध ज्ञान दीजिए।''

"यह शुद्ध ज्ञान का केन्द्र है, यहाँ आपको शुद्ध ज्ञान माँगना होगा। मैं आप

पर ज़बर्दस्ती शुद्ध विद्या लाद नहीं सकती।..... जैसे ही आप शुद्ध विद्या माँगते हैं, कुण्डलिनी जागरण शुरू हो जाता है। कुण्डलिनी ही आपको पूरा ज्ञान कराएगी।" इस सूक्ष्म ज्ञान को समझें।

[हैदराबाद]

I. आप स्वयं के गुरु हैं -

आप अपना दाँया हाथ भवसागर क्षेत्र में बाँयी ओर रखकर कहते हैं - ''श्री माताजी! मैं स्वयं का गुरु हूँ।''

''इस क्रिया से आपका गुरुतत्त्व जागृत हो जाता है।..... यह धर्म का स्थान है, आपके अंदर धार्मिक प्रवृत्तियाँ जागृत होने लगती हैं। आप स्वयं अपने गुरु बन जाते हैं। ..... आत्मा के प्रकाश में आप अपने ही गुरु हो जाते हैं।

''सदगुरु का स्थान आपके शरीर में आपकी नाभि के चारों ओर **भवसागर** में है। यह स्थान आपमें बहुत पहले से स्थापित है। श्री दत्तात्रेय हमारे आदिगुरु हैं, इनमें श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु और श्री महेश इन तीनों देवताओं की शक्ति समन्वित है, यही शक्ति आपके भवसागर में समाविष्ट है।''

[२५-७-७९]

श्री माताजी अपने प्रवचनों में स्पष्ट करती हैं-

''वास्तव में सारा ज्ञान, सारी आध्यात्मिकता, सारा आनन्द तो आपके अन्दर विद्यमान है, गुरु तो आपको, केवल आपके ज्ञान और आपकी **आत्मा के प्रति चेतन करते हैं।** गुरु का कार्य है कि वह आपको इस बात का ज्ञान करवाए कि आप क्या हैं? यह पहला कदम है कि वह आपके अंदर वह जागृति आरम्भ करता है जिसके द्वारा आप जान जाते हैं कि बाह्य विश्व एक भ्रम है, तब आप अपने अन्तस् में ज्योतित होने लगते हैं।''

[२३-७-२०००]

''गुरु शब्द का अर्थ है 'गुरुत्व'।

गुरुत्व तो आपके अन्दर है..... यह स्वत: ही प्रकट होने लगता है। यह

क्रोध या गम्भीरता के रूप में प्रकट नहीं होता, इसकी अभिव्यक्ति तो इस प्रकार होगी कि सभी कुछ गरिमामय और तेजपूर्ण बन जाएगा।''

[१९-७-९२]

II. आप शुद्ध आत्मा हैं -

आप अपना दाँया हाथ अपने हृदय स्थान पर रखकर बारह बार कहते है - 'श्री माता जी! मैं शुद्ध आत्मा हूँ।'

''आप शुद्ध आत्मा हैं, आप ये शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार आदि उपाधि नहीं है, आप केवल आत्मा हैं।"

[हैदराबाद]

इस ज्ञान को तो श्री माताजी ने बार-बार स्पष्ट किया है-

''हमारे अंदर परमात्मा प्रतिबिम्बित हैं, वही पवित्र आत्मा है। हम आत्मा ही हैं। हमारी यह आत्मा ही पूर्ण सत्य एवं आनन्द का स्रोत है, परन्तु मानव अवस्था में आत्मा हमारी चेतना में प्रकाशवान नहीं होती, **केवल आत्मसाक्षात्कार के बाद ही आत्मा हमारी चेतना को ज्योतिर्मय करती है।**

सर्वप्रथम यह बात समझना और स्वीकार करना आवश्यक है कि हम आत्मा है। हम कहते हैं-'मेरा शरीर, मेरा मन, परन्तु कहने वाला यह मैं कौन है? यही आत्मा है।

[परा आधुनिक युग]

''हमारी आत्मा अज्ञानान्धकार से आच्छादित है और जब तक यह आच्छादन रहता है आप आत्मा को नहीं देख सकते... ... बहुत से तरीकों से इस आच्छादन को हटाने का प्रयत्न किया जा सकता है इसमें से सर्वप्रथम है यह मान लेना, यह विश्वास कि हम आत्मा हैं और बाकी सब कुछ आच्छादन मात्र है। अपने अन्तस् में यह निर्णय करना होगा। **आत्मसाक्षात्कार के बाद यह समझ लेना आसान हो जाता है कि आप जो हैं उससे कही अधिक है जो आपने अब तक स्वयं को समझा है उससे कही भिन्न हैं।**

तो नई अवस्था अब जो आती है उसमें अंधविश्वास नहीं रह सकता। अब

आपका विश्वास आपके अनुभव की देन है।..... आपको यदि अपने आत्मसाक्षात्कार की झलक भर प्राप्त हो जाए तो आपको यह बात मान लेनी चाहिए कि आप आत्मा है। **उस अनुभव पर डटें रहें और अपने चित्त को इस सत्य पर लगाए रखें कि आप आत्मा है। अपनी बुद्धि से कहें कि वह अब आपको और अधिक धोखा न दे। इस प्रकार आप अपनी बुद्धि की दिशा को मोड़ सकते है। वह अब आपकी आत्मा की खोज आरम्भ कर देगी।**

अज्ञान के आच्छादन को हटाने के लिये आपको आदि शक्ति की शीतल चैतन्य लहरियों का उपयोग करना होगा।

[८-६-१९८३]

III. आप दोषी नहीं हैं -

आप अपना दाँया हाथ गर्दन के बाँयी ओर रखकर कहते है- 'श्री माता जी! मैं दोषी नहीं हूँ।' यह बात आपको सोलह बार पूरे विश्वास के साथ दोहरानी होती है।

''आप दोषी नहीं हैं, अपने को आप न्यूनता में न उतारें, आप मानव हैं और गौरवशाली हैं।..... दोष शरीर द्वारा हुआ है, हम आत्मा हैं इसलिए हम दोष कर ही नहीं सकते।''

[हैदराबाद]

दोषी भाव के विषय में श्री माताजी ने बहुत विस्तार से समझाया है-

''आपको यह समझना होगा कि यदि आप सत्य को खोज रहे हैं तो आप दोषी नहीं हो सकते। सत्य को पाने की शुद्ध इच्छा के कारण आपके सारे दोष समाप्त हो गए है, **अतः न तो दोष भाव की आवश्यकता है और न ही किसी के सम्मुख दोष स्वीकार करने की।** एक बार जब आप सत्य को खोजने लगते हैं तो आपके मस्तिष्क में बने हुए दोष भावों से आपको मुक्ति मिल जाती है। अधिकतर दोष भाव बनावटी होते है, मस्तिष्क में किसी भी

प्रकार का कोई दोष भाव रखने की आवश्यकता नही।''

[परा आधुनिक युग]

''कुछ लोग अपनी दोष-भावना के कारण आत्मसाक्षात्कार को नहीं पा सकते। वे कहने लगते हैं, ओह! मैंने यह अपराध किया है, मैंने वह अपराध किया है। जो हो गया वो हो गया, समाप्त, अब पूरा जीवन आप क्यों उसकी चिन्ता लगाए हैं? इस प्रकार की भावना बाँयी विशुद्धि चक्र के लिए हानिकारक है, इसके कारण कुण्डलिनी नहीं उठती। अत: आपको दोष भावना ग्रस्त नहीं होना है। दोष स्वीकृति (confession) की कोई आवश्यकता नहीं, केवल इतना सोचें कि आप मानव हैं और सभी मानव आत्म-साक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं।

[१७-४-२००० दिल्ली]

IV. आप सबको क्षमा करें, स्वयं को भी क्षमा करें -

आप अपना दाँया हाथ माथे पर रखकर, उसे दबाते हुए पूरे मन से कहते हैं - 'श्री माताजी! हमने सबको क्षमा कर दिया, हमने स्वयं को भी क्षमा किया।'

यह आज्ञा चक्र है, यह स्थान जीसस क्राइस्ट का है। उनका मुख्य उपदेश यही था कि सबको क्षमा करो। स्वयं को सूली पर चढ़ा कर उन्होंने पूरे विश्व को क्षमा करना सिखाया। जब तक हम सबको क्षमा नहीं करेंगे हमारी कुण्डलिनी इस आज्ञाचक्र को पार कर ही नहीं सकती।

श्री माताजी ने बताया है :-

''उचित रूप से उत्थान प्राप्ति के लिए व्यक्ति को चाहिए कि बिना कुछ सोचे सबको क्षमा कर दें। आपको अपने हृदय में कम से कम तीन बार कहना होगा - 'मैं सबको क्षमा करता हूँ। ऐसा कहते हुए आपको यह नहीं सोचना है कि आप किनको क्षमा करेंगे क्योंकि उनके विषय में सोचना आपके लिए सिर दर्द बन जाएगा, अत: सामान्य रूप से यह कह देना ही सर्वोत्तम है कि मैं सबको क्षमा करती हूँ।

आप चाहे क्षमा करें या न करें आप कुछ नहीं करते हैं लेकिन क्षमा न करने पर आप ग़लत हाथों में खेलते हैं जैसा अभी तक होता रहा है। आप ग़लत हाथों में खेलते रहे और स्वयं को कष्ट देते रहे जबकि वे सब लोग मज़े लेते रहे। अत: अब उपयुक्त समय है कि आप इस बोझ से मुक्त हो जाएं।

दोष भूतकाल की चीज़ है और क्योंकि भूतकाल का कोई अस्तित्व ही नही है, व्यक्ति को इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। जो भी गलतियाँ आपने की होंगी उसका फल भी उस समय भुगत लिया होगा। भूतकाल की गलतियों की चिंता करने का अब कोई लाभ नहीं। अत: आप स्वयं को कहें कि 'मैंने स्वयं को क्षमा किया।' अगर आप स्वयं को क्षमा नहीं करते तो बाँया विशुद्धि चक्र पकड़ जाता है और इस चक्र में इतनी रुकावट आ जाती है कि कुण्डलिनी उठ नहीं सकती।"

[परा आधुनिक युग]

V. ईश्वर से सच्चे दिल से क्षमा माँगनी होगी -

आप अपना दाँया हाथ आज्ञा चक्र पर रखकर सर को थोड़ा पीछे झुकाकर बहुत ही विनम्रता से कहते हैं - 'हे ईश्वर! मेरे द्वारा जाने अनजाने में हुए सभी अपराधों का क्षमा कर दें।'

पीछे का आज्ञा चक्र श्री महागणेश का स्थान है, जब हम शुद्ध मन से ईश्वर से क्षमा माँगते हैं तो वे क्षमा करते हैं।

श्री माताजी समझा रही हैं -

''परमात्मा का प्यार तो चारों ओर फैला हुआ समुद्र है क्षमा का, उसमें सब कुछ समा जाता है। ऐसी कोई गलती नहीं है जो क्षमा न की जा सके। ..... बस क्षमा मांगो..... अपनी गलतियों को गिनने की आवश्यकता नहीं है। अपने ही समाधान के लिए कहिए - 'हे परमचैतन्य! हमसे यदि कोई गलती हो गई हो तो क्षमा कीजिए। ..... आप प्रसन्न चित्त हो जाए।''

[हैदराबाद]

श्री माताजी आश्वस्त कर रही हैं -

"सर्वव्यापक परमेश्वरी शक्ति कार्यरत है। एक बार यदि हमारा योग इससे हो जाए तो यह हमारी रक्षा करती है। यही परमेश्वरी शक्ति ज्ञान का सागर है, चमत्कारों का सागर है, परमानंद एवं प्रेम का सागर है, यह करुणा का सागर है और सर्वोपरि क्षमा का सागर है।''

[परा आधुनिक युग]

VI. परमात्मा से योग प्राप्त करने के लिये आपको श्री माताजी से याचना करनी होगी -

''परमात्मा से योग पाने के लिए आपको याचना करनी होगी, बिना आपकी इच्छा के **परमात्मा यदि मानवीय चेतना की अवस्था से ही दिव्य चेतना में आपको परिवर्तित कर सकते तो उन्होंने यह कार्य बहुत समय पूर्व कर दिया होता परन्तु वे ऐसा नहीं कर सकते। आपको अपनी स्वतंत्रता में ही परमात्मा से योग माँगना होगा।**''

[५-११-१९७९]

आप अपनी दाँयी हाथ की हथेली को सिर के तालू भाग पर दबाते हुए सात बार घुमाते हुए पूर्ण श्रद्धा और समर्पण भाव से मांगते है - 'श्री माताजी कृपया मुझे मेरा आत्मसाक्षात्कार प्रदान करें।'

श्री माताजी ही सहस्रार स्वामिनी हैं, उन्हीं से विनम्रतापूर्वक भक्ति भाव से माँगना है, वे ही हमें आत्मसाक्षात्कार की अनुभूति कराने में सक्षम हैं। **वे स्पष्ट कर रही है -**

''मैं आपकी स्वतंत्रता का पूर्ण आदर करती हूँ, मैं आपकी स्वतंत्रता को मानती हूँ। मैं आप पर आत्मसाक्षात्कार लाद नहीं सकती, आपको ही मांगना होगा। आप कहें - ''श्री माताजी हमें आत्म बोध दीजिए।'' ..... तर्क वितर्क न करें तर्क की बात ही नहीं है, बुद्धि से परे की चीज है, जैसे ही शंका कुशंका करेंगे सब छूट जाएगा।"

[हैदराबाद]

आपका श्री माताजी के प्रति पूर्ण श्रद्धा-विश्वास एवं आपकी शुद्ध पवित्र इच्छा के परिणाम स्वरूप ही आपकी कुण्डलिनी जागृत होकर सारे चक्रों को पार करती हुई ब्रह्म रन्ध्र का छेदन कर आपका योग परम चैतन्य से करवाती है। इसका अनुभव आप स्वयं शीतल चैतन्य लहरियों के रूप में करते हैं।

आप अपने दोनों हाथ श्री माताजी की ओर फैलाकर धीरे-धीरे आँखे खोलते हैं, उनके चित्र की ओर समर्पित भाव से देखते हैं, आपके मन में पूर्ण शान्ति है। श्री माताजी बताती है-

"यही आपकी निर्विचार अवस्था है, आपके अंदर इस समय कोई विचार नहीं है। इस समय शांति आपके अंदर विराजित है, उसी को पाना है। यही आपका आत्मसाक्षात्कार है।''

[३-९-१९७३]

''आत्मसाक्षात्कार का अर्थ आत्मज्ञान है। आत्मा माने स्वयं (self) यानी आपको स्वयं के विषय में महत्त्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया है।''

"आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया इसका अर्थ यह भी है कि अब सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रतिबिम्ब आपके चित्त के अंदर कार्यरत है, आत्मा की शक्ति से आपका चित्त ज्योतिर्मय हो गया है।

[२२-३-८४]

आत्म साक्षात्कार के समय और बाद में आपने जो कुछ भी ज्ञान पाया वह अपनी चेतना के माध्यम से पाया और अपनी चेतना में ही आपको और भी जानना है परन्तु यह चेतना पूर्ण रूप से ज्योतिर्मय होनी चाहिए। ..... **आपको प्राप्त चेतना को अभी और उन्नत होना है।** मानवीय चेतना को अभी और उन्नत होना है। आत्मसाक्षात्कार के बाद भी उन्नत होने के लिए इस चेतना को बहुत लम्बी यात्रा करनी पड़ती है।"

[प. पू. श्री माताजी]

मनुष्य को अपनी आत्मा के प्रति हर पल चेतन रहने का प्रयास करना होगा ताकि वह सच्चे अर्थों में आत्मा बन जाए।

अध्याय 18

मानव के विकास का अंतिम लक्ष्य है 'आत्मा' बनना

''व्यक्ति को समझना चाहिए कि उसका अंतिम लक्ष्य क्या है? हमारे विकास का अंतिम लक्ष्य 'आत्मा' बनना है, जो कि हमारे हृदय में परमात्मा का प्रतिबिम्ब है, यह एकात्मकता (self identity) और आत्म ज्ञान (self knowledge) भी है।''

[२६-३-२००१]

परमात्मा सत्-चित्-आनन्द हैं, वे सर्वव्यापी, सर्वज्ञानी एवं सर्वशक्तिमान हैं। परमात्मा का प्रतिबिम्ब होने के कारण आत्मा के भी यही गुण हैं। जब आत्मा के इन गुणों की अभिव्यक्ति आपके व्यक्तित्व में होगी तभी आप आत्मा बनेंगे।

I. श्री माताजी स्पष्ट कर रही हैं -

● ''एक बार आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद आत्मा के सभी गुण और शक्तियाँ आपके व्यक्तित्व में प्रगट होने लगती हैं और आप एक संत सम आध्यात्मिक व्यक्ति बन जाते है, यही आपका आत्मा बनना है।''

● ''चैतन्य लहरियों के माध्यम से आप सत्य-असत्य का अंतर जानने में कुशल हो जाते हैं। 'आत्मा' चैतन्य लहरियों के द्वारा आपको सब कुछ बताती है, वो आपसे बात करती है।''

[२९-७-२००१]

● ''आत्मा बनने का अर्थ है कि आत्मा की ज्योति आपके चित्त को प्रकाशित कर देती है।..... चित्त ही चेतना है ..... आपकी चेतना का विस्तार होता है ..... आप अपने हाथों पर चैतन्य लहरियाँ महसूस करने के साथ-साथ अन्य लोगों की चैतन्य लहरियाँ भी महसूस कर सकते हैं क्योंकि अब आप सामूहिक चेतन (collective conscious) हो जाते हैं।

..... आत्मा बनते ही सभी सहजयोगी परस्पर स्वत: ही जुड़ जाते हैं और

सब सामूहिक रूप से एक दूसरे के प्रति चेतन हो जाते हैं। यही आपके अंदर सामूहिक चेतना का विकास है। ..... सामूहिक चेतना में आप लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं।

[१५-२-१९७७]

● **''आत्मा बनते ही आपके अंदर का ज्ञान स्वतः प्रस्फुटित होने लगता है, आप स्वयं के गुरु बन जाते हैं।** सभी विषयों का सूक्ष्म ज्ञान आपको प्राप्त हो जाता है। सूक्ष्म ज्ञान अर्थात् चक्रों का ज्ञान और मंत्रों का ज्ञान। इस ज्ञान से आप अपने तथा अन्य लोगों के विषय में सब कुछ जान जाते है और सभी कुछ प्राप्त कर सकते है।''

[२९-७-२००१]

● **"आपकी आत्मा आपको बल प्रदान करती है** ..... आप अपनी आत्मा के अनुसार कार्य करने लगते हैं ..... और तब आप देखते हैं कि आप किसी चीज के दास नहीं है, आप समर्थ हो जाते हैं अर्थात अपने अर्थ के समतुल्य, सम + अर्थ, समर्थ का अर्थ बलशाली व्यक्तित्व भी है। तो आपका व्यक्तित्व शक्तिशाली बन जाता है। आपको कोई प्रलोभन नहीं होता, कोई भी असद् विचार नहीं होता, कोई समस्या नहीं होती।"

[४-२-१९८३]

● **आत्मा बनते ही आपके अंदर आंतरिक शांति स्थापित हो जाती है** आप अन्तर्जात शाश्वत धर्म से जुड़ जाते है और अनैतिक कार्यों के विरुद्ध हो जाते है।

सहजयोग में जब आप आत्मा बन जाते है तो सभी कुछ बदल जाता है, आप एक ऐसे मनुष्य बन जाते है जो यह जानता है कि आनन्द क्या है? आनन्द कैसे लिए जाएं? और जो दूसरों को खुशी देता है, सदैव यह सोचता है कि दूसरों को कैसे आनन्दित किया जाए? आप एक सुन्दर तथा आनन्ददायी व्यक्ति बन जाते हैं।''

[२१-३-१९९८]

आत्मा बनना ही आपका वास्तविक स्वरूप है।

इस अवस्था में स्थिर रहने के लिए आवश्यक है कि अब आप हर पल,

हर क्षण आत्म चेतन रहें। श्री माताजी ने बताया है – ''आत्मा बनने का अर्थ है आत्मा के प्रति चेतन होना उसके प्रति जागरूक होना। आत्मसाक्षात्कार मिलने के बाद हमें आत्म ज्ञान तो प्राप्त हो गया है परन्तु आत्मचेतना प्राप्त नहीं हुई है।''

[४-५-१९८६]

II. आत्मचेतना हमें कैसे प्राप्त होती है, इस गूढ़ विषय को श्री माताजी स्पष्ट कर रही हैं-

● "अब आप आत्मसाक्षात्कार को समझने का प्रयत्न करें जो कि अत्यन्त सूक्ष्म बिन्दु है। आपकी आत्मा अचेतन है, **ये चेतन अवस्था में नही है, अचेतन में है, ये आपके अचेतन में है अभी तक आप इसके विषय में नहीं जानते, परन्तु एक बार आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने के बाद यह आपकी चेतना में प्रवाहित होने लगती है।** अर्थात अब इसे आप अपने मध्य नाड़ी तंत्र पर महसूस करने लगते हैं क्योंकि आपका नाड़ी तंत्र ही आपकी चेतना है, ये आपकी चेतना है।

मानवीय चेतना मध्य नाड़ी तंत्र है, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं परन्तु यह नाड़ी तंत्र अब आत्मसाक्षात्कार के बाद चैतन्य लहरियों को यानी आत्मा के प्रकाश को अपने माध्यम से महसूस करता है ताकि हमें बता सके कि ये समाधि क्यों कहलाती है। समाधि अर्थात अचेतन।

अचेतन जब चेतन बनता है तो यह समाधि कहलाती है। ये बेसुध अवस्था नहीं है **इसका अर्थ ये है कि आप अचेतन के प्रति चेतन हो जाते है, आप अचेतन आत्मा के प्रति चेतन हो जाते हैं।** केवल इतना ही नहीं सर्वप्रथम आप निर्विचार हो जाते हैं फिर निर्विकल्प और फिर पूर्ण आत्मासाक्षात्कारी। अत: समाधि शब्द भ्रांतिपूर्ण है। इसका अर्थ है सर्वव्यापक अचेतना।

[२२-३-१९७७]

● ''आत्मा हमारे हृदय में सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रतिबिम्ब है। केवल **आत्मसाक्षात्कार के पश्चात, केवल तभी, सीधे आत्मा का अनुभव होता है। तब ये मानव व्यक्तित्व में अपनी शक्तियों को प्रकट करती है और इसका प्रकाश चित्तशक्ति को एक नई चेतना में प्रकाशित करता है।**

आत्मा का दिव्य विवेक चहुँ ओर अपना प्रकाश फैलाता है। यह तो सूर्य की किरणों की तरह से है जो अज्ञान एवं अधेरे के हर क्षेत्र को प्रकाशित करती है। आत्मा से निकलकर वास्तविकता की चमचमाती किरणें चहुँ ओर प्रकाश फैलाती हैं और गहन प्रश्नों एवं समस्याओं में भी प्रवेश कर जाती हैं।

आत्मा की शक्ति असीम है और ये हर क्षेत्र को प्रकाशित करती रहती है चाहे वो कितना भी कठिन और धुँधला हो। आत्मा की शक्ति वहाँ तक प्रकाश फैलाती है जहाँ तक व्यक्ति का चित्त जाता है और इस प्रकार मनुष्य संतुलित एवं ठोस रूप से वास्तविकता को स्पष्ट देखता है, क्योंकि वास्तविकता जो है, वही है।

आत्मा पहिए की सुस्थिर धुरी के समान है। निरंतर गतिशील जीवन के पहिए के मध्य में स्थित अडोल धुरी पर यदि हमारा चित्त टिक जाता है तो हम आन्तरिक शान्ति के स्रोत, पूर्ण शान्ति एवं आत्म ज्ञान की अवस्था प्राप्त कर लेते हैं।

आत्मा का अन्तर्जात गुण है कि वों हमें सभी बनावटी एवं अवास्तविक खलबलियों से उठाकर शुद्ध वास्तविकता के साम्राज्य में ले जाती है जहाँ ये वास्तविकता हमारे अंदर और बाहर वातावरण में भी शान्ति का प्रसार करती है। ... ... विकास की जीवन्त प्रक्रिया के माध्यम से यह स्वत: ही घटित होता है।

● **हमारी मानवीय चेतना जो कि अस्थिर और सम्बद्ध है, हमारे उत्थान के पश्चात सर्वव्यापी परमेश्वरी चेतना के साथ एक हो जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से आत्मा को स्वयं का ज्ञान हो जाता है और यह पूर्णत: विश्वस्त और पूर्णत: आत्मनिर्भर हो जाती है।** हम कह सकते हैं कि आत्मा पूर्ण चेतना है इसलिए उसे अपने स्वभाव का सर्वोच्च ज्ञान है।

आत्मा के प्रकाश से आने वाली चेतना समझती है, परिवर्तन करती है और सृजन करती है... ... वास्तविकता को जानने एवं प्रभावी होने की योग्यता आत्मा में सहज ही में रचित है।

[परा आधुनिक युग]

III. आत्मचेतन बने रहने के लिए सतत सतर्क रहने की आवश्कता है -

● "पहली आवश्यकता यह है कि हम महसूस करें, चेतन हों, मस्तिष्क से हर समय जागरुक हों कि हम सहजयोगी हैं। आप ही लोग पूरी मानवता से बहुत ऊँचे हैं, सृष्टि का उद्देश्य आपने ही पूर्ण करना है तो सर्वप्रथम अपनी चेतना में आपने चेतन होना है कि आप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं और इसी कारण आपको आत्मसाक्षात्कार दिया गया है।.....

● आप सूक्ष्म तो हो गए हैं परन्तु अपनी चेतना में अभी तक आप सूक्ष्म नहीं हुए। पूर्ण साक्षात्कारी होने के कारण आप उन लोगों से बहुत अधिक जानते हैं जो साक्षात्कारी नहीं है। परन्तु अभी तक हम चैतन्य लहरियों का उपयोग नहीं करते, इनकी आवश्यकता के समय भी हम इनका उपयोग नहीं करते या फिर मशीन की तरह बंधन देने लगते हैं। अत: अभी तक आप अपने चक्रों के प्रति अचेत हैं।.....

● जो भी कुछ आप करते हैं, उसके विषय में चेतन रहने के लिए आपको चुस्त होना होगा। पहली उपलब्धि जो आपने प्राप्त की है वह है शान्ति। परन्तु अब भी मैं देखती हूँ कि जिस शान्ति को आनन्द में परिवर्तित हो जाना चाहिए था वह झगड़ा बनकर रह गई है। ..... मस्तिष्क का वह हिस्सा जो इस कार्य को कर रहा है इस अचेतन हिस्से को चेतन करना होगा। विकास यही है।

● स्वयं को अभिव्यक्त करते हुए हमें देखना चाहिए कि क्या हम स्वाभाविक है? क्या हम हृदय से ऐसा कह रहे हैं? मैं इस कार्य को हृदय से कर रहा हूँ इस बात की चेतना आप प्राप्त करें। यह मेरी इच्छा है।.....

इससे अगली अवस्था वह होगी जिसमें आप जो भी कुछ करेंगे उसके प्रति चेतन होंगे। जिसमें कोई गलतियाँ न होगी, जो भी कुछ आप करेंगे चाहे वो गलत प्रतीत हो फिर भी ठीक हो जाएगा। ..... परन्तु मैं आपको बता दूं कि ऐसी अवस्था अभी बहुत दूर है। अभी तो वह स्थिति निर्धारित हुई है, अभी तक हम बहुत सी गलतियाँ कर रहे हैं क्योंकि अभी हम आत्मचेतन नहीं हैं।

● सहजयोग में इस जीवन में आपको आत्मसाक्षात्कार मिला है और इसी जीवन में आपको उन्नत होना है और उत्थान के शिखर को प्राप्त करना है।

समय बहुत कम है और पृष्ठभूमि (पूर्व संस्कार) बहुत अंधकार मय है।.....

● अपने उत्थान में आपको परिपक्व होना होगा। आप पूछ सकते हैं कि इसके लिए हमे क्या करना होगा? प्रतिदिन अपना सामना करें, सच्चाई से देखें कि सांसारिक कार्यों को आप कितना समय देते हैं और अपने उत्थान को कितना? क्या आपने अपनी सभी चिन्ताएं, अपना सभी कुछ परमात्मा पर छोड़ दिया है?क्या अपने पूर्व बन्धनों से आप पूरी तरह मुक्त हो गए हैं? क्या आपने सभी बेवकूफी भरी चीजे छोड़ दी हैं? क्या आप देखते हैं कि मैं अन्य सहजयोगियों से किस प्रकार सम्बंधित हूँ, किस प्रकार उनसे बातचीत करता हूँ? ..... हमें समझना है कि अपनी चेतना में हमे चेतन होना है। पारस्परिक सम्बन्धों में हमने कितनी चेतना प्राप्त की है यही विराट के मस्तिष्क की अर्थात सहस्रार की सामूहिक चेतना है।

● आपको इस बात का ज्ञान होना आवश्यक है कि प्रतिदिन आप कितना आगे बढ़ रहे हैं।..... आप लोग यंत्र मानव नहीं हैं। आप यंत्र नहीं है। विकास प्रक्रिया के माध्यम से आप विकसित हुए हैं और केवल **विकास की प्रक्रिया के माध्यम से आपको यह उच्च स्थिति प्राप्त करनी है।** अत: जो भी कुछ हम करें और जो कुछ ठीक हो आप ही लोगों ने परिणाम दर्शाने हैं।

हम आपके सहस्रार को महान प्रकाशमय स्थिति तक ले जा सकते हैं परन्तु पुन: ये लड़खड़ा जाएंगे। आपको समझना होगा कि जिन ऊँचाईयों तक आपको लाया गया है उस स्थिति को पूरी शक्ति एवं कार्यशीलता के साथ आपको ही बनाए रखना होगा।

[४-५-१९८६ इटली]

''मनुष्य को ईश्वर ने स्वतंत्रता दी है, आपको भिन्न बनाया गया है, तब आप स्वयं थोड़ा सीखें। स्वयं सीखने पर जान सकेंगे कि आप उस सम्पूर्ण (परमात्मा) के एक अवयव हैं, एक घटक हैं, और ये जो एक घटक है, जागृत होकर जब उस सम्पूर्ण से एकाकार होगा तभी उसे अपना पूर्णत्व प्राप्त होगा।''

[८-९-१९७९]

अध्याय 19

गहन सहजयोगी के आध्यात्मिक विकास की पूर्णावस्था

अपनी आत्मा के प्रति सतत चेतन रहने से सहजयोगी की प्रगति स्वत: होने लगती है, वह परिपक्व होता है और उसमें गहनता आ जाती है। शनै: शनै: बढ़ते हुए वे उत्क्रांति के शिखर तक पहुँच जाते हैं। आध्यात्मिक विकास की पूर्णावस्था प्राप्त कर वे महामानव बन जाते हैं।

अब आप भी गहन सहजयोगी हैं, आपने भी अपने आंतरिक परिवर्तन को स्वयं अनुभव किया है, आपको जीवन में एक नया आयाम प्राप्त हुआ है। यही आपका पूर्णत्व है।

आप में होने वाले आन्तरिक परिवर्तनों के विषय में श्री माताजी ने बहुत विस्तार से समझाया है।

१. अन्तर्जात गुणों की जागृति -

● आपके अन्तर्जात गुण खो गए थे। सौभाग्यवश कुण्डलिनी की जागृति और सहस्रार के भेदन से आपके **अन्तर्जात गुण जो कि खो गए थे, जाग उठे हैं।** आपकी अबोधिता, सृजनात्मकता, अन्दर का धर्म, करुणा, मानव प्रेम, निर्णयात्मक शक्ति और विवेक आपमें सुप्तावस्था में थे - वे सभी जागृत हो गए हैं। ये नए नहीं है, ये सब आपके अन्तर्रचित हैं। आप अपनी गरिमा, स्वभाव तथा महानता को देखने लगते हैं।

[१०-५-१९९२]

२. व्यक्तित्व में पूर्ण समग्रीकरण - चित्त, हृदय एवं मस्तिष्क की एकाकारिता -

● सहस्रार का सार समग्रीकरण है। सहस्रार में सारे चक्र स्थित हैं, अत: वहाँ सब देवताओं का समग्रीकरण है और आप उनकी समग्रता की अनुभूति

कर सकते हैं अर्थात जब आपकी कुण्डलिनी सहस्रार में पहुँच जाती है तो आपका मानसिक, भावात्मक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व एक हो जाता है, आपका शारीरिक व्यक्तित्व भी इसी में विलय होता चला जाता है और आपको कोई समस्या नहीं रहती।

[४-२-१९८२]

● सबसे बड़ी उपलब्धि जो आपने पा ली है वह है अपने अन्तस् में, अपने हृदय में, मस्तिष्क और अपने जीवन में तथा चित्त के अन्दर **महान एकाकारिता।** आपका मस्तिष्क जो सोचता है, आपका हृदय जो स्वीकार करता है वही आपका मस्तिष्क सोचता है। आपका चित्त आपके हृदय तथा मस्तिष्क से एकाकार हो गया है। आपके चित्त, मस्तिष्क तथा हृदय में कोई भेद नहीं है।.. . ... सभी प्रलोभनों पर हावी हो जाने वाली शक्ति तथा आत्मा आपमें है। यह एकाकारिता आपको मानसिक, भावात्मक तथा आध्यात्मिक रूप से सहजयोग की पूरी समझ देती है।

[१०-३-९२]

३. प्रकृति से आपकी एकाकारिता -

● अब जो अवस्था आपके अंदर जागृत हुई है, वह मस्तिष्क की एक नई अवस्था है। संस्कृत भाषा में इसका बहुत सुंदर नाम है - **'ऋतम्भरा प्रज्ञा'**, एक अति कठिन नाम। ऋतम्भरा प्रकृति का नाम है, व्यक्ति को लगता है कि पूर्ण प्रकृति ही ज्योतिर्मय हो उठी है। आपकी अवस्था ही विशिष्ट है, वह अवस्था जिसमें आपकी एकाकारिता प्रकृति से है और प्रकृति की एकाकारिता आपसे है।..... जब यह ऋतम्भरा प्रज्ञा सहजयोगियों के लिए कार्य करने लगती है तो आप हैरान हो जाते हैं कि किस प्रकार कार्य हो रहे हैं।

[१९-१-१९८४]

४. पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति -

● इस अवस्था तक पहुँच कर आप अत्यन्त ज्ञानमय हो जाते हैं, अपने विषय में ज्ञानमय, अन्य लोगों के विषय में ज्ञानमय, हर उस चीज के विषय में ज्ञान जो आपके चारो ओर है। इस प्रकार व्यक्ति महान ज्ञानमय की अवस्था

तक पहुँच जाता है। यह ज्ञान पुस्तके पढ़ने या बौद्धिक खोज या भावनात्मक गतिविधियों से प्राप्त नहीं होता। यह तो शाश्वत है, सदा मौजूद है। ये अस्तित्व में है और अस्तित्व में रहेगा।

[२१-७-२००१]

५. व्यक्तित्व में पंचतत्त्वों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति -

● जिन पंचतत्त्वों से हम बने हैं, चैतन्य लहरियाँ उन तत्त्वों के सूक्ष्म तत्त्व से हमें जोड़ने लगती हैं। यह बड़ी सूक्ष्म बात है, इसकी सूक्ष्मता हमें समझनी चाहिए। उदाहरण के रूप में **प्रकाश** अभिव्यक्त होने वाला प्रथम तत्त्व है और उसका सूक्ष्म तत्त्व है **तेज**, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने के पश्चात व्यक्ति (गहन सहजयोगी) का मुखमण्डल तेजोमय हो उठता है।

● **स्थूल वायु का सूक्ष्म तत्त्व** आपको प्राप्त होने वाली शीतल चैतन्य लहरियाँ है। आत्म साक्षात्कार के बाद आप केवल लहरियाँ ही नहीं प्राप्त करते, शीतलता का भी अनुभव करते हैं, वही वायु तत्त्व का सार हैं।

● **जल तत्त्व** सूक्ष्म रूप में जब अभिव्यक्ति होता है तो वह सहजयोगी की कठोर त्वचा को कोमल करता है, उनके अंदर का जल ही उनके चेहरे की त्वचा को चमक और पोषण प्रदान करता है। इसी के साथ आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति अत्यन्त मृदु और विनम्र हो जाते हैं। जल की तरह गतिशील, शीतलता शांति एवं स्वच्छता प्रदायक हो जाते हैं।

● आप में **अग्नि** भी है परन्तु यह अत्यन्त शान्त अग्नि है। यह किसी अन्य को नहीं जलाती, आपके अंदर बुराइयों को और आपके माध्यम से अन्य लोगों की बुरारियों को आपकी यह अग्नि जला देती है। यदि आप पूर्णत: विकसित सहजयोगी हैं तो अग्नि आपको कभी नहीं जलाएगी क्योंकि अग्नि तत्त्व का सार आपको प्राप्त हो जाता है।

● अन्त में **पृथ्वी** माँ है। पृथ्वी की बहुत सी सूक्ष्मताएं हममें आ जाती हैं। इनमें से एक **गुरुत्वाकर्षण** है। गुरुत्वाकर्षण की अभिव्यक्ति से व्यक्ति अत्यन्त आकर्षक हो जाता है, शारीरिक रूप से नहीं, आध्यात्मिक रूप से। ऐसा व्यक्ति

अन्य लोगों को आकर्षित करता है। पृथ्वी माँ की तरह हम भी अत्यन्त सहनशील और धैर्यवान बनने लगते हैं।

[१६-१२-१९९८]

● आपके अन्दर **आकाश तत्त्व** भी कार्य करने लगता है, यह आपके चित्त के माध्यम से कार्य करता है। चित्त डालने के लिए आपको मुझसे नहीं कहना पड़ता, आप स्वयं चित्त डालि**,** और कार्य हो जाएगा। आपका चित्त किसी भी विशेष कार्य को करने के लिए स्वतंत्र हो जाता है।

[२५-१२-१९९८]

६. गुणातीत-कालातीत एवं धर्मातीत की स्थिति -

● अभी तक तीन गुण (तम-रज-सत्व) आप पर शासन करते थे, अब आप इनसे ऊपर उठ जाते हैं और **आप मानवीय चेतना की सीमायें पार कर लेते हैं क्योंकि आपका चित्त अब आत्मा पर रहता है, आप गुणातीत हो जाते हैं।**

● शनैः शनैः **आप कालातीत हो जाते है, आप समय से ऊपर उठ जाते हैं।** आप वर्तमान में रहना सीख लेते हैं और उसका आनन्द उठाते हैं। जो भी समय है, आपका अपना है क्योंकि आप वर्तमान में स्थित हैं।

● तत्पश्चात आप **धर्मातीत हो जाते हैं। आप अपने मानवीय स्वभाव से ऊपर उठ जाते है,** इसका अभिप्राय यह है कि जो भी कार्य आप करते हैं वह धार्मिक होता है, आपके सभी प्रयत्न धार्मिक होते हैं। किसी धर्म विशेष का तरीका या कर्मकाण्ड अपनाने की आप चिन्ता नहीं करते क्योंकि आप हमेशा ध्यान-धारण की स्थिति में होते हैं।

● **अब आत्मा और उसका प्रकाश आपमें पथप्रथर्शक तत्त्व हैं** जिनके द्वारा आप गुणातीत, कालातीत और धर्मातीत बन जाते हैं, आप किसी चीज के दास नहीं है, आप घड़ी के दास नहीं हैं, अपने गुणों के भी आप दास नहीं हैं धर्म आपका अंग-प्रत्यंग बन गया है, आपको कोई भी धर्मानुशासन नहीं मानना पड़ता। आपका पूरा व्यक्तित्व महान हो गया है।

[२१-३-९८]

● **गुण-काल और धर्म की सीमाओं को पार करते ही आप समुद्र में एक बूँद सम हो जाते हैं।** बूँद यदि समुद्र से बाहर है तो वो सदैव सूर्य से डरती है कि कहीं धूप इसे सुखा न दे, यह नहीं जानती कि क्या किया जाए और किधर जाया जाए?परन्तु एकबार उसकी एकाकारिता जब समुद्र से हो जाती है तो यह चलती है और आनन्द लेती है क्योंकि अब यह अकेली नहीं है। आनन्द के सागर की लहरों के साथ यह चल रही हैं। आपने यह स्थिति प्राप्त की है और इसका ज्ञान भी आपको है।

[२१-३-१९९८]

आपको यह सर्वोच्च स्थिति किस प्रकार प्राप्त होती है, इस गूढ़ ज्ञान को श्री माताजी ने स्पष्ट किया है -

● "शिव आत्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा आत्मा आप सभी के हृदय में निवास करती है। 'सदाशिव' का स्थान आपके सिर के ऊपर है किन्तु वह आपके हृदय में प्रतिबिम्बित है। आपका मस्तिष्क विठ्ठल है।

● **आपकी आत्मा को आपके मस्तिष्क में लाना हैं।** आत्मा को मस्तिष्क में लाने का अर्थ होगा आपके मस्तिष्क को आलोकित करना और आपके मस्तिष्क के आलोकित होने का अर्थ है आपके सीमित क्षमता वाले मस्तिष्क की क्षमता असीमित होना, परमात्मा की अनुभूति के लिए।

● आत्मा का मस्तिष्क में आने का दूसरा अर्थ है, मानव मस्तिष्क केवल निर्जीव वस्तु का सृजन कर सकता है, परन्तु **जब मस्तिष्क में आत्मा आ जाती है जब आप सजीव वस्तुयें उत्पन्न करने लगते हैं कुण्डलिनी का सजीव कार्य।** यहाँ तक कि निर्जीव भी सजीव की भाँति व्यवहार करने लगता है क्योंकि आप निर्जीव में उनकी आत्मा को स्पर्श कर देते हैं।

● ..... **हमारे मस्तिष्क का संचालन हृदय द्वारा यानी आत्मा द्वारा होता है।** यह कैसे? यह इस प्रकार से है, हृदय के चारो ओर सात औराज (Auras) यानी तेज मंडल हैं। जिसको कितने ही गुणा बढ़ा सकते है, 7^{16000} यानी सात पर सोलह हज़ार की शक्ति। ये ओराज़ सातो चक्रों की निगरानी करते हैं।

● **इन औराज़ द्वारा आत्मा देखती रहती है, ये औराज़ मस्तिष्क में स्थित सातों चक्रों के व्यवहार पर निगरानी रखते हैं,** ये मस्तिष्क में कार्यरत सभी नसों पर भी निगरानी रखते हैं। लेकिन जब आप आत्मा को अपने मस्तिष्क में लाते है तब आप दो कदम आगे बढ़ जाते हैं क्योंकि जब आपकी कुण्डलिनी ऊपर उठती है तो वह सदाशिव को स्पर्श करती है और सदाशिव आत्मा को सूचित करते है, यहाँ सूचित करने का अर्थ है, प्रतिबिम्बित होते हैं आत्मा में।

अत: यह पहली अवस्था है जहाँ चौकसी करते हुए ये औराज मस्तिष्क से विभिन्न चक्रों से संचार स्थापित करना शुरू कर देते हैं व एकबद्ध या सम्यक करते हैं। लेकिन जब आप आत्मा को मस्तिष्क में लाते हैं तो यह दूसरी अवस्था है, वस्तुत: तब आप पूर्णरूप से आत्मसाक्षात्कार पाते है, पूर्ण रूप से। क्योंकि **अब आपका 'स्व' जो कि आत्मा है, आपका मस्तिष्क बन जाता है, यह क्रिया अति गतिशील होती है, यह मनुष्य के अन्दर पाँचवा आयाम खोलती है।**

पहले जब आप आत्मसाक्षात्कार पाते हैं तो सामूहिक चेतना में आ जाते हैं, फिर आप जब कुण्डलिनी उठाने लगते हैं तब आप चौथे आयाम को पार कर जाते है, जब आपकी आत्मा मस्तिष्क में आ जाती है, तब आप पाँचवा आयाम बन जाते हैं, तात्पर्य यह है कि आप कर्ता बन जाते हैं। ..... और जब आत्मा कर्त्ता है तब आप पूर्णतया 'शिव' हो जाते हैं, पूर्ण आत्मसाक्षात्कारी।

● ..... आत्मा समुद्र की भाँति है जिसके अन्दर रोशनी भरी पड़ी है और जब इस समुद्र को आपके मस्तिष्क के छोटे प्याले में उड़ेल दिया जाता है तब प्याला अपना अस्तित्य खो देता है और सब कुछ आध्यात्मिक हो जाता है, सभी कुछ।

[२९-२-१९८५]

● ''सहजयोग तो बहुत बड़ी चीज है, बड़ी अद्‌भुत चीज है।''

''इसमें सिर्फ आनन्द है निरानन्द।''

''ये सारी जो सृष्टि है, ये बनाने में परमात्मा ने जो कुछ भी आनन्द की सृष्टि की है ..... वह सारा का सारा आनन्द आपके अंदर भरने लगता है।''

"आपके पूर्ण आन्तरिक परिवर्तनों के साथ आशीर्वाद है उस जीवन का जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, जो कबीर ने कहा – 'अब मस्त हुए फिर क्या बोलें।'

तो आप सब उस मस्ती में आइए, इस मस्ती को आप प्राप्त करें, उस आनन्द में आप आनन्दित हों जाएं।..... अनंत – आशीर्वाद।"

पूर्णत्व प्राप्त करने का अर्थ है परमपिता परमात्मा यानी सम्पूर्ण के साथ आपकी पूर्ण एकाकारिता। गहन सहजयोगी परमात्मा से पूरी तरह जुड़ जाता है और वह महसूस करता है कि परमपिता और मानव के सम्बन्ध तो शाश्वत हैं, सदा से मौजूद हैं। यही 'सत्य' परम पूज्या श्री माताजी जीवन पर्यन्त समझाती रहीं।

अध्याय 20

सहजयोगियों का परमात्मा से सच्चा योग

सहजयोगियों को ही परमपिता परमात्मा से सच्चे योग का अनुभव प्राप्त होता है और सहजयोगी ही महसूस करते हैं कि परमात्मा के साथ मानव का सम्बन्ध शाश्वत है, अटूट है और समुद्र तथा बूँद की भाँति अभिन्न है।

परम पूज्या श्री माताजी ने समझाया है-

"परमात्मा मूल तत्त्व है और मानव प्रतिबिम्बक"

..... मानव का सृजन परमात्मा ने श्रेष्ठतम प्रतिबिम्बक के रूप में किया है। ... ... मानव मस्तिष्क ही एक ऐसा यंत्र है जो परमात्मा को प्रतिबिम्बित कर सकता है। मानव के सृजन के माध्यम से ही परमात्मा का अस्तित्व प्रतिबिम्बित होता है और मानवीय चेतना के माध्यम से इसकी अभिव्यक्ति होती है।" .....

"सृष्टि का चरम उद्देश्य ही मानव का सृजन है।"

[सृजन शाश्वत लीला, पृष्ठ- १२-१४]

श्री आदिशक्ति ने मानव का सृजन किया परन्तु उसे सहजयोगी बनाने का महान कार्य श्री माताजी ने पूर्ण किया, **उन्होंने मानव का पथ प्रदर्शन किया।**

"सीमित मस्तिष्क (मानव) से असीम (परमात्मा) तक पहुँचने के लिए व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से ज्योतिर्मय तो होना ही पड़ेगा और इस प्रकार स्वयं को परमेश्वरी चैतन्य लहरियों से परिपूर्ण करना होगा।" .....

"मानव व्यक्तित्व का उपरी क्षेत्र अचेतन मस्तिष्क है जो परमेश्वरी प्रेम की शक्ति से परिपूर्ण है। कुण्डलिनी इसी ईश्वरी शक्ति का अवशिष्ट भाग है। किसी सद्गुरु या सहजयोगी की कृपा से जागृत कुण्डलिनी के माध्यम से मानव चित्त का तालु अस्थि की ओर मार्गदर्शन होता है, वहाँ मानव चित्त की एकाकारिता सर्वव्यापी शक्ति से होती है। ये सर्वव्यापी शक्ति पावन चेतना है,

यही सच्चा योग है।

[सृजन शाश्वत लीला, पृष्ठ- १२९]

श्री माताजी ने स्पष्ट किया है--

"आत्मसाक्षात्कार के बाद लोग निर्विचार समाधि की अनुभूति करते हैं और उन्हें परमेश्वरी प्रेम के शीतल, सुखद अनुभव का आनन्द होता है।

सामूहिक चेतना हो जाने के कारण सहजयोगी शनैः शनैः चैतन्य लहरियों का कूटानुवाद (decoding) करने लगते हैं और अपनी कुण्डलिनी का स्वामित्व प्राप्त करते हैं, बाद में उनमें कुण्डलिनी जागृति द्वारा अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्रदान करने की योग्यता विकसित हो जाती है।

सहजयोगी शान्त, स्वस्थ और विवेकशील हो जाता है, विश्वस्त हो जाता है कि उसे वास्तविकता (सत्य) का ज्ञान है। इसका अर्थ यह है कि वह अपनी तथा अन्य साधकों की कुण्डलिनी की समस्याओं को समझता है।

सहजयोग की मेरी शिक्षाओं के अनुसार उसे भिन्न परमेश्वरी संकेतों को समझने और बाधाओं को दूर करने का ज्ञान भी प्राप्त हो जाता है। ज्यों-ज्यों **वह अपनी आन्तरिक शान्ति की अवस्था को पहचानता है उसे आत्मा तत्त्व और सर्वशक्तिमान परमात्मा के सिद्धान्तों का ज्ञान भी उसकी चेतना में होने लगता है।**

शनैः शनैः वह सर्वशक्तिमान परमात्मा की उपस्थिति को परमेश्वरी प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति के निराकार रूप में वास्तव में महसूस करने लगता है। वह चैतन्य लहरियों के प्रवाह को महसूस करता है और **साक्षी भाव से उनकी कार्यशैली को देखता है।** सहजयोग में व्यक्ति (सहजयोगी) साक्षी स्वरूप रहते हुए मंच पर खेले जाने वाले नाटक के दर्शक की तरह इस संसार को देखता है।

[सृजन शाश्वत लीला, पृष्ठ- १२२, १२४]

इस अवस्था में सहजयोगी परमात्मा का अंग-प्रत्यंग बन जाता है। **श्री माताजी ने समझाया है-**

"परमात्मा की कार्यशैली को समझना और सर्वशक्तिमान परमात्मा का अंग-प्रत्यंग बनकर ये समझ लेना कि वह किस प्रकार सब कुछ नियंत्रित करता है, यही परमात्मा का ज्ञान है, ... और परमात्मा के विषय में जानना ही परमात्म साक्षात्कार है।

..... आपको प्रेम के माध्यम से, भक्ति के माध्यम से और प्रार्थना के माध्यम से परमात्मा की शक्तियों को समझना है, इसी प्रकार आप परमात्म साक्षात्कारी हो सकते हैं, तब आप प्रकृति को तथा अन्य सभी चीज़ों को नियंत्रित कर सकते हैं।

..... निश्चित ही आप परमात्म साक्षात्कारी बन सकते हैं, अर्थात **परमात्मा आपके माध्यम से कार्य करता है, अपनी शक्ति के रूप में आपका उपयोग करता है आपको अपना माध्यम बनाता है। आप यह जान जाते हैं कि परमात्मा आपके साथ क्या कर रहे हैं, आपको क्या बता रहे हैं तथा उनकी इच्छा और सूचना क्या है? इस प्रकार का सम्बन्ध बन जाता है। ..... यही परमात्मा से आपका सच्चा योग है।**

..... यही शिव और सदाशिव का ज्ञान है। शिव के माध्यम से आप सदाशिव को समझते हैं। प्रतिबिम्ब को आप देखते हैं और प्रतिबिम्ब से आप समझते हैं कि परमात्मा कौन हैं?

इस प्रकार आप उस स्थिति में पहुँच जाते हैं जहाँ आप सोचते हैं कि आप परमात्मा के साम्राज्य में स्थापित हो गए हैं, आप परमात्मा को देख सकते हैं, उन्हें महसूस कर सकते हैं और उन्हें समझ सकते हैं और उनसे प्रेम कर सकते हैं।"

[३-३-९६]

श्री माताजी ने सहजयोगियों को आश्वस्त भी किया--

"आधुनिक युग में जो भिन्न चीज़ें आप देख रहे हैं, इनसे आपको बहुत परेशान नहीं होना चाहिये क्योंकि यह सब तो ऐसे ही होना था। यह सब एक नाटक है, एक लीला है और इस नाटक में, आपको समझ लेना चाहिए कि

सभी कुछ सुंदर रूप में कार्यान्वित होगा।.....

संसार मंच पर एक लीला चल रही है, एक नाटक चल रहा है..... आपको मात्र परमात्मा की इस लीला को देखना है। ..... यह लीला है, यदि आदिशक्ति के चित्त का सुंदर आनंद है। यदि आप इसके साक्षी बन सकते हैं, यदि आप इस लीला के वास्तविक रूप में साक्षी बन सकते हैं तो आप आध्यात्मिक रूप से परमात्मा के बहुत समीप हैं।

[५-४-१९९६]

इस प्रकार श्री माताजी ने शनैः शनैः अपने बच्चों को परमपिता परमात्मा से सच्चे अर्थों में जोड़ दिया। गहन सहजयोगी अब अपने दिव्य माता-पिता के प्रेममय संरक्षण में हैं।

श्री माताजी ने अपनी शक्तियों के रहस्य को विस्तार से स्पष्ट किया है, सहजयोगी ही उनके दिव्य अस्तित्व की महानता एवं गरिमा को आत्मसात कर सकेंगे।

श्री माताजी
एक दिव्य अस्तित्व
(सुखदाता-ज्ञानदाता-सुधारक)

सहस्रार-स्वामिनी, मोक्ष-प्रदायिनी-श्री माँ

"सीमित और असीमित दो भिन्न आयाम हैं। यह आपकी माँ का रहस्य है कि मैं असीमित में रहती हूँ और असीमित कार्य करती हूँ। इसी प्रकार से मैं माया का सृजन करती हूँ। केवल अपनी चैतन्य चेतना से ही आप मुझे जान सकते हैं। सीमित से भी मैं असीमित कार्य कर सकती हूँ, परमेश्वरी माँ का यह एक अन्य पक्ष है।"

[परम पूज्या श्री माताजी २४-५-१९८१]

अध्याय 21

एक महान योगी के अवतरण की पूर्व घोषणा

भारतीय प्रथम महाज्योतिषविद् ब्रह्मज्ञानी भृगुमुनि ने "नाड़ी ग्रन्थ" में एक महान योगी की पृथ्वी पर अवतरण की भविष्यवाणी की है जिसके विषय में भुजेन्द्र काका सत्याचार्य ने अपनी पुस्तक में विस्तार से वर्णन किया है --

● "जब गुरु मीन राशि में होगा तो पृथ्वी पर एक महान योगी अवतरित होंगे। वर्ष 1970 तक बहुत लोग स्पष्ट रूप से जान जाएंगे कि **नये युग का आरम्भ हो गया है। कलियुग समाप्त होगा और सत्ययुग का आरम्भ होगा।** पृथ्वी की धुरी कम होगी और पृथ्वी का परिक्रमा कक्ष (Orbit) सूर्य के समीप आ जाएगा। इस समय एक महान योगी का अवतरण होगा। **ये महान योगी परब्रह्म के अवतरण होंगे और उनमें दिव्य शक्तियाँ होंगी।**.....

महान योगी द्वारा बतायी गई योग की नयी विधि द्वारा मानव एक ही जीवन काल में मोक्ष के आनन्द को पा लेगा।..... इस नई योग प्रणाली द्वारा सर्व साधारण व्यक्ति भी ब्रह्मानन्द का अनुभव पा सकेंगे।..... सर्व साधारण जीवन यापन करते हुए लोग योग, परमात्मा से एकाकारिता, प्राप्त करेंगे।

आरम्भ में महान योगी स्पर्श मात्र से ही रोग दूर कर देगा। वृद्धावस्था का अन्त हो जाएगा तथा लोगों को स्वर्गीय काया (शरीर) प्राप्त हो जाएँगें। अस्पतालों की आवश्यकता न होगी क्योंकि रोग ही न होंगे।

विज्ञान की सहायता से परमात्मा और आत्मा के अस्तित्त्व को प्रभावित किया जा सकेगा। अज्ञान और माया का पर्दा हट जाएगा और **ब्रह्मानन्द एवं मोक्ष बहुत से मानवों को सुगमता से प्राप्त हो जाएगा।**..... पूरी मानव जाति प्रार्थना के महत्त्व को समझ जाएगी। ..... ग़रीबी और रोग मुक्त समाज स्वस्थ और चिन्ता विहीन हो जाएगा।''

''अन्त में एकता की भावना से विश्व के सारे देश परस्पर समीप आ

जाएँगे। युद्ध के विनाशकारी परिणामों से सब सहमत होंगे। विश्व के किसी बड़े शहर में महान अन्तर्राष्ट्रीय सभा होगी बुद्धिवादी लोगों तथा राजनीतिज्ञों के स्थान पर योगी इस सभा का नेतृत्व करेंगे। तब विश्व युद्ध के दुष्परिणामों से छुटकारा पा लेगा ... ... सभी राष्ट्र मित्र हो जाएंगे।''

● **पाँचवी शताब्दी के पैगम्बर ज़ान ज़ेरोसलम की भविष्यवाणियों की पुस्तक में निम्न वर्णन मिलता है**--

"इस सहस्राब्दि की समाप्ति के बाद जो सहस्राब्दि आएगी उसमें लोगों की आँखें पूर्णत: खुल जाएँगी, अब वे अपने मस्तिष्क या नगरों की जेल में बन्द नहीं रहेंगे। वे पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक देख सकेंगे और एक दूसरे को समझ पाने की योग्यता उनमे होगी ..... मानव एक विशाल सामूहिकता बना लेंगे, हर व्यक्ति उसका एक छोटा सा अंग होगा। सभी मिलकर इसके हृदय की सृष्टि करेंगे, हर व्यक्ति सामूहिक भाषा बोलेगा और इस प्रकार अन्तत: एक यशस्वी मानवता की सृष्टि होगी।.....

क्योंकि एक महिला का आगमन होगा और जो सर्व स्वामिनी होंगी। वे भविष्य का संचालन करेंगी और मानव मात्र को अपने दर्शन (philosophy) का आदेश देंगी। आने वाली सहस्राब्दि की वे माँ होगी। शैतान के साम्राज्य के पश्चात वे माँ के मृदु माधुर्य को विकीर्णित करेंगी, बर्बरता काल के पश्चात् के सौन्दर्य को मूर्त रूप प्रदान करेंगी। इस सहस्राब्दि के पश्चात आने वाली सहस्राब्दि प्रकाश युग में या भारहीन युग (age of lightness) में परिवर्तित हो जाएगी, लोग परस्पर प्रेम करेंगे, मिल बाँट कर लेंगे, स्वप्न देखेंगे और स्वप्न साकार होंगे।.....

इस प्रकार मानव पुनर्जन्म प्राप्त करेगा, आत्मा अधिकतर लोगों को अभिभूत कर लेगी और वो भाई चारे के सूत्र में बँध जाएंगे।... ... मनुष्य एक बार फिर मानवता का धर्मपरायण मार्ग पा लेगा और पृथ्वी एक बार फिर सामंजस्य प्राप्त कर लेगी। ..... मानव समझ जाएगा कि पूरी पृथ्वी उसका अपना घर है और भविष्य के विषय में वह विवेकपूर्वक सोचेगा। मानव को

अपने शरीर तथा पृथ्वी पर विद्यमान हर चीज का ज्ञान होगा।

प्रकट होने से पूर्व रोगों का उपचार हो जाएगा और हर व्यक्ति स्वयं तथा परस्पर रोग उपचार करेगा। मनुष्य समझ लेगा कि ईमानदारी-पूर्वक खड़े होने के लिए उसे स्वयं अपनी सहायता करनी होगी। ..... अंततः एक नव युग का आरम्भ होगा।''

● **परमात्मा के बेटे श्री ईसा मसीह ने श्री माँ के अवतरण के विषय में भविष्यवाणी की-**

"मैं जा रहा हूँ परन्तु इस कारण आपको शोक नहीं करना चाहिए। मेरे जाने में ही बेहतरी है। मैं यदि नहीं जाऊँगा तो सुखदाता (comforter) आपके पास नहीं आयेंगी। ..... अभी अनगिनत चीज़ों के विषय में बताया जाना बाक़ी है, उन सब चीज़ों के विषय में जिन्हें इस समय लोग स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि आज के लोग इन्हें समझ ही नहीं सकते परन्तु लो मैं बताता हूँ - परमात्मा के महान दिवस आने से पूर्व पावन लहरियाँ सारे रहस्यों को खोल देंगी। आत्मा के रहस्य, जीवन के, मृत्यु के, अमरत्व के तथा एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति तथा परमात्मा से एकाकारिता के सभी रहस्यों को खोल देंगी।

तब विश्व सत्य की ओर चलेगा और मानव सत्य बन जाएगा। **जब वे सुखदाता आयेंगी तो विश्व को मेरे बताये गए पाप और सत्य, इंसाफ में निर्णय की विवेकमयता के विषय में विश्वस्त कर देंगी ..... जब वे सुखदाता आयेंगी** तो मुझे आपके लिए उनसे अनुनय नहीं करना पड़ेगा क्योंकि तब आपको मान्यता प्राप्त हो चुकी होगी और तब परमात्मा आपको इसी प्रकार जानते होंगे जैसे वे मुझे जानते हैं।"

[ईसामसीह का अक्वेरियन आदेश १६२ बी-४ चै.ल. २०००]

● **फ्रांसिसी साओ-कोइअन और लुई अत्मा की ज्योतिष पुस्तिका (The Astrologers hand book) में भी इसी तरह की भविष्यवाणी वर्णित है -**

''कुम्भ युग (Aquarian Age) के आरम्भ में आध्यात्मिक पुनरुत्थान काल को चिन्हित करते हुए जब सन् 2000 के करीब प्लूटो नक्षत्र (Pluto Sagittarius) में प्रवेश करेगा तब लोगों में गहन आध्यात्मिक मूल्यों का ज्ञान होगा। धर्म आज

जिस तरह जाना जाता है वह पूर्णतया परिवर्तित हो जाएगा। एक ही विश्व धर्म होगा जो परमात्मा में मानव के सीधे सहजानुभूत (influsive) सम्पर्क पर आधारित होगा। **ब्रह्माण्ड का संचालन करने वाले मूलभूत नियमों की शिक्षा देने वाले नए आध्यात्मिक गुरु प्रकट होंगे।** जीवन की निहित शक्तियों की अधिक व्यापक एवं वैज्ञानिक सूझ-बूझ के साथ नया विश्व धर्म प्राचीन महान धर्मों के सभी श्रेष्ठ गुणों को अपने में समाहित करेगा।''

हमारी आध्यात्मिक गुरु श्री निर्मला माता जी ही वे महान योगी हैं, पूर्णपरब्रह्म का अवतरण हैं, सुखदाता हैं, विश्वधर्म की संस्थापिका हैं और नव युग की निर्माता हैं। श्री माताजी ने स्वयं नाड़ी ग्रन्थ में वर्णित बातों को सत्य कहा है और साथ ही कुछ अन्य भविष्यवाणियों के विषय में बताया है--

"(आचार्य काका भुजेन्द्र, सत्याचार्य द्वारा लिखित) भविष्यवाणी सत्य हो रही है। इन्होंने कहा कि वह महान योगी मीन राशि में पृथ्वी पर अवतरित होगा। **मैं मीन और मेष राशि के सिरे पर हूँ।** ..... उस समय एक महायोगी अवतरित होगा जो कि पूर्ण परब्रह्म होगा, **पूर्ण परब्रह्म वह मैं हूँ। करने या न करने की सारी शक्तियों से वह परिपूर्ण होगा अर्थात महाकाली और महालक्ष्मी की सभी शक्तियों से परिपूर्ण, सभी शक्तियों से, वो मैं हूँ।**.....

"प्रार्थना द्वारा हम सभी देशों को एक सूत्र में बाँध सकेंगे विज्ञान के नए आविष्कारों से दैवी ज्ञान तथा विज्ञान एक हो जाएंगे। विज्ञान द्वारा हम परमात्मा तथा आत्मा के अस्तित्व को स्थापित कर सकेंगे। इस प्रकार विज्ञान और दैवी ज्ञान के मध्य कोई मतभेद नहीं रहेगा, इसमें परस्पर समन्वय एवं सह सम्बन्ध होंगे। **अब भी हम ये सब प्राप्त कर रहे हैं क्योंकि मेरे फोटोग्राफ से लोगों को चैतन्य लहरियाँ प्राप्त होती हैं, यह विज्ञान है। दूरदर्शन पर मंत्रों आदि द्वारा वैज्ञानिक विधियों से यदि आप लोगों को रोग मुक्त करने लगें तो आप विज्ञान को इस लक्ष्य के लिए उपयोग कर रहे हैं।** आप प्रमाणित कर

सकते हैं कि ये चीज़ें चुम्बकीय शक्तियों द्वारा, आवाज़ द्वारा पहुँचाई जा सकती हैं।

[मराठी से अनुवादित १९८२]

'परा आधुनिक युग' में श्री माताजी ने समर्थन किया है --

"भृगु मुनि ने 'नाड़ी ग्रन्थ' में भविष्यवाणी की है कि किस प्रकार 'सहजयोग' के माध्यम से स्वत: ही कुण्डालिनी की जागृति होगी, सहजयोग यानी स्वत: परमात्मा से एकीकरण और उस समय अवतरित एक महान योगी की शिक्षाओं द्वारा किस प्रकार कुण्डलिनी जागृति विशाल स्तर पर सामूहिक और व्यक्तित्व परिवर्तन का माध्यम बनेगी ये योगी कुण्डलिनी के अद्वितीय स्वामी होंगे तथा सभी लोगों को आत्म परिवर्तन के प्राचीन रहस्यों की शिक्षा देंगे। **ये सब प्राचीन भविष्यवाणियाँ है जिन्हें अब स्पष्ट देखा जा सकता है।"**

श्री माताजी बता रही हैं -

● "श्री ईसामसीह ने एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही थी उन्होंने कहा था 'मैं तुम्हारे लिए एक ऐसी शक्ति भेजूँगा। जिसके तीन अंग होंगे जो त्रिणुात्मिका होगी।' और उसका वर्णन बहुत ही सुन्दरता से किया है।

एक शक्ति होगी जो आपको आराम देगी (कम्फर्टर) आराम देने वाली शक्ति जो हमारे अन्दर वह है महाकाली की शक्ति।

दूसरी शक्ति जो उन्होंने भेजी वह है महासरस्वती की शक्ति। इसे उन्होंने काउंसिलर कहा। यह आपको समझायेगी, आपको उपदेश देगी। योग निरूपण करेगी।

और तीसरी शक्ति महालक्ष्मी को जिससे कि हम अपने उत्थान को प्राप्त होंगे। इसे उन्होंने रिडीमर कहा।

वह त्रिगुणात्मिका मैं ही हूँ।"

[१४-४-१९९६ कलकत्ता]

● **"आदि शंकराचार्य ने कहा था** कि ''न योगेन न सांख्येन' योग सांख्य से कुछ नहीं होने वाला है ... ... उन्होंने 'सौन्दर्य लहरी' में सारा माँ का वर्णन किया है, पूरा, यहाँ तक कि सब उनका आकार प्रकार, उनका तौर तरीक़ा, उनको कौन सा तेल पसन्द है... ...। इतना बारीक़ लिख गए, कहने लगे माँ के सिवाय कोई इलाज नहीं, अब वो ही सब ठीक करेंगी।"

[१७-२-१९८१]

● **"जैकलीन मरे"** एक अमरीकन महिला है, इस महिला ने भी मेरे विषय में भविष्यवाणी की थी और कहा था कि भारत में एक महान व्यक्ति, एक महिला का वर्ष 1924 के लगभग जन्म होगा। मेरा जन्म 1923 में हुआ, लगभग उनकी भविष्यवाणी के ही अनुसार।".....

● **"'एंलिस बेले'** के नाम की एक महिला है, मेरे विचार से वो अतिचेतन अवस्था में है। अतिचेतन अवस्था में उसने कहा है कि एक नया योग आएगा जिसके माध्यम से लोग आदि शक्ति (Holy ghost) से जुड़ जाएगें।" **-** .. ....

● **"विलियम ब्लेक** ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि परमात्मा के बन्दे पैगम्बर बन जाएंगे और वे दिन आएगा जब ये पैगम्बर अन्य लोगों को भी पैगम्बर बनाने में सशक्त हो जाएंगे। आज वो दिन आ गया है। विलियम ब्लेक सहजयोग की कार्यशैली को सौ वर्ष पूर्व देख पाये।"

[२२-३-१९८१]

श्री माताजी के पृथ्वी पर जन्म का समय पूर्व निश्चित था क्योंकि उन्हें "सहजयोग" स्थापित करके मानव में आन्तरिक परिवर्तन कर **सृष्टि में आने वाली प्रलय को रोकना था। वे स्पष्ट कह रही हैं**--

"सहस्रार का खोलना मानव को दिया जाने वाला सर्वश्रेष्ठ वरदान है - मानव को आत्मा परमात्मा के सच्चे ज्ञान के प्रति चेतन एवं उसके अज्ञानान्धकार को दूर करना, और यह कार्य बहुत ही शीघ्र किया जाना था।.....

... ... ये कार्य छः मई १९७० से पूर्व होना आवश्यक था क्योंकि

उस वर्ष का यह दिन प्रलय का दिन था, अन्तिम समय पर पाँच मई १९७० को यह कार्य किया गया।"

[८-५-१९८८ इटली]

और इस प्रकार श्री माताजी ने प्रलय रोक दी। अपनी समस्त दिव्य शक्तियों का रहस्य श्री माताजी ने स्वयं बताया है।

अध्याय 22

मैं ब्रह्म चैतन्य का विराट अवतरण हूँ

"पहले ब्रह्मचैतन्य अव्यक्त था, इसकी अभिव्यक्ति नहीं हुई थी, यह स्वतः स्पष्ट न था। ब्रह्म चैतन्य के सागर से अवतरित महान अवतरणों ने अपने इने गिने शिष्यों को ब्रह्मचैतन्य का रहस्य समझाना चाहा, उनका परिचय ब्रह्मचैतन्य से करने का प्रयत्न किया, परन्तु ब्रह्मचैतन्य के व्यक्त रूप में न होने के कारण ये अवतरण स्वयं इसी में विलीन हो गए।"

..... अब मैं ब्रह्मचैतन्य के विराट अवतरण के रूप में आई हूँ ..... **ब्रह्मचैतन्य का साकार रूप मैं सागर में से ले आई हूँ,** अब मैं आपको इसमें विलीन होने की आज्ञा नहीं देती। इसे मैंने एक बहुत बड़े घट के रूप में स्थापित किया है। आप लोग छोटे-छोटे घट हैं।

दूसरे शब्दों में - **मैंने आपको सूक्ष्म कोषाणुओं के रूप में अपने शरीर में ले लिया है,** जहाँ मैं आपका पोषण करती हूँ आपकी देखभाल करती हूँ, आपकी अशुद्धियाँ स्वच्छ करती हूँ और यह सब क्रियान्वित करती हूँ, **परन्तु मैं महामाया हूँ इसलिए मुझे शनैः शनैः उचित समय तथा उचित परिस्थिति में काम करना होता है।**

जब सातवाँ चक्र खोला गया तो सभी चक्र आपके सहस्रार में आ गए और मैं सभी चक्रों का और आपके सभी देवी-देवताओं का संचालन कर पाई। किसी भी देवता के रूप में मेरी पूजा प्रार्थना करने भर से आपको चैतन्य लहरियाँ आने लगती हैं, यह प्रमाणित करता है कि **मैं ब्रह्मचैतन्य हूँ।**

ब्रह्मचैतन्य ही आदिशक्ति हैं। सभी अवतरण मुझमें निहित हैं और सदाशिव भी मेरे हृदय में विराजित हैं परन्तु बहुत अधिक मानवीय होने के कारण मुझसे सदाशिव को खोज पाना सुगम नहीं।

..... **बैकुण्ठ के आगे की सब चीज़े मैं जानती हूँ, परन्तु इसे मैंने**

अभी तक प्रगट नहीं किया है। धीरे-धीरे ये सब मैं प्रगट करूँगी। क्योंकि अभी तक लोग इसे आत्मसात करने को तैयार नहीं हैं।

ये खिचड़ी के पकने जैसा है जो अभी तक पकी नहीं है। तो अभी इसे तैयार होने दें। **आप सब लोग इसमें हैं। आप सब लोग इसमें हैं। अब जो लोग तैयार हो रहे हैं उनकी गुणवत्ता भूतकाल के पैगम्बरों के गिने चुने शिष्यों के बराबर है।** अब यहाँ पर आप सब लोग धारे धीरे उन्नत होंगे। जो लोग दिव्य रसोइये की हाँडी में आ जाएगे वो तैयार हो जाएंगे, जो लोग इस हाँडी से बाहर रह जाएंगे वो बाहर ही रह जाएंगे।

[२६/२७ फरवरी १९८७]

"मैं आप लोगों को अपने हृदय में धारण करती हूँ। आप जानते हैं कि अपनी कुण्डलिनी का उपयोग करके मैं आपको अपने हृदय में स्थान देती हूँ और फिर हृदय से ही जन्म देती हूँ।"

[३०-९-८१]

"मेरे इस शरीर से चैतन्य लहरियाँ बहती हैं, यह वास्ताविकता है। ... ... मेरे फोटो में चैतन्य लहरियाँ हैं ये सच्चाई है। ..... **मैं प्रणव शक्ति हूँ ..... मेरी हर बात से प्रणव प्रसारित होता है इसलिए मेरी हर बात, मेरा हर शब्द मंत्र है।** ..... जब मैं अपने मुँह से प्रणव फूँकती हूँ तो आत्मसाक्षात्कारी लोग उसे अपने सहस्रार पर महसूस कर सकते हैं। यह सच्चाई है।

[२२-३-७७]

''आप जानते हैं, इस ब्रह्माण्डीय शक्ति (cosmic power) का स्रोत मैं ही हूँ।

[कबैला १९९८]

''आप कह सकते हैं कि मैं सीमित में असीम हूँ या आप कह सकते हैं कि मैं असीमित में सीमित हूँ। मैं दोनों हूँ। इसीलिए सारी सूक्ष्म ऊर्जा में जो ऊर्जा प्रवाहित होती है वह मेरे अंदर से गुज़रती है। **मैं विराट हूँ,** विराट के अंदर से ही सभी कुछ प्रवाहित होता है, ये सर्वव्यापी शक्ति में जाता है। यह सर्वव्यापी है। सर्वत्र सभी व्यक्तियों में ये प्रवाहित हो रहा है। छोटी सी कोशिका

में भी, कार्बन के अणु में तथा अन्य सभी अणुओं में यह विद्यमान है। **ये सूक्ष्म ऊर्जा है जो मेरे माध्यम से प्रवाहित होती है।**

चैतन्य लहरियाँ आप सर्वव्यापी शक्ति से प्राप्त करते हैं और सर्वव्यापी शक्ति प्रवाहित होती है **जिसे आप मुझसे, सर्वव्यापी से, प्राप्त करते हैं।** सभी दिशाओं में यह एक जैसी हैं।

..... **चैतन्य लहरियाँ हर तरफ से आती हैं, इन्हें प्रवाहित करने वाली शक्ति मैं हूँ।**

"मैं अपने आप से पूर्णतः एक हूँ। मेरी हर बात, हर कार्य का अर्थ होता है। एक उँगली जो मैं हिलाती हूँ, एक हाथ जो मैं हिलाती हूँ उसका भी कोई अर्थ होता है। बिना सोचे यह सब होता है परन्तु उसके पीछे बहुत बड़ा विचार छिपा होता है।

मैं कहती हूँ 'हाँ'। इसका अर्थ है कि वृत्त की रचना हो चुकी है और ये वृत्त कार्य करता है। इसकी व्याख्या करना कठिन है क्योंकि मेरी तकनीक आपकी तकनीक से भिन्न है।

''मैं जब कहती हूँ, ''हीं, हूँ, हाँ, हो' ये सारे शब्द अत्यन्त शक्तिशाली हैं, ये एक प्रकार की शक्ति का सृजन करते हैं, जो सारी नकारात्मकता को, सारे राक्षसों आदि को निगल जाती है और आप उन्हे बाहर भी खींच सकते हैं।

अभी मैंने एक मटके के अंदर अपने श्वास दिए हैं, ये अपने आप में पूर्ण प्रणव हैं। रात्रि में ये लोग सोए हुए होंगे तो प्रणव बाहर आ जाएगा और शनैः शनैः आपके अंदर की बुराइयों को निकाल फेंकेगा और इन्हें बाँधकर अंदर (मटके में) डाल देगा। आपने देखा होगा कि इस प्रकार से कितने ही पागल लोगों का इलाज हुआ है।

[२२-३-१९७७]

"मेरी उपस्थिति में बहुत से लोग रोग मुक्त हो जाते हैं, मुझे उनपर कुछ करना नहीं पड़ता, मैं किसी व्यक्ति को देखती हूँ मैं जान जाती हूँ कि उसे क्या

रोग है। मैं कहना चाहती हूँ कि यह परमात्मा से मेरा संबंध है कि उस व्यक्ति को क्या कष्ट है और क्या किया जाना चाहिए, उसे तुरंत ठीक किया जा सकता है। यह बात भी मुझे इसी प्रकार सूझती है। कहने का अभिप्राय यह है कि मैं कोई प्रश्न नहीं पूछती परंतु ये कहता है कि ऐसा कर लो। ये कहता भी नहीं सीधे से बस कर देता है। यह स्वत: कार्य करता है।''

[६-५-२००१]

"मैं जब भी कुछ कहती हूँ तो इसके विषय में पूर्ण विश्वस्त होती हूँ। सत्य के अतिरिक्त मैं कुछ नहीं बताती। मैं जानती हूँ कि मैं केवल सत्य बता रही हूँ। जो कुछ भी मैं कहती हूँ वह सत्य है। ... ... मैं यदि झूठ भी बोलूँगी तो कहा हुआ तथाकथित असत्य भी सत्य हो जाएगा। मेरी कही हुई बात कभी भी असत्य नहीं होती।

[६-६-१९८२]

"मैं जो भी आपको बताती हूँ वह सच्चाई ही होती है। मैं जो चाहे करूँ मैं पाप से ऊपर हूँ, फिर भी मैं इस बात का ध्यान रखती हूँ कि आपकी उपस्थिति में मैं ऐसा कार्य करूँ जो मुझे करते देख कर आप भी करने लगें।.....

..... **मैंने अपने आपको इतना सामान्य बना लिया है ताकि आपके सम्मुख मैं इस प्रकार पेश हो सकूँ कि आप समझ जाएँ कि धर्मादेश क्या होते हैं? मेरे लिए कोई धर्मादेश नहीं हैं, मैं धर्मादेश बनाती हूँ।** आपके ही कारण मैं ये सारे कार्य करती हूँ और आपको छोटी-छोटी चीज़े सिखाती हूँ क्योंकि अभी तक आप बच्चे हैं।''

[२९-७-८०]

"मैं इच्छाविहीन हूँ परंतु जो भी इच्छा आप करेंगे वह पूर्ण होगी। मेरे बारे में भी आपको इच्छा करनी होगी इस बात को देखें, **इस ओर देखें कि मैं आपसे कितनी जुड़ी हुई हूँ,** आप जब तक मेरे सुंदर स्वास्थ्य की कामना नहीं करते मेरा स्वास्थ्य खराब ही रहेगा, इस सीमा तक मैं आपसे जुड़ी हूँ, परन्तु मेरे लिए क्या बुरा स्वास्थ्य क्या अच्छा स्वास्थ्य?

[२९-७-१९८०]

''मैं कहती हूँ मैं बहुत बड़ी पूँजीवादी हूँ क्योंकि मेरे पास अथाह शक्ति है परन्तु मैं बहुत बड़ी साम्यवादी भी हूँ क्योंकि मैं अपनी शक्तियों को बाँटना चाहती हूँ अत: वास्तविक रूप में मैं सच्ची पूँजीवादी हूँ और सच्ची साम्यवादी भी।''

[८-९-१९८४]

''मेरी ओर देखें, मेरे पास संसार का सारा चैतन्य है, सभी कुछ है, तो मुझे तो स्वकेन्द्रित होकर ध्यान में बैठ जाना चाहिए। मैं तो आदिशक्ति हूँ, क्यों मुझे लोगों को शक्तिशाली बनाने की चिन्ता करनी चाहिए?..... फिर भी मैं यह नहीं कर सकती, मेरे पास सब कुछ होते हुए भी पूरा समय मैं भिन्न स्थानों पर जाती रहती हूँ। **क्या आपने किसी ऐसे वैभवशाली व्यक्ति को देखा है जो अपनी सारी सम्पदा** बाँटने में व्यस्त हो और अन्य लोग केवल उस सम्पदा को लेने में लगे हों? (मेरे साथ ऐसा ही है)''

[२५-१०-१९८७]

"मुझे सहजयोग की आवश्यकता नहीं है पर मै सहजयोग तथा सहजयोगियों के लिए चिन्तित हूँ। मेरे लिए वे सभी मेरी ज़िम्मेदारी हैं। मुझे उनकी देखभाल करनी है, उनकी चिंता करनी है और उनकी बात सुननी है।..... हर हाल में मुझे उन्हे सहारा देना है **क्योंकि इससे मेरी आत्मा संतुष्ट होती है, मेरी अपनी संतुष्टि के लिए यह मेरा स्वार्थ है।** जब आप आत्म तत्त्व तक पहुँच जायेंगे तो समझ पाएँगे कि आत्मा की आवश्यकता क्या है?

[१९-७-९२]

"मैं सोचती हूँ कि महिला रूप में जन्म लेना ही अति महान बात है क्योंकि मैं हृदय का, भावनाओं का, अपने प्रेम की भावनाओं का, प्रेम की लीला और उसकी कार्यशैली का आनंद ले सकती हूँ। कोई भी अवतरण इस प्रकार आनन्द नहीं ले सकता जैसे मैं ले सकती हूँ।"

[४-५-१९८६]

"मेरा चित्त हमेशा आप पर होता है सदा आप लोगों को प्रचालित करता हुआ। मैं आप लोगों के विषय में सभी कुछ इसीलिए जान लेती हूँ कि मेरा चित्त

सर्वव्यापी है। आपके साथ कोई भी घटना यदि होती है, कोई भी परेशानी जब आपको होती है, कोई भी परिवर्तन जब आपमें होता है तो मेरा चित्त वहाँ पर होता है।

[२७-९-१९९८]

"आप कभी भी सत्य, सर्वव्यापक शक्ति तथा सर्वशक्तिमान परमात्मा से जुड़े न थे। व्यक्ति को समझना चाहिए कि कितनी महान घटना घटित हुई है कि मेरे अंदर से निकलकर कुण्डलिनी ने सारे ऊपरी चक्रों को छू लिया है। इसके पूर्व यह कभी घटित नहीं हुआ, साधकों की मात्र रक्षा तथा देखभाल हुई।

कभी भी ऐसा वर्णन नहीं है कि देवी ने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया। वे ज़िम्मेदार हैं, वे दे सकती हैं, उनके एक नहीं दस नाम ऐसे हैं कि वे निर्वाण प्रदायिनी हैं, मुक्तिदायिनी हैं तथा पुनर्जन्म से आपका परिचय कराती हैं।

[२४-१०-१९९३]

"आज मैं हूँ जिसने आपको आत्मसाक्षात्कार दिया है ..... मैं आदि शक्ति हूँ ..... देवी (मैं ही) नौ बार पृथ्वी पर आई, दसवीं बार वे आप सबको आत्मसाक्षात्कार देने आई हैं।"

अध्याय 23

मैं आदिशक्ति का महामाया रूप हूँ

"मैं भ्रामक हूँ - यह सत्य है। मेरा नाम महामाया है। मैं तो भ्रांति रूप हूँ और मुझे समझना आसान नहीं। एक ओर तो मैं दिव्य हूँ और दूसरी ओर अतिमानवीय। आपके सामने मानव रूप मेरा महामाया रूप है।"

[१-३-१९९२]

"मैं सर्वसाधारण मानव की तरह आचरण कर सकती हूँ बिल्कुल आपकी तरह, आप की ही तरह से वृद्ध होते हुए, चश्मा पहनते हुए और वे सभी कार्य करते हुए जो मुझे पूर्ण मानव के रूप में दर्शा सकें। पूर्ण चेतना में मैंने इस परिवर्तन को स्वीकार किया है अनजाने में नहीं। मेरे लिए कुछ भी अचेतन नहीं।''

[४-५-१९८६]

''कहा गया है कि सहस्रार पर जब देवी प्रगट होंगी तो वे महामाया होंगी। ..... महामाया के अतिरिक्त किसी अन्य रूप में इस विश्व में अस्तित्व को बनाए रखना असम्भव है।''

[८-५-९४]

महामाया के विभिन्न पक्ष -

इन महामाया के बहुत से पक्ष हैं, ये विभिन्न तरीक़ों से साधकों पर कार्य करती हैं।

१. ये व्यक्ति की परीक्षा लेती हैं - एक पहलू द्वारा महामाया आपके सहस्रार को आच्छदित करके रखती हैं और साधक की परीक्षा होती है। यदि आप उल्टे सीधे लोगों से उल्टी-सीधी वेशभूषा धारण करने वालों से, झूठ-मूठ चीज़ें दिखाने वाले कुगुरुओं से या घटिया किस्म के लोगों से आकर्षित हैं तो आपका यह आकर्षण भी महामाया के कारण है क्योंकि महामाया ही इस प्रकार परीक्षा लेती हैं।

२. महामाया आपकी वास्तविकता दिखाती हैं – "महामाया दर्पण की तरह से हैं। आप जो कुछ भी हैं दर्पण में अपनी असलियत को देखते हैं। यदि आप बंदर की तरह है तो दर्पण में बंदर की तरह लगेंगे और यदि आप रानी जैसी हैं तो रानी जैसी ही दिखेंगी।... ... जो सत्य है दर्पण तो वही दिखाएगा, सत्य जो कुछ है दर्पण तो वही दर्शाएगा। अत: यह कहना कि महामाया भ्रमित करती हैं एक प्रकार से अनुचित है। इसके विपरीत शीशे में आपको अपनी वास्तविकता दिखायी पड़ती है।

मान लो आप क्रूर व्यक्ति हैं तो शीशे में भी आपका चेहरा क्रूर ही दिखेगा। जब महामाया गतिशील होती हैं, तब आप शीशे की ओर नहीं देखते, आप अपना मुँह घुमा लेते हैं – न तो आप देखना चाहते हैं और न कुछ जानना। दर्पण में जब आपको कुछ भयंकर दिखायी पड़ता है तो मुँह घुमाकर **आप सत्य को नकारते हैं।** मैं ऐसा किस प्रकार हो सकता हूँ? मैं बहुत अच्छा हूँ, मुझमें कोई कमी नहीं, मैं पूर्णतया ठीक हूँ।"

सत्य को नकारने के बाद ही साधक के मन में सत्य की वास्तविकता को जानने की जिज्ञासा जागृत होती है और तभी खोज की शुरुआत होती है।

३. महामाया आपकी महान सहायक हैं – ''महामाया का तीसरा पक्ष यह है कि एक बार फिर आप इसकी ओर आकर्षित होते हैं और फिर दर्पण को देखते हैं। शीशे में आप पूरे विश्व को देखते हैं, परिणामत: आप सोचने लगते हैं मैं क्या कर रहा हूँ? मैं कौन हूँ? यह संसार क्या है? मैं कहाँ जन्मा हूँ? आपके खोज की यह शुरुआत है पर इससे आपकी संतुष्टि नहीं होती। अत: यह महामाया की महान सहायता है।

४. महामाया आपकी ग़लतफहमी दूर करती हैं – महामाया का एक पक्ष और भी है। लोग मुझे मिलने आते है, उनमें से कुछ काँपने लगते हैं। वे समझते हैं कि उनमें महान शक्ति है जिसके कारण वे हिल रहे है। अत: अपनी प्रतिक्रियाओं के कारण उन्हें ग़लतफहमी हो जाती है कि वाह! वह वहाँ गए, हममें इतनी शक्ति आ गई, हम कुछ महान चीज़ हैं। ..... परन्तु जब उन्हें पता चलता है कि इस प्रकार काँपने वाले लोग पागल हैं तो धीरे-धीरे वे अपेक्षाकृत रूप

से चीज़ों को देखने लगते हैं।

प्रासंगिक सूझ-बूझ आप पर पड़े उस पर्दे को हटाने में सहायक होती है जिसके कारण आप सत्य का सामना नहीं करना चाहते। ..... एक बार जब आपके साथ घटित हो जाता हैं तो आप दूसरे लोगों के साथ अपनी तुलना करने लगते हैं, जब आप ऐसा करने लगते हैं तो आपका उत्थान होता है तथा आप सहजयोग में स्थिर होने लगते हैं।

५. महामाया आपको समर्थ बनाती हैं ताकि आप अपनी समस्याएँ स्वयं सुलझा सकें - यह मानव की समस्या है कि यदि मैं उसकी सारी समस्याओं को ठीक कर दूँ तो वे इसे अपना अधिकार मान बैठते हैं। उन्हें वातावरण, पर्यावरण जैसी समस्याओं का सामना करना होगा कि वे स्वयं अपना विनाश कर रहे हैं, अन्यथा यदि कोई अन्य व्यक्ति शुद्धिकरण के लिए होगा तो वे कभी भी परिवर्तित नहीं होंगे।

उनकी समस्याओं को सुलझा देने से ही मेरा कार्य समाप्त नहीं हो जाता और न ये लक्ष्य है। मेरा लक्ष्य तो मानव को समर्थ बनाने का है ताकि वे स्वयं अपनी समस्याओं को सुलझा सकें। आपको अपना डाक्टर या अपना गुरु बनना होगा परन्तु महामाया के बिना आप ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि यह महामाया ही जानती हैं कि स्वतंत्र मानव के शुद्धिकरण और नियंत्रण में किस सीमा तक जाना है?

६. महामाया के माध्यम से दैवी क़ानून कार्यरत हैं, अब आपके कार्यों का फल फौरन मिलता है - इस महामाया के माध्यम से विश्व में हर चीज़ उलट-पुलट हो रही है। ..... विश्व में जिस प्रकार संघर्ष चल रहा है यह युद्ध नहीं, यह शीत युद्ध नहीं है, यह तो एक अज़ीब किस्म का युद्ध-यश है जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। ..... परमात्मा तथा आध्यात्मिकता का व्यापार हो रहा है।

आज के इस पतित विश्व के लिए महामाया का होना आवश्यक है जिसके द्वारा दर्शा सकें कि इस जीवन में आप जो कर रहे हैं उसके लिए

आपको नाकों चने चबाने पड़ेंगे, आपको अपने कार्यों का फल भुगतना पड़ेगा।

इस महामाया को हम रोकड़ा देवी कहते हैं, अर्थात हाथों हाथ फल देने वाली नग़द भुगतान करने वाली देवी। आपने ऐसा किया ठीक है आप ये ले लें। आपने यह कार्य किया, ठीक है आप इसका आनन्द लें।

वास्तव में ये माया विशेष रूप से गतिशील हैं। जिस तरह से वे लोगों को दण्डित कर रही हैं, कभी कभी तो मुझे भय प्रतीत होता है, पर वास्तविकता यही है।

महामाया के रूप में दैवी क़ानून कार्यरत हैं। आज की तरह यह कभी इतना तेज न था।..... **मानव की स्वतंत्र इच्छा पर अंकुश रखने के लिए महामाया अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग कर रही हैं।**

७. महामाया आपको सही रास्ते पर ले आती हैं - मनुष्य को प्राप्त स्वतंत्रता के कारण सारे विश्व में उथल पुथल है। ..... यह कथित स्वतंत्रता जिसका आनन्द लेने का हम प्रयत्न कर रहे हैं हमें हमारे ही अन्त तक ले आई है।

लोग अपने ही शिकंजे में फँस रहे हैं। यह शिकंजा ही महामाया है। आपसे ही वे इस शिकंजे की रचना करती हैं, क्योंकि आप अपना सामना नहीं करना चाहते, सत्य को जानना नहीं चाहते, सत्य से आप जी चुराना चाहते हैं। यह महामाया का ही एक पक्ष है कि तुरन्त आप अपना सामना करने को विवश हो जाते है।

कितनी सारी घटनाएं घटीं इनका विचार कीजिए। बड़े-बड़े पूँजीपति जेल में हैं, बड़े प्रसिद्ध लोग जेल में हैं। इस प्रकार की घटनाएँ हो रही हैं क्यो? **क्योंकि यह महामाया सबक़ देना चाहती हैं।** एक व्यक्ति को दण्डित करने से वे हज़ारों लोगों को रास्ते पर ले आती हैं।

८. महामाया सहजयोगियों की रक्षा करती हैं - इतना डरा हुआ है विश्व, इतनी असुरक्षा है। आज हर व्यक्ति व्यग्र है और अपना जीवन बचाने की सोच रहा है। ..... आप सहजयोग में आ जाएँ तो आप कष्ट से बच सकते हैं

क्योंकि **महामाया का एक पक्ष यह है कि वे रक्षा करती हैं।** ..... यह महामाया सहज योगियों की रक्षा करती हैं, ... वे ही आपको अन्तर्ज्ञान देती हैं कि क्या करना आवश्यक है? किस प्रकार समस्या से छुटकारा पाना है? और आप छुटकारा पा लेते हैं।

कोई यदि सहजयोगियों को परेशान करने का प्रयत्न करता है तो महामाया एक सीमा तक उसे ऐसा करने देती हैं और फिर अचानक गतिशील हो उठती हैं। ..... यह महामाया मेरी साड़ी की तरह हैं और रक्षा कर रही हैं।

वे अत्यन्त सुन्दर, दयालु, ध्यान रखने वाली, करुणामय, स्नेहमय तथा कोमल हैं। वे आपकी देख-रेख करती हैं और राक्षस तथा असुर प्रवृत्ति के लोगों जो परमात्मा के कार्य को बिगाड़ने का प्रयत्न करते हैं, पर क्रुद्ध होकर उनका संहार करती है।

९. महामाया आपको परिवर्तित करती हैं, वे आपको प्रसन्न तथा आनन्दमय बना देती हैं - महामाया का एक अन्य पक्ष यह है कि वे आपको परिवर्तित करती हैं। मानव के लिए सभी कुछ मस्तिष्क है। आप यदि कुटिल हैं तो कुटिल हैं। आप यदि दूसरों से घृणा करते हैं तो यह भी मस्तिष्क में है। आपको यदि कोई व्यसन है तो वह भी मस्तिष्क में है। मस्तिष्क के बंधन अति जटिल हैं।

अत: सहस्रार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है परन्तु विराट विराटांगना की शक्ति तभी प्रभावशाली हो सकती है जब महामाया का शासन हो, **वे अपने मधुर तरीक़ों से सहस्रार को खोलें और आपके कुरूप, भयंकर तथा क्रोधी बनाने वाले सभी बन्धनों का निवारण करें।**

महामाया वास्तव में आपको अत्यन्त प्रसन्न तथा आनन्दमय बना देती हैं ताकि आप 'निरानंद' केवल आनंद का रसपान कर सकें, आनंद के सिवा कुछ नहीं - यही सहस्रार है परन्तु यह तभी सम्भव है जब आपका ब्रह्मरंध्र खुल जाए उसके बिना आप परमात्मा के प्रेम की सूक्ष्मता में और सदा साथ रहने वाली महामाया की करुणा में प्रवेश नहीं कर सकते।

१०. महामाया अति महत्त्वपूर्ण हैं, मैं महामाया रूप में आयी हूँ – महामाया अति महत्त्वपूर्ण हैं, उसके बिना आप मेरा सामना नहीं कर सकते, आप यहाँ बैठ नहीं सकते, मुझसे बात नहीं कर सकते।

यद्यपि आपको सम्मुख होना आवश्यक नहीं, निराकार रूप में भी मैं यहाँ हो सकती हूँ पर सम्पर्क कैसे बनाया जाए और सौहार्द्र किस प्रकार बनें? इसी कारण मुझे महामाया रूप में आना पड़ा ताकि न कोई भय हो न दूरी। समीप जाकर एक दूसरे को समझ सकें क्योंकि यह ज्ञान यदि देना है तो लोगो को कम से कम महामाया (मेरे) के सम्मुख बैठना तो पड़ेगा ही। यदि वे सब भाग गए तो सहस्रार पर **इस अत्यन्त मानवीय व्यक्तित्व की सृष्टि करने का क्या लाभ?** वे महामाया रूप में आयी हैं।

वास्तव में जब तक मैं माया स्वरूप हूँ तभी तक आप मेरे नज़दीक आ सकते हैं, नहीं तो नहीं आ सकते। आप सोचेंगे – ये तो शक्ति हैं, इसके पास कैसे जाएँ, इनके पैर कैसे छुएँ, इनसे बात कैसे करें? तो यह महामाया स्वरूप लेने से ही ये चीज़ बड़ी सौम्य हो गयी है और इस महामाया रूप में ही हम रहें और आप लोग सब मुझसे प्राप्त करते रहें।'

..... अब आपको परिपक्व होना है, कुछ बनना है। **आपको सहजयोग में विकसित होना होगा नहीं तो महामाया लीला करती रहेंगी, आपको भ्रमित करती रहेंगी।** सहस्रार विराट का क्षेत्र है, विराट विष्णु है जो राम बने फिर कृष्ण बनें। तो यह लीला है, उसकी लीला, नाटक है और नाटक को ठीक करने के लिए उसे महामाया रूप में होना होगा, ... जो मैं हूँ।

[८-५-१९९४]

अध्याय 24

मेरे नाम 'निर्मला' में अनेक शक्तियाँ हैं

"मेरा नाम निर्मला है - "निर्मला"। निर्मला नाम का अर्थ है मल रहित। निष्कलंक अर्थात जिसमें पावन करने की शक्ति है। मेरा मूल नाम ललिता है जो कि आदि शक्ति का नाम है, यह आदि माँ का नाम है।"

[३०-९-१९८१]

'निर्मला' नाम एक बहुत ही प्रभावशाली मंत्र है। इसमें तीन शब्द हैं, तीनों शब्दों के अलग-अलग बहुत ही गूढ़ अर्थ हैं जिन्हे स्वयं **श्री माताजी ने स्पष्ट किया है** -

१. "निः" - क्रिया शक्ति

● मेरे नाम का पहला शब्द है 'निः', जिसका अर्थ है 'नही'। **कोई वस्तु जिसका वास्तव में अस्तित्व नहीं है किन्तु जिसका अस्तित्व प्रतीत होता है उसे महामाया (भ्रम) कहते हैं।** सम्पूर्ण विश्व इस प्रकार है यह दिखता है किन्तु वास्तव में नहीं है।

● हम चारों ओर जो देखते हैं वह सब माया है। ..... यदि आपको 'निः' भावना अपने अंदर प्रतिष्ठित करनी है तो जब भी आपके अंदर विचार आए तो कहिए - **''यह कुछ नहीं है, यह सब भ्रम है, मिथ्या है।''** आपको बारम्बार यह भाव लाना होगा तभी आप 'निः' शब्द का अर्थ समझ पाएँगें।

● आपको जो कुछ माया रूप दिखता है, यह सम्पूर्णतः भ्रम मात्र नहीं, इस दृश्यामान के परे भी कुछ है अतः दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि यह सब कुछ **'सत्य नहीं है, केवल ब्रह्म ही सत्य है, अन्य सब मिथ्या है, तत्त्वरूप से बाकी कुछ भी नहीं हैं।** जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको यह दृष्टिकोण अपनाना होगा तब आप सहजयोग को समझेंगे।

● यदि आप आत्मा में स्थित हो गए तो आप देखेंगे कि भीतर इतना

सौन्दर्य है कि आपको बाहर सब कुछ नाटक सा प्रतीत होगा। ..... जब आपके अंदर साक्षी भाव की स्थिति जागृत होती है तभी आप 'निः' का अर्थ समझ पाएँगे।

● 'निः' स्थिति ध्यान-योग में सर्वश्रेष्ठ रूप में प्राप्त की जा सकती है। ..... आपको अपने सारे विचार निः शक्ति पर छोड़ देने चाहिए क्योंकि **विचारों का जन्म इसी निः शक्ति से ही होता है। ..... अपने जीवन में निः विचार का अनुसरण करने से आप निर्विचार स्थिति प्राप्त कर लेंगे।** ..... और निर्विचार स्थिति में आप परमात्मा की शक्ति से एकरूप हो जाते हैं और तब वह आपकी देख-रेख करता है।

● निः शक्ति श्री ब्रह्मदेव की श्री सरस्वती शक्ति है। सरस्वती शक्ति में आपको 'निः' के गुण अर्जन करने चाहिए। **'निः' शक्ति का अर्थ है पूर्णतः निरासक्त बनना। आपको पूरी तरह निरासक्त बनना चाहिए।**

● आपको निरासक्त रहना चाहिए ..... आपको कहना चाहिए - **''मेरा कुछ भी नहीं है, सब कुछ आपका ही है।''** सन्त कबीर कहते हैं ''जब तक बकरी जीवित है वह मैं-मैं करती है, किन्तु उसके मरने के बाद उसकी उसके आँतो के तारों से जो ताँत (जिससे रुई धुनी जाती है) बनती है उसमें से ''तू ही तू'' आवाज़ आती है।

आपको भी तू ही तू भावना में मग्न रहना चाहिए। जब आप **''मैं नहीं हूँ, मेरा कोई अस्तित्व नहीं है'' इस भावना में दृढ़ स्थित हो जाते है, तभी आप 'निः' शब्द को समझ सकेंगे।**

२. ''ला'' - प्रेम की शक्ति

अब निर्मला नाम के अन्तिम अक्षर ''ला'' के विषय में विचार करें।

● मेरा दूसरा नाम है 'ललिता', यह देवी का आशीर्वाद है। यह उनका आयुध है। जब 'ला' अर्थात देवी ललिता रूप धारण करती है अथवा **जब शक्ति ललित अर्थात क्रियाशील रूप में परिणत होती है अर्थात उसमें**

जब चैतन्य लहरियाँ प्रवाहित होती हैं ..... वो शक्ति ललिता शक्ति हैं।

● **ललिता शक्ति प्रेम से परिपूर्ण है। जब प्रेम की शक्ति जागृत होती है तब वह 'ला' शक्ति बन जाती है।** यह आपको चारों ओर से घेर लेती है। ..... आपको जो आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ है वह भी इसी शक्ति का काम है।

● **'ला' शक्ति में प्रेम का समावेश है, वह हमारा दूसरों से नाता जोड़ती है।** 'ल' अक्षर 'ललाम', लावण्य में आता है इस अक्षर में उसका अपना ही माधुर्य है, आपको चाहिए कि दूसरों को उससे प्रभावित करें। दूसरों से बात करते समय आपको इस शक्ति का प्रयोग करना चाहिए। चराचर में यह प्रेम की शक्ति व्याप्त है। ... ... इस शक्ति से आपकों प्रेम के आनन्द का रसास्वादन करना चाहिए। यह कैसे करें? अपने आप को दूसरे के प्रति प्रेम भाव में भूल जाएं।

● अपने हृदय की प्रेम की शक्ति (हमारा बाँया पार्श्व) को अपनी क्रियाशक्ति (हमारा दाँया पार्श्व) में पहुँचाना चाहिए। जैसे आप कपड़े पर रंगों से चित्रण करते हैं। **जब इस भाँति क्रिया शक्ति में प्रेम का समर्पण किया जाता है तब वह व्यक्ति अत्यन्त मधुर हो जाता है** और क्रमशः यह माधुर्य और प्रेम उसके व्यक्तित्व और आचरण में प्रकाशमान होता है।

● ललाम शक्ति से मनुष्य को एक प्रकार का सौन्दर्य और एक भव्यता प्राप्त होती है। इस शक्ति को अपने वचन, अपने कर्म तथा अन्य क्रिया-कलापों में विकसित करने का प्रयास करें।

● लोग कहते हैं कि यह संहार की शक्ति है, यह कहना ठीक नहीं है। यह शक्ति अति मनोरम, सृजनात्मक और कलात्मक है। मानो आपने एक बीज बोया और उसके कुछ अंश नष्ट हो गए किन्तु यह विनाश अत्यन्त कोमल और सरल होता है। तब बीज उगकर एक वृक्ष बनता है जिसमें पत्ते होते हैं फिर पत्ते झड़ते हैं। **यह क्रिया भी अत्यन्त सुकोमल और सरल होती है।** तब फूल आते हैं, जब फूल बनते हैं तब उनके अंश झड़कर गिर जाते है और तब फल

आते हैं। उन फलों को भी खाने के लिए काटा जाता है। खाने पर आपको स्वाद प्राप्त होता है।

● आप जानते हैं बिना काटे, सँवारे आप कोई मूर्ति नहीं बना सकते। यदि आप समझ लें कि यह काटना, सँवारना भी उसी जाति की क्रिया है तो यदि आपको कभी ऐसा करना पड़े तो आपको बुरा अनुभव नहीं करना चाहिए। **वह भी आवश्यक है। ..... विनाश भी देवी का प्रेम ही है।**

३. ''म'' - धर्म की शक्ति

'नि:' और 'ला' के मध्य में 'म' अक्षर अत्यन्त रोचक है।

● 'म' महालक्ष्मी का प्रथम अक्षर है। 'म' धर्म की शक्ति है और हमारी उत्क्रांति की भी। 'म' शक्ति में आपको समझना होता है, फिर उसे आत्मसात करना होता है और पूर्णता, कुशलता प्राप्त करनी होती है।

● यह शक्ति संतुलन बिन्दु है, आपको संतुलन बिंदु पर स्थित रहना चाहिए। 'म' शक्ति के बल पर आपको दूसरी दो शक्तियों का संतुलन करना है।

● **'म' शक्ति आपको बाधाओं पर विजय पाना सिखाती है।** ..... मैं सदैव वृक्ष की जड़ का उदाहरण देती हूँ। मोड़ लेकर बचते हुए वृक्ष की जड़ क्रमश: नीचे और नीचे पृथ्वी के भीतर उतरती चली जाती है, यह बाधाओं से झगड़ती नहीं। बाधाओं के बिना जड़ें वृक्ष को सँभाल भी नहीं सकतीं। **अत: जीवन में समस्याएँ और बाधाएँ आवश्यक हैं, वे न हों तो आप उन्नति नहीं कर सकते।**

● 'म' शक्ति अर्थात माँ की शक्ति। ''माता जी'' का अर्थ वाचक किसी भी शुभ नाम का अक्षर 'म' होता है। और यह कार्य मेरे भीतर ''म'' शक्ति द्वारा किया गया है यदि केवल 'नि:' और 'ला' दो शक्तियाँ ही होतीं तो यह कार्य सम्भव नहीं था। 'म' शक्ति सर्वोच्च है।

● **आपने देखा 'म' शक्ति माँ की शक्ति है।** यह सिद्ध करना होगा कि वह आपकी माँ है। यदि कोई आकर कहे ''मैं आपकी माँ हूँ'' तो क्या आप

मान लेंगे? नहीं आप स्वीकार नहीं करेंगे। मातृत्व को सिद्ध करना होगा।

माँ क्या है? माँ ने हमे अपने हृदय में स्थान दिया है ..... वे सदैव हमारी मंगल कामना करती हैं और उनके हृदय में हमारे लिए वात्सल्य के अतिरिक्त कुछ नहीं है। माँ में आस्था आपको तभी प्राप्त होगी जब आप यह समझ लेंगे कि आपकी वास्तविक शोभा अर्थात आपकी आत्मा उनमें ही वास करती है।

''मैं तीनों शक्तियों सहित आई हूँ, मैं निर्मला हूँ''

''आप विचार करें कि हम तीनों 'निः' 'ला' और 'म' शक्तियों को सक्रिय करके कैसे प्रयोग करें। ..... इन शक्तियों का सहज योग के प्रचार के लिए उपयोग करें। आप जन सम्पर्क के नए-नए मार्ग और साधन खोजें। सहजयोग के प्रचार के लिए विभिन्न मार्गों का अवलम्बन करके देखिए। ..... आपकी 'निः' शक्ति अर्थात क्रिया शक्ति अत्यन्त बलशाली होनी चाहिए, यह 'ला' शक्ति अर्थात प्रेम की शक्ति के साथ संयुक्त रूप से क्रियान्वित होनी चाहिए। ..... 'निः' शक्ति आपके परिवार में पूर्ण सौन्दर्य गम्भीरता और गहराई लाएगी।''

[१८-१-१९८०]

।। ओम् त्वमेव साक्षात श्री आदिशक्ति माताजी
श्री निर्मलादेव्यै नमो नमः।।

इस प्रभावशाली मंत्र जाप से आपके अंदर तीनों शक्तियाँ जागृत रहती हैं।

''मुझे अपने हृदय में बैठाइये। मुझे अपने हृदय में बैठाना एक भाव है, एक अनुभूति। ..... मुझे अपने हृदय में बैठाने का अभ्यास करें। एक बार आप अपने अंदर जब मेरा भाव स्थापित कर लेते हैं तो आपके पूरे शरीर में यह अपना स्थान ले लेता है और शाश्वत बना रहता है।''

[२६/२७ फरवरी १९८७]

श्री माताजी ने स्वयं निम्नलिखित भावमय स्तुतियाँ बतायी हैं जिन्हें पूर्ण श्रद्धा पूर्वक कहने से श्री माताजी अपने बच्चों के हृदय में सदैव विराजित रहती हैं -

1. आपने हमें मिथ्या अभिमान, ईर्ष्या, मोह, लोभ झूठे तादात्म्य और हिंसा के चंगुल से मुक्त किया है।

।। ओम् श्री आदिशक्ति नमो नमः।।

2. अंतिम निर्णय के लिए आप पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं।

।। ओम् श्री आदिशक्ति नमो नमः।।

3. आप संज्ञात्मक विज्ञान एवं संवेदनशील क्षेत्र की स्वामिनी हैं।

।। ओम् श्री आदिशक्ति नमो नमः।।

4. मानव जिस चीज़ का संकल्प करते हैं उसका विकल्प करके आप उसके अहं को नष्ट करती हैं। अपनी उँगली के ज़रा से इशारे से आप हिटलर जैसे तानाशाह को समाप्त कर देती हैं।

।। ओम् श्री आदिशक्ति नमो नमः।।

5. सूक्ष्म विनोदमय शैली में आप अत्यन्त गहन शिक्षा देती हैं।

।। ओम् श्री आदिशक्ति नमो नमः।।

6. सहजयोगियों को आप कटु शब्दों से नहीं सुधारतीं अपने गहन प्रेम तथा मृदुल स्नेह से ये कार्य करती हैं।

।। ओम् श्री आदिशक्ति नमो नमः।।

7. आप सभी धर्मग्रन्थों के सूक्ष्म अर्थ की व्याख्या करती हैं।

।। ओम् श्री आदिशक्ति नमो नमः।।

8. प्रत्यक्ष रूप में आप असत्य का अनावरण करती हैं।

।। ओम् श्री आदिशक्ति नमो नमः।।

9. भय नाम की चीज़ आपमें नहीं है, सहजयोगियो को आप पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती हैं।

।। ओम् श्री आदिशक्ति नमो नमः।।

10. अपने बच्चों को आप प्रेम करती हैं और उनका सम्मान करती हैं ताकि सारी मानवता के लिए वे श्रेष्ठ आदर्श बन सकें। आपने सहजयोगियों को

निष्पाप विनोदमयता एवं पूर्ण आनन्द का जीवन प्रदान किया है।

।। ओम् श्री आदिशक्ति नमो नमः।।

।। ओम् त्वमेव साक्षात् श्री आदिशक्ति माताजी
श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।।

[२०-६-१९९९]

आदिशक्ति पूजा-काना जौहरी

अध्याय 25

मैं प्रेम का अविरल प्रवाह हूँ, प्रेम ही मेरी शक्ति है

''मैं आदिशक्ति हूँ। ..... आदिशक्ति क्या है?..... आदिशक्ति परमात्मा के प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं, वे परमात्मा का विशुद्ध प्रेम हैं। ..... ये आदिशक्ति प्रेम की शक्ति हैं, शुद्ध एवं करुणा की शक्ति।''

[६-६-१९९३]

''प्रेम के कारण ही पूरे सृष्टि का सृजन हुआ है। ..... सृष्टि के सृजन का विशाल काम केवल इसीलिए संभव हुआ कि वे प्रेम करती हैं। उनके प्रेम की अभिव्यक्ति **के फलस्वरूप ही आप सब यहाँ पर हैं। ..... सारा सृजन प्रेम-स्नेह के माध्यम से ही घटित हुआ हैं।**

[२४-६-२००७]

..... मैं आदिशक्ति हूँ। दैवी प्रेम से ही मेरे शरीर के हर अंग की रचना की गयी, इसका ज़र्रा ज़र्रा दैवी प्रेम को प्रसारित करता है। मेरी चैतन्य लहरियाँ दैवी प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। आपका प्रेम मेरे हृदय में इस दैवी प्रेम की चमक तथा सुंदरता को गुंजित करता है। मैं वर्णन नहीं कर सकती कि यह अनुभव क्या सृजन करता है, सर्वप्रथम ये मेरी आँखों में आँसुओं का (प्रेम के आँसू) सृजन करता है क्योंकि यह करुणा ही सान्द्र करुणा है।''

[६-६-१९९३]

''ओ मेरे प्यारे बच्चों! वास्तव में आप मेरे सहस्रार से जन्मे हैं, अपने हृदय से मैने आपका गर्भ धारण किया और ब्रह्मरन्ध्र से आपको पुनर्जन्म दिया। **मेरे प्रेम की गंगा आपको सामूहिक चेतना के साम्राज्य में लाई है।** यह प्रेम मेरे मानवीय शरीर से कहीं महान है। यह आपका पोषण करता है। आपको शान्त करता है और सुरक्षा प्रदान करता है। ..... यह आपका पथप्रदर्शन करता है, दिशा-निर्देश देता है। सच्चे ज्ञान के रूप में यह प्रगट होता है।''

[चैतन्य लहरी २००६]

''आत्मसाक्षात्कार देना बहुत बड़ा काम है, बहुत भारी काम है, **केवल प्रेममय व्यक्ति ही इसे कर सकता है,** प्रेमविहीन व्यक्ति नहीं कर सकता। ....

.. मैं यदि सारे शरीर में भी प्रवेश कर जाऊँ, हर केन्द्र से चैतन्य प्रवाह कर दूँ तो भी यह आसान नहीं है, **परंतु यह तो आप लोगों और मेरे बीच मात्र प्रेम एवं स्नेह है जो मुझे अच्छा लगता है और जो सारे कार्य सारे परिश्रम को संपन्न करता है।**

..... जो प्रेम हमें परस्पर समीप लाया है वह अत्यंत संतोषप्रदायी है और इसी के कारण आप प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

[१५-१०-१९७९]

सच्चे प्रेम में महान शक्ति निहित है --

''यह प्रेम केवल एक शब्द नहीं है, प्रेम एक शक्ति है और उसका भंडार हमारे ही अंदर है। ..... वो सबके अंदर है और रिथत है। ..... प्रेम एक ऐसी शक्ति है जो सबको शांत कर सके, सबको आपस में जोड़ सके।..... और सबको स्वच्छ कर उनके अंदर आनन्द भर सके।..... सबसे बड़ी चीज़, सबसे बड़ा आपका धन जो है तो आपके अंदर प्यार का सागर है, उसको आप प्राप्त कीजिए।

सहजयोग का यही कार्य है। सहजयोग आपकी कुण्डलिनी जागृत करता है ..... **प्यार का सागर जो हमारे मस्तिष्क में, जो हमार सहस्रार में दबा हुआ है वो अब खुल गया, उससे संबंध हमारा हो गया, वह प्यार बह गया और उसके प्रवाह में हम बह गए।** जब यह घटित होता है तो कुछ कहना नहीं पड़ता, आदमी बदल जाता है, उसकी इंसानी मोहब्बत प्यार में बदल जाती है, वो एक दूसरा प्राणी हो जाता है।

मैं आपको बताती हूँ कि हमारी सारी समस्याएँ, विश्व की सभी समस्याएँ सच्चे प्रेम से सुलझायी जा सकती हैं।''

[२४-३-२००२]

''प्रेम ही सहस्रार की पूर्ण शक्ति है। ..... प्रेम ही महत्वपूर्ण है, सहज प्रेम। आत्मसाक्षात्कार के पूर्व जिस मस्तिष्क का प्रयोग विश्लेषण या आलोचना के लिए होता था अब वह प्रेम करना चाहता है। बहुत समय पश्चात सहस्रार खोला गया है। ..... हमें केवल यही सीखना है, यही जानना है कि सहजयोग

प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी नही।''

[६-५-२०००]

प्रेम ही मेरा संदेश है --

आप सहजयोगी हैं और एक सहजयोगी दूसरे सहजयोगी से प्रेम करता है, यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। आप सब सहजयोगी दुर्लभ लोग हैं।

आप सब एक ही देश के अंग-प्रत्यंग हैं - प्रेम देश के। ..... परस्पर प्रेम करने के लिए, अधिक से अधिक भाई बहन बनाने के लिए आप सहजयोगी बने हैं और अब सहजयोग में यह बात आप महसूस करते हैं कि आपके भाई-बहन सर्वत्र मौजूद हैं। **..... सहजयोग का अर्थ ही यह है कि हम सब एक हैं।**

परस्पर केवल प्रेम, प्रेम और प्रेम करें, मेरा यही संदेश है। ..... हमें परस्पर प्रेममय होना होगा, हमारे सभी कर्म हमारे प्रेम की अभिव्यक्ति मात्र होने चाहिए, कर्मकाण्ड नहीं, केवल प्रेम।

..... पूरे विश्व को परस्पर प्रेम करने के स्तर पर आना होगा, प्रेम के अतिरिक्त कोई समाधान नहीं है। और इस प्रेम में स्वार्थ नहीं होता, आनन्द होता है **और इसी आनन्द की अनुभूति आपने करनी है तथा अन्य लोगों को देनी है।**

..... परमात्मा के सृजन को यदि वास्तव में आप प्रेम करते हैं तो न तो घृणा होनी चाहिए और न युद्ध, केवल अच्छाइयाँ ही देखी जानी चाहिए जैसे एक माँ अपने बच्चे में देखती है। आपको चाहिए कि विश्व को परमात्मा द्वारा आपके लिए बनाई गई एक सुन्दर कृति के रूप में देखें।

..... सहजयोग एक वृक्ष की तरह है जिसे पानी के रूप में प्रेम की आवश्यकता है। ..... **आप लोगों से यदि प्रेम करें तो मैं सोचती हूँ कि सहजयोग स्थापित हो जाएगा।**

..... मानव को परमात्मा के दिए उपहारों में से प्रेम सबसे बड़ा उपहार है और व्यक्ति को चाहिए कि प्रयत्न करके इसे विकसित करे। ..... मानव के पास प्रेम सबसे बड़ा वरदान है। उसका उपयोग यदि आप करते हैं तो किसी

प्रकार की कोई समस्या नहीं होगी।"

[२४-६-२००७]

''मैं पूर्ण हूँ मुझे कोई समस्या नहीं है, फिर भी क्यों मैं इतना परिश्रम करती हूँ और क्यों अधिकाधिक सहजयोगी चाहती हूँ? यह क्या है? क्या आवश्यकता है? **आवश्यकता प्रेम की है, मुझमें इतना प्रेम है कि उसको प्रवाहित करना मेरे लिए आवश्यक है। ऐसा किए बिना मैं घुट जाऊँगी,** स्वयं से तो मैं प्रेम कर नहीं सकती अत: प्रेम को बाँटना आवश्यक है। इस कार्य के लिए आप लोगों की आवश्यकता है जो अन्य सब तक इस प्रेम को ले जाकर उन्हें प्रफुल्लित कर सके - यह मेरा स्वप्न है।

[२५-५-१९९७]

''मेरा प्रेम चैतन्य लहरियों के रूप में अविरल प्रवाहित हो रहा है। ..... ये चैतन्य लहरियाँ केवल प्रेम हैं, प्रेम ..... **माँ और बच्चे के प्रति वात्सल्य की भावना, प्रेम की भावना, यही भावना चैतन्य लहरियाँ हैं।''**

[८-८-८९]

''प्रेम की शक्ति को किसी ने आज़माया नहीं ..... यही शक्ति अणु-रेणु और मनुष्य के हृदय के हर एक स्पन्द में कार्य करती है। इसी प्रेम की शक्ति को Divine कहते हैं। ...

श्री शंकराचार्य ने साफ-साफ घोषणा की थी कि - 'इन्हीं चैतन्य लहरियों का आना ही परमात्मा को पाना है।''..... असल में आपके अन्दर तो यह शक्ति है ही, लेकिन वो कुंठित है। उसको स्वतंत्रता दे देना, उसको लिब्रेट करना यही कार्य सहजयोग करता है। यही liberation है यही मुक्ति है। (यही मोक्ष है)।''

[२७-३-७४]

मोक्षप्रदायिनी श्री माताजी के अथक प्रयासों से ही हम सब सहजयोगियों ने मोक्ष की यह अवस्था प्राप्त कर ली है। हमारे अंदर प्रेम की यह शक्ति चैतन्य लहरियों के रूप में निरंतर बह रही है। हम सब मिलजुल कर प्रेम से शांति पूर्ण आनन्दमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यही हम सबका मोक्ष है।

अध्याय 26

मैं ऋतम्भरा प्रज्ञा हूँ - भूत-वर्तमान-भविष्य की ज्ञाता

श्री माताजी ने सृष्टि के विषय में, भूतकाल की सारी घटनाओं का वर्णन विस्तार से किया है, वर्तमान में मानव के आन्तरिक परिवर्तन के महान कार्य का बीजारोपण किया और पूरे विश्व के लोगों को सामूहिक आत्मसाक्षात्कार देकर उसे परमात्मा के साम्राज्य का मार्ग बताकर वे चली भी गयीं। जाने से पूर्व श्री माताजी भविष्य में होने वाली घटनाओं और परिवर्तन के प्रति हमें सतर्क भी कर गईं और आश्वस्त भी।

यह कृतयुग है, इसके विषय में श्री माताजी ने बताया है कि -

"लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व (1970 से) सत्ययुग की क्रियाशीलता को दर्शाते हुए अन्तः कालीन 'कृतयुग' का आरम्भ हुआ। **कृतयुग आध्यात्मिक चेतना का अद्वितीय काल है क्योंकि इसमें परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति जिसे संस्कृत में ''परम-चैतन्य'' कहते हैं, सर्व साधारण मानव के स्तर पर गतिशील हो उठी है।** ..... हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि सहजयोग के माध्यम से किस प्रकार बिलकुल सर्व साधारण लोग भी पूर्ण सत्य एवं वास्तविकता के प्रति चेतन हो रहे हैं।.....

कृतयुग जब प्रकट होता है तो इसकी एक अन्य विशेषता भी है जिसके द्वारा बाह्य धर्मों का असत्य, सत्तारूढ़ लोगों के देश विरोध एवं बेईमानी की स्वतः ही पोल खुल जाएगी। झूठ-मूठ के सभी पैगम्बर एवं पंथ प्रमुखों की पोल खुल जाएगी तथा परमात्मा के नाम पर घृणा एवं असत्य फैलाने वाली संस्थाओं का कृतयुग में भंडाफोड़ हो जाएगा, क्योंकि **इस काल में सत्य स्वतः प्रकट हो जाता है।** सभी भ्रष्ट उद्यमी तथा झूठे गुरुओं का पर्दाफाश हो जाएगा।

कृतयुग की एक अन्य विशेषता यह है कि जब मानव अस्तित्व को नियमित करने वाले अन्तर्जात धर्मपरायणता के दैवी नियमों का पतन होगा तब पूर्ण सांसारिक ढाँचा, पूर्ण प्रकृति इसके विरुद्ध खड़ी हो जाएगी। और अनुरूप

क्षतिपूरक परिणाम होंगे।

अंग्रेजी में इसे ध्रुवत्व का नियम [The law of Polarity] और संस्कृत में 'कर्मफल' कहते हैं। इसका व्यावहारिक अर्थ यह है कि जैसा आप करेंगे उसका फल आपको भुगतना होगा।

तो इस कृतयुग में सभी लोगों को भूत या वर्तमान काल में किए गए सभी कर्मों का फल भुगतना पड़ेगा। यदि उन्होंने मानव अस्तित्व के सर्वसाधारण एवं शाश्वत धर्म के अनुसार अपना जीवन बिताया है तो वे शान्ति एवं संतोषमय जीवन का आनन्द लेंगे, परन्तु इसके विपरीत **यदि उन्होंने कोई अपराध किए हैं या धर्म के मध्य-मार्ग से व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से गिरे हैं, तो उन्हें इसी जीवन में इसका दंड भुगतना पड़ेगा।**

कृतयुग में कष्ट भुगतने के लिए बहुत कुछ हो सकता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है, परन्तु यह हमारे अपने ही कर्मों का फल है जिसको हमें भुगतना ही होगा।

● यदि लोग योग-वर्णित आत्मावस्था या **परमेश्वरी शक्ति से एकाकारिता प्राप्त कर लें तो निःसंदेह इन कष्टों से बचा जा सकता है। पूर्ण आध्यात्मिकता का मार्ग ही मानव जीवन का एक मात्र सुख-प्रदायक मार्ग है।** इसे स्वीकार किए बिना कृतयुग में पोल खुलने की ये अभिव्यक्ति तथा दण्डक्रम कर्मफल के माध्यम से घटित होता ही रहेगा। सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से लोग जो कष्ट भुगतेंगे वे उनके ही कर्मफल के अतिरिक्त कुछ अन्य न होंगे, वर्तमान में उन्हीं की इच्छाओं के फल मिलेगें।

[परा-आधुनिक युग]

● ''सभी ग़लत कार्य करने वाले लोगों का गला दब जाएगा, उनका पर्दाफाश हो जाएगा।..... आक्रामक और लालची लोग पूरी तरह से अनावृत हो जाएँगें, उन्हें नरक में डाल दिया जाएगा।''

[२२-४-२००१]

''पोल खोलने वाली शक्ति संचारित होगी। .....

इस शक्ति के कार्य करने का पहला तरीका 'अलक्ष्मी' कहलाता है

अलक्ष्मी अर्थात जब दण्ड मिलेगा तो लोग हैरान होंगे, दिवालिए हो जाएगें, उनके पास धन बिलकुल भी न रहेगा।''

[२१-३-२००१]

● ''पहले राक्षस हुआ करते थे, और आज भी आसुरी लोग हैं, **ये सब लोग केवल मारे ही नहीं जाएँगें सदा के लिए समाप्त कर दिए जाएँगे।** .... .. जो लोग कष्टदायी हैं, विनाशकारी हैं, विवादप्रिय हैं, ऐसे सभी लोग नष्ट हो जाएँगे, अपने आप ही वे नष्ट हो जाएँगे। आवश्यक नहीं है कि देवी ही उन्हें नष्ट करें।''

[८-१०-२०००]

● "विकास प्रक्रिया में भी बहुत से पौधे-पशु आदि मध्य में न होने के कारण नष्ट हो गए ..... **कुछ समय पश्चात हम देखेंगे कि तम्बाकू का परिसंचरण समाप्त हो जाएगा, बहुत से नशीले पदार्थों का परिसंचरण भी समाप्त हो जाएगा।** ये सभी तत्त्व हमारे अंदर एक प्रकार के क्रोध, विकास विरोधी एवं स्वतंत्रता विरोधी शक्तियों का रूप धारण कर सकते हैं।.....

आधुनिक काल में, जैसा हम देखते हैं, ये सब शक्तियाँ अत्यन्त सूक्ष्म रूप से कार्य कर रही हैं, ऐसे तरीक़े से जिसे मानव समझ नहीं पाते और इनमें फँसे रहते हैं। .....

अब एकादश रुद्र की विध्वंसकारी शक्तियाँ प्रकृति के विकास विरोधी, उत्क्रांति विरोधी और सृजनात्मकता विरोधी स्वभाव को सदा के लिए नष्ट कर देंगी।"

[८-१०-८८]

● "मैं आपको बता रही हूँ कि यह अंतिम निर्णय है, और यह अंतिम निर्णय वास्तव में इस बात का फैसला करेगा कि किसकी रक्षा की जानी चाहिए और किनको पूर्णतया नष्ट होना चाहिए। ..... मैं आपको चेतावनी देना चाहती हूँ - यदि आप अपने अन्तस में गहन नहीं उतरते .....और आप अपने परिवर्तन को नहीं अपनाते तो कुछ भी घटित हो सकता है।

[१४-७-२००१]

जिस समय कल्कि शक्ति का अवतरण होगा उस समय जिन लोगों में परमात्मा के प्रति अनुकंपा व प्रेम नहीं होगा या जिन्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं चाहिए होगा, ऐसे सभी लोगों का हनन होगा।

[निर्मला योग]

श्री माताजी सत्य साधको को आश्वस्त कर रही हैं -

''इस पक्ष के बावजूद भी वास्तविक गंभीर सत्य साधकों के लिए कृतयुग सुखद काल है। **कृतयुग में आत्म परिवर्तन के अद्वितीय अवसर हैं। उत्थान को प्राप्त करके ये सत्य साधक अत्यन्त महान आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त कर लेंगे।** कृतयुग के इस समय में परमेश्वरी करुणा एवं प्रेम की सर्वव्यापक शक्ति इस प्रकार गतिशील है कि अपने दोषों के फलस्वरूप कष्ट भुगत रहे लोग भी इस सर्वव्यापक शक्ति की गतिशीलता द्वारा कष्टों से मुक्ति पा सकते हैं।

..... यह अवस्था केवल उन लोगों के लिए है जिन्होंने उत्थान के माध्यम से आत्म-बोध की स्थिति प्राप्त कर ली है।''

[परा आधुनिक युग]

''सहजयोग द्वारा ही आपका उत्थान होगा। ..... कुछ समय पश्चात सहजयोग पूरे विश्व में छा जायेगा, विश्व भर में लोग सहजयोग को अपनाएँगे।''

[२५-४-१९९९]

''सारे संसार में जब सहजयोग फैल जाएगा तो सारी दुनिया की घृणा, वैमनस्य, दुष्टता सब नष्ट हो करके (मानव) शान्ति और आनन्द में विराजेगा। . ..... कारण और परिणाम से परे मनुष्य उस स्थिति में जाएगा जहाँ परमात्मा का साम्राज्य होगा, और परमात्मा के साम्राज्य में किसी चीज़ की कमी नहीं रहती।''

[१६-२-१९८५]

''आत्मसाक्षात्कार के माध्यम से सीधे ही स्वयं को अभिव्यक्त करने वाला परमात्मा का पावन ज्ञान नए युग के लिए एक नई प्रजाति की सृष्टि करने

में सशक्त रूप में सहायक होगा। ..... पूर्ण मानव जाति का नवीनीकरण एवं परिवर्तन किया जा सकेगा। **धर्म एवं धर्मपरायणता का एक बार फिर सम्मान होगा और मानव परस्पर एवं प्रकृति के साथ शान्ति एवं समरसता पूर्वक रह सकेगा।**''

[परा आधुनिक युग]

''नए युग में जब भिन्न देशों में योग प्रणाली की अभिव्यक्ति होगी तो प्रशासन उन्हीं के द्वारा चलाया जाएगा जिनके अंदर यौगिक शक्तियाँ होगी। यौगिक गहनता एवं गुण ही निर्णायक तत्त्व होंगे। वे एक ऐसा समाज बनाने में सक्षम होंगे जो उनकी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति कर सकें, लोगों को धन एकत्रित करने की आवश्यकता न होगी। ग़रीबी और रोग पूर्णत: समाप्त हो जाएँगे और उनकी उपस्थिति में समाज स्वस्थ, शान्त एवं क्रोध विहीन हो जाएगा।''

[१९८२ मराठी के अनुवादित]

श्री माताजी पूरे विश्वास के साथ कह रही हैं कि -

"संयुक्त राष्ट्र संघ को नियंत्रित करने के लिए उच्चतम परिषद का गठन चुने हुए श्रेष्ठतम सहजयोगियों द्वारा होना चाहिए क्योंकि उनमें सभी आवश्यक सदगुणों का प्राचुर्य है। वे नि:स्वार्थ है, करुणामय हैं और जाति, धर्म या राष्ट्रीयता के तनिक भी पक्षपात के बिना जनहित के प्रति समर्पित हैं। अत: वे सदैव अत्यन्त उचित एवं विवेकशील निर्णय लेंगे।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह होगी कि सहजयोगियों द्वारा बनाई गई यह सर्वोच्च परिषद विश्व भर में, केवल शब्दों से ही नहीं अपने कार्यों से भी सहजयोग का सन्देश सर्वत्र फैलाएगी। यह सन्देश पूर्ण मानव जाति को प्रेरित करेगा और एक नई शान्ति एवं न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था के प्रति विश्वस्त करेगा।

इस प्रकार सहजयोग ही आज की विश्व समस्याओं का एकमात्र समाधान है क्योंकि यह मानव हृदय का परिवर्तन करके एक नई अत्यन्त विकसित मानव

जाति के सृजन को सुनिश्चित करेगा।''

[परा आधुनिक युग]

भारतीय सहजयोगी बहुत ही भाग्यशाली हैं, श्री माताजी ने भारत देश के लिए बहुत ही महत्त्व पूर्ण भविष्यवाणी की है -

"भारत बहुत महान देश है, ये योग भूमि है - दिव्यता और चैतन्य लहरियों से परिपूर्ण। ..... एक दिन आएगा कि जब पूरा विश्व इस योग भूमि की पूजा करेगा।

[१७-४-२०००]

"एक दिन ऐसा आएगा जब सभी को योग प्राप्त होगा, उस समय सारी दुनिया इस देश के चरणों में झुकेगी।"

[२७-९-१९७९]

"भारतवर्ष में ही विश्व की कुण्डलिनी बैठी हुई है और यदि भारतवर्ष हमारा ठीक हो जाए तो सारा संसार ही ठीक हो जाएगा। और विश्व का सहस्रार भी यहीं (भारत वर्ष में) बैठा हुआ है इसीजिए मुझे हज़ार हिन्दुस्तानी चाहिए जो रियलाइज़ेशन दे पायें।"

[२१-३-२००२]

ममतामयी श्री माताजी सहजयोगियों की रक्षा हर पल कर रही हैं और भविष्य में करती रहेंगी -

● हर कदम पर हर स्थल पर मैं आपके साथ हूँ, सर्वत्र। कहीं आप चले जाएँ, हर स्थान पर मैं आपके साथ हूँ - पूर्णतया व्यक्तिगत रूप से, हर प्रकार से दिलोदिमाग़ से। जब भी आप मुझे याद करेंगे तो अपनी पूरी शक्तियों के साथ आपके पास हूँगी। यह मेरा वचन है।

[२७-५-१९७६]

● जब आप मुझसे पूर्णत: एकरूप होते हैं, तब मैं आपके लिए, आपके बच्चों के लिए, आपकी हर चीज़ के लिए ज़िम्मेदार हूँ। मैं आपकी उत्क्रांति के लिए सुरक्षा के लिए, सभी नकारात्मकताओं से आपकी रक्षा करने के लिए

ज़िम्मेदार हूँ।

[६-६-१९९३]

"आप विश्वस्त हों। ... ... सतयुग का सूर्य क्षितिज पर आ गया है। ... ... इस सतयुग में सत्य का जो स्वरूप है वो पहला प्रकाश है, दूसरा सत्य है, तीसरा प्रेम और चौथा मन की शान्ति।"

विश्व-शांति की मसीहा-
श्री माताजी

(विश्व-कल्याण का एकमात्र मार्ग-सहजयोग)

विश्वधारिणी, मंगलकारिणी श्री माँ

"शांत वीरों की एक प्रजाति का सृजन किया जा चुका है। मैं तो केवल इतनी आशा करती हूँ कि इस प्रजाति का विस्तार हो और लोग शांत होकर अपने दिव्य कार्यों द्वारा विश्व में शांति प्रसारित करें।"

[परा आधुनिक युग]

"विश्व को सहजयोग की आवश्यकता है।""

[परम पूज्या श्री माताजी २१-३-२००३]

अध्याय 27

श्री माताजी ने सहजयोग के गूढ को सरल, व्यावहारिक एवं अनुभवगम्य किया

सहजयोग आज मानव जीवन की आवश्यकता है। प्रत्येक सहजयोगी को इसे गंभीरता से लेना चाहिए। **श्री माताजी ने इसके विषय में बहुत ही सूक्ष्मता से सब कुछ समझा दिया है** -

"यह सारा ज्ञान आपको परमात्मा से प्राप्त होता है और यह पूर्णतया पावन ज्ञान है, न तो इसे बदला जा सकता है और न इसे चुनौती दी जा सकती है। यह स्थायी है, ज्ञान का अविरल प्रवाह यह जड़ों का सूक्ष्म ज्ञान है।"

[सहजयोग]

''सहजयोग जन्म से ही मनुष्य के अन्दर परमात्मा द्वारा निर्धारित एक व्यवस्था है। यह व्यवस्था परमात्मा ने इसलिए की है कि मनुष्य सर्वव्यापी चेतन शक्ति से परिचित हो जाये और उसे आत्मसात कर ले, अपने अंदर पूरी तरह समा ले। सहजयोग एक मार्ग है, यह मनुष्य को उच्च आध्यात्मिक अवस्था तक पहुँचने का एक ईश्वरीय तरीक़ा है।''

[१-६-१९७२]

''सहजयोग हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। 'सहज' का मतलब होता है सह + ज, 'सह' माने 'साथ' और 'ज' माने 'पैदा हुआ', मनुष्य के साथ पैदा हुआ। परमात्मा से योग का यह अधिकार हमारे साथ ही पैदा हुआ है। हर एक मनुष्य का अधिकार है कि वह इस योग को प्राप्त करे।''

[सहजयोग]

"'सहज' माने होता है सरल, एफर्टलेस यानी अकस्मात होने वाली चीज़ है। यह एक जीवन्त घटना है जैसे हमारा जन्म लेना, जैसे बच्चे का माँ के गर्भ में रहना, जैसे पेड़ों पर फूलों का लद जाना, फलों में परिवर्तित होना, उसी प्रकार यह बड़ी भारी सहज घटना है, नैसर्गिक घटना है, हमारी उत्क्रांति की

चरम सीमा है।''

[सहजयोग]

"सहजयोग बुद्धि की नहीं, हृदय की चीज़ है, यह बौद्धिक स्तर पर कार्य नहीं करता, यहाँ सभी कुछ हृदय से होता है। हृदय की गहराई में परमात्मा को पाने की शुद्ध इच्छा होनी चाहिए।"

"सहजयोग को कार्यान्वित करना पड़ता है, उसे सोचना नहीं पड़ता। विचारों के माध्यम से आप जो भी सोचने का प्रयत्न करें सहजयोग में कोई सफलता प्राप्त नहीं कर पायेंगे, आपको अपने हाथों का उपयोग करना है।"

[१८-१-८३]

"सहजयोग मस्तिष्क से समझा जाना चाहिए और हृदय से उसका अभ्यास होना चाहिए।"

[सहजयोग]

"सहजयोग अति व्यावहारिक है क्योंकि यह पूर्ण सत्य है, इसमें कोई बनावटीपन नहीं है। ..... सहजयोग में हमें घर-गृहस्थी का त्याग नहीं करना और न ही ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करना है, घर में रह के ध्यान-धारणा आदि करना बहुत आसान है। ..... अपनी प्रगति के लिए नियमित रूप से सहज ध्यान-केन्द्रों में जाकर सामूहिक ध्यान करना सहजयोगियों के लिए अति आवश्यक है।

"सहजयोग वैसे तो बहुत सहज है, सहज में ही प्राप्ति हो जाती है पर फिर भी इसको सँभालना बहुत कठिन है, क्योंकि हम हिमालय में तो नहीं रह रहें हैं जहाँ और कोई वातावरण नहीं है, सिर्फ आध्यात्मिक वातावरण है। हर तरफ के वातावरण में हम रहते हैं उसी के साथ-साथ हमारी भी उपाधियाँ बहुत सारी हैं जो हमें चिपकी हुई हैं, तो सहजयोग में शुद्ध बनना और शुद्धता लाना यह कार्य हमें करना पड़ता है।"

[२७-११-१९९१]

"सहजयोग में हमें अपने विचारों को लगातार देखते रहना होगा कि कहीं हम ढोंग तो नहीं कर रहे हैं, अपने को धोखा तो नहीं दे रहे हैं। हमारी ग़लत

सोच से कुंडलिनी नीचे आ जायेगी इसीलिए हमें अपने प्रति हमेशा ईमानदार रहना होगा।"... ... स्वयं को सुधारना होगा। सारा अन्तरवलोकन अत्यन्त शुद्ध हृदय एवं सूझ-बूझ के साथ किया जाना चाहिए। आप लोग अवतरण नहीं हैं जो जन्मजात शुद्ध होते हैं, आप मानव हैं और आप अवतरणों के स्तर तक उन्नत हो रहे हैं, अत: आपको शुद्धिकरण करना होगा।"

[८-७-२००१]

"सहजयोग कोई साधारण संस्था नहीं है, यह आत्मज्ञान की साधना है, पूरी आस्था और विनम्रता से इसमें जमे रहें... ... सहजयोग में प्राप्ति इतनी सहज में हो जाती है कि उसके प्रति लोग कैज़ुअल रहते हैं... ... इसमें कैज़ुअल नहीं चलेगा। खाते-पीते, उठते-बैठते जैसे श्वास चलती है हर श्वास के साथ सहजयोग प्रस्थापित करना होगा, यह समझ लीजिये आप। यह दूसरी बात भी बता दूँ आपको कि बग़ैर सहजयोग के आपका कोई व्यक्तित्व है ही नहीं। अब उसके बग़ैर आपका निख़ार भी नहीं, उसके बग़ैर आपका कोई स्थान भी नहीं"

[२५-११-७५]

"सहजयोग में हमें अत्यन्त गरिमामय आचरण करना चाहिए जो हमारी शैली और हमारी परंपरा के अनुरूप हों। सहजयोग परंपरा यह है कि हम लोगों से अत्यन्त सभ्य, मधुर स्नेहमय एवं प्रोत्साहित करने वाले ढंग से व्यवहार करें। आपके चरित्र में शक्ति की अभिव्यक्ति होनी चाहिए।"

[२२-३-८४]

"श्री माताजी आपके जीवन में होनी चाहिए, आपके व्यवहार, अभिव्यक्ति तथा आचरण में होनी चाहिए, एक दूसरे को समझने में परस्पर प्रेम में, होनी चाहिए।... ... आपका श्री माताजी के प्रति विश्वास आपके व्यक्तित्व से झलकना चाहिए, इस विश्वास को कार्य करना चाहिए तथा परिणाम दिखाने चाहिए।"

[९-१२-९१]

"सहजयोग में स्वयं को प्रेम के अविरल प्रवाह के रूप में देखना है।... ... आप अपने मन से पूछें- मेरी शुद्ध इच्छा क्या है? मेरा लक्ष्य क्या है? मैं सहजयोग में क्यों हूँ? ... ... हमें समझना है कि हम जिस सागर की बूँद बन रहे

है वह प्रेम का एक शुद्ध सागर है, अत: हमें ऐसा कुछ नहीं करना जो इसे विषाक्त करे या निराशामय बनाये। कभी-कभी तो यह पूरे समुद्र की छवि को विकृत कर सकता है, इसलिए हमें शालीन और मर्यादित होना है।"

[जुलाई १९८५ कबेला]

"आपको अपनी डिसिप्लीन (मर्यादा, अनुशासन) अपने अंदर करनी है। सहजयोग का अपना अंदरूनी डिसिप्लीन है, उसकी अपनी डिसिप्लीन अंदर से आने दो, अंदर से उसे जागने दो। उसके डिसिप्लीन में उतरना सीखो, उसके इशारे, उसके क्षेत्र में बँधना सीखो। उसका यंत्र चल रहा है, अपना कुछ मत बनाओ..... संसार का एक पत्ता भी उसकी डिसिप्लीन के बग़ैर नहीं चल सकता ..... उसकी Harmony में चलो, उसके साथ Harmonise कर लो पूरी तरह से।

..... सहजयोग की हर गति में सौन्दर्य होना चाहिए। ..... सहजयोग बहुत ही अनमोल चीज़ है।"

[२५-११-७५]

"आज सहजयोग एक ऊँचाई पर आकर टिका है, ये महायोग है। एक बार जब आप इसे प्राप्त कर लेते हैं तो आपको अन्य कुछ करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। ... ... जिस अवस्था को प्राप्त करने के लिए लोगों को हज़ारों वर्ष कार्य करना पड़ता था, वो आपको सहज ही प्राप्त हो गयी है।"

[२५-७-७९]

इस पृथ्वी पर मानव सृजन की पराकाष्ठा है "सहजयोग" ज्ञान की पराकाष्ठा है और सहजयोगी विकास की पराकाष्ठा है।

"इस अँधेरी दुनिया में आप लोग दीपक सम हैं, बड़ी ज़िम्मेदारी है आपकी। ..... अपने प्रकाश से अपनी ज्योति से आप पूरे विश्व का अंधकार दूर कर दें।" .....

"आप अपने समाज, अपने देश और फिर पूरे विश्व को परिवर्तित कर सकते हैं।"

[श्री माताजी]

अध्याय 28

एक नए दिव्य समाज के निर्माण हेतु श्री माताजी के ठोस सुझाव

विश्व में सारी उथल-पुथल एवं समस्याओं का कारण मनुष्य ही है, इसीलिए श्री माताजी ने सर्वप्रथम मनुष्यों का आत्म परिवर्तन कर उन्हें जागरूक सहजयोगी बनाया। श्री माता जी ने मानव मनोविज्ञान का बहुत सूक्ष्मता से अध्ययन किया था –

"चारित्रिक हीनता, दरिद्रता, हिंसा, भ्रष्टाचार और मनुष्य की निजी विध्वंसक आदतें जैसे शराब और नशाखोरी और फिर पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएं, आर्थिक शोषण एवं आक्रामकता, संकीर्ण राष्ट्रवादिता, धार्मिक रूढ़िवाद तथा युद्ध रूपी महान विपत्ति – आधुनिक मनुष्य की ये घातक बुराइयाँ हैं। ..... **हम एक नए दिव्य समाज की सृष्टि कर रहे हैं जो अंततः मानव रचित सामूहिक समस्याओं का निदान करेगा।**''

[एक पत्र - २१-८-१९९०]

ये सहजयोगी ही दैवी योजना के माध्यम हैं, ये श्री माताजी के आयुध हैं। अब श्री माताजी पूर्ण निश्चिन्त हैं कि सहजयोगी विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए पूरी तरह सक्षम हैं, वे समर्थ हैं और उन्हीं के द्वारा विश्व में पुनः सत्ययुग का सूर्य चमकेगा।

श्री माताजी ने विश्व की सभी सामयिक समस्याओं को दूर करने के लिए सहजयोगियों को आवश्यक निर्देश दिए हैं –

१. लोगों को आत्मसाक्षात्कार देकर उनका आध्यात्मिक विकास करें – ''जैसा सब लोग जानते हैं कि युद्ध का आरम्भ सेना तथा राजनैतिक शासकों के मन में होता है क्योंकि ये लोग धन और सत्तालोलुप होते हैं। युद्धों को रोकने तथा विश्व शान्ति को प्रोत्साहन देने का एकमात्र मार्ग सत्तारूढ़ लोगों के हृदय परिवर्तन के लिए कार्य करना है और इनकी मानसिक सोच को ऊपर उठाना है

ताकि ये लोग सत्ता एवं धन लोलुपता को छोड़ कर धर्म परायणता के मार्ग को अपना लें।

..... जिन जर्मन लोगों ने यहूदियों की हत्याएँ की थीं और उन्हें नष्ट करने का प्रयत्न किया था, वे आज सहजयोग बताकर उन्हें आत्मसाक्षात्कार के आशीर्वाद द्वारा आध्यात्मिक रूप से विकसित मानव में परिवर्तित होने में सहायता कर रहे हैं।"

[परा आधुनिक युग]

२. अपनी दिव्य शक्तियों को कार्यान्वित करें -

● सामूहिक चेतना बहुत ही प्रभावशाली होती है ..... जिन जिन मामलों में बड़ी समस्याएँ हैं उन पर आपने केवल सामूहिक रूप से ध्यान करना है।

[२५-४-९९]

● आप लोग यदि निर्णय कर लें कि आप माफिया से नहीं डरेंगे और अपनी ध्यान-धारणा के दौरान यदि आप यह माँगेगे कि "श्री माताजी यह माफिया समाप्त हो जाए" तो मैं आप को वचन देती हूँ कि माफिया समाप्त हो जाएगा।

[१७-९-९५]

● आप ध्यान में जाकर बंधन दें। ..... बंधन इतनी तीव्रता एवं सुंदरतापूर्वक कार्य करता है कि आप विस्मित रह जाते हैं।

[१०-७-९५]

● अब आपकी प्रार्थना का एक एक शब्द बाकी लोगों की एक हज़ार प्रार्थनाओं से कहीं अधिक शक्तिशाली है। आप अत्यन्त शक्तिशाली हैं और जो भी इच्छा करते हैं, पूर्ण होती है। ..... आप जो भी चाहे पा सकते हैं, पर आपको प्रार्थना करनी पड़ती है, आपको माँगना पड़ता है। ज्यों-ज्यों आप विस्तृत होंगे आपकी प्रार्थना भी उतनी ही विस्तृत होगी, पूरे क्षेत्र के हित में, पूरे विश्व के हित के लिए।

[१-३-९२]

"आप सब सामूहिक रूप से विश्व की किसी भी बड़ी समस्या को साक्षी रूप से देखें, बस समस्या समाप्त हो जाएगी, वह रह ही नहीं सकती। आप लोग बहुत ही शक्तिशाली हैं, आप अपनी शक्तियों का उपयोग करें। आपकी शक्तियों के समक्ष ये लोग जो **अपनी राजनैतिक गतिविधियों से पूरे समाज पर छा जाने का प्रयत्न कर रहें है, वो सब लुप्त हो जाएगें उनमें शक्तियाँ नहीं है, वे नष्ट हो जाएगें।**

[५-५-२००२]

● **पर्यावरण संबधी समस्याओं में भी सहजयोग बहुत सहायक है।** ..... पर्यावरण का मुक़ाबला करने का एकमात्र तरीक़ा है पर्यावरण के प्रति चित्त देना। ... ... मैं एक बात जानती हूँ कि जहाँ भी सहजयोगी होंगे **जहाँ चेतन्य लहरियों के कारण पर्यावरण संबंधी समस्या का समाधान हो जाएगा।** प्रदूषण रहित छोटी मशीनों द्वारा बनाए गए वस्त्र हमें धारण करना चाहिए।''

[२७-१२-१९९४]

● ''मशीनों के अत्यधिक प्रयोग से ही वातावरण दूषित हो गया है, **उसका इलाज़ ही यह है कि आप कलात्मक चीज़ों की ओर बढ़ें। आत्म साक्षात्कारी मनुष्य कोई कलात्मक चीज़ बनाता है तो उसमे से भी चैतन्य आने लगता है।** सुंदर होने के साथ ऐसी कृति में एक तरह की अनंत शक्ति है, हाथ से बनी चीज़ों से चैतन्य बहता है।''

[४-४-१९९२]

''आप यदि चैतन्य दें तो सर्वसाधारण गाय भी बहुत सा दूध देगी।''

[९-७-८५]

३. पंचतत्त्वों का महत्व समझकर उनका उपयोग करें -

● "पृथ्वी माँ का सम्मान किया जाना चाहिए इसका अर्थ है पृथ्वी की गति से समुद्र द्वारा पंचभूतो द्वारा जो भी पृथ्वी पर सृजन हुआ है उसका सम्मान किया जाना चाहिए।..... पृथ्वी माँ का हर सूक्ष्म अणु-परमाणु विवेकशील है। पृथ्वी माँ हमारे सम्मुख आदिशक्ति का सर्वोत्तम प्रतिबिम्ब है अत: पृथ्वी माँ का

सम्मान करना हमारी प्रथम आवश्यकता है। ..... यदि पृथ्वी माँ का सम्मान न होगा तो भूचाल आ सकता है।"

..... "ध्यान-धारणा के लिए यदि आप पृथ्वी माँ पर बैठोगे तो अत्यन्त अच्छा होगा क्योंकि पृथ्वी माँ का एक विशेष गुण यह है कि मेरी तरह से वे भी आपकी समस्याओं को सोखती रहती हैं।"

[२५-५-९७]

"पृथ्वी माँ पर बैठ कर श्री गणेश अथर्वशीर्ष पढ़ो तथा श्री गणेश का ध्यान करो, आपकी सभी समस्याओं का अंत हो जाएगा।"

[२६-८-९०]

''पृथ्वी माँ से अबोधिता का तत्त्व आता है। पृथ्वी माँ अबोध है।''

[२७-३-९३]

''पृथ्वी माँ श्री गणेश की माँ हैं, हमें माँ की देखभाल करनी है, पृथ्वी माँ को गरिमा देनी है, उसे सुंदर बनाना है। पृथ्वी माँ का दुरुपयोग अत्यंत ग़लत है। ... ... पेड़ पृथ्वी माँ का सौन्दर्य हैं, सारी हरियाली सारी चीज़ें पृथ्वी माँ का सौन्दर्य है, इसे नष्ट न करें।''

[२५-९-९९]

● आप यदि जल को चैतन्यित करके पौधों को सीचेंगे तो थोड़े से समय में ही आपको दस गुनी फसल प्राप्त हो सकती है।

[९-७-८५]

● कैंसर का सर्वोच्च उपचार जल है, अर्थात् पैरो को नदी, समुद्र या घर में फोटोग्राफ के सम्मुख बैठ कर जल में डालना है, स्वच्छ करना जल का धर्म है, शनैः शनैः रोगी की गर्मी शान्त हो जाएगी।

[एक पत्र १९८२ से]

● सामूहिक हवन का आयोजन करें और अग्नि तत्त्व में सामूहिक रूप से विश्व की समस्त समस्याओं को 'स्वाहा' करें।

४. समन्वित परिवार बनाएँ, एक धर्म अपनाएँ -

''जब आप एक अच्छा परिवार बनाते हैं तो वास्तव में आप एक

अत्यन्त सुन्दर विश्व बनाते हैं।''

[२९-१०-२०००]

''परिवार का एक घरौंदा बनाए एक अच्छा पारिवारिक घर अपनाने, समझौता करने और समन्वय करने का प्रयत्न करें। ..... परिवार में शांति स्थापित करें क्योंकि बहुत सी महान आत्माएँ पृथ्वी पर जन्म लेना चाहती हैं। अत: आप पारिवारिक जीवन, समन्वित परिवार और उचित संबन्ध प्राप्त करने का प्रयत्न करें।"

[२२-३-७७]

"सहजयोग में हम अन्तर्राष्ट्रीय सामूहिक विवाह करवाते हैं ये ब्रह्म ऐक्य विवाह हैं। ..... सहजयोग में विवाह बहुत शुभ हैं ..... क्योंकि विवाह को परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त होता है ..... अच्छा परिवार बनाना हमारी आवश्यकता है क्योंकि अच्छे परिवारों में ही आत्मसाक्षात्कारी बच्चे जन्म लेंगे और सहजयोग सार्वभौमिक बन जाएगा।"

● बच्चों की शिक्षा प्रणाली में सुधार की बहुत आवश्यकता है, शिक्षा-नीति नैतिक मूल्यों पर आधारित हो, प्रारंभ से ही बच्चों के आध्यात्मिक विकास पर ध्यान देना चाहिए।

● श्री माताजी ने धार्मिक कट्टरता व साम्प्रदायिकता को समाप्त करने के लिए एक ''विश्व निर्मल धर्म'' अपनाने का आग्रह किया है। ..... ''सहजयोगी विश्व निर्मल धर्म में विश्वास करते हैं उसमें सारे ही धर्म समाहित हैं। .....वे सभी धर्मों को मानते हैं ..... सभी अवतरणों की पूजा करते हैं। सहजयोग में सबको जोड़ने की बात है, तोड़ने की नहीं।"

[२५-३-१९९२]

एक-एक सहजी को जोड़कर जगज्जननी श्री माताजी ने विश्व में एक स्नेह भरा 'सहजी परिवार' बना दिया है, वे जानती हैं कि उनके सहजयोगी बच्चे ही पूरे विश्व को परिवर्तित करेंगे। बहुत ही भावपूर्ण शब्दों में उन्होंने अपने हृदय के उद्‌गार व्यक्त किए हैं -

"मेरे बच्चों! मैंने अपना कार्य कर दिया है, आप सबको आत्मसाक्षात्कार

दे दिया है, आपको सारा कुछ बता दिया है, सभी कुछ वर्णन कर दिया है, प्रेम का सागर दे दिया है और अब आपको अपना एवं पूरे विश्व का पोषण करना होगा इसके लिए आप सबको आंतरिक रूप से अभी और शक्तिशाली बनना होगा। .....

..... यह कलियुग है। एक प्रकार के भिन्न प्रकार का युद्ध होने वाला है। यद्यपि विश्व में ऐसा पहले कभी घटित नहीं हुआ फिर भी यह शांत लोगों का युद्ध होगा। शांत लोग जीवन के हर क्षेत्र में सफल होते हैं।''

''शांत वीरों की एक प्रजाति का सृजन किया जा चुका है, मैं तो केवल आशा करती हूँ कि इस प्रजाति का विस्तार हो और लोग शांत होकर अपने दिव्य कार्यों द्वारा विश्व में शांति प्रसारित करें।''

[परा आधुनिक युग]

''**विश्व को सहजयोग की आवश्यकता है।** ... ... मानव-विकास, मानव-उत्थान और सभी प्रकार की उन्नति जो हमने की है, सहजयोग उन सबकी पराकाष्ठा है। निश्चित रूप से ये विश्व को तथा मानव की सूझ-बूझ को परिवर्तित कर देगा।''

[२१-३-२००३]

''सबसे प्रेम करें। मैं आपको बताती हूँ कि हमारी सारी समस्याएँ, विश्व की सभी समस्याएँ सच्चे प्रेम से सुलझायी जा सकती हैं।''

[२४-३-२०००]

अध्याय 29

विश्व में पूर्ण शांति की स्थापना ही श्री माताजी का एकमात्र स्वप्न

सारे विश्व में शांति स्थापित करना पूज्या श्री माताजी का स्वप्न है।

"वास्तव में मैं आप सभी सहजयोगियों को विश्व परिवर्तन के लिए जी जान से कार्य करते हुए देखना चाहती हूँ। विश्व का परिवर्तन होना ही चाहिए। आप ही लोग, कोई अन्य नहीं संसार को बचा सकते हैं। ..... आज विश्व की, मानवता की रक्षा करना हमारा मुख्य कार्य है ..... हमें केवल यही कार्य करना है।"

[३-६-२००१]

"हर सहजयोगी का यह कर्तव्य है कि वह जाने कि सारी दुनिया आपकी तरफ आँख लगाए बैठी हुई है, और आप अपने गौरव को पहचानें। पूरा विश्व आपकी ओर देख रहा है ..... सबसे बड़ी चीज़ आपकी माँ की आशा है कि आप पूरे विश्व का उद्धार करेंगे।''

[१२-२-१९८४]

''अब आपका ब्रह्माण्डीय अस्तित्व है, अब आप बनावटी संबंधो से नहीं, आध्यात्मिक संबंधो से जुड़े हुए हैं।"

"एक भयानक विश्व की सृष्टि हो चुकी है और हमने ही इसे परिवर्तित करना है। यह अति कठिन कार्य है, इसके लिए आपको अत्यन्त सच्चाई से कार्य करना होगा।" .....

[१२-६-१९९८]

आपको क्या करना चाहिए? किस प्रकार आपको सहायता करनी चाहिए? आपका क्या योगदान है? पूज्या श्री माताजी ने स्वयं बहुत सारी योजनाएँ कार्यान्वित की हैं जिसमें कार्य करने के लिए वे सहजयोगियों को निरंतर प्रेरित

करती रहीं।

"अपने पूरे जीवन में मैं समाज सेवक रही हूँ और आज भी समाजवादी हूँ। **मेरे मन में सदैव एक इच्छा थी कि सहजयोगी समाज सेवा करें।** ..... हमें समाज में रहकर, सहजयोग को फैलाना है और इस तरह से विश्व में एक विशेष सहज समाज बनाना है। इस सहज समाज में वो ही करना चाहिए कि जो सारे संसार का उद्धार कर सकता है।

..... इस सामाजिक रूप में हर तरह का पहलू हमें पहचानना है। जहाँ-जहाँ लोगों को तक़लीफ है मैंने कम से कम ऐसे सोलह प्रोज़ेक्ट बनाए हैं जिसमें औरतों की मदद करना, बच्चों की मदद करना, बीमारों की मदद करना, बूढ़ों की मदद करना और खेतिहर लोगों की मदद करना आदि **अनेक ऐसे प्रोज़ेक्ट बनाए हैं जिसमें सहजयोग कार्यशील है।**

..... हमारी अनेक परियोजनाएँ भारत तथा अन्य देशों में आरंभ हो चुकी हैं, ये सब मनुष्य को बंधन मुक्त करने के लिए हैं। ..... हमें सार्वभौमिक बंधन-मुक्ति प्राप्त करनी है, यही मेरा स्वप्न है।

[२०-१०-२०००, २६-३-२००१]

''आरम्भ में जो भी कार्य मैने किए चुपके चुपके किए परंतु कुछ लोग इसके विषय में जानते थे। ये सब कार्य करने आवश्यक थे और व्यावहारिक रूप से अब ये सभी स्थान समर्पण के लिए तैयार हैं। आरंभ में इनके समर्पण न किए जाने का कारण ये था कि मैं देखना चाहती थी कि ईमानदार लोग हों जो ईमानदारी से कार्य कर सकें।.....

यद्यपि गणपति पुले, अस्पताल, धर्मशाला स्कूल जैसे बहुत से स्थान मैं समर्पित कर चुकी हूँ परन्तु अब मैं कई अन्य स्थान भी भेंट करना चाहती हूँ। मैं नहीं जानती थी कि काना जौहरी (अमेरिका) में जो भूमि इन्होंने खरीदी है वो भी मेरे नाम में है। इसके विषय में जब मैने सुना तो मैं बहुत हैरान हुई। इससे कोई आय नहीं होती। वहीं का वहीं मैंने निर्णय लिया कि यह भूमि अमेरिका के लाइफ-इटरनल-ट्रस्ट की सामूहिकता को दी जाये..... इटली में भी मेरे पास

बहुत अच्छी भूमि और घर है जिसे मैं सहजयोग को भेंट करना चाहती हूँ। इसके अतिरिक्त डालियो नामक स्थान भी मैं इटली की सामूहिकता को देना चाहती हूँ। इटली के सहजयोगियों को मैंने बहुत अच्छा, ईमानदार और समर्पित पाया है। इसी प्रकार से भिन्न स्थानों पर मैंने कोई भूमि खरीदी है या कोई इमारत बनाई हैं तो वह सब मैं सहजयोग को भेंट करना चाहूँगी।

एक और खुशख़बरी है कि मैंने हिमालय की तलहटियों में एक बहुत बड़ी भूमि ख़रीदी है। मेरे विचार से 55 या 56 एकड़ भूमि। इसके अतिरिक्त एक और भूमि मैंने ख़रीदी है जहाँ पर आप खेती कर सकते हैं या जहाँ पर आप दुर्लभ जड़ी बूटियाँ उगा सकते हैं जिनसे रोग पीड़ित दुखी लोगों के लिए सस्ते दामों पर दवाइयाँ बनाई जा सकें। बहुत सी परियोजनायें आरंभ हुई और वो सब आगे बढ़ रही हैं।

आप लोगों को इनमें रुचि लेनी चाहिए। ये जानकर मुझें बहुत प्रसन्नता हुई कि अनाथालय शुरू करने के लिए एक सहजयोगिनी अमरीका गई। ये बहुत अच्छा विचार है। अनाथ बच्चों के विषय में सोचें, निराश्रित महिलाओं के विषय में सोचें, उन लोगों के विषय में सोचें जो कैंसर आदि भयानक रोगों से पीड़ित हैं और जिन्हें हम ठीक कर सकते हैं, इसलिए मैंने एक अस्पताल आरम्भ किया है और अब दिल्ली में भी मैं एक अस्पताल शुरू करने वाली हूँ।

..... सारी सामाजिक सेवायें सहजयोगियों को बंधन मुक्त करने के लिए हैं। सहजयोग में कार्य करने के लिए आपको निर्लिप्त होना पड़ता है। ..... निर्लिप्सा का अर्थ है कि आपके पास सभी कुछ हो फिर भी आप निर्लिप्त हों अर्थात इससे अपने लाभ के विषय में ही न सोचें।

समस्या ये है कि सहजयोगी समाज सेवी कार्यों के लिए धन भेंट नहीं करते। ... ... मैं आपसे अनुरोध करती हूँ कि कंजूस न बनें, थोड़े से उदार हो जाएँ। ये उदारता हमारे विश्व के सभी सामाजिक पहलू के प्रति होनी चाहिए, इसके लिए ध्यान दिया जाना महत्त्वपूर्ण है।.....

हमें कुण्डलिनी जागृति के परिणाम दिखाने होंगे, कुण्डलिनी जागृति

केवल आप सहजयोगियों के लिए ही नहीं है, ये पूरे विश्व के लिए है। **ये मेरा स्वप्न है और इस स्वप्न के अनुसार मैं अपना कार्य करती जा रही हूँ और अब जैसा आप सब जानते है मैं ये ज़िम्मेदारी आप सब पर छोड़ती हूँ।**

[लास एंजिल्स २९-१०-२०००, चैल. २००१ मई-जून]

''**अब हमें दूसरे लोगों के लिए जीना है।** ..... भारत में हम लोग जेलों में, सेना में सहजयोग कार्यान्वित कर रहे हैं, आप भी इन सभी प्रकार की गतिविधियों में प्रवेश कर सकते हैं, सभी आक्रांत स्थानों पर जाकर सहजयोग द्वारा उनकी रक्षा कर सकते हैं।.....

..... **सहजयोगियों को अब दूसरों के लिए जीवित रहना होगा अपने लिए नहीं। सेवा से ही उन्हे सारी शक्ति, सारा आश्रय सारे आशीर्वाद प्राप्त हो जाएँगे।**''

[काना जौहरी २०-६-९९]

"विश्व के कोने कोने में जन-जन तक सहजयोग पहुँचाना हमारे आध्यात्मिक उत्थान का अन्तिम लक्ष्य है। ... ... मुझे आशा है कि मेरा अवतरण व्यर्थ नहीं हुआ है। परमात्मा ने आपको अपने पदों पर आरूढ़ कर दिया है, और अब आप ज़िम्मेदार हैं, इसीलिए परमात्मा ने आपको पृथ्वी पर जन्म दिया है... . .. आपको इस पृथ्वी पर दिव्य स्वर्ग का सृजन करना है।"

[प.पू.श्री माताजी]

"मानवीय स्तर पर यदि देखा जाए तो मेरा जीवन बहुत संघर्षमय एवं कठोर रहा परन्तु सहजयोगियों का सृजन, उनकी बातों को सुनना और उनसे बातचीत करना मेरे लिए आनंददायी था। वे कितने मधुर करुणा एवं सम्मानमय हैं। आपके इन गुणों ने मेरी बहुत सहायता की इसके लिए मैं आपके प्रति आभार प्रगट करती हूँ। आपके प्रोत्साहन आपकी सहायता और आपकी सूझ-बूझ से मैं ये सब कार्य सम्पन्न कर सकी। मैं स्वयं यदि इस कार्य को कर सकती तो कभी आपकी सहायता न माँगती परन्तु आप लोग तो मेरे चक्षुओं और बाज़ुओं जैसे हो। मुझे आप सबकी बहुत ज़रूरत है क्योंकि आपके बिना मैं यह कार्य नहीं कर सकती। ये तो माध्यम बनाने जैसा है, आपके यदि माध्यम ही

नहीं है, आपकी यदि धारायें ही नहीं है तो शक्ति होने का क्या लाभ है? किस प्रकार आप शक्ति प्रवाह करेंगे? विद्युत शक्ति यदि है तो इसको प्रसारित करने के लिए तार भी होने चाहिए। बिना इनके तो यह निश्चल है। इसी प्रकार मुझे भी लगा कि मेरे भी अधिक से अधिक माध्यम होने चाहिए।"

[७-५-२००० खेला]

"आज मुझे यह कहना है कि अब बहुत से वर्ष गुज़र चुके हैं। रात-दिन मैंने कठोर परिश्रम किया और मेरी एकमात्र इच्छा यही थी कि आप लोग इसे गंभीरता से लें और कार्यान्वित करें। आप लोगों को मेरे हाथ मज़बूत करने होंगे। लोग कहते है कि देवी के एक हज़ार हाथ हैं, परन्तु अब एक हज़ार हाथ भी आपसे माँग रहे हैं कि अपने दो हाथों समेत आ जाओ और इसे कार्यान्वित करो।''

[६-५-२००१]

''सर्वशक्तिमान परमात्मा जो सर्वत्र विद्यमान है जिन्होंने सभी कुछ किया है, और परमात्मा की इच्छा (आदि शक्ति) जिसने सब कुछ संचालित किया है, अब आपके माध्यम से कार्य करना है। ..... आपको सर्वव्यापी परमात्मा का प्रतिनिधि बनना है।''

[१०-५-१९९२]

अध्याय 30

माननीय माताजी के सार्वभौमिक व्यक्तित्व की अमिट छाप

अकेले श्री माताजी ने अपने सतत प्रयासों से ही 'सहजयोग' को एक सार्वभौमिक आन्दोलन बनाया है। उन्हीं के कारण आज अस्सी से अधिक देशों के भिन्न जातियों और प्रजातियों के लाखों लोगों ने कुंडलिनी-जाग्रति द्वारा आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति से आन्तरिक परिवर्तन को प्राप्त किया। उन्होंने वर्तमान स्वार्थी एवं चरित्रहीन मानव-समाज को वास्तव में उन्नत, शुद्ध, पवित्र करुणामय एवं प्रेममय नर-नारियों के रूप में परिवर्तित किया।

श्री माताजी के अपनत्व से भरे मधुर व्यवहार ने सभी के दिलों में गहरा प्रभाव डाला। देश-विदेश हर जगह लोगों ने पूरे उत्साह और प्रेम से उनका स्वागत किया। उनके गरिमामय व्यक्तित्व एवं अद्वितीय कार्यों के प्रति अपने हार्दिक सम्मान व आभार को व्यक्त करने हेतु अनेक अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने समय समय पर उन्हें प्रशस्ति-पत्र व पुरस्कार समर्पित किए-

● **"अत्यंत सम्माननीय श्रीमती निर्मला श्रीवास्तव** पृथ्वी की सभी स्त्रियों में से हमारी अकादमी की एकमात्र माननीय सदस्या के रूप में हम हृदय से आपको बधाई देते हैं और आपकी महान चारित्रिक शिक्षाओं के अनुसार पृथ्वी के सभी राष्ट्रों के आध्यात्मिक उत्थान के लक्ष्य से किए जाने वाले आपके रचनात्मक और फलदायक कार्य के नए दशक में पूर्ण दृढ़ता से प्रवेश करते हैं।

दो महान राष्ट्रों भारत और रूस के मध्य मित्रता के क्षेत्र को दृढ़ करने के लिए आपके प्रयत्नों का हम सम्मान करते हैं और इस महान क्षेत्र में भविष्य में आपकी सफलता की शुभकामना करते हैं।''

यूरी. ए. वोरोनोव (उपाध्यक्ष), पैट्रोवस्की कला एवं विज्ञान अकादमी, रूस, [चैतन्य लहरी, सितम्बर से दिसम्बर १९९४, पृष्ठ ८]

● "**सहजयोग संस्थापिका श्रीमती निर्मला श्रीवास्तव** ने मानवता के प्रति अथाह प्रेमपूर्वक इतने सहजरूप से इस ज्ञान का वर्णन किया है कि हर व्यक्ति आसानी से यह समझ सके कि किस प्रकार सहजयोग विधियों से आत्मज्ञान, आत्मोद्धार, अच्छी सेहत व आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकता है। .... .. सातों आध्यात्मिक और चारित्रिक सिद्धान्तों की मूल शक्तियाँ मानव शरीर में स्थापित सात चक्रों में निहित हैं जैसे पवित्रता, निर्मलविद्या, संतोष एवं उदारता आत्म विश्वास व शांति, साक्षी-भाव, क्षमाशीलता व लयबद्ध एक रूपता। सामूहिक चेतना की शक्ति कुंडलिनी की जागृति द्वारा मानव में स्वत: ये तत्त्व जागृत हो जाते हैं।''

मिल्या ए वोलोग्डीना
सदस्य - विज्ञान एवं कला, पेट्रोवोस्किया अकादमी, रूस
[चैतन्य लहरी, जुलाई अगस्त २००३ पृष्ठ १५-१६]

● "**विश्व में** जहाँ कि व्यक्ति तथा मानवता की समस्याओं के नए समाधान खोजने की आवश्यकता है, किसी भी चीज़ को खोजने की जिससे व्यक्ति अस्तित्व की चेतना की गहनता में उतर सके, इस क्षेत्र में **सहजयोग संस्थापिका माताजी** सभाओं तथा नेतृत्व द्वारा हमारे अपने ही गहन आयामों पर ध्यान करने के लिए हमारा पथ-प्रदर्शन करते हुए हमें नई दिशायें सुझा रही हैं और एक संतुलित तथा शांत जहाँ प्रत्येक व्यक्ति की गहन आत्मा से आरंभ करके शांति का वास्तवीकरण किया जा सके का आधार स्थापित करने में सहायता कर रही हैं।''

2 मई 1996 को अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार 'ले प्लेज़ादे' के दसवें संस्करण में श्री माताजी को 1996 का पुरस्कार विजेता घोषित किया गया। श्री माताजी को इस पुरस्कार के लिए चुनने के उन्होंने उपरोक्त आधार बताये।

[चैतन्य लहरी, मार्च अप्रैल १९९७ पृष्ठ २०]

● ''**वे विश्वविख्यात आध्यात्मिक नेता तथा सहजयोग की संस्थापक हैं।** सहजयोग आध्यात्मिक उत्क्रांति प्राप्त करने का एक अत्यंत स्वाभाविक कार्य है जिसके लिए व्यक्ति को कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता।

उन्होंने बहुत सी धर्मार्थ संस्थाओं की स्थापना की है। उन्हें संयुक्त राष्ट्र शांति मेडेल प्रदान किया गया है और विश्व शांति पर भाषण देने के लिए चार बार संयुक्त राष्ट्र संघ में आमंत्रित किया गया। नोबेल शांति पुरस्कार के लिए भी दो बार उन्हें नामित किया गया।"

टॉम मर्फी, मेयर,
सिटी आफ पीटर्स वर्ग अमेरिका का घोषणा पत्र
[चैतन्य लहरी, जुलाई अगस्त २००१ पृष्ठ २०]

● "**अपने उच्च चरित्र** और वर्षों तक अथक कार्य के लिए आप (श्री माताजी) विशेष बधाई और सम्मान के अधिकारी है... ... प्रेम और करुणा का जो उदाहरण आपने स्थापित किया है इस पर गर्व होना स्वाभाविक है। विश्वास रखें जिन लोगों को आपने विवेक एवं सम्पन्नता प्रदान की है उनके लिए आप प्रेरणा का स्रोत हैं।"

जार्ज पेटकीका, गवर्नर, स्टेट आफ न्यूयार्क
(बधाई संदेश), ७८ वें जन्मदिन समारोह पर
[चैतन्य लहरी, जुलाई अगस्त २००१ पृष्ठ २०]

अध्याय 31

श्री माताजी को मिले अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार एवं मान्यतायें

सहजयोग के माध्यम से अद्‌भुत परिणाम देने वाली अपनी आध्यात्मिक शिक्षाओं तथा अपने नि:स्वार्थ कार्यों के कारण विश्वभर की बहुत सी सम्माननीय संस्थाओं ने श्री माताजी को पुरस्कृत किया है एवं मान्यता प्रदान की है। इसमें से कुछ पुरस्कार एवं मान्यतायें निम्नलिखित हैं-

इटली - १९८६

इटली की सरकार ने उन्हें 'वर्ष का सर्वोत्तम व्यक्ति' [Personality of the year] घोषित किया।

मास्को, रूस - १९८९

श्री माताजी यू. एस. एस. आर. के स्वास्थ्य मंत्रालय के मुखिया से मिलीं। इस मुलाक़ात के बाद सहजयोग के प्रसार एवं वैज्ञानिक शोध के लिए पूर्ण सरकारी अनुदान एवं सहायता प्रदान की गई।

न्यूयार्क - १९९०-१९९४

संयुक्त राष्ट्र ने लगातार चार वर्षों तक 'विश्वशांति प्राप्ति' विषय पर भाषण देने के लिए श्री माताजी को आमंत्रित किया।

सेंट पटिर्स बर्ग, रूस - १९९३

- 'भेषज एवं आत्मज्ञान' के वार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ किया।

- पेट्रोवास्किया कला एवं विज्ञान अकादमी की स्थायी समिति का अवैतनिक सदस्य नियुक्त किया। अकादमी के इतिहास में यह सम्मान केवल बारह लोगों को दिया गया है। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टाइन इन्हीं में से एक हैं।

ब्राजील - १९९४

ब्राजीलिया नगर के मेयर ने हवाई अड्डे पर श्री माताजी का स्वागत किया, उन्हें नगर की चाभी भेंट की तथा नगर में होने वाले उनके सभी कार्यक्रमों को अनुदानित किया।

योंकर्ज न्यूयार्क - १९९४

26 सितम्बर को 'श्रीमती निर्मला देवी दिवस' घोषित किया गया। महात्मा गाँधी के साथ उनके साहचर्य का उत्सव मनाते हुए श्री माता जी के सम्मान में स्वागत परेड के लिए विशेष पुलिस अभिरक्षी [Police Escorts] प्रदान किए गए। मेयर ने स्वागत-पत्र प्रस्तुत किया।

ब्रिटिश कोलम्बिया, कनाडा - १९९४

ब्रिटिश कोलम्बिया के जिला प्रधान श्री माइक हरकोर्ट ने कनाडा के लोगों की ओर से स्वागत-पत्र भेंट किया।

रोमानिया- १९९५

श्री माताजी को 'संज्ञानात्मक विज्ञान के डाक्टर' [Honarary Doctorate in Cognitive Science] की उपाधि से सम्मानित किया गया।

चीन - १९९५

चीन के लोगों को संयुक्त राष्ट्र की चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय महिला संगोष्ठी [United Nation International Women's Conference] के अवसर पर संबोधित करने के लिए श्री माताजी चीन सरकार की विशेष अतिथि बनीं।

भारत - १९९५

भारत सरकार ने दूरदर्शन शृंखला में उत्कृष्ट समय में एक घंटे का समय सहजयोग कार्यक्रम के लिए दिया।

अमेरिका, १०५ वीं कांग्रेस १९९७ एवं १०६ वीं कांग्रेस २०००

● मानव हित के लिए समर्पित एवं अथक कार्य करने के लिए श्री माताजी के प्रति सम्मान वक्तव्य कांग्रेस सदस्य इलियट एंजिल ने पढ़ा।

● यूनाइटेड अर्थ आरगेनाइजेशन के अध्यक्ष क्लेज़ नोबेल [Claes Nobel] ने 1997 में श्री माताजी और उनके 'सहजयोग' की प्रशंसा करते हुए कहा – ''श्री माताजी की खोज मानव को सच्ची आशा प्रदान करती है। यह खोज सही और ग़लत का निर्णय करने की शक्ति देती है। [A Source of hope for humanity. A reference point for determining right from wrong]

भारत – २००१

पुणे में श्री माताजी को 'मानव–रत्न पुरस्कार' से अलंकृत किया गया।

कबेला, इटली – २००६

श्री माताजी को इटली की नागरिकता प्रदान की गई। कबेला लिगर [Cabella Ligure] में Shri Mata Ji Nirmala Devi World Foundation of Sahajyoga का शिलान्यास किया गया। Foundation के पास अपना घर है।

अध्याय 32

श्री माताजी की जन्म कुंडली

श्री माताजी की जन्म-कुंडली में गजकेसरी जैसे कई दुर्लभ ग्रहयोग विद्यमान हैं। उनका जन्म मिथुन लग्न में जिनका स्वामी बुध है, हुआ और चन्द्रमा भरणी नक्षत्र में है जिनके स्वामी शुक्र हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि श्री माताजी के शासक ग्रह बुध और शुक्र हैं। ग्रहदशा के अनुसार उनकी कुंडली का फल इस प्रकार है -

● श्री माता उत्पन्न हुई हैं - 13 साल 11 महीनों की शुक्र की दशा में प्रसन्न तथा सुखदायी बचपन	21 – 03 – 1923 + 11 . 13 21 – 02 – 1937
● इसके पश्चात् 6 वर्ष तक सूर्य की दशा है। यह तपस्या का समय, गहन प्रकार की आध्यत्मिक तथा राजनीतिक गतिविधि की ओर संकेत करती है।	+ 6 21 – 02 – 1943
● तत्पश्चात 10 वर्ष का चन्द्रमा का समय है जो सुबुदिध तथा जन-चेतना (राजनीतिक एवं आध्यत्मिक गतिविधि) के गहन चिंतन का संकेतक है।	+ 10 21 – 02 – 1953
● फिर 7 वर्ष का मंगल का समय यात्रा तथा परिवर्तन बताता है।	+ 7 21 – 02 – 1960
● इसके पश्चात 18 वर्ष का राहु का समय है। राहु ब्रह्मा के जटिल ज्ञान को प्रदान करने वाला दैवी ग्रह है। यह आत्मदर्शन तथा सामूहिक जागृति की विधि की खोज की ओर संकेत करता है।	+ 18 21 – 02 – 1978
● इसके बाद 16 वर्ष गुरु ग्रह के हैं। (विश्व भर में सहजयोग गुरु सिद्धांत का प्रचार)	+ 16 21 – 02 – 1994

इसके बाद 19 साल शनि ग्रह शासक होंगे जो कि सहजयोग को पूरे विश्व में फैलायेंगे। शनि अर्थात जन-साधारण, विराट। श्री माताजी कल्की (बुध) शक्ति को पूरे विश्व में प्रकट होते देखेंगी।

5-5-1970 की सहज कुंडली जो कि श्री माताजी की जन्म कुंडली से मिलती जुलती है। इसमें बृहस्पति के साथ गजकेसरी तुला राशि में है। यहाँ यह बात ध्यान देने की है कि भारत की आजादी के समय भी बृहस्पति तुला राशि में था अतः भारत की आज़ादी श्री माताजी की कृपा से ही प्राप्त हुई है। भारत, सहज और श्री माताजी एक ही हैं।

सहज कुंडली ५-५-१९७०, प्रातः ५.३० बजे

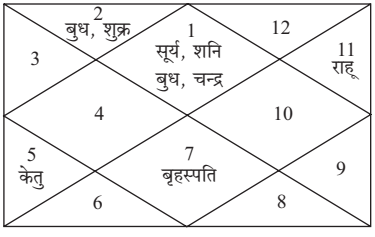

- शनि, सूर्य एवं चन्द्रमा तीनों ग्रह उच्चाभिलाषी हैं।
- शनि तथा बृहस्पति वक्री (दुगुनी शक्ति वाले) हैं।

श्री माताजी की जन्म कुंडली

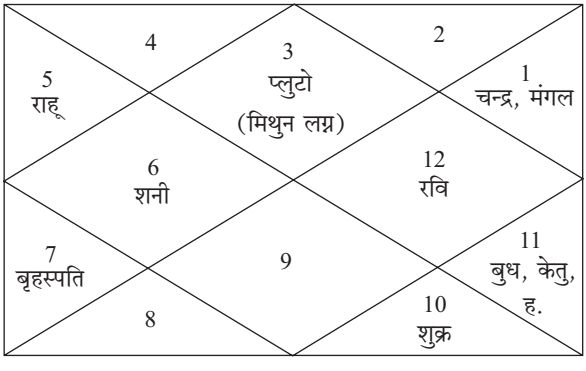

अध्याय 33
श्री माँ परम में लीन हो गईं

पृथ्वी पर अवतरित होकर श्री माताजी ने अपने महान लक्ष्य को पूर्ण किया। वे जानती थीं कि अब उन्हें अपने साकार स्वरूप को त्यागकर पुनः निराकार शक्ति होना है इसीलिए वे सहजयोगियों को निराकार शक्ति की पूजा के लिए निरंतर प्रेरित करती रहीं।

श्री माताजी के आदेशानुसार भारत में नोयडा शहर में अकस्मात नवम्बर 2010 को "विराट पूजा" का आयोजन किया गया जिसमें पहली बार सभी वयोवृद्ध सहजयोगियों को श्री माताजी ने अपनी चरण पूजा का अवसर दिया। उस समय वे काफी अस्वस्थ थीं लेकिन फिर भी वे दो-तीन घंटे अपने सहजयोगी बच्चों के साथ रहीं और मौन रूप में अपनी चैतन्य लहरियों के माध्यम से विशाल जनसमूह को अनन्त आशीर्वाद दिए। उनके निर्मल नेत्रों से अपने सहजी परिवार के प्रति असीम वात्सल्य अविरल प्रवाहित होता रहा, वे जानती थीं कि साकार रूप में वे अंतिम बार अपने बच्चों के साथ हैं।

'विराट पूजा' के पश्चात श्री माताजी भारत से इटली चली गईं। इटली के अलेक्ज़ोन्ड्रिया प्रांत में कबेला लीग़र गाँव के प्जाज़्जों डोरिया श्री माता जी का विगत बीस सालों से निवास स्थल रहा है। भारत से कबेला जाने से पूर्व वे दिल्ली में 'निर्मल धाम' में रुकी थीं।

"23 फरवरी 2011 के दिन देवी अपने नश्वर शरीर को त्याग कर परम चैतन्य में लीन हो गईं। विश्व के कई देशों से सहजयोगी अपनी परम पावनी माँ के अंतिम दर्शन के लिए प्लाज्जा डोरिया में एकत्र हुए। योगियों का अथाह समूह श्री माँ को भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए जुट गया था।

श्री माताजी का कास्केट चारों ओर श्वेत गुलाब के फूलों से सजा था। लाल और सुनहरी साड़ी पहने आराम मुद्रा में श्री माँ बहुत ही सौम्य-सुन्दर लग रहीं थीं। हल्दी-कुमकुम-अतर द्वारा उनके कमल चरणों में पूजा अर्पित की गई।

आरती की मंगल ध्वनि संपूर्ण वातावरण में गुंजारित हो रही थी।

समस्त योगियों ने अपने हृदय की अटूट श्रद्धा के साथ देवी माँ के पार्थिव शरीर की परिक्रमा कर अपनी पुष्पांजलियाँ समर्पित कीं और अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें प्रणाम कर भाव भीनी अंतिम विदाई दी। अपनी भक्ति और प्रेम को व्यक्त करने तथा इस दु:ख को सामूहिक रूप से बाँटने हेतु पूरी रात योगियों का ताँता लगा रहा।

दूसरे दिन शनिवार को दोपहर को एक अंतिम पूजा सम्पन्न हुई। चारों ओर का वातावरण योगियों के भाव पूर्ण प्रेम की गहराई और मार्मिकता से ओत प्रोत और सुगंधित था। आरती के बाद पवन पावनी देवी माँ के प्रति अपनी अनुभूतियाँ व्यक्त करते हुए श्री आशीष प्रधान, सर सी. पी. श्रीवास्तव और श्री राजेश शाह ने अवरुद्ध कंठ से कहा –

"श्री माताजी आज हमारा हृदय भरा हुआ है, आँखे नम हैं, परन्तु हम आपसे वादा करते हैं कि आपके द्वारा प्रकाशित अपने सत्व गुणों के माध्यम से, अपने हृदय में आपको सँजोए, अपने होठों पर आपका नाम लिए तथा अपने सहस्रार द्वारा आपके अमिट स्वरूप को अभिव्यक्त करते हुए हम साल दर साल व सदियों तक यहाँ एकत्रित होते रहेंगे। श्री माताजी आपका धन्यवाद! श्री माताजी आपका बार-बार धन्यवाद! जय श्री माताजी।"

[स. योगी]

"मैं नहीं समझता कि किसी भी सहजयोगी के लिए यह मानना संभव है कि वह अपनी प्रिय माँ और आध्यामिक प्रिय गुरु के सांसारिक स्वरूप को विदा कर रहे हैं। चालीस साल पहले मैं उनके दर्शन से कृतार्थ हुआ था। और जाना कि वे साक्षात प्रेम का अवतरण हैं, आनंद का अवतरण हैं और वे हमेशा हमारे साथ रहेंगी। अब यह हमारी और प्रत्येक सहजयोगी की ज़िम्मेदारी है कि सामूहिकता को सुदृढ़ किया जाए और हमेशा उनके चरण कमलों में समर्पण किया जाए।"

[स. योगी]

"जय श्री माताजी! मैं इतना व्यथित हूँ कि जो कहना चाहता हूँ वह पूरी तरह बोल नहीं पा रहा हूँ लेकिन आपने अपना जीवन एक उद्देश्य के लिए दिया। ..... इस गंभीर और दुखद अवसर पर हम सबका यह वादा है कि सबके प्रति सम्मान एवं समान प्रेम के आपके संदेश को प्रसारित करने के लिए हम अपने को समर्पित कर देंगे। .....आपका संदेश आगे बढ़ता रहेगा, यह रुकेगा नहीं। .....यह मैं जानता हूँ कि मैं सबकी ओर से बोल रहा हूँ और हम सभी अपना अधिकतम देगें। क्या हम नहीं करेंगे? (उत्तर- हाँ करेंगे) आपके संदेश को सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित करने के लिए हम अपना अधिकतम प्रयास करेंगे ताकि विभाजित विश्व की जगह एक संगठित विश्व बने। .....

आपका कार्य रूकेगा नहीं। आपका त्याग, आपके जीवन का त्याग व्यर्थ नहीं जाएगा। इस वक्त मैं इससे अधिक कुछ नहीं कह सकता। मैंने अपने जीवन की सबसे बहुमूल्य वस्तु खो दी है।''

[सर सी. पी. श्रीवास्तव]

सारा जनसमूह भाव विह्वल हो गया। फिर बारह योगियों ने मिलकर कास्केट को उठाया और कबेला में उनके निवास स्थान से श्री माताजी की अंतिम यात्रा प्रारम्भ हुई। जुलूस धीरे-धीरे पुल पर विछाए गए फूलों के गलीचे को पास करता हुआ उसी स्थान से आगे बढ़ रहा था जहाँ एक दशक से भी ज्यादा माँ ने सभी सहजयोगियों को अपनी पूजाओं में अपनी उपस्थिति से उन्हें आशीर्वादित किया था। योगियों ने सामूहिक स्वर में महामंत्र का उच्चारण कर उन्हें अंतिम पूजा समर्पित की, भक्तजनों के जयकारों की ध्वनि ये प्लाज्जों डोरिया का चप्पा चप्पा गूँज उठा।

'निर्मल-धाम' दिल्ली में श्री माँ की समाधि -

निर्मल धाम जो कि स्वयं श्री माँ द्वारा चुना गया एक सहज निवास स्थल है, उनकी समाधि का स्थल चुना गया। पत्थर से बने समाधि स्थल को पूजा मंच के दाँई ओर बनाया गया, इसे दो दिनों में सहजयोगियों ने दिन-रात कार्य करके बनाया।

श्री माताजी के पार्थिव शरीर को कबेला से मिलान और फिर वहाँ से सीधी उड़ान द्वारा रविवार 27 फरवरी को भारत लाया गया, उनके साथ कबेला से 30 योगीजन और नज़दीकी परिवार के सदस्य थे। उन्हें सीधे ही निर्मल धाम लाया गया। जहाँ भारत के कोने-कोने से आए हज़ारों सहजी उनके अंतिम दर्शन करने के लिए पहले से ही एकत्र हो चुके थे।

श्री माताजी को उसी मंच पर आदरपूर्वक विराजमान किया गया, जहाँ विगत वर्षों में अनेक बार वे विराजीं थीं। श्री माँ के कास्केट को विशेष रूप से सफेद होलया, सफेद एस्टर एवं सफेद कुमुदिनी के पुष्पों से सुसज्जित किया गया था। 27 फरवरी को पूरे दिन, पूरी रात निर्मल धाम में सहजियों का ताँता लगा रहा। एक लाख से भी अधिक लोगों ने परमपावनी माँ को श्रद्धांजलि अर्पित की।

आख़िरी पूजा सोमवार 28 फरवरी की सुबह के लिए निर्धारित की गयी। सभी तैयारियाँ बारह बजे तक पूरी हो गयी। सारा वातावरण चैतन्य से सराबोर था। श्री माँ के विशाल सहजी परिवार ने उन्हें भाव-भीनी विदाई दी। पूरे विश्व के योगियों का एक दल श्री माँ को उनके अंतिम विश्राम स्थल तक ले गया। जैसे ही कास्केट को समाधि में रखा गया, वातावरण प्रचंड चैतन्य से भर गया और निर्मल धाम में शांति छा गई।"

[सहज समाचार के मार्च अप्रैल २०११ के अंक से साभार]

अध्याय 34

श्रद्धांजलि

1. मेरी माँ, श्री माताजी

अथाह समुद्र में बिन पतवार
कश्ती सा बहता हुआ,
अपनी जीवन देने वाली माँ के
वियोग में संतप्त,
वे सूक्ष्म आयाम में
चली गई हैं,
बैकुंठ की रानी वापिस अपने
सिंहासन लौट गई हैं
मैं इस सन्नाटे में अकेला हूँ,
जैसा उन्होंने कहा था
कि होगा,
आपके साथ जुड़ने के लिए
केवल अपनी आत्मा के साथ,
इस माँस के खाली खोल में
मैं कैसे रहूँगा?
इस जग की जगद्धात्री के बिना
कैसे रहूँगा?
मैं चलता हूँ उस राह पर जो
आपने दिखलाई है,
आपकी कसौटी पर खरा उतरने की
दिल में आई है,
इस जीवन में हम कर सकें
पूरी आपकी हमसे आशा,
ताकि इस धरती पर सब झूमें
एक ताल, बोलें एक भाषा

[सहज समाचार]

2. हे ममतामयी निर्मल माँ!

निश्छल प्रेम का अविरल प्रवाह हैं आप,
हमारे सारे कष्टों को स्वयं आत्मसात कर
बना दिया हमें मानव से महामानव,
और अन्ततः डुबो दिया आध्यात्मिक –
आनंद के महासागर में,

असीम करुणा का अनुपम स्रोत हैं आप,
फैला कर अपना आकाश जैसा आँचल,
समेट लिया सारे विश्व को एक साथ,
और फिर पिरो दिया मोतियों की तरह,
सामूहिक–चेतना के मंगल–सूत्र में,

हे वात्सल्यमयी जगज्जननी!
आप मानवीय भी हैं और दिव्य भी,
अति सामान्य भी हैं, विराट चैतन्य भी,
अपने दोनों ही रूपों में अनन्य हैं, अनिर्वचनीय हैं आप,
आपने खोल दिए हैं मुक्ति के द्वार सबके लिए,
देकर सबको पुनर्जन्म एक माँ की तरह,
परम चैतन्य में लीन हो गईं आप,

हे सहजयोगदायिनी माँ!
लेते हैं एक समवेत संकल्प हम सब आज,
भर देंगे दसों दिशाओं को आपके सहज–संदेश से,
हमारी यह सामूहिक प्रतिज्ञा ही,
हमारी भावमीनी श्रद्धांजलि है
आपके श्री चरणों में

उपसंहार

श्री आदिशक्ति का अनमोल उपहार "सहजयोग"

श्री आदिशक्ति के सृजन का सारतत्त्व मानव है। श्री आदिशक्ति अपनी असीम ईश्वरी शक्ति के माध्यम से तीन सीमित व्यक्तित्वों का सृजन करती हैं- महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी। अपनी इन्हीं तीन शक्तियों के सम्मिश्रण और क्रम-परिवर्तन के माध्यम से वे आयोजन करती हैं और अन्ततः मानव को अपने सृजन के सारतत्त्व के रूप में विकसित करती हैं। परस्पर प्रभावित करके ये शक्तियाँ मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक शरीर की रचना करती हैं। पहले तीन शरीर सीमित (Finite) हैं और अन्तिम आध्यात्मिक शरीर का सृजन असीम (Infinite) घटना है।

मानव के अन्दर सर्वशक्तिमान परमात्मा की सूक्ष्म रूप में अभिव्यक्ति होती है, उनका असीम स्वभाव दिव्य आत्मा के रूप में प्रतिबिम्बित होता है। दिव्य आत्मा के रूप में परमात्मा का ईश्वरी शक्ति से योग मनुष्य के अन्तःस्थित कुण्डलिनी की सीमित स्वभाव वाली अवशिष्ट शक्ति के माध्यम से घटित होता है, जो कुण्डलिनी जागृति द्वारा परिष्कृत होता है। आत्मसाक्षात्कार के समय ये चित् सामूहिक चेतना के असीम क्षेत्र को बेंधता है।

..... मानव विकास की हर मुख्य छलांग में कोई न कोई अवतरण जन्म लेकर विकास- प्रक्रिया का नेतृत्व और पथ-प्रदर्शन करता है। जीवन की भिन्न अवस्थाओं के माध्यम से भिन्न युगों में पथ-प्रदर्शन के लिए जन्म लेने वाले अवतरण परमात्मा के भिन्न पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये सारी अवस्थाएँ 'सहज' या 'स्वतः' घटित हुईं।

अन्तिम और महत्त्वपूर्ण अवस्था-सामूहिक आत्म-साक्षात्कार और सहजयोग की अद्वितीय खोज वर्तमान युग (कलियुग) का उपहार है। यह परमात्मा और मानव के बीच सम्पर्क की पराकाष्ठा है।

..... कुण्डलिनी वह वीणा है जिस पर परमात्मा अपना प्रेम-संगीत बजाते

हैं। यह वह सीढ़ी है जिस पर चढ़कर साधक दहलीज को पार करके अगाध अचेतन में प्रवेश करता है। यह वह छलांग-पट्ट है जो व्यक्ति को स्वतंत्रता, शान्ति और आशीष के सागर में उड़ान लेने में सहायता करता है। युगों पूर्व दिये गये वचन के अनुसार सर्वशक्तिमान परमात्मा के साम्राज्य में निवास तक पहुँचने के लिए कुण्डलिनी एक माध्यम है।

[सृजन शाश्वत लीला, पृष्ठ १५८, १५९, १६५]

मेरे सहजयोगी बच्चों!

चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है- पूरा ज्ञान आपमें जागृत हो जायेगा, अब हर शब्द जो आप पढ़ते हैं वह अर्थपूर्ण होगा, आप समझ पायेंगे।

..... आपको बहुत अधिक ऊँचा उठना है, और इसे बहुत समय देना है। इसे स्वीकृत रूप से न लें। ये (आपकी उत्क्रांति) अत्यन्त महत्वपूर्ण चीज़ है जो आपको करनी चाहिये।

..... मैं बहुत प्रसन्न हूँ, क्योंकि अपने किसी भी अवतरण में मैं इतने लोगों को आत्मसाक्षात्कार नहीं दे पायी थी, अत: मैं स्वयं से पूर्ण संतुष्ट हूँ। परन्तु जहाँ तक आप लोगों का सम्बन्ध है आपको सन्तुष्ट नहीं होना चाहिये, आपको अधिक और अधिक माँगना चाहिए और यह प्रदान किया जायेगा। क्योंकि आप ही वो लोग हैं जो मंच पर हैं। आपको इसी उद्देश्य के लिए बनाया गया है। आपने ये कार्य करना है। परमात्मा को ये कार्य करना होगा। परमात्मा यदि ये कार्य नहीं करते तो वे अपनी इच्छा को पूर्ण नहीं कर सकते और अपनी सृष्टि को तो वे नष्ट नहीं होने देंगे।

परमात्मा आपको धन्य करें।

विश्व वन्दिता श्री माताजी

विश्व वन्दिता निर्मला माता, सर्वपूजिता निर्मला माता,
ब्रहम स्वरूपिणी, योगनिरूपिणी, शुभदां, वरदां नमो नमः
विश्व वन्दिता .....

जगत जननी निर्मला, मूल प्रकृति अखिलेश्वर की,
नित्या, सत्या, सनातना, पराशक्ति परमेश्वर की,
विश्वधारिणी, मंगलकारिणी, शुभदां, वरदां, नमो नमः
विश्व वन्दिता .....

सहजयोगिनी निर्मला, निराश्रया, सर्वेश्वरी,
प्रेम-मूर्ति, भक्त-वत्सला, स्नेहमयी, मातेश्वरी,
भक्ति-प्रदायिनी, मुक्ति-प्रदायिनी, शुभदां, वरदां नमो नमः
विश्व वन्दिता .....

प्रगट सगुणा, निर्गुणा, रिद्धि सिद्धि की दात्री है,
सौम्या, सरला, महामना, पातंजलि गुण पात्री है,
घट-घट वासिनी, आत्मविकासिनी, शुभदां वरदां नमो नमः
विश्व वन्दिता .....

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना पूर्व आज्ञा के इस पुस्तक के किसी भी भाग की प्रतिलिपि या किसी भी रूप में प्रसारण वर्जित है। कोई भी व्यक्ति अनधिकृत रूप से यदि इसका प्रकाशन करता है तो उस पर हानिपूर्ति का दावा किया जाएगा।

प.पू.माताजी श्री निर्मला देवी के
प्रवचनों से संकलित

सहजयोग के बारे में अधिक जानकारी के लिए देखें www.sahajayoga.org